RAJPUT MARATHA RELATIONS

(FROM 1707 TO 1760 A.D.)

VOLUME II

JAYAKAR LIBRARY
POONA
UNIVERSITY

(A THESIS SUBMITTED IN
TWO VOLUMES FOR THE
PH.D. DEGREE OF POONA UNIVERSITY)

BY

ASHOK KUMAR ARORA

1978

CONTENTS

VOLUME-II

		Page No.
Appendix 'A'	- Dastur Comwar documents of J.S.A.B.	1 - 228
Appendix 'B'	- Draft Kharitas of J.S.A.B.	229 - 63
Appendix 'C'	- Draft Parwanas of J.S.A.B.	264 - 77
Appendix 'D'	- Gulgule Daftar Hindi, quoted by Beni.	278
Appendix 'E'	- Gulgule Daftar Hindi, Sitamau.	279 - 98
Appendix 'F'	- Gwalior Kharitas of J.S.A.B.	299 - 301
Appendix 'G'	- Indore Kharitas of J.S.A.B.	302 - 31
Appendix 'H'	- Jaipur Kharita from Jodhpur Records of R.S.A.B.	332
Appendix 'I'	- Jaipur Record Hindi at Sitamau	333
Appendix 'J'	- Jodhpur Kharitas of J.S.A.B.	334 - 41
Appendix 'K'	- Karauli Kharitas of J.S.A.B.	342 - 47
Appendix 'L'	- Khatut Ahalkaranas from J.S.A.B.	348 - 70
Appendix 'M'	- Kota Kharitas of J.S.A.B.	371 - 77
Appendix 'N'	- Kota Records of R.S.A.B.	378 - 90
Appendix 'O'	- Miscellaneous documents from Bundi Archives of R.S.A.B.	391 - 94
Appendix 'P'	- Shahpura Records at Rajasthani Shodh Sansthan, Chaupasni, Jodhpur.	395
Appendix 'Q'	- Udaipur Kharita of J.S.A.B.	396

	Page No.
Appendix 'R' - Chronology.	397 - 503
Appendix 'S' - Genealogy.	504 - 12
Appendix 'T' - Glossary.	513 - 19

MAPS [redacted]

1.	Places in Malwa connected with Rajput - Maratha Relations. (1707-60)	520
2.	Kishangarh State	521
3.	Places in Rajputana connected with Rajput - Maratha Relations (1707-60).	522
[redacted]	[redacted]	[redacted]
4.	Places in India connected with Rajput - Maratha Relations (1707-60).	523

APPENDIX — A

DASTUR COMWAR DOCUMENTS OF J. S. A. B.

L.N. 1 18th November 1759

सम्बत 1816

मगसर बदी 14 कवौड में दिखण्यास

राड हुइ भीम सिंह सावलदास नाथावत काम

आयो रु. १८०००) 32 रास का पाव को

D.C.

P.N. 113

Vol.VIII(Nathawats)

J.S.A.B.

L.N.2 18th November 1759

सम्बत 1816

मगसर वदी 14 ककोड़ के झगडा जोधसिंह

मोहनसिंह को नाथावत काम आयो 25000 रास

44 माफ रास 60 पालकी 3 हाथी 4 पातो सो

बीका बेटा रतनसिंह सरह दसकत राजा हरसराय साबिक

बहाल कर्यो एवज बापकी इलाको

4000 से मिती दाग ये हाथी इजारा का घोड़ा

माफ कर्या

D.C. Page No. 552
Vol. VIII(Nathawats)
J.S.A.B.

L.N. 3 | 18th November 1759

सम्बत १८१६

पोष बदी ११ सहबाब तात्या सं

झगडा में जोधसिंह चोमू रामसिंह नाथावत सामोद

काम आया ।

P-552

D.C.

Vol. VIII (Nathawats)

J.S.A.B.

L.N. 4

पु.छजीनायक अफ रघनाथराव की

सम्वत १८२४

मिती म्हा बुदि १२ ने मुवाफिक फरद

पु.छा नायक बाबत उदेराम पंडत ने रुपया

ग्यारह हजार प्रागराम कने दिवाया

असल रुपया हुडावण का
१०००) ६०)

सो बीगे षरच के रुपया १०६०) मये मुसारन अल्ह नै २०३०)

(Contd.)

सम्वत १८१४

मिति असाढ़ सुदि २ ने बेहला थे मुसारनअल्ह

वा प्रशोतम पंडित वा उदैराम नायक के मिजमानी

शामिल मारफत भट सदास्योव की जुमलै

२००) मये मुसारन अल्ह

१००)

(Contd.)

25th July 1758

सम्वत 1814

मिती सावण बुदि 5 ने मुवाफिक (अस्पष्ट) नायक वा उदैराम नायक त्रफ रुघनाथराव वा मलारराव की आया तीने बिदा का रुपया 2000)- सीगे खरच के तीम ये मुसारन अल्ल आया

1000)

[redacted]

P. 33~~8~~-39
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

L.N. 5

चाकर साहूराजा का लिषना

तात्यागंगाधर ने

सम्वत 1807

मिती फागण सुदि 4 ने बाबत मुसारन अल्ह

का बाप को सराय को सो सीधा का भेज्या

200)-

सम्वत 1810

मिती पोस सुदि 15 ने मुसारन अल्ह की बहू ने

दिया 200)-

सम्वत 1813

मिती बैसाख बुदि 13 ने मुवाफिक फारद मिजमानी

का 220)

ई मिती में तात्यो पंडत रामराम (?) का

भाई लिष्या

P. 343
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

L.N. 6 7th January 1754

तकूजी पबार (तुकोजी पंवार)

सम्बत 1810

मिती पोस सुदि 13 ने जीन षाना थे बषस्या

रास । थान 4

घोड़ारास ।

P-345

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L. N. 7

तात्या रामराव पंडित

सम्वत 1813

मिती भादवा सुदि । नै बादें असाढ सुदि 6 नै

दिया थान 4

आलमजरी	६॥)	फेटा	१२)
मसडवूटादार कीमती	२०)	म्हमूदी मुकेसी	२६)
१		१	

P- 348

D. C.

Vol. IX

J. S. A. B.

L. N. 8

ताराबाई बहु रामराजा सतारा वाकी

चाकर कसिद

संम्वत 1811

मिती काती सुदि 12 ने सतारा सु हरकारा की

जोड़ी आई तीनि दिया २॥)

मिती मंगसर बुदि 11 ने सतारा सु कागद आया

त्यानि ॥)

इनाम का १०) पेटना को १)

सम्वत 1812

मिती फागण वुदि 5 नै सतारा सु कासिदा की

जोड़ी आई तीनि १०)

मिती चैत सुदि ११ ने सतारा सु कासिद आया

तीनै १०)

सतारा सु आया ताराबाई लिषीन्ही

मिती मंगश्र सुदि 2 ने कासदा

की जोड़ी आईतीनि 10)-

सम्बत 1817

मिती चैत सुदि 14 ने कासिदा

की जोड़ी नै 10)-

P- 350-51
D. C.
Vol. IX
J. S. A. B.

L.N. 9

दिषण्या नैं मारफत्त जगराम दिवाण वगैरह की भेज्या

सम्बत 1775

मिती फागण सुदी 10 नै मारफत्त दिवाण जगराम की

भेज्या तरवार नेगा मीनामुर साकरी की कीमती 930)-

कमजो १

नाब नही

मिती असाढ़ बुदि 10 नैं हसते गजसंघ मुसारन

अल्हे नैं जो दिषण भेज्या तद जड़ावल का दिषण्या नै

थान 30

सिरोपाव १ साबिक ८२।)	सिरोपाव १ कीमती साबिक ८१।।)
थान 3	थान 3
सिरोपाव कीमती साबिक ८२।)	सिरोपाव १ कीमती साबिक ६५।।)
थान 3	थान 3
सिरोपाव कीमती साबिक ६४।।)	सिरोपाव कीमती साबिक ६२।=
थान 3	थान 3
सिरोपाव कीमती साबिक ४१।।।)	सिरोपाव कीमती साबिक ३८)।।८
थान 3	थान 3
सिरोपाव साबिक ३६।।।)	सिरोपाव कीमती साबिक

मोमजामा वगैरह लपेट वाने ३८।।)

मोमजामा नरमा

१।।≡ ४।।=

(Contd.)

सम्बत 1787

मिती माह सुदि 13 ने

मिती फागण सुदि 5 नैं मुवाफिक डेलदरबार सरच (खरच)

अमानत षजानाँ थे हवालगी दिषण्याँ नैं दिया

तीके वास्ते मिती माह बुदि 4 सम्बत 1787 ने

अरज पहुँची जो रुपया 115000)- दिषण्याँ ने दिया

का सो हुकम हुवा सीगे दरबार षरच कैं दाषिल

करी रुपया 115000)-

मारफत राजा अयामल १०००००)

बैसाष बुदि १ सम्बत १७८६ रुपया ६४०००)

बैसाष सुदि ११ सम्बत १७८६ नैं ६०००)

मारफत दादूराय की साहुराजा ने हुंडी

भेजी मिती जेठ बुदि १३ सम्बत १७८६ रुपया १५०००)

(cont.)

5th February 1749

सम्बत १८०५

मिती फागण बुदि १४ वावें मिती तपसील जैल ने

मारफत राव केसोदासषत्री की दिषण्या नै भेज्या

थान	जोड़ी	दाणा
१६३	२	२

(Cont.)

4th March 1748

किर किरा षानां थे वाके बैसाष बुदि २ सम्बत १८०४

ने दिषण्या ने भेज्या कीमंती

साबिक ५२०६ ॥७॥

थांन १२२ जोडी २ दाणा २

जौहार ३६०२ ।।।)

थांन ५ जोडी २ दाणा २

कलगीजडाऊ कीमती १६३८) थांन ३
२८०)
१)
६६२)
१)
२८५)
१

सरपेच जड़ाउ कीमती ६८३) मोती अवेजे कीमती ५०)
१
दाणी १

पोरची जड़ाउ कीमती ८०३ ।।।)
४६०० ।।।)
१
जोड़ी २
२३३)

(Cont.)

धुगधुगी जड़ाउ कीमती ५१८)

थान १

मोती कीमती ५०) दाणो १

कपड़ो ४४६४।।।७ ।।थान १२६

तोरा १० कीमती [redacted] साबिक २५०६ ।।।) थान ६०

तोरो कीमती साबिक २०२) तोरा १ कीमती साबिक २५६)

थान ६ थान ६

तोरा १ कीमती साबिक २०२) तोरा १ कीमती साबिक २५६)

थान ६ थान ६

तोरा १ कीमती साबिक २५८) तोरा १ कीमती साबिक २४२)

थान ६ थान ६

तोरा १ कीमती साबिक २०१) तोरा कीमती साबिक २८०)

थान ६ थान ६

(Cont.)

तोरा १ कीमंती साबिक २०६ ।।। ≡ तोरा १ कीमती साबिक २९० ।।। ≡
६ थांन ६

तोरा कीट का

कीमती ४३४ ।।। ≡

थांन ३०

कीट सवाई जेपुर की द्र १६ ≡ मुकरड़ा २०६ ≡

अबरा कीट का बाबत कुळता जरी का द्र १५।।।) मुकरड़ा ९० ।।)

थांन १२ थांन ६

चीरा कीट का द्र १५) मुकरडा आलम कीट का द्र १०) मुकरडा

४५) थांन ३ ३०) थांन ३

फेटा कीटका कीमंती ५८)

थांन ६

थिरमा बुंटादार ४२८)

द्र ४५) द्र ४२)

४ २

द्र ४१)

४

(cont.)

सबागा कीमती १०८४=।। थान १६

साड़ी जरी वगेरह कीमती साबिक ४६७।=।। लहेरदार तासजरी ४५९)
७

थान ८

३५)	४५ ।।)	४२)	७८)
१	१	२	२
५९ ।।)।।	५५ ।।।)	६०)	५४)
१	१	१	१
५९ ।।)।।	५७)।।	५०)	
१	१	१	
९४=)	६५)		
१	१		

घाघरा मसरू बूंटादार कीमती ८५) १

कुड़ता जरी कीमती ५५ ।।।=

काचल्या नैं १

(cont.)

तोसाषाना थे वाके भादवा सुदि ५ सम्बत १८०५ नै

राव मलार ला उमरावा ने बगरू में भेज्या तेक

ठाही तीथे नाव लिष्या नही कीमंती १६८२॥) थान ४१

तोरा दिया त्यानैं कीमंती १२१६) थान २६

आलम कीमंती १०४) थान ५ मसरूबूंटादार १५४) थान ४

म्हमूदीमुकैसी २५३) का थान ४ अबरा बाबत जामां का मुकरडा १६०) थान १

फैंटा थान २१६) ५ बालाबंदी कीमंती १२१) थान ५

पायजामावार जरी कीमंती २०) थान १ सरपेचमुकैसी ६) थान १

सिरोपाव ५ जोडी दिया कीमती ४६६०॥)

फैंटा २१६॥) थान ५ चीरामुकैसी थान १५

१६) थान १

आलममुकैसी थान ६५) ४ म्हमूदी मुकैसी थान १६४॥) ५

मिती बैसाष सुदि ३ तोसाषाना थे दिषण्या नैं जो जाटा

की तरफ मलार आयो तब राव केसोदास सिरोपाव ले गया

थान ८५

आलमजरी कीमंती १६०॥= थान २१ चीरा मुकैसी कीमंती साबिक ३६॥) थान ४

सरपेच मुकैसी ३६॥) थान १० म्हमूदी मुकैसी ३६५।=) थान २५

फैंटा ५४१॥) थान २५ बणारसी कीमंती ६५= थान ३

(Cont.)

गुजराती ३१४।७

थान १६

मुकेशी ४२।)

थान

२

आगरा जरी कीमती २०)

थान

१

(Cont.)

सम्बत १८०५

मिती पोस सुदि १४ जो दिषण्या में रावकेसोदास नैं भेज्यो

जो सिरोपाव २५ ले गयो कीमती ११५५१) थान ७५

आलमजरी कीमती थान चीरा मुकेसीकीमती १७०)
१५८१) २१ ४

म्हमूदीमुकेसी फैंटा ३६८॥।=)

४५५।=) थान २५ २५

मुकेसी गुजराती १८२)

१७६॥।=) थान १२ थान १३

मिती पोस सुदि १५ किरकिराषानां थे दिषण्या नैं

माल भेज्यो राव केसोदास की साथ कीमती ६४३८॥।)॥

थान ८५॥ जोडी ८ गज १॥=।

जवाहर ३८२१॥।) जोडी

पोहची जडाऊ कीमती ३१३५) जोडी ८

४०७॥।=) ५६)
१ १
५०७) २६७)
१ १
३०४) ६०६)
१ १
५०६) ४४८=)
१ १

करण फूल जडाउ कीमती ६६८॥।) जोडी १

कापडो २६०७)॥ थान ८६॥ गज १॥=।

तोरा १३ कीमती २३०२=॥ थान ६०॥

(Cont.)

तोरा कीमंती साबीक २११।) तोरा कीमंती साबिक १२६)
१ थान ७ १ ६॥

तोरा कीमंती साबिक १८२।) तोरा कीमंती साबिक १७४।।।)
१ थान ७ १ ७

तोरा कीमंती साबिक २०४।≡ तोरा कीमंती साबिक १७५।।।)
१ थान ७ १ थांन ७

तोरा कीमंती साबिक १५६≡ तोरा कीमंती साबिक २०७।।)।
१ थान ७ १ थान ७

तोरा कीमंती साबिक १८५।) तोरा कीमंती साबिक १६०।=
१ थान ७ १ थांन ७

तोरा कीमंती साबिक १५३।।= [redacted]
१ थान [redacted]

[redacted]

बागा २ कीमंती ३०४।।।= का थान ६
गज १।।१।

टूप टाजरी ८१) साडी जरी १०५।) थान २
२
अबरा पा[redacted]जामा तारजरी काचली २ नै कुडला जरी [redacted]

बाबत घाघरा कीमंती १०८) कीमंती ६।।=
१।।=।
सम्बत १८०७
मिती फागण सुदि ४ ने रुपया ४२५३०००
फरद १ रुपया ४००००००
फरद १ रुपया ७६५०००) खे २५३०००)

(Cont.)

सम्वत १८०८

मिती पौस सुदि 12 मलार वगेरह दिषण्या कने दिवाण

कन्हीराम ने भेज्यो सो सिरोपाव लेर चाल्यो

थान ४ ६

सिरोपाव १ कीमंती साबिक १३८ ॥) थान ४ | सिरोपाव १ कीमंती साबिक १२४) थान ४

आलमफरकशाही १८) १ | कैटा गुजराती कीमंती १६) १

म्हमूदी ७६) थान १ | मसरूबूंटादार २५ ॥) १

ई मुवाफिक का सिरोपाव व थान ४ का सगला के

सिरोपाव १ कीमंती साबिक १३४) थान ४ | सिरोपाव १ कीमंती साबिक १३६ ॥) थान ४

सिरोपाव १ कीमंती साबिक १३० ॥) थान ४ | सिरोपाव १ कीमंती साबिक ११६) थान ४

सिरोपाव १ कीमंती साबिक १२६) थान ४ | सिरोपाव १ कीमंती साबिक १२६) थान ४

सिरोपाव १ कीमंती साबिक १३३) थान ४ | सिरोपाव १ कीमंती साबिक ६६ ॥) थान ४

सिरोपाव १ कीमंती साबिक ६१) थान ४ | सिरोपाव १ कीमंती साबिक ६४ ॥।) २

(Cont.)

सम्बत १८०६

मिती माहा बुदि ८ ने दिषण्या नैं मारफत दिवाण

कन्हीराम की लार भेज्या हस्ते नानीगराम

थान ५८

म्हमुदी मुकेसी १६६

६६३) ३८॥) ६६५) ४०)
१ १ २ १
६७०) ५०) ४५) ७४)
२ १ १ १
५४॥।ऽ ७१॥) ४६६)
१ १ १
३६६) ३८॥)
१ १

चीरामुकेसी

थान ५

२१) ७॥) २०)
१ १ १
१६) ८)
१ १

आलमजरी थान १०

१४॥) थान ७ १३।॥) का २

फैंटा थान १४

गुजराती ५ मुकेसी ६

(Cont.)

४५) २४) २६) ५६।)

१ १ १ ६९

२०) १५) ५ ८)

१ १ २

१२)

१

बालाबंदी गुजराती २

कीमती ८)

१

कीमती १८)

१

सरपेच मुकेशी ५

६९) (७॥)

१ १

५) ३)

१ १

७)

१

मसरू बूंटादार थान ६९

२२) १८)

२ १

२०)

३

(Cont.)

20th February 1753 25

सम्बत १८०९

मिती फागण बुदि ३ नें दिषण्या नें माल भेज्यो मारफत

दिवाण कन्हीराम

थान १९९५ दाणो १

जोहार कीमंती ११८६।)

थान ३ दाणो १

सरपेच तिलाई मीनामुरसाका-रीका थान २ कीमंती साबिक ८५७॥)

कलंगी तीलाई मीना-मुरसाकारी कीमंती साबिक २७८॥)

थान १

कीमंती साबिक ३५१)

मोती कलंगी का अवेजानें कीमती साबिक ५०९॥) १

कीमंती ५०) दाणो १

कपडो थान १९२

तोरा कीमंती साबिक १३४०॥) ६

थान ४६

तोरो १ कीमंती साबिक ११३) थान ६

तोरो १ कीमंती साबिक २९९॥) ६

तोरो १ कीमंती साबिक १८०॥) थान ६

तोरो १ कीमंती साबिक १६८।) थान ६

(Cont.)

तोरो कीमती साबिक १५३ ॥) तोरो कीमती साबिक २५४)
१ थान ७ १ थान ७

तोरो कीमती साबिक १९५)
१ थान ७

तोरा रंगीन बूटे णाम कीमती १०३ ॥)
२ थान १४

आलम कीमती १६८) कुडता कीमती ५५ ॥)
२ ४
फेंटा कीमती साबिक १०) बालाबंदी १०)
थान २ २

गोसपेच थान सरपेच कीमती ५
६८) २ थान २

सवागा ७ कीमती साबिक ६२७।= थान १४

साडी कीमती साबिक ४९९।= अबराधाघरा का ४३८)
थान ७ ७

मुकेशी द्र १००) जरी का कीमती मुकेशी द्र जरीका
२८९।= ७५)
मुकरडा २००) मुकरडा कीमती कीमती २१३)
२२५)
का थान ५ ३ ४
२
दफे थान ८५

थिरमावसमी बूंटादार २८४ ॥= छींट कीमती साबिक ७७८३।=
थान ११ थान ५९

चीरा लहेर का १५ (Cont.)

30th March 1753

सम्वत १८०९

मिती चेत बुदि ११ नै दिरवण्या नै सुबादार

मलारराव वगैरह नै मारफत दिवाण कन्हीराम की

कीमंती थांन ४८ आलमजरी कीमंती
१५४९५

म्हैमुदी मुकेसी द्र ६५।।।) मुकरडा साबिक ९९१)

२९९३) थांन ४ ३

बालाबंदी द्र १२) मुकरडा चीरा रंगीन द्र १०) मुकरडा

४८) की १००) थांन १०

फैंटा मुकेसी द्र मुकरडा ४७) छींट द्र ८।।)।। मुकरडा

२३ ।।) थांन २ २८।।>।। थांन ३

थिरमा द्र मुकरडा ११५> गोसपेच द्र ५) मुकरडा २५)

३८।> का ५

३

गाढी म्हैताबी कीमंती लैंहगा ताश जरी द्र ९०)

१३८ ।।> मुकरडा का
४२०)

थांन थांन

६ ६

(Cont.)

सम्वत १८१०

मिती पोस सुदि १५ ने मुवाफिक फरद रुपया

फरद करार पोस सुदि ५ नैं

बीठल जे देत आयो रुघनाथ

राव मलारराव जे पा आगा की

तरफ सो आवा तीनैं मिजमानी

मा सीगे षरच १५००)

फरद करार पोस सुदि १४

बिकट [redacted]सावत्री क्रसन जो तसी

वा क्रसन वेषना बालकिसन

बैं दिववा पौराणिक तरफ

राव रुघनाथराव मलारराव

का आया त्यानैं दिवाया ५००)

सीगे पुन्ये षरच बैं

रुपया ५००)

फरद करार पोस सुदि ४ की राव रघुनाथ

मलारराव जे पी आपो दिषणी त्याकी मिजमामी

वा वाजे षरच नैं सीगे षरच रुपया २००००)

P. 443-65
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

L.N. 10

सम्वत १८१५

मिती आसोज सुदि ६ नैं मुवाफिक फरद जो

दिषण्या नैं बरवाड़ा की मामलत का रुपया मारफत

राव बिकरमादीत की देणा ठहरना त्यामैं

रुपया २०००० हाल दिवाण कन्हीराम देणा

ठहराया त्या की हुंडी सेठ धनपुर की कराय भेजी

तींनि रुपया १८००० तो राजवता के पैंजकत की

तहसिल मारफत लखीराम नारायणी की का अर

रुपया ४०००) राव मजकूर के मुकरडा रुपया २२०००)

तो प्रबाहारा दिवाया अर रुपया ८०००) असल

अर रुपया २४०) हुड्‌ावण का मुकरडा ८२४०)

सेठ धनेपुर का देणा सो चाहें सो ८२४०)

सीगे षरच है (अस्पष्ट) रुपया ८२४०)

मिती काती सुदि २ नैं मुवाफिक फरद

करार काती सुदि २ की कितावा रुपया (अस्पष्ट)

फरद १ दिषण्या नैं षरचा मैं देवा वास्ते हुंडी प्रसराम

की रुघनाथ राव मलारराव के लसकर कराय भेजी

(Cont.)

दिवाण कन्हीराम कनैं २०४५०)

असल हुंडी हुंड वणिका

३००००) द्र १॥) मुकरड़ा ४५०)

वो वीगै षरच दै दनौं रुपया ३०४५०)

फरद १ मलारराव की मामलत म्धि जुमल रुपया ४६७५००)

दै मारफत दिवाण कन्हीराम की

प्रागराम कनैं दिवाया रुपया १६१०००) वो

वीगै जमीयत षरच दै रुपया ऐक लाष

इकनाणवहजार रुपया १६१०००)

फरद १ जो प्रागराम कुकडा कनैं मलारराव ने

रुपया दिवाया त्यां की निसा देबा दै वास्तै

मुसारनअल्हे राव की लार गयो सो दरबार

तुं हुकम रुपया ६०००) को हुवो सो चाहैं

वो वीगै षरच दै रुपया ६०००)

(Cont.)

फरद १ दिषण्या नैं प्रसराम कुकडा कनैं हुंडी

दलाई सो सीगे जमीयत षरच कैं दाषिल

कराया चाहें रुपया ११६५००)

मलारराव नैं सम्बत १८११ मैं हुंडी रुपया १०००००

षांडेराव नैं सम्बत १८१० मैं जुमल ५००००) कैं मारफत सीताराम की रुपया १६५००) सो सीगे जमीयत षरच कैं रुपया ऐक लाष साढ़ा नुगणीस हजार दनो ११६५००)

फरद १ जनकूजी सिंध्या नैं प्रसराम कुकडा की ईबतदाय रुपया तीन लाष की ३०००००) दिषण्या की मामलत का देणा बा तीन्धि सो चाहें से सीगे जमीयत षरच कै (अस्पष्ट) रुपया तीन लाष ३०००००)

P- 465-68

D. C.

Vol. IX

J. S. A. B.

L.N. 11

दतुजी पटैल दिषणी

सम्बत १८१५

मिती मागश्र सुदि ८ नैं मारफत फत्तेराम बजकी

जीनषानां थे दिया

राम १ थांन २६

षोडो नीलो राम १

रबत थांन २६

च्यारजामां मारू बूंटादार का रूवा का थांन ३

वगेरह थांन
२३

जौट कीमंती	दुमची कीमंती
४०)	१८)
१	
पोसबंध्य २०)	१
१	

मिती पोस सुदि १५ वाले मागश्र सुदि ८ नें दिषण्यां नें

व दतुजी पटैल वगेरहने हस्तें षुस्यालीराम

फत्तेराम बज मुताफिक तफसील जैल

थांन ६ जोडी १ गिह १।।।≡

दतुजी पटैल नें थांन ५

थिरमायसमी बूंटादार ६ २५।।।७ छींट ६ १०) थांन २
२

दतुजी पटैल की बहु नें दिया

थांन जोडी गिह १।।≡
२ १

(Cont.)

पोहंची तिलाईमुरावारी जबागानें

कीमती २२२।।।) थान २ ग्रह १।।=

जोडी १ साड़ी जरी की २५ =।। २४।।।)
१ १

कुड़ता जरी ८ गज ५।।।) मुकरजा १।।=

मिती सावण सुदि ३ वाले असाढ़ सुदि ११ नै मारफत

फतेराम बज री विरविराषाना थे थान ६

सिरोपाव थान ८

आलमजरी १४।।) म्हमुदी मुटेपी ३८)
१ १

फेंटा बरणारसी कीमती २।) बालाबंदी गुजराती १८)
१ १

अलाप चासादा १२) छीट ५ ६।।)
१

चीरा रंगीन थान २

१०१)

P-468-70

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 12

दानुजी पंडित अंताजी मानवेकार का कौटा बेटा नैं

सम्बत १८१२

मिती भादवा सुदि १ वादें असाढ़ सुदी ८ नें लिखिया

षाना थे थान ४

आलमजारी थान १ फैंटा मुकेसी ६।>
४॥>
१
म्हैमूदी मुकेसी कीमती मसरू बूंटादार
११) १५)

१ १

P- 471

D. C.

Vol. IX

J. S. A. B.

L.N. 13

दामोदर म्हादेव का पंडित

सम्बत १८०७

मिती फागण बुदि १४ नै श्री जी जैसागर मैं नाव

सवार होय राजामलकी हवेली मैं पधारना दामोदर

पंडित के गो नजर किया तोरा २ राषो १ पाछै हाथी

सवार होय दाषिल हुवा

मिती फागण सुदि २ नै बाबत राजतिलक को सरंजाम

लेर आया तदि बिदा का दिया थान २६ ॥

मुसारनअल्हे नै षासगी कीमंती ३५३ ॥ऽ

थान ५॥

जामो जोला को मुकेसी २०२)   नीमा सेला कीमंती १६) १

थान १

फैटो ७०)   आलम मुकेसी थान १

तुररो १०॥) १   ईजारनै मसरु कीमंती ७) थान ॥

गाठ बाघ लार ले गया सिरोपाव ८ का [redacted] थान २४

कीमंती साबिक २७॥।ऽ   कीमती ३६॥) २

थान ३

कीमंती ४०॥ऽ २   कीमंती ३६) २

कीमती ३६।॥) २   कीमंती ३६) ३

कीमंती ८४) २   कीमंती २७।॥) २

[redacted] (Cont.)

सम्बत १८०७

बालाजी बाजीराव की त्रफ सु आया

मिती फागण सुदि ४ नैं बाबत सवाई जेपुर आयो

सो मिजमानी का भेज्या रुपया ५१८)

रोक ५००) मिठाई $\frac{१}{२}$ का १८)
खरा

मुवाफिक फरद करार मिती फागण वदि ६६

सम्बत १८०७ बाबत राजतिलक के साज ले बालाजी

बाजीराव की त्रफ सु आया

P- 473

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 14

नानाजी दिषणी

कासिद

सम्बत १८०८

मिती भादवा सुदि ७ नै कासिद की जोड़ी नै रुपया ८)

सम्बत १८१०

मिती माह सुदि १२ नै कासिद की जोड़ी १ नै

बिदा का रुपया १०)

सम्बत १८११

मिती माहा सुदि ११ कासिदा की जोड़ी नै

ईनाम का १०)

सम्बत १८१६

मिती बैसाष सुदि ६ नै कासिदा की जोड़ी नै १०)

सम्बत १८१७

मिती मागश्र सुदि ७ नै नानाजी का कासिद पुन्या

नै आया तीनै १०)

P - 532-33
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

L. N. 15 22nd August 1759

नानह पंडित नुऊनवीस तालक गोबिदराम

पंडित मुकासदार सबा अजमेर का

सम्बत १८१५

मिती भादवा बुदि ऽऽ ने बाबत मुबारन अल्हे

जनकूजी वने जाय पको तो हजूर सलाम

नै आयो तीवो सिरोपाव कीमती पाबिक ३२)

थान ३

P-533-34

D. C.

Vol. IX

J. S. A. B.

L. N. 16

9th June 1757

नारूजी संकर सुबादार घाषी (झांसी) का

सम्वत १८१३

मिती असाढ़ सुदि ८ नैं मुकाम सवाई जेपुर नारूजी

संकर वगैरह का मिलवा के वास्ते राजा हरसहाय दिवाण

कन्हीराम की राजश्री नैं बागडेरा का सोनु ठे गया सोनु ठे

अतर बुकतोई बीड़ा वगैरह मदाराती राजाहरसहाय

व दिवाण कन्हीराम की करी सोनु ठा थे राजा हर-

सहाय दिवाण कन्हीराम तो हजूर आया सो हजूर

सु मारह दरबार की तयारी फरमाई फेर षबर

पहुंची नारुसंकर वगैरह हजूर आया सो

राजाहरसहाय वा दिवाण कन्हीराम ड्योढ़ी

स्यू पोल ताई पेसवाजायलिवाय ल्याया दिवाण

षानें आप बैठ्या चढी ।। पाछै अंदर बुलाया सो

श्री जी सरजता में मसनद परि षड़ा का सो षड़ा

षड़ा ही मिल्या अब क्या सुत्र फदाइ णी बैठन्या

ण वा घड़ी बैठना फेर सुठा चंद्रमहैल में पधारना

(Cont.)

श्री जी नारुजीर

अणंदराव (वाबले) आपो तात्या को भतीजो

राजाहर हाय दिवाण कन्हीराम

नौनुठे घडी ।। बिराज्या अतर धुवबोई लगाई पान दिया

डेरा नैं सीष हुई तौरा वगैरह मुवाफिक जैल दिया

नारु जीर अणंदराव

सरपेच तौरा सरपेच १ तौरा १

१ थान ६

आपो गंगाधर तात्या को भतीजो

सरपेच १ तौरो १

आपा तात्या नैं कर सिराषानां थे थान ७

सरपेच तिलाई मीनामुर ावारी कीमंती १५८॥) थान १

तौरो १ कीमंती २॥) थान ६ आलम ७५) थान १

म्हेमूदी मुकेसी ६०) १

केटो मुकेसी ४०) १ मसरु बूंटादार १३१) १

बालाबंदी गुजराती सरपेच १३) १

६ ॥।-

१

(Cont.)

Th 5476

11th June 1757

नारूजी [illegible]कर [illegible]बादार घाणी (झांसी) का

[illegible]म्बत १८१२

मिती असाढ़ [illegible]दि १० नै श्री जी तीसरा पहर का

[illegible]रह दरबार की तयारी फरमाई अरदिवाण

कन्हीराम नै नारू[illegible]कर मुता[illegible]दार झाती का

वगैरह का डेरा की राजल्या के बाग [illegible] मो

उठा[illegible] बुलावा ने भेज्या [illegible]ो वाला आवा

की षरब (खबर) पहुंची सो राजा हर[illegible]हाय

गणे[illegible]पोल क्ने जाय खड़ा रहया नारू

[illegible]कर वगैरह घ[illegible]ी च्यार दिन [illegible] आया [illegible]ो

राजा हर[illegible]हाय व नारू[illegible]कर वगैरह दिवाण

षानैं आया बैठ्या अर श्री जी [illegible]रबत। मैं

पधारया तब नारू[illegible]कर वगैरह ने अंद्र बुलाया

नारू[illegible]कर आपो तात्या को भतीजो

अणंदराव ओर आ[illegible]ामी दिषण्या का

तब [illegible]रबता मैं श्री जी की हजूर गया तब

ताजीम दीई अर [illegible]ानद के अध[illegible] नीचे

बैठाण्या [illegible] बार बिराज्या फेर चंद्रमहल

मैं बिराज्या फेर [illegible]ीष दीई ।

(Cont.)

मिती असाढ़ सुदि १३ नैं मुवाफिक फरद नारूसंकर

वा आपो ताम्या को भतीजो वा अणंदराव

त्रफ रावरूघनाथ की आया त्यांकैं मिजमानी भेजी

हस्ती गुजरमल ?ग ही रूपया २१२०॥≈

ऐक रूपया भेजा २०१०)

मिठाई मण १०१॥ कीमंती रूपया

मिठाई पेड़ा लाडू कटाव

वगैरह पचमेल कीमंती रूपया ११०॥≈

नारूसंकर के १०००) आपा के रूपया ५००)

अणंदराव ५००) अयी त्रा ला १०)

म्ये मुसारन अले नैं रूपया १०६०॥≈

मिती असाढ़ सुदी १ नैं मुवाफिक फरद नारूसंकर

वगैरह त्रफ रूघनाथराव व मलारराव की आया

त्यानैं षरच का ?गै षरच नैं रूपया ४०००)

राव रूघनाथ की त्रफ नारूसंकर २०००)

त्रफ रावमलार की अणंदराव वा आपो पंडित २०००)

म्ये मुसारन अले नैं रूपया २०००)

(Cont.)

मिती असाढ़ सुदि 15 ने श्री जी सवारी

(अस्पष्ट) गेह ड्योढ़ी होय किसनपोल होय

किसनकुंड कने होय लूणकरण्या का बाग नैं

दाहणे दिवुंड कने होय (अस्पष्ट) की नंदीकने

डेरा षड़ा हुवा सो नारुकर की राजल्या का

डेरा थे पहली आप बैठया का सो श्री जी हाथी नैं

पालकी सवार होय नारुकर सराय चाबा रे

ड्योढ़ी ताईं पेवा आया तब पालकी थे उतर

अंद्र पधारया मसनद प्र जाय बिराज्या मसनंद

के नीचे त्रफ दाहणी नारुकर नैं बैठाना

(अस्पष्ट) घड़ी 1 बिराज्या फेर षिलवती में राव टी

में श्रीजी वा नारुकर वा राजाहरसहाय दिवाण कन्हीराम

वा तासी पंडित जाय बैठया घड़ी 2 बतलाया नारु

कर नजर किया

तोरा 1 रकम जोंहार 1

हाथी 1 घोड़ा 1

सो श्री जी माफ दिया अर

तोरा 2 का थान (अस्पष्ट)

(Cont.)

अर श्री जी नरू ठाकर ने दिया

तोरा ला थान सरपेच जडाउ
2 12 कीमंती 2460)

तोरा तोरा
1 1
कीमंती कीमंती
1984॥॥5 1245॥

6 9
हाथी मषतूलगज घोडोरास
1 1

मिती सावण बुदि 2 ने बाबत बिदा ला जीनषानां थे

दिया रास 1 थान 32

घोड़ो कीमंती रास 1 रषत थान 32

न्यार जामां सिकलाती 6॥) बाग सिकलाती कीमंती 1)
1 1
मूंडणसिकलानी ।॥) जेरबंध सूत को))
1
फरावी मसरू याद ॥) 1
1
चीटी ताफ्ता द्र ।5
24
लगाम थान 1
1
मिती सावण बुदि 12 नै मुवाफिक फरद जो नारू

ठाकर ऋफ रुघनाथ की हजूर आया त्यनि

(Cont.)

दिवाया रुपया 34000)

नारुलकर 3000) केसोपंडित 1000)

रोक 25000) घोडा का रोक 5000)

चिमा आपा नै 1000 पुराणीक रघुनाथराव का 2000)

यो नीगे षरच दे म्ये मुतारन अर्ले नै रुपया 30000

सम्बत 1815

मिती मागश्र सुदि 1 नै जीनषाना थै भेज्या

मारफत फतेराम वजकी

रास 1 थान 16

घोडो हाली 500) रास 1 रषत ह्यारजामां वगैरह थान 16

मिती सावण सुदि 3 वांदे असाड सुदि 11

नै सिरकिरा षाना थे दिया पोस बुदि 6 नै

थान 6

आलमजरी कीमती 15) म्हेमुदी मुकैसी कीमती 36)
1

फेंटा गुजराती 25) चीरा रंगीन 10।)
1

थान
1

छीट द्व 6॥)
2

P-534-43
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

नारूजी विर ला लाल

सम्वत १८१४

मिती काती बुदि १३ नै कासिद नै ५)

सम्वत १८१३

मिती आषाढ़ सुदि १५ नै १५०)

कलावतानै ५०) चोपदार का लैता ने रूपया १००).

नारूजी पंडित कारकूनै

सम्वत १८१६

मिती जेठ बुदि ३ नै मारफत मिश्र श्री किसन

की कीमती साबित ६२) थान ४

थिरमायामी बूंटादार द्र

साबित मुकरड़ा ४५) मुकरड़ा

२२॥)

थान २

कीट द्र ८॥) मुकरला १७) की थान २

नारूजी पंडित मुकादार रौक

सम्वत १८०६

मिती मागश्र बुदि १५ नै सिरोपाव कीमती साबित ६८॥)

थान ३

P-545
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

L.N. 10

नारसींघराव दिषणी

सम्वत १८१२

मिती जेठ बुदि १ थाकें फागण बुदि ८ नें दुसाला

थिरमां का भेज्या थांन ४

द्र २८।।) द्र ३०
२ २

मिती भादव सुदि १ नें वलि माहा बुदि ३ नें भेज्या

थांन ४

थिरमा २ छीट द्र १२।।।)
२

वलि असाढ़ सुदि ८ ने किरकिराषांना थैं

थांन १

गिरोसाव कीमती मारू बूंटादार
२०)
नाबिक ५८।=
१

थांन ३

P. 549
D.C.Vol. IX
J.S.A.B.

L.N. 19

2nd March 1753

ताईस्म पाऊ जी संकराजी पंडित का -

सम्वत १८०९

मिती फागण सुदि १२ नै बाबत मुसारनअल्है का

बाप की मातमी का सिरोपाव कीमती साबिक ४०)
२

P. 551

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. २०

प्रोतम पंडित दिषणी म्हादेव पंडितका

बेटा बाबूराय का भाई नै अफ रुघनाथ राव

सम्वत १८०७

मिती फागण सुदि २ नै बाबत बिदा का

बवशा षा गी कीमंती साबित ३०७)

थांन ५॥

सम्वत १८१४

मिती आषाढ़ सुदि ३ नै बेहला थे मु्‍तारनअल्ले

वा कृ.ाजी नायक वा उदेरांम नायक नैं

मिजमानी का भेल्यो मारफत भट सदासीव

रुपया जुमल ३००) मुतारनअल्ले १००)

मिती आषाढ़ सुदि १० नै बाबत बिदा का

सिरोपाव मारफत सदासीव की थांन

मुतारनअल्ले नैं सिरोपाव कीमंती

साबित ८५॥।) थांन ४

आलमजरी ८।) (१) — म्हैमूदी मुकेशी ३५॥) (१)

फैंटामुकेशी ३०) (१) — बालाबंदी १२) (१)

हमराव पंडित वईस्म अताजी नैं थांन ३

छींट द्र १०) (२) — हीरारंगीन १०॥।) (१)

P. 555-56, D.C.Vol. IX, J.S.A.B.

L.N. २१

कवर फतेसींघ राजा साहुजी दिषणी सतारा का

बेटा का चाकर फुटकर चौपदार वगैरह

सम्वत १७६१

मिती पोष सुदि ११ मुवाफिक चिठी जौ मुषारनअली

का चौपदार ४ आया त्यानैं दोय नैं तो

आगे षरच का रुपया २५) दिया अरदोय

नैं और दिज्यो मुवाफिक फारद करारमिती

काती सुदि ऽऽ सम्वत १७६१ रुपया २५)

मिती जेठ बुदि ६ नैं मुवाफिक चिठी कवर

फतेसींघ राजा साहु का बेटा का आदमी

आया तीनैं दिज्यो मुवाफिक फारद करार

आसोज सुदि १५ सम्वत १७६१ रुपया ५०)

P. 561

D.C. Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 22

कवर फतेसंघ राजा साहुजी दिषणी सतारा का बेटा

तोरा वगैरह

सम्वत १७६६

मिती जेठ बुदि १४ रतनगढ़ थे मारफत राय हरप्रसाद की

भेज्या तोरो १ कीमती साबिक ४७६) थान ६

मगरबूटादार कीमती ७७) १ | सेमुदीमुकेसी ११५) १
फैटा गुजराती कीमती ५१) १ | बालाबंदी गुजराती १८) १
छीट रु १७) मुलरा ३४) | अलागचा बूंटादार कीमती ४२) १

थान २

आलमपुकेसी कीमती ५७) १ | जामांवारपसमी बूंटादार कीमती १४६) थान १

फतेसंघ ही लिष्यो बाप को नाम लिष्यो नहीं

सम्वत १७७३

मिती जेठ सुदि १४ तथा १५ किरकिराषाना थे बाबें

माघश्च सुदि ७ तथा ८ नै मारफत राजा अयामल

हस्ते प्रतापराव कवर फतेसंघ राजा साहुजी का

बेटानैं कीमती १०३२॥= थान १५

सरपेच जड़ाउ कीमती ४४१॥= थान १

तोरा २ कीमती ५८१ थान १४ तोरा १ कीमती साबिक २८८)

तोरो १ कीमती साबिक ३०३) थान ७

बालाजी पंडित

संवत १८८५

मिती फागण बुदि ५ नै सीलिषानथि भेज्या मुकरणा

कुबजा १ थान १

तरवार तेगा सीरोही की कबजा षोली तरवार की

मनाई की थान ५ ५

मिती फागण सुदी २ नै सीरलाषानां थै मारफत नानूराम

चौधरी

कबजो १ थान १

तलवार कीमती साबिक २३२४) (अस्पष्ट) बुलगारी हलकारी

१४) थां कबजो १

मिती फागण सुदि ४ नै (अस्पष्ट) महरबानगी

भेज्या तोसाषाना थै थान १२

सिरोपाव १ कीमती साबिक ४८॥) थान ३

सिरोपाव १ कीमती साबिक ४५॥= थान ३

सिरोपाव कीमती साबिक ८८।)

६०॥=॥ थान ३

P-563-64
D.C.
Vol IX
J.S.A.B.

L. N. २४

11th April 1730

सम्वत १७८६

मिती बैसाष सुदि ५ नैं सिरकारषाना थैं राजा साहू

वगैरह दिष. णा नैं भेज्या हवाले दीपचंद कु माणी

तीमि बाई हीरानमाला मोत्या की कीमती २५००)

थान १

P = 565

D. C.

Vol. IX

J. S. A. B.

L.H. 25 — 25th March 1756

बालाजी गोबिंदराव पंडित को बेटा

सम्बत १८१२

मिती फागण बुदि १० नै बाके पोष बुदि ८ नै

बाबत मुख्तारनसलेह का बाप की मातमी को

सिरोपाव कीमती साबिक ५५ थान ३

P. 569
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

बालाजी बाजीराव

सम्वत १८०७

फुटकरचाकर वा नामीद बालाजी की

सम्वत १८०७

मिती फागण सुदि ३ नै बाबत राजतिलक का हाथी

नताशातीक (अस्पष्ट) का मारफत नै रूप्या १५)

मिती असाढ़ सुदि १३ नै नामीद की जोड़ी आई तींनै बिदा

का १०)

सम्वत १८०८

मिती भादवा सुदि ६ नै बाबत कागद हरकाराह्याथा

त्यानै बिदा का रूप्या १०)

मिती वैसाष सुदि ८ नै नामीद की जोड़ी १ नै बिदा

का १०)

मिती जेठ सुदि ३ नामीद की जोड़ी नै १०)

मिती असाढ़ बुदि १० नै नामीद की जोड़ी १०)

सम्वत १८१०

मिती आसोज बुदि १२ तथा १३ नै नामीद की

जोड़ी १ नै ८)

मुखारनअलह का भाई का नामीद ने के

मिती पोष सुदि २ नै नामीदा की जोड़ी १ नै बिदा

का १०)

मिती माह सुदि १० नै नामीद की जोड़ी नै बिदा का १०)

(Cont.)

सम्बत १८११

मिती सावण सुदि १० नै सादिदा की जोड़ी नै बिदा का १०) बालाजी बाजीराय का लिख्या

सम्बत १८१२

मिती आसोज सुदि २ नै सादद की जोड़ी नै ईनाम १०)

मिती आसोज सुदि ६ नै सादद की जोड़ी आई तींनि १०)

मिती म्हा सुदि ४ नै सादद नै ईनाम का रुपया १०)

मिती चैत सुदि ८ नै सादद की जोड़ी नै रुपया १०)

मिती वैसाष सुदि ११ नै सादद की जोड़ी नै १०)

सम्बत १८१६

मिती काती सुदि ८ नै सादद की जोड़ी १ नै रुपया १०)

मिती चेत सुदि १० नै सादद की जोड़ी १ आई तींनि १०)

मिती जेठ सुदि ६ नै सादीद नै रुपया १०)

P-569-72
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B

L.N. 27

बाबूराय पंडत

सम्बत १८०७

मिती सावण सुदि १० नै बाबत आगरा का सूबा
कीना (अस्पष्ट)खान सिरोपाव दिली सू लाया
(अस्पष्ट) षोजा तक (अस्पष्ट) तीनि मिजमानी
का १००) मिठाई मण ५ षोजतमीन

मिती भादवा सुदि ५ नै बाबत दिली सू षोजा आगरा
का सूबा की नाम बीदा फरमोन लायो ती की
लार आयो तीन बिदा का सिरोपाव कीमती साबिक ४॥)
थान ३

सम्बत १८०८

मिती मागश्र सुदि १२ नै बाबत बिदा का सिरोपाव
कीमती साबिक ३१॥) थान ३
जाबू पंडित लिष्यो

मिती पोष सुदि १२ नै बाबत बाबूराय पंडित
दिली सू आगरा की सनंद लना पायो
बिदा का मुवाफिक फरद करार मागश्र सुदि १२
नै २००)

P.572-73
D.C. Vol. IX
J.S.A.B.

L.N. 20 　　　　　　　　　　　　　20th May 1759

अणंदराम पंडित

सम्वत १८१५

मिती जेठ सुदि ८ नै मुवाफिक फरद मुतारिंन अलेह

बालाजीराव को भेजो आयो सो बिदायगीला नीगे

(अस्पष्ट) रुपया २००)

P.576-77

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. २९

बापू पंडित

म्वत १८०६

मिती फागण बुदि ५ नै मारफत माणकचंद षेटटा की

दिली भेज्या थान ८

बुहता रंगीन बूटे बा। ३ १५) चीरा लहेर वा ४
४

म्वत १८१०

मिती आसोज सुदि 13 नै बापूजी पंडित दिली थै आया

(अस्पष्ट) भट राजा दासो वा हरगोबंद लषवर

बारे पेसवा जाय ले आया ई रा दा. (अस्पष्ट) कीया

मिती आसोज सुदि १४ नै बापूजी वगेरह ने सीष दीनी फेर

बापूजी ने डेरै भेज्या

२०६४
१

सिरोपाव कीमती २००।
४

P. 578-79

D.C.

Vol.IX

J.S.A.B.

L.N. 30

गणपत पंडित बाबत रावराजा बापूजी का

सम्वत १८७०

मिती फागण सुदि १४ तथा १५ बाबत मिजमानी दिषणा नूं

आयो तब भेज्या मुताफिक फरद १५०)

मिती असाढ़ सुदि १५ नै मारफत दिवान कन्हीराम की

दीया अफ लगा़ ती पहाड़ पर पठाणा पर गया

तब घोड़ा वगैरह दीया राम १ थान २४

घोड़ो राम १ रषत अमाल पोष छींट का वगैरह
२१

तफसील नही

P.580-81

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 51 3rd October 1759

बाबूजी नायक

म्वत १८१५

मिती आ्ोज ुदि १२ जषया वीमंती २५॥) थान ३

चीरा रंगीन ६८ ॥) थिरमा म मी बूंटादार ६१६=)

१

मुवरा थान

३६) १

P. 581-82

D.C.

Vol.IX

J.S.A.B.

L.N. 32 31st July 1751

बाबुराम पंडत नै

सम्वत १८०८

मिती भादव बुदि १२ नै मुवफिक फरद रुपया २६००)

फरद १ गिषरचवैं रुपया २०००) फरद १ रोजीना ४) मुकररारी जी नाक दिवाया ६२०)

फरद १ जुमले ८०) वैं बाबत मिजमानीवा २०)

P. 582
D.C.Vol. IX
J.S.A.B.

L.N. 33 15th September 1760

पंडित बालाराव

सम्वत १८१६

मिती भादवा सुदि ६ नै मुवाफिक फरद मुजारैन खोह

का भाई टी सेन उ हुई सो दीगे पुन्य १००)

P. 582-83

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 34 16th February 1751

लालाजी पिरभू पंडत नै

सम्वत १८०७

मिती फागण सुदि २ नै बाबत मिजमानी का रूपया

मिती फागण सुदि ३ नै सिरोपाव कीमंती साबिक

३५=) थान ३

P. 583

D.C.Vol. IX

J.S.A.B.

बि०ल सहदेव (शिवदेव) पंडत नै

सम्वत १८१३

मिती सावण सुदि १ नै जीनषाना थे मारफत दिवान

कन्हीराम की दीया रास १ थान ३०

घोडो कीमती काली ७००) रास १ चयारजामा विलाती ६८॥) १

फराकी मुकरर ॥) १ षिघाड़ा मनइ सादा १≡ १

बाग विलोती कीमती १) ॥ मुषण विलाती ।।।। ·१

जेर बंध विलाती १) १ चोटी ताफ्ता ६ १≡) ११

सिरदुवाल विलाती ।।) १ बागडोर सूत की ≡ १

अपालपोष छीट ३४) १ फराकी सूत की ≡ १

षिघाड़ा कीमती ≡ १ बाग चमड़ा की १ ।)

लगाम ।।) १ अधेरी ≡ १

नाड़ी ४) २ मोहराव १≡) १

पुरा १

सम्वत १८१५

मिती मागश्र सुदि १२ तथा १३ नै ताने आगड़ सुदि ऽऽ

सिरवारषाना थे मेल्या हवाले हरनाथ प्रोहत थान १५

कुरता रंगीन अटेचा थान ४ छीट थान ६८
४ ८।) ४।।) ४।)
२ २ २

चीरा रंगीन लहेर का थान
११) ५ ८)
१ १
११≡
२

P. 583-86
D.C. Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 36

बिनायक गणेश पंडित टोला का मुकादार

सम्वत १८१२

मिती भादवा सुदि २ वाटे चैत सुदि १० सम्वत १८११

(अस्पष्ट) महाराजाश्री गिरीराज आगमी श्रीमती

तालिक १८ ॥) थान ३

P. 587

D.C. Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 37

बिसनाजी पंडत मुकातदार टोड़ा का

सम्वत १८०८

मिती काती सुदि १५ नैं बाबत बिदा का थिरमा की

दुसाली ४ ३०।-) मुकररा ३०॥5 थान २

मिती मागश्र बुदि ६(नैं जीनषांना थै बषसा घोड़ा वगैरह

राश १ थान ६

रषत कीट की वगैरह कीमती साबिक ६ घोडी राश १

डल कोटकी ३।। बणती कलाती १।।) थान १

जोट सिकलाती थान लगाम फाकी जेरबंद सिधाड़ा
१।।) १ ।।।)।। थान ४

P. 587-88

D.C.Vol. IX

J.S.A.B.

राव भावन पंडत

तोरा वगेरह

सम्वत १८१०

मिती पोस सुदि ३ नें आवत राव रुघनाथ की साथ

श्री जी सु मिलवा आया ई राम् बनदी का पर दीया

राव १	थांन १४
घोडा राव १	रषत थांन १४
जीटता वाली मुठे री तिलाई	चनारजामा विलाती कीमती ५)
कीमती ५) थांन १	१
षिघाड़ा मारू पाडा	फराकी ।।।) १
बाग १।।)	मुठणी विलाती ।।।= १
चोटी ताफता ।= थांन १	लगाम ।) १
सिरदुवाल ।।) १	

सम्वत १८१२

मिती जेठ सुदि १ नें तावे फागण सुदि ऽऽ नें भेजा

थांन ३

थिरमा मामी बुटादार	रुमाल मामी बुंटादार कीमती
कीमती ५८) ना थांन २	२०।) थांन १

रामुजी भाव न सिणगी

भाउ दिक्षणी नें

L.N. 39 16th January 1757

भवानी पंडत

सम्वत १८१३

मिती माह सुदि ११ नै मारफत दिवान नन्दीराम की जीनखाना थैं दीया

घोड़ो रास २००) हाली ४५०) ला रास १

रखतथांन १८

आरजीमा सिलाती ५) १	सिघाड़ा माइ गदा ।।) १
फराती माइ गदा ।।) १	जेर बंध वीलाती ई १
चोटी ताफता ६८ई १२	बाग सिलाती १) थांन १
मुंडण सिलाती ।।।) १	लगाम ।) १

P. [redacted] 593-93

D.C.Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 40 15th December 1760

कासीद भाउ जी का

सम्वत १८१७

मिती मागश्र सुदि ८ नै कासीद नै ८)

P. 594

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 41

भगवंतराय अनंताजी मानकर का बेटा नै

संवत १८१२

मिती सावण सुदि १ नै

वाटे बैसाष सुदि १२ नै दीया

मिलबा आया तब कीमंती सालिक
१२६ ।> थान ४

वलि बैसाष सुदि १४ नै

बाबत बिदा का सिरोपाव

कीमंती सालिक ७६. थान ३ ॥

आलमजरी ६।> फेन्टा लाफ्टा
१

कीमंती ३२)
१

सिरोपाव कीमंती मसाई

सालिक थान बूंटादार
६८) ३ ११)
थान ॥

मेहैमूदी मुदेनी मसाई सादा
७५)
५

P. 594

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 42 7th April 1751

सम्वत १८०८

मिती बैसाष सुदि ८ नैं बाबत बिदा का जो दिषण

ई दिली नै जाण पछा तो हजुर आया गणपत

की लार तीनैं सीरोसाव कीमती बाबिक ३१५

थांन ३

P. 594
D.C.
Vol.IX
J.S.A.B.

L. N. 43

राणाजी (राणीजी) भूरट्या (भोइटे)

सम्वत १८१२

मिती जेठ बुदि १ नैं वर्वि फागण बुदि ६ नैं थिरमा का

दुशाल २ भेजा थांन ४

रु २५॥ु रु २००)
२ २

मिती भादवा सुदि १ नैं

वावें माह बुदि ३ नैं हवाले वावें असाढ़ बुदि ८ नैं

बिसंभरदास षत्री थांन किरकराषांना थे थांन ४

थिरमा छींट रु १२॥) आलमजरी २०) फेंटा मुकेसी
२ २ १
कीमंती १४)
१

म्हेमूदी मुकेसी मसाइ बूंटादार कीमंती २०)
२६) १
१

सम्वत १८१५

मिती काती सुदि १३ नैं मारफत फतेराम बज की

जीनषांना थे ~~असमत~~ प्रमारा दे आयो

रास १ थांन १

घोडो कीमंती काली रषत त्यारजामा वगेरह थांन १६

६००)

रास १

P- 596-97

D. C.

Vol. IX

J. S. A. B.

L. N. 44

राव मलार

सम्वत १८०६

मिती फागण बुदि ८ ब्रसपतवार दफ्तर राव मलार

का नु टीबो आयो श्री म्हाराजाधिराज म्हाराज श्री

सवाई माधोस्यंघजी नैं यो दफ्तुर म्हाती की

हजुर का नु लिषनीं को

किरकराषाना कैं रोज नाम जमामिती फागण

बुदि ८ नैं

जोहार सरपेच जड़ाउ कीमती (८६१४) थान २ | तोरा २ कीमती ४१२।।) थान ११

सरपेच कीमती ३२८) | सरपेच कीमती २८५) | तोरो १ कीमती १५५) थान ५

थान १ | थान १ | तोरो १ कीमती २४७।।) थान ५

आलमजरी कीमती २४) १ | मानइबूंटादार ४०) १ | चीरो दिषणको ४०) १

फेंटो गुजराती १ ३०)

फेंटो गुजराती १ | दुडताजरी ५१) | दुडता जरी ८७।।) थान १ | १

(Cont.)

सरपेच जडाउ १३) बालाबंदी मसइ
१
सरपेचमुकेशी २०) गुजराती
१ १२) बूंटादार १५)
१ १

घोडा राम २ आया जमा षरच तबेला का रा सीगू लिष्यो

मिती फागण बुदि ८ सम्वत १८०७

लगाम आहनी ८ ।) थान २ बागचमड़ा की ≡ थान २

हाथी जंजीर १

हाथी न्हां महावत न दिया खाया १०) मिती

फागण सुदि ३

सम्वत १८०८

मिती माह सुदि ११ न दिवान कन्हीराम हाथ भेज्या तार्के

पोस सुदि १२ ने थान १३४ जवाहर थान ३

सरपेच तिला मुरसाकारीकीमती ६५३) कलगी जडाउ कीमंती ५७४)

थान १ थान २

तिला मीनामुरसाकारी तिलामुरसाकारी कीमंती ३०६)
१
कीमंती २६५) थान १

कपडा का थान १३१

तोरा ६ का थान ६३

तोरो कीमंती साबिक २८८२ ।।।) तोरो १ कीमंती २६३।।।) का
६ ६
तोरो कीमंती ३२८ ।।) का तोरो कीमंती २७८।।) का
६ ६
तोरो कीमंती २८८२) तोरो कीमंती ४०१ ।।)
६
थान १४
(Cont.)

कुडता का थान १४

कीमंती नही

ओर कपडाँ भेज्यो थान ५८

कीट ५० थिरमा वगेरह १८

द्र ११।) द्र ११।।।) चीरा लहर का थिरमा
२० ११ १० ८
द्र १५) द्र १७) कीमत नही ३० - २८।≡
६ ६ ४ २
४१२) २२।।।७।। २०) १६।=
१ १ १ १
२०) १८।।)
१ १
१८ ≡ २५)
१ १
२४
१

मिती भादव सुदि २ नै

जीन थानां थे भेज्या मारफत दिवान कन्हीराम

घोडाराम १० रषतथान १४५

अपालपोस कीट ३५) उरतकबीटक द्र २)
१० १०
फराली सुतकी द्र ≡ सिघाड़ा द्र ≡ थान १०
१०
लगाम ४।) बाग १५

रामकलानी द्र १) चरमीनाकी द्र ≡
१ १०
मुकणनिकलाती द्र ।।।) बागडोर द्र ≡) थान १०
थान १०

नाड़ी द्र (नहीं लिखी) पुरण द्र १)
२० १०
सफरा ललाटका द्र ।= नुकता द्र १) थान १०
१०
सिर दिवाल द्र ।।
१०

(Cont.)

सम्वत १८१०

मिती आसोज सुदि १५ नैं मुताफिक फरद किता २

करार मिती आसोज सुदि १२ कीमती स्याया २०४०

फरद १ बाबत राव मलार कैं गा वलाना गोष

(गुषराय) रायत बाटवा नैं हुंडी भेजी १०२०)

फरद १ बाबत राव मलार के हुंडी भेजी जो हुड वण

सुधा मारफत कन्हीराम की भेजणी राव मलार

कैं घाव लाग्या त्यांकी षैरामत बाटिबा नैं

हुंडी भेजी १०२०)

मिती पोस सुदि २ नैं जो थी जी सू मुक नैं दी को

डेरा मिलवा आया आबर मलारराव रघुनाथ

की तबजीनषांना थे दिया

राव २ थान २८

घोडा २ रषत २६

जीट इयाकी २

वजन ३८)४ थान १ वजन ४२)२ थान १

सादा

ग्यारजामा मगइ बूंटादार का फराकी कीमती २) १

का अबरी सादा कीमती ११॥) २

(Cont.)

सिघाड़ा कीमती 2 2।) बाग द्र 2 1।।)

मूंछण द्र 2 ।।।ऽ चोटी 12 ४।ऽ

लगाम द्र ।। थान 2 सिरदवाल द्र 2 ।।।)

मिती पोस सुदि 15 नै मुवाफिक चिठी 2६००)

मिजमानी का मेज्या 2६००)

ड्योला नै 2000) बहु मुसारनअल्हे की नै 500)

षड़ की बहु नै 200) निकरावल का 200)

सूबादार की नैं

मिती चैत सुदि 15 नै फीलषाना थैं बणस्या वाकै

मिती पोस सुदि 10 सम्वत 1८10

हाथी 1 थान 2

हाथी फतेगज जंजीर 1 रषतथान 2

डूला सिकलाती 1 श्री सिकलाती 1

मिती असाढ़ सुदि 15 नै तबेला जीनषाना थैं

रास 2 थान ४८

घोडा रास 2 रषत अपालपोस वगैरह थान ४८

तफसील नहीं

बाबत मारफत दिवान नन्दीराम को दीया त्रफ

कमाउ का पहाड़ा पर पठाणा पर गया तब

सम्वत १८१२

मिती जेठ बुदि ८ नै वाकै भादवा सुदि - १

तथा २ सम्वत १८११ नै बाबत त्रफ जटमई

की क्षा तब भेज्या मारफत दिवान कन्हीराम

की जीनषानां थे राष १ थान २८

घोड़ो कीमंती ८०० राष १

रषतथान २८

ब्यारजामा सिकलाती बाग वगेरह थान २५

सादा रु ३) १

सम्वत १८१३

मिती चैत बुदि १ नै सिरकिराषानां थे

मुजारन अले ने वा राव रुघनाथ नैं

भेज्या थान २२ मधे रुघनाथराव नैं २६

बा वो थान २२

तोरो १ कीमंती साबिक १६२।≡ थान ८ तोरो १ कीमंती साबिक ११८।≡ थान ८

आलेमजरी १७) १ सरपेच फरवाही ८) १ तफसील सरैअंजन

फैंटा मुकेसी कीमती २५) १ बालाबंदी २२) १

अलापचासादा ६) १ मिमुदी मुकेसी ५१) १

ममाईचीकंनदोजी १ कुडता रंगीन जूटिषाम

कीट थान ५ थान ३

१८८।।।) १६।।)

१ ८) १ ३ १३।।।) ७

(Cont.)

मिती श्रावण बुदि १ नै जीनखानाँ थे मारफत दिवाण

वन्हीराम की देबानै ले गया सो दीया

राग २ थान ६०

घोडाराग [redacted] ढाली २
१२००)

नीलो कुमेत ६००)
८००) १
१

रूपताथान ६०

ब्यारजामा सिकलाती द्र ६०) २

सिघाडा माई गादा द्र ।= २

मुहण सिकलाती द्र ।।।) २

चोटी लाफका द्र ।= २२

बागडोर ४ ≈ २

फराकी तुली द्र ≈ २

अधेरी द्र ≈ २

मोहरा द्र ।≈ २

टाट दाणाका ।।) २

फराकी सिकलाती द्र ।।।≈ २

बाग सिकलाती द्र १) २

आमलगोप छीट ४४) २

जेरबंध सीकलाती द्र १) २

सिरइताल सिकलाती द्र ।।) २

सिघाला द्र ≈ २

लगाम द्र ।) २

नाडी द्र ।।।) ४

षुरण आडनी ४।। २

मितल १८१४

मिती प्रथम आसोज बुदि १० नै मुवाफिक खाते हजुर के मुवाफिक फरद

मारफत भट पदारथो की चावल देने या बाई गोतमा के लषकर भेज्या कीमंती

रूपया ४१) का सो गीगे षरच के रूपया

चावला मण ५ बाई गोतमा नै

भेज्या तीका कीमंती रूपया ३१ ।।।)

(cont.)

भेज्या ह् काका पहला जने भेज्या तीका कीमत

का १६ ।)

ये रूपया पहलाज के नाम भीषला पाके

मिती पोष सुदि १५ नै जीनषांना थे मारफत भट

सदाश्गे की प्रभारा लशर मे दिया

राश १ थान १४

घोडो कीमती हाली ६००) राश १ रषतव्यारजामा वगेरह १०)

मिती फागण बुदि ३ नैं मुवाफिक फरद मारफत भट

राजा सदाशोव राव चीमनसीघ की मलारराव की

जह् वगेरह ने मिजमानी का रूपया २२६६)

मलार की बहू ने रूपया १५००)

नारूजी पंडित का २००)

[illegible]

मलारराव की मामू का गोतमां

गोवंदराम प्रोतीम का बेटा १००)

षाहिराव की बहू नैं २६१)

ईनाम मोताज वा पंडत वगेरह

ने ओट वगेरह षरीज २२८)

मथे मुसारनअले वगेरह ने रूपया १६६१)

मलारराव की बहूनैं १५००)

मलारराव की मामू वगेरह तमा

षाहिराव की बहू नैं २६१)

मिती जेठ सुदि १० मुवाफिक फरद जो मंलारराव का

बाकी का रूपया दोय लाष मुकररा २०००००) हाल

देणा ठाहरया त्याकी निशा मारफत प्रेमराम कुकडा

की दीवाई नो गेगे जमीयत षरच के रूपया २०००००)

P- 599-613
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

L. N. 45

राव मलार का चाकर

कासीद हरकारा

सम्वत १८१०

मिती आसोज सुदि १२ तथा १३ नै कासीद की जोड़ी १ नै ८)

मिती पोस सुदि ५ नै हरकारा नै २)

मिती फागण सुदि १० नै कासीद की जोड़ी नै बिदा का ८)

मिती फागण सुदि १२ नै कासीद नै बिदा का ४)

सम्वत १८११

मिती पोस सुदि ऽऽ नै हरकारा आया त्यानै दिया रुपया ८)

मिती माह सुदि १२ नै कासीद आया तीनै ईनाम ४)

मिती चैत सुदि ११ नै हरकारा आया तीनै रुपया ४)

सम्वत १८१२

मिती फागण सुदि २ नै कासीद नै १)

मिती फागण सुदि ६ नै कासीद की जोड़ी नै रुपया ५)

मिती जेठ सुदि ६ नै कासीद की जोड़ी आई तीनै बिदा का ८)

मिती आसाढ़ सुदि ६ नै कासीद की जोड़ी नै ८)

(Cont.)

सम्वत १८१५

मिती मागश्र सुदि २ नै कासीद नै ५)

सम्वत १८१६

मिती आसोज सुदि १ नै कासीद नै ४)

हलकारा की जोड़ी न के

मिती पोष सुदि ८ नै कासीद आयो तीनै स्याया ४)

मिती पोष सुदि ४ नै कासीद आयो तीनै ४)

मिती फागण सुदि ११ नै हलकारा नै २)

मिती चद्र० मै (अस्पष्ट) फागण सुदि ३)
१) १

मिती फागण सुदि ५ नै हलकारा नै १)

मिती ~~कम~~ फागण सुदि १४ नै आया तीनै ४)

मिती बेसाष सुदि ६ नै कासीद नै ८)

मिती बेसाष सुदि १२ नै कासीद नै स्याया ४)

P-616-19

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 46 23rd October 1751

गणेस पंडित टोडा का मुकारदार (मुकासदार)

सम्वत १८०८

मिती काती सुदि १५ नै बाबत बिदा का थिरमा को

दुसाली बषस्यो कीमंती साबिक ४०=) थान 2

P. 619

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 47

गणेस पंडित

सम्वत १८०८

मिती मागशर सुदि ११ नै अजइप म्हरवानगी कीमंती
साबिक १५३।।।) थांन ३ थिरमा बूंटादार षासा रु ६२।।)
जीरा सुपेद १ ८।।।) मुकरा १४५ का थांन
मिती माह सुदि १५ नै बाबत षरच नै दिवाया मुवाफिक
फरद जुमले ४०००) बाद करापंडित नै २०००) बाकी २०००)
मिती चेत सुदि १ नै बाबत लाव्हर दिषण्या कनै भेज्यो
तीना सिरोपाव कीमंती साबिक ६०) थांन ३
मिती जेठ सुदि ६ नै मुवाफिक फरद कड़ा की जोडी का
नै रुपया ५००)

सम्वत १८०९

मिती माह सुदि ६ नै अजइप म्हरवानगी सिरोपाव
कीमंती साबिक ६०) षासगी छीट का थांन ३
मिती आषाड़ सुदि १५ नै मुवाफिक फरद षरच नै
रुपया १००)

सम्वत १८१०

मिती बैसाष सुदि १ नै अजइप म्हरवानगी सिरोपाव
षासगी रंगीन बूटेषास कीमंती साबिक ६२) थांन ३
मुषारनअलैमाली लिषो छै
मिती बैसाष सुदि ६ नै बाबत मुषारनअलै का
बाप की मातमी का सिरोपाव कीमंती साबिक ४०।।)
थांन ३
गणेश पंडित माली लिषो

[redacted] [redacted] (Cont.)

[redacted]

सम्वत १८११

मिती चैत सुदि ऽऽ नै मुवाफिक फारद कड़ा का ईनाम रुपया ५००)

गणेश विनायक का पंडित नै है

सम्वत १८१२

मिती भादवा सुदि २ वाके पोस सुदि ३ सम्वत १८११

नै अजइप म्हरवानगी बाबत राव मलार कनै

वकील भेज्यो जी नै सिरोपाव षासगी थान ५

सिरोपाव कीमती साबिक थिरमा मासगी बूटादार ६

रुपया थान साबिक मुकररा ४६॥)

६३॥।≡) ३ २४॥।) थान १

सम्वत १८१३

मिती मागश्र सुदि ६ नै अजइप म्हरवानगी थिरमा

को दुसालो कीमती साबिक ४८॥≡) थान २

२३॥≡ २५)
१ १

सम्वत १८१४

मिती माह सुदि ५ नै अजइप म्हरवानगी बषसायाथान ५

सिरोपाव षासगी कीमती थिरमा को दुसालो पसमी

साबिक थान बूटादार २

६६॥।) ३ १६॥= १६॥=
१ १

P-619-22
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

L.M. 48

नागो पंडित

सम्वत १८०८

मिती मागश्र सुदि १0 नै बाबत सूबादार का

ठारया रुपया की तालीद नै आयो सो

रोजीनो षाबा नै चाहै तीनैं सीगे षरच के १००)

मिती माह बुदि ११ नै बाबत रुपया की तालीद नै

आयो सो षावा ने षरच की फरद २००)

मिती फागण सुदि २ नै अजइपु म्हरवानगी

बाबत हजूर आया तीनैं बिदा का थिरमा

बूटादार द्र १८१) मुकररा ३४॥) थान २

मिती चैत बुदि ऽऽ ने बाबत रुपया पाच

लाष की तालीद नै आया तीनैं बिदा

का मुवाफिक फरद रुपया १०००)

मिती बैसाष सुदि ११ मुवाफिक मुवाफिक फरद

जी रुपया पांच लाष की तालीद नै

आयो सो बिदा का रुपया १०००)

P. 624-25

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 49

चिंतामण जीतसी दिषणी

सम्वत १८०८

मिती सावण बुदि २ नै अजइष् म्हरवानगी

सिरोपाव कीमती साबिक ३३॥।= थान ३

मिती सावण बुदि ६ नै अजइष् म्हरवानगी

थिरमां पसमी बूंटादार कीमती साबिक ५(७)

थान २

P-625
D.C. IX
J.S.A.B.

L.N. 50

पांडुरंग पंडित बेटा शंकराजी का वकील

सम्वत १८०६

मिती फागण सुदि १२ नै बाबत मुनारन अल्ले का

बाप की मातमी को सिरोपाव बक्ष्या कीमती

थान २

स्याहे हजूर [redacted]

सम्वत १८१२

मिती भादवा सुदि २ ताके चैत सुदि ७ तथा

८ सम्वत १८११ नै अजइप म्हरबानगी सिरोपाव

कीमती साबिक ६२३) थान २

P. 628-29

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N 51

बालाजी पंडित मुकासदार मालपुरा का

सम्वत १८०७

मिती बैसाख सुदि 2 नैं बाबत सीष का

सिरोपाव कीमंती साबिक 267 थांन 2

सम्वत १८०८

मिती सावण सुदि 12 अजरुप म्हरवानगी

बाबत बिदा का सिरोपाव कीमंती साबिक

26) थांन 2

P-631
D.C.
Vol IX
J.S.A.B.

L. N. 52

बाबूजी पंडित मुकासदार तोडा का

सम्वत १८०७

मिती जेठ सुदि ५ नैं मारफत गणेस पंडित

की सिरोपाव कीमती साबिक २६ ।।) थान ३

सम्वत १८०८

मिती पोस सुदि १२ नैं बाबत बई सैम

बापूराव पंडित दिली सू आगरा का सूबा

\- - - -

P-632
D. C.
Vol. IX
J. S. A. B.

L.N. 53

ताजी पंडित

सम्वत १८०७

मिती माह सुदि १५ ने बाबत बिदा का सिरोपाव

कीमती साबित ४०) थान २

मिती फागण सुदि ४ ने रुपया २००)

P- 633

D. C.

Vol. IX

J. S. A. B.

L.N 54

मलजी पंडित

सम्वत १८०८

मिती इतीक असाढ़ सुदि 13 मैं बाबत बिदा

का सिरोपाव दीगीती साबिक ४५) थान २

मिती इतीक असाढ़ सुदि 15 मुवाफिक फरद रुपिया २००)

मंलजी द पोथी लिषनो छै ईंह मिती मैं

P-634

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 55

माधोराम पंडित

सम्वत १८९६

मिती असाढ़ सुदि १० वादें असाढ़ बुदि १२ नै

मारफत हिमतराम गीगे खरच के मुसारन

अल्हे वगेरह नै १००)

मिती प्रथम सावण सुदि १३ तथा १४ नै

मुवाफिक फरद बाबत मुसारनअल्हे की

उट सरकार में आयो छो सो फोत हुवो

सो इनाम रुपया १५०)

मिती प्रथम सावण सुदि १० नै वादें प्रथम

सावण सुदि ८ नै मारफत हिमतराम की

दिया मारफत बिरजनाथ भट की रुपया २००)

सम्वत १८९६

मिती आसोज बुदि ४ नै ~~वादे~~ भादवा सुदि

१२ नै मारफत हिमतराम की बेडला थे

दिया मारफत बिरजनाथ भट की रुपया २००)

मिती आसोज सुदि २ नै सिरोपाव कीमंती

मालिक ४८॥।= थान ३

P.635-36

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 56

रणछोड पंडित पीपलू में रहे तींनि

सम्वत १८०६

मिती चैत सुदि १० नैं बाबत मिजमानी का रुपया २०)

मिती बैसाष बुदि १ नैं बाबत आमेर आयो तीको

बिदा का सिरोपाव कीमती बाबिक ३२।≡

थांन २

P- 637

D. C.

Vol IX

J. S. A. B.

L.N. 57

राघो आपा दिवान मुगारन अले का

म्वत १८१२

मिती जेठ बुदि ६ वालें भादवा सुदि ११ म्वत १८११

नें जीनषाना थें रफ जटमई की कातल भेज्या

रास १ थान २३

धोडो ५००। रास १ रषलथान २३

P. 638

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 56

रोमलीना (प) ट दिषणी

सम्वत १८१२

मिती भादवा सुदि २ वाके चैत सुदि ५ सम्वत १८११

ने बाबत सिष का सिरोपाव कीमती माफिक ४२८) थान २

P. 638-39

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 59 30th January 1751

राणाजी [redacted] भाई सैताजी बावला वा

सम्वत १८०७

मिती माह सुदि १५ नै बाबत बिदा का सिरोपाव

कीमती सालिक	थान
४६)	२

P-639
D.C.
Vol IX
J.S.A.B.

पताजी बालला में सम्वत १८०६

मिती माह सुदि १२ नै लाबत मिजमानी का

आया तब भेजा रुपया २००) बाद पटयाजी

षरच्या नै नाम षताया १००) बाकी १००)

हजूर का स्याहा में है

मिती माह सुदि १५ नै बाबत बिदाला लषस्या

थान ४ कणी २

सिरोपाव कीमती नाबिल जवाहर कीमती नाबिल २३२-=

१५६९ ।)

थान ३ थान १ कणी १

माणि मनाकी सरपेच तिला

कीमती ४२) कीमती १८११=

२ थान १

मिती फागण सुदि १० नै बाबत बिदा का जीनषाना

थे घोडा कीमती रा १ रषत कीमती नाबिक

कीमत नही ८॥=॥ थान ६

(Cont.)

सम्वत १८१२

मिती भादवा सुदि २ वादें भादवा बुदि ८

सम्वत १८१२ में मारफत दिवान नन्दीराम की

लसकर में जीनषांना थें दिया राग १ थान १६

घोडो कीमती वाली (९००) रषतत्यारजामा वगैरह

१६

राग १

सम्वत १८१९

मिती माह बुदि १४ नैं इमाल षासी जुटादार कीमती

गाबिक थांन १

१०।≡

मिती जेठ बुदि ३ नैं मारफत मिश्र की इमाल

षासी जुटादार कीमती गाबिक १०।।) थांन १

P-639-41

D. C.

Vol. IX

J.S.A.B.

m 5476

L.N. ६१

लईयम   ताजी बावला का भतीजो

सम्वत १८१२

मिती भादवा सुदि २ वाँ मागश्र सुदि ६ सम्वत

१८११ नैं सिरोपाव भेज्यो बाबत मुसारनअल्हे की

बाप काल बा हुवो तीवो मातमी का कीमती

नाकिल	थान
७८)	३

p. 644-45
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

सदाशिव मेहता दिषण नू आयो

सम्वत १८१६६

मिती असाढ़ सुदि २ नै मारफत हिमतराम की जो

मुसारन अर्लें दिषण नू बिरजनाथ भट की लार

आयो पो पीगे षरच कैं रुपया २००)

मिती असाढ़ सुदि ५ नै (अस्पष्ट) असाढ़ सुदि ७ नै
१५०) ५०)

मिती प्रथम सावण सुदि ४ मारफत हिमंतराम वदि

प्रथम सावण सुदि २ नै पीगे षरच के रुपया २००)

मिती प्रथम सावण सुदि १० नै मारफत हिमतराम

मिती प्रथम सावण सुदि ८ नै मारफत बिरजनाथ

भट की रुपया २००)

मिती द्वतीक सावण सुदि ६ नै सावें द्वतीक सावण

सुदि २ नै मारफत हिमतराम पीगे षरच कैं मारफत

बिरजनाथ भट रुपया २००)

मिती भादवा सुदि ३ नै मुवाफिक फरद मिजमानी

का पंडित म्हता सदाशिव मारफत भट ब्रजनाथ

की लार आया तीकैं मिजमानी का ७४॥)

रोक ५०) मिठाई १०)

फागण सुदि १४ नै पीरणी १४॥)

(cont.)

मिती भादवा सुदि १३ नैं सिलेषाना थे वाकि इतीक

सावण सुदि १५ नैं तरवार कीमती साबिक १७।।।)

थान बबजी १ सम्वत १८१७

मिती मागश्र सुदि १३ मारफत हिमतराम वाकैं मागश्र

सुदि ८ नैं सीगि षरच वे मारफत बिरजनाथ भट

की दिया रुपया ५००)

मिती पौस सुदि ६ नैं वाके मागश्र सुदि ८

नैं मुसारेन अलै राव सदाशो पंडित का

वकील नैं अजइप सरवानगी कीमती साबिक ८८७।।)

थान ५ छीट द्र ८।।) मुकररा १७) थान २

आलमछीट पसमी बूंटादार कीमती
६।।) थान १

साबिक २७) २

मिती पौस सुदि ऽऽ नैं मुवाफिक फरद जो मुसारेन अलै

भाउजी की तरफ सो आया सो श्री हजूर सु रुका

मोती लषशा सो सीगि ईनाम रुपया १०००)

मिती पौस सुदि १२ तथा १३ नैं मारफत हिमतराम वाकैं

पौस सुदि १ नैं मारफत बिरजनाथभट की

रुपया २००)

P-646-50
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

L.N. 63　　　　7th February 1754

सदाशिव नरसींघ जी पंडित

सम्वत　१८१०

मिती माह सुदि १५ नैं बाबत अफ राव मलार

की सैहनील ला लाया नैं आयो सो बड़ा मोत्या

का मुवाफिक फरद　१०००)

P-651

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 64 12th March 1754

खासी पंडित मुकातदार प्रगनां मालपुरा

का नैं

स्मत १८१०

मिती चेत बुदि 4 नैं बाबत राव मंलार का लसकार

थे मालपुरै गया हजूर आया त्याने अजइप

म्हरबानगी बषसा आगामी 2 नैं कीमंती ८६ ॥।=

थांन ६

थिरमा षामी बूटादार छीट पाकी ६ २)

कीमती ८४ ॥।= ७)२ ५)

४ १ १

इ २२) मुकररा १८ ॥।=

६६) १

३

P-651-52

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 65

सूरतराम मेहता ताल्कार

सम्वत १८१६०

मिती माह बुदि १० नै बाबत मुशारनअल्हे मलारराव

को भेज्यो आयो तीनि बिदा का सिरोपाव कीमंती

माफिक ६०) थान ३

मिती चैत बुदि १४ नै मुवाफिक फरद मोत्या का सीगे

ईनाम के रुपया ३३०)

मित्ती जेठ बुदि ३ चीरा रंगीन कीमंती माफिक ६॥)

थान १

P- 652

D. C.

Vol. IX

J. S A. B

L.N. 66

सेठयाजी गेराडा नैं

सम्वत १८०७

मिती माह सुदि 12 नैं बाबत मिजमानी का आया तब

भेज्या २००) बाद संताजी बावला नैं १००) बाकी

१००) हजूर का स्याहे दाषल है

मिती माह सुदि १५ नैं बिदा का बषस्या सिरोपाव

कीमंती साबिक १७८) थांन वगेरह

थांन ४ क २

सिरोपाव कीमंती साबिक १७८) थान ३

जवाहर कीमंती २५२ ॥=

थांन १ कत्ता २

सरमयतिला

कीमंती १६१।=

थांन १

मशामनाकी कीमंती ६१।)

कत्ता २

मिती फागण बुदि ६ नै बाबत बिदाका जीनषाना थैं

घोडो कीमंती रास १ कीमत नहीं

रखत कीमंती साबिक ८॥।=॥ थांन ७

मिलाप

(cont.)

सम्वत १८१०

मिती माह बुदि १० नैं मुकाम सवाई जैपुर आयरा का

सेठयाजी षराड़ा की आबा की षबर सुणी तब सरैह

दरबार की तमारी फरताई अर सोनीलाल नैं पेसवा

भेज्यो सो मोतीडूंगरी जाय ले आया सो दिवानषाने

लाय बठा पाकिर श्री जी अंद्र सू पधारया बगलगीरी

करी मसनंद के नीचे त्रफ दाहणी बेठाया फेर

सरबता मे पधारना मसलत करी सीष दीन्ही

मिती माह बुदि ११ नैं मुसरनअल्हे वगैरह दिषणी दिवाण

राजा हरगोविंद के मैहमानी जीबा आया तीनि

दिया कीमंती ६१) थांन २०

पाग रंगीन कीमंती ३५) बाजा कुड़ता कीमंती ४५)

थांन १० थांन १०

चीरा द्व ५) मुकररा आलम द्व २॥) द्व ४॥) मुकररा २६)

६८

कीमंती ४०) थांन ८ मुकररा ५) का २

द्व ४॥) मुकररा १६
४

(Cont.)

मिती माह बुदि १२ नैं सेठयाजी षराड़ा वगेरह

दिषणी हजूर सलाम करबा आया त्यानैं सिरोपाव

बगस्या थान २६

मुसारन अल्ले नैं सिरोपाव कीमती साबिक १६३।।।)
६

आलम जरी २०) फेटा जरी कीमती ५०)

१

मसरु बूटादार कीमती १८) छीटपकी ४ १२)

१

म्हमूदी मुकेसी कीमती ४०।।।) मुकररा २४) २

१

हमराही मुसारनअल्ले का बाल्या नैं दिया

मुकररा थान २०

सिरोपाव १ कीमती साबिक ३५।।)
थान ३

सिरोपाव १ कीमती साबिक ५८)
थान ३

सिरोपाव ६ कीमती साबिक ५०।) थान १४

चीरा रंगीन कीमती ५) आलम रंगीन ४ २।।)

[illegible]

मुकररा १५)
५

कुड़ता रंगीन
८)
१
४४)
१

बूटेषाम ३०) थान ६
४ ४।।।)
३
४३)
२

P-653-57
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

L. N. 67

सांधेराव पंडित

सम्वत १८०८

मिती चैत १० में बाबत उदेपुर सो आयो राव मलार

कने जाय छो तीने अजइब म्हरवानगी थिरमा पसमी

बूटादार कीमती साबिक ५०॥ थान २

मिती बैसाष सुदि १५ नै बइसीम पंडित स्यामराव

गोव्यंदराम को भेज्यो उदेपुर सु आयो सो मलाराव

कने लसकर में सीष करी सो बिदायगी का मुवाफिक

फरद २००)

P-658-59
D. C.
Vol. IX
J. S. A. B.

L.N. 68 23rd October 1751

महादेव पंडित मुत्सद्दार टोडा का

सम्वत १८०८

मिती वाती सुदि ५ नं बाबत विदा की थिरमा

का दुजाती पीमंती आबिद थांन २

४१ ।।।)

P-659

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N 69

27th December 1753

बईनाम मालराव हुलकर षंडूजी का बेटानैं

मलार राव का पोता

मिलाप

सम्वत १८१०

मिती पोष सुदी २ नैं मुकाम आमेर श्री जी सवारी सुरत

बकर करे दुवाजे पोल बढ़ तरण को बाग दिषण्या ।

मिलवा पधारया फेर दिषणी आया नहीं तब फुलवाड़ी

के परे षात्या का कारषानैं गया तब रुघनाथ पंडि (त)

बालाजीराव को भाई मिलवा आयो ने पहली तो

उमेदसंघहाडा बुंदी को मिलने फेर हाथी सु उतर

रुघनाथ पंडित का श्री जी मिलना बनला पा का षंडूजी

को बेटो मिल्यो फेर सवार होय आमेर का म्हैला

दाषल हुवा

(Cont.)

तोरा वगेरह

मिती पोष सुदि २ नैं गीगैं ईनाम के तोरा २ कीमती ३७२)
का थान ११

तोरो कीमती २२७) तोरो १ कीमती १४५) थान ५
१ थान ६९

आलमसुकेशी २०) १	तारपेचमुकेशी १०) १	चीरो मुकेशी २०) १	तारपेचमुकेशी १३) १
अतरी मुकेशी ७६) जामो १	फेटोमुकेशी २५) १	बालाबंधी मुकेसी २५) १	फेटोमुकेशी १८) १
बालाबंधी मुकेसी १५) १	कुरताजरी ८०) १	मगुदीमुकेशी ८०) १	१

बाबत टीका का भेज्या

मिती चैत सुदि १५ नैं फीलखांना थ जे षंडू बालबक्ष हुवो

तफ जटमई की ती मातमपुरसी का टीका को षंडू का बेटा नैं

भेज्यो मारफत दिवान हर गोबिंद की वादें चैत सुदि १२ नै

जंजीर १ थान २

हाथी ममोलो १ श्री गिल्लाती १

मिती असाढ़ असाढ़ सुदि १५ नैं मारफत दिवान वनीराम

की घोड़ेराम १

कीमती नहीं स्याहे दाषल नही तवेला सुं लिषनों P-660-62

मुतरफ वनें बाबत टाका को

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B

L.N. 70

मड़ पटेल अमड़ेरा

सम्वत १८१२

मिती जेठ बुदि ६ नैं वाबें भादवा सुदि १

तथा २ सम्वत १८११ नैं जीनषाना थें श्रफ

जटमई की श तब भेज्या

राम १ थांन २३

घोड़ी	रुवतथांन
४६०)	२३
१	

P-664

D. C.
Vol IX
J. S. A. B.

L.N. 71 3rd october 1753

मलार मंडित

सम्वत १८०६

मिती आसोज सुदि 6 नै ईनाम मजकूल २००)

के रुपया १००)

P-859

D. C.

Vol. IX

J.S.A.B.

मालदेव बेटा षाड़े रात का

सम्वत १८१२

मिती जेठ सुदि ६ तार्ले भादवा सुदि १ तथा

२ सम्वत १८११ नै जीनषाना थे भेज्या

राष १ थान २६

घोड़ो कीमंती नालिक ३५०) राष १ रषत न्यारजामा

वगेरह थान २६

सम्वत १८१४

मिती भादवा सुदि ५ नै पिलषाना थे भेज्या

तफसील जैल थान ५ कबाण ५ दस्ता ५

कबाण लामा की द २) चिला रेसमी द ४।≥ थान ५

दस्ता तीरा का कीमती

२०) दस्ता ५

P-862

D.C.

Vol. IX

J S A.B

L.N. 73

रुघनाथि पिंडत चाकर सरकार का

सम्वत 1800

मिती बैसाष बुदि ६ बाबत मुलारनअलहि तई नाथ
राय नरायणदास जी का सो फोजसिंघ किला-
रमीतसंघ को मांथी हजूर भेज्यो तींका अजश्य
म्हरवानगी सिरोपाव भेज्या कीमती साबिक ४२)
थांन २

सम्वत 1804

मिती चैत बुदि १२ मुकाम दवलाणे अजश्य म्हर-
वानगी सिरोपाव कीमती साबिक ५३) थांन २

P-865
D.C.
Vol. IX
J.S. A.B.

L. N. 74

रामाजी भाउ

सम्वत १८१०

मिती असाढ़ सुदि १५ नै मारफत दिवाण कन्हीराम

की दिया त्रफ कमाउ का पहाड़ पर पठाण पण

पात व दिया राम १ थान २४

घोड़ो राम रषत अपाल पोष वगैरह थान

तफसील नही

मिती सावण सुदि ५ नै मुवाफिक फरद बाबत गीगे

षरच के दिया १००००)

P-865-66

D. C.

Vol. IX

J. S. A. B.

L.N. 75

दिनकर पिंडत रामराजा की त्रफ आयो

सम्वत १८१३

मिती भादवा सुदि १४ नै मुवाफिक फारद षरच

नै रुपया १०००)

मिती आसोज बुदि ६ नै मुवाफिक फारद षरच का

रुपया १५१)

P. 866 D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 76

दिनकरपिंडत तथा हुलासराय त्रफ रामराजा की

हजूर में है

सम्वत १८१३

मिती काती वुदि २ नै मुवाफिक फारद षारच का

तीगे षरच दे रुपया ५००)

स्याहा हजूर

मिती चैत बुदि १२ नै मुवाफिक फारद दिनकर

पिंडत तरफ रामराजा की पूर है जो षरच का

तीगे षरच दे १००)

मुवाफिक स्याहा हजूर

P-866-67
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B.

L.N. 77 7th August 1751

मनसाराम वकील कायथ

सम्वत १८०८

मिती भादवा सुदि १२ नै जो हमेस सौं कागद

आडा नै लिषवो करसी उमेदवार षरची कौ

सो मुवाफिक फरद रुपया २००)

P-869-70

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 78 — 17th February 1757

[redacted]

रामाजी पंडित दिषणी

सम्वत १८१३

मिती फागण बुदि १४ नै बाबत अजमेर पो

राजा रामस्यंघजी की लैर आयो तीनैं

बिदा को सिरोपाव कीमती माबिक थान

२८॥) ३

P-874

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N 79

रामराय टिपणी

सम्वत १८१२

मिती जेठ बुदि १ ने वावे फागण बुदि ऽऽ नै

भेज्या थान २

थिरमा	पामी बूंटादार	रुमाल पामी बूंटादार
दर	मुकररा	कीमती
२०)	६००)	२००)
	२	१

P-875

D.C.

Vol IX

J.S.A-B.

L.N. 80

रामराव पंडित उजैण का सूबादार

सम्वत १८१२

मिती भादवा सुदि १ नै वाबै असाढ़ सुदि ८ नै

सिरसिरपावांनां थे दिया थान १३

सरपेच तिला मीनामुरसाकारी कीमती १२१)

तोरा दोयवा थान १२

म्हमूदीमुकेसी ३ मांडइ बूंटादार दर ३६॥)
दर ३६) दर २०॥) १
२ १
आलमजरीदार थान फेंटा गुजराती दर १५)
१८॥ऽ
२ २

P-877-78
D.C.
Vol. IX
J.S.A.B

राव रूघनाथ जी पंडित वेटा वाजेराव का

तोरा वगैरह

सम्वत १८१०

मिती पोस सुदि ऽऽ नैं जीनषाना थैं दिया

थान २६ रास २

घोड़ा की रास २ रषतथान २६

न्यारजामीसिवलाती (अस्पष्ट) २ बाग सिवलाती दर १) थान २

मुकेणसिवलाती दर (।।) २ कराची मसड़ सादा दर ।।) २

सिंगाडा मसड़ सादा ।।) २ सिर टुवाल दर ।।) २

लगाम दर (अस्पष्ट) थान २ चोटी ताफ्ता दर । ≡ १२

मिती पोस सुदि ३ नैं श्री जी के डेरैं सुं वनदी घर

आमेर मैं मिलवा आया तव दिया तबेले जीनषाना

थैं रास ४ थान ६३ जोडी १

घोडा ४

जोट २

सोना की कीमती ५१०) वजन वजन तोल ४५)६)की थान १

तोल ३५)३) की थान १

(Cont.)

इयादी

जीन १ मुरत्तव

थान २६ जोड़ी १

जीन सिकलाती कीमती ४५)
१

मुक्षणी सिकलाती ।।।=
१

षागीर ४)
१

जीन घोस सिकलाती २२)
१

तंग कीमती २।।।)
२

चोटी दर ।= ताफताकी
१२

रकाब आवनी जोडी
६॥) १

बांगर सिकलाती दर १॥)
२

जरबंध रंगीन ३) थान १

अवरासिकलाती कीमती १०)
१

कोतलकस १॥)
१

सिर टुवाल ॥) थान १

वागडोर रेसमी १॥)
१

लगाम ।)
१

ब्यारजामा घोडा पर थान ४५
२

ब्यारजामा २

मसई १०)
१

कराकी ३)
२

सिकलाती दर १)
२

(Cont.)

सिंघाडा दर 1) 2 — चोटी ताफ्ता की दर 1= 24

वागदर 1।।) 2 — मुंबण सिक्लाती दर ।।।= थान 2

लगाम दर ।) 2 — सिर दिवाल सिक्लाती दर ।।) थान 2

मिती पोस सुदि 12 दीतवार नैं रथ सुषचैन व मैं

साजसुधा सुरन व

मजल	जोडी	थान	तोला	सेर
1	4	161	3ऽऽ	63)

रथ सुषचैन कीमती मजल 1 — ठठरी षारवाली थान 2

कीमती 3) 1 — कीमती 1।।) 1

सूंड का षारवा का दर 1।।) 1 — गदी षारवा की थान 66

दर 3।।) 1 — दर 2) 2

दर 10) 3

(Cont.)

~~पाग~~ सिकलाती ६० पड़ दा १६

बंधा की अतलस पहला की अतलस अतलस सिकलाती

सिकलाती दर २२) सिकलाती वा व में धारवा

२

अतलस सिकलाती ४ ८

मसरु बूंटादार ८ दर १०) दर २१)

६०   १

दर १०) दर १५) दर [redacted] १०)

२ २ १

दर १६) दर १०) दर १५) दर १

१ ४ १

पोष अंदाज अवरा सिकलाती चादर थान ४ गजीना २

व धैरवा कीमती २८) थान वाफना की ईकेरा १३) १॥)

१   १ १

थान २

१) ४)

१ १

(Cont.)

तक्या मसइ बूटादार

३

दर ६) दर ९८)

१ २

रसा रेसमी गर व सुतीसर १०)

थान २

साहीवान अवरा सिवलाती व

नाती मसइ सादा दर (अस्पष्ट)

१

गदी थान २

मसइ बूटादार मसई सादा १६)

१

मियान तहषमवा

कीमती ३५)

१

रास रेसमी गर व सुती

दर ३॥≡

२

पोष सिवलाती वा कना

षारवा में कलावत २

४००) २२५)

१ १

P. 882-87

D.C. Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 82

3rd August 1757

म्वत १८१३

मिती भादवा बुदि ४ ने मुवाफिक फरद जो

रघुनाथराव नो मामलती हाल देणा ठहरया

सो हवालेह नारु पंदर ते दिया रुपया

मारफत सेठ घनशुर की दफे

रुपया ५०५०००) ६५०००)

मारफत प्रागराम मारफत मोतीराम

दूकड़ा रुपया गुमास्ता

७५०००) भिषारीदास

सो सरहदषषत राजा इर नाय गुलाबचंद का

रुपया ६०००००) छ लाष मीगे जमियत २००००)

षरच वे

(Cont.)

24th December 1757

सम्वत १८१४

मिती मागर सुदि १४ नैं मुवाफिक फरद रुघनाथराव

कनैं हुंडी रुपया अढ़ाई लाख की भेजी तफसील जैल २५००००)

मथुरामि १२५०००) बनैपुर पेठ १२५०००)

बारह दसषत राजा हर लाय रुपया अढ़ाईलाष

तीगि जमीयत खरच के (अस्पष्ट) अर

मामलती आगती में भरसी अर किफायत

सी मुजाफ़महीन ली रुपया २५००००

(Cont.)

म्वत १८१४

मिती सांवण सुदि १४ नै मुवाफिक फारद रुधनाथराय

की मामलती में हुंडी सेठ धनेपुर की रुपया तीन

लाष की मारफत दीवाण नन्दीराम दी मनराम

लषतराम पर भेजी

वाइ करार जेठ सुदि १५ की

रुपया अढाई लाष की

२५००००)

वाइ करार असाढ़ सुदि ८

रुपया पचास हजारकी

५००००)

सो चाह सो रुपया तीन लाष पीगै

जमीयत षरच के रुपया

३०००००)

P-898-99

D. C.

Vol IX

J. S. A. B.

L.N. 83 6th January 1754

चाकर राय रुघनाथ का

किसनाजी पंडित

सम्वत १८१०

मिती पोस सुद 12 नैं अजइय म्हरवानगी बाबत

हजूर अया तीनी थुरमा बसमी बूटादार ३४)

दुपटा थान

६८) २

P-904

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 84 1st August 1758

चाकर रायरुघनाथ का

लईयम पुराणीक मुगारनअलह का

सम्वत १८१४

मिती सावण बुद 13 नै मुवाफिक फरद नारुवांकार

तरफ रुघनाथ राय की हजुर आया त्यानै दिवाया

३४०००) मधे मुगारनअलह २०००)

P-905

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B

L. N. 85 28th June 1718

राजा साहुजी दिषणी वगैरह नैं

दस्तत १७७५

मिती असाढ़ बुदि १० नैं मेल्या

थांन २१ वलजा ६ स्याया २०) गज ६।।।

किरकिराषानां थे

थांन १५ वलजो १ गज ६।।-

तरवार तेगाआहूनी व मुठ वैगैरह तोरा २ का थांन १४

सिलाई मुरसाकारी कीमती ३८२।।।ऽ वलजो १

हीरामुकेसी १७५) २ फैंटा गुजराती कीमती ८०१) २

अलाबचा ८३।।ऽ मनइबूंटादार २ १०६।।) ३

सरपेच २८।।ऽ बालाबंदी २ ४२) १

झमक्री बूंटादार ३५) १ दुदामीचिवनदोजी ५६) १

षोली वगैरह थांन १ गज ८।।-

षोली मनइबूंटादार ३।।।≡ १ वैठण नैं ६।।-

मोमजामा ३।।। नरमा ५।।।-

सिलहषाना थे मारफत गजसिंघ षंगारोत वी

वलजा [struck] ५ स्याया २०) थांन ६

तरवार वलजा ५

कीमती ६२) १

८ऽ १

षोली अवरै षारता ५ ।≡

थैला मोमजामा का १।) थांन १ टोपर स्याया २०)

(Cont.)

सम्वत १८८५

मिती फागण सुदि ५ मुकाम सवाई जेपुर तवलुक
साहुराजा दिषणवानें भेजा मारफत दिवाणनरायणदासकी
छबजो १ थान २ गिर ॥=
षंजर तेगा जाकनी मेयदसता वेगई इनामं मुरषनवारी
में तइनात मोहनलाल वेगई समगुर नवारी
कीमती ३२८८) छबजो १ पेटी वगैरह
थान २ गिर ॥=
षोली ताफता १ पेटी वाठवी मषमल थे म मी
षारता ८ गज मुकरहा ॥= १
= सम्वत १८८९

मिती मागश्र सुदि १३ नें किरकिराषानाथे राजा साहुनें
मारफत राजा अयामल की दिषण भेजा मुकरहा
थान २ गज ~ १॥
कलंगी जड़ाउ कीमती ३०५५) थान १
हहकी वगैरह थान १ गज ~ १॥
थैली अतलस की २) पेई मजुवा नें मषमल
१ ताफता सोमजामा ~ १॥
सम्वत १८८७

मिती पोस सुदि १४ नें सीनषाना थे जो दीपसींघ
कुंभाणी नें सतारे भेज्यो सो पो तवलक नरी
आयो तावें मिती प्रथम भादवा सुदी ८ सम्वत १८८९
नें मुकरहा राम १ थान २२
पिषाडो कीमती = षोली सुरवी राम १ रषत थान २२
१
बाग विलाती ॥= फराली १)॥
१ १
जेरबंध रेसमी ॥=। मोणविलाती कीमती ॥=॥
बागडोर रेसमी कीमती १॥) लगाम कीमती ।=।
१ १
मोटी ताफला [redacted] ८।=। गिरदुवाल विलाती ।=॥
१२
बड़तक २) अपालपोस सीट २।=
१ १

P-945-50
D.C.X
J.S.A.B.

L. N. 86

बहु बेटी वगैरह जनानां राजा साहुजी का

सम्बत 1803

मिती जेठ सुदि 14 तथा 15 किरकिराषानां

थे वाके मागश्र सुदि 7 तथा 8 सम्बत 1803

ने मारफत राजा अयामल की राजा साहुजी

का जनाना बहु बेटया नैं भेज्या हस्ते

परताबराय थान 16 जोडी दाणी काम्ली
३ १ १

जोवाहर कीमंती

२८ ६३ ॥—॥

P-954.

D. C.

Vol. X

J. S. A. B.

L. N. 87

कान्हाजी भोसला साहु राजा का काका

को वकील

सम्वत १७८१

मिती द्वितीय आषाढ़ सुदि १३ नै मुवाफिक डौल

ईनाम कान्हाजी भोसला साहुराजा का

काका का वकील हजूर आयो सोमिती

प्रथम आषाढ़ सुदि २ सम्वत १७८१ हुकम

हुवो खरच का रुपया १००) ईनाम रुपया १००)

P-957
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N. 66

वासदेव पंडित खातर कान्हाजी भीमल्ला का

सम्वत १७६६

मिती असाढ़ सुदि ८ नैं मुवाफिक चिठी स्त्रै

बईस्म कान्हाजी भीमला कनैं वासदेव पंडित

आयो पे दिली जाय छे तीनैं खरचका

मुवाफिक फारद करार मागश्र बुदि २ सम्बत १७६६

रुपया २५)

P. 957-58
D. C.
Vol. X
J. S. A. B.

L. N. 89 2nd April 1750

किसनाजी पंडित मुवासदार ईंद्रगढ़ का

सम्वत १८०७

मिती चेत सुदि ६ जो दिषण्या सेरपुरा का

फोजदार नें मारयो तीथि सिरोपाव कीमती

साबिक थांन

३४॥= ३

P-968

D. C.

Vol X

J. S. A. B.

L. N. 90

किसनराव बाबूराय पंडित का बेटा

सम्वत १७६७

मिती बैसाष सुदि ३ मुकाम आगरे मुसारनअलै

नैं सिरोपाव कीमती मालिक ६१) सरपेच

मुकेसी सुंघा थान ४

मिती जेठ सुदि ८ नैं मुकाम फतीयाबाद धोलपुर

सिरोपाव बषसो कीमती मालिक थान

६१) ३

P-969

D. C.

Vol. X

J. S. A. B.

L. N 91

बइस्म षंडूजी मलारहुलकर का बेटा सुबादार गुजरात का

सम्वत १८६४

मिती जेठ सुदि १ नैं सिरविरा षानां थे मुषारनअली नैं भेज्या कीमती साबिक ८२०।।।)।

थांन	दाणा	दणी	गज
१६	२	१	३।।=

सम्वत १८०३

मिती काती सुदि ३ नैं सिरविराषानां थे मुषारनअली

ने तरफ बुंदेलषंड की भेज्या पते बलतीराम षत्री तोरा १

कीमती साबिक १४४।।।) थांन ५

सम्वत १८०५

मिती असाड़ सुदि २ वादें बैसाष सुदि ४ सम्वत १८०५

सिरविराषानां थे वादें मिती नैं सिरविराषानां थे जो दिषणी

फागण सुदि ५ सम्वत १८०५ नै तरफ आगरा की आया सो

षंडू जी ने भेज्यो कीमती ६०४४= मारफत राव देवीदास की माल

थांन १५ दाणा ३ भेज्यो तब मुषारनअली नैं

जवाहर सरपेच १ कीमती ४१५= का कीमती ८६८।।।=)

थांन	दाणा	थांन
१	३	

P- 972-75
D. C.
Vol. X
J. S. A. B.

L.N. 92 25th April 1746

पंडोजी पंडित तिरकमराव का बेटा नैं

सम्बत 1802

मिती जेठ बुदि । जो दामोदर पंडित वगैरह दिषणी

दिषणा सूं दिली जाय छा सो सवाई जेपुर हजूर

आया त्यांनैं दिया तब मुसारन अल्हे नैं सिरोपाव

कीमंती सालिक रुपया थांन

४९।।।) ३

P-978

D.C.

Vol. X

J.S.A.B

L.N 93

नरायण पंडित

सम्वत १८६२

मिती माहा बुदि २ नै अजइय म्हरवानगी सिरोपा व

कीमंती साबिक थांन ३

३६।।।=

मिती फागण सुदि १३ नै मुवाफिक डौल बाजिराय की

मा (राधाबाई) वगैरह नै मीच दें रुपया ३२१००) तीम्पे [?]

मलार पंडित वा नरायण पंडित नै मिती माहा

बुदि २ सम्वत १८६२ नै गैबरच दें रुपया १००)

म्धे मुसारनअले आया ५०)

P-981-82
D.C.
Vol X
J.S.A.B.

बईसनान्हाजी बेटा बाजेराय का नैं

सम्वत १७६२

मिती चेत सुदि १ तिरविराथाना थे मुकाम भाडली

का जो बाजेराव श्री जी हजूर आया तब मुगारनअलेनै

दिया कीमती ६४२।।।ऽ।।	थान ४	जोडी	१
पोहची जडाउ कीमती ४६७।।।ॾ		जोड़ी	१
रूपये १४४।।।ॾ।।		थान	४
कुडतीजरी कीमती ११०ॾ।।		आलमजरी	३४।।ॽ
थान २			२

नाव लिष्यो न्ही

सम्वत १७६७

मिती काती सुदि १ नैं मुकाम मारवाड गजाला थे बाजेराव

पंडित राजा साहुजी का देवलोक हुवा तीका बेटा ने हाथी

फतेसीगार टीका नें भेज्यो जंजीर १ थान २४

हाथी फतेसीगार	जंजीर	१

(Cont.)

सम्बत १८०१

मिती मागश्र बुदि १ बिर बिराणीनां थे बावें असाढ़ सुदि १०

सम्बत १७९६ नें नानाजी बेटा बाजीराव दिषणी का

नें बाबत टीका का भेज्या मारफत केसोराम षत्री की

भेज्या कीमती साबित २५७६ =॥ थान २०

जवाहर कीमती साबित थान

१४५३) २

P-982-85
D. C
Vol. X
J.S.A.B.

(बुंदी) म्हैदाजी (दिवाण नाहरा जी का)

सम्बत 1803

मिती जेठ सुदि 14 तथा 15 वार्के मागश्र सुदि 7 तथा 8

किरकिराषाना थे मुसारन अलै ने भेज्या हस्ते

प्रतापराव तोरी कीमती साबिक थान 5

२५६ ॥-

P. 990

D.C.Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 96

नारूजी सैवर पासी (झांसी) वाला नै

सम्वत १८०३

मिती काती सुदि ३ नैं तोसाखाना थे मुसारन अल्हे

नैं त्रफ बुंदेलखंड की भेज्या सिरोपाव कीमती

साबिक हस्ते बखशीराम थान ५
१०९८॥)

सम्वत १८०४

मिती सावण सुदि २ वार्ते आसोज सुदि ३ सम्वत १८०४

नैं गुजारदार भवावड़ का नैं नारू सैवर

नैं सिरोपाव भेज्या कीमती साबिक ६९॥=

थान ३

P- 990-91
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

नारु संकर का चाकर

नारु पंडित नारूजी संकर मुकासदार मदावड

का को वकील

सम्बत 1803

मिती पोस बुदि ऽऽ नैं मुवाफिक फरद करार पोस

बुदि 12 सम्बत 1803 बइस्म नारु पंडित मदावड

का रुपया वी तार्कीद नैं आयो सो षरच का

दिया रुपया 40)

मिती पोस सुदि 13 मुवाफिक फरद करार पोस

सुदि 10 सम्बत 1803 बइस्म नारुपंडित मदावड

का पईसा के वास्ते आयो से षरच का रुपया 60)

मिती माह बुदि 12 मुवाफिक फरद करार मिती सदै

नारुपंडित मदावड सुं आयो सो षरच का सीगे षरच रुपया 100)

मिती जेठ सुदि 12 मुवाफिक फरद करार मिती जेठ सुदि 7

साल 1803 नारु पंडित गुमास्तो नारुशंकर का मदावड रामपुरा

का रुपया बाकी त्यकि वास्ते आयो सो षरच का रुपया 400)

P- 991-92
D. C.
Vol. X
J. S. A. B.

L. N. 90

नाल्जी प्रभुश्री मुतसदी नें

सम्बत १७८६

मिती चेत सुदि १ नें मुकाम मदसोर नाल्जी प्रभुश्री

मुतसदी राजा साहुजी को सीतारागढ़ थे गुजरात जाय छो

सो मिलबा आयो दरबार आय बैठ पाछै श्री जी अंद्र

थे दिवाणषाने आय बिराज्या नाल्जी की मुलाजमति

हुई नजर किया चीरोमुगीपटण ६०) दुपटो १०)
१ १

मिती चेत सुदि ३ मुकाम मदसोर का जी सीतारा थे

गुजरात की तरफ जाय छा सो हजूर आया तीनें

बिदा का सिरोपाव कीमती साबिक थान १
६९३

वगैरह थान रास
१९ १

P-114
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N. 99

नागोरी पंडित मुकातदार रामपुरा का

सम्बत १७६६

मिती असाढ़ बुदि ३ अजइय म्हरबानगी सिरोपाव कीमंती

साबिक थान
४२ ।।।) ३

मिती असाढ़ बुदि ४ मुवाफिक फारद करार असाढ़ बुदि ३

साल १७६६ रामराव पंडित वगैरह मुकातदार हजूर आया

तीनै षरच का १५०) तीमे नानू मुकातदार रामपुरा

का मै ५०)

नानू मुकातदार रामपुरा को लिष्यो छै

P- 996
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L. N. 100   5th December 1745

नारोजी पंडित मुकासदार ईंद्रगढ़ का

सम्बत 1802

मिती पोस बुदि 8 अजइय म्हरवानगी सिरोपाव

कीमंती साबिक	थांन
३६)	३

P-996

D.C

Vol. X

J. S. A. B.

L. N. 101

जगीतराय अणंदराव पवार का बेटा

सम्वत १७९७

मिती जेठ सुदि १४ मुकाम फतीयाबाद धौलपुर का जो

बालाजीराव ने बिदा किया तब मुसारनअले नैं रतन

ग्रह थे दिया कीमती ८७४॥) थान ६

सरपेच जड़ाउ तोरा १ कीमती गाबिद १६६६)

७०५॥)

१

थान ५

बाप को नाव लिष्यो नहीं

मिती प्रथम सावण बुदि १ नैं मुकाम अजमेर श्री जी

दरबार का बिराज्या जगीतराय उदाजी पवार का बेटा

का स्योराघ दिषण चाकर साहुराजा का हजूर आया

त्याकी मुलाजमति हुई सार का रजपुतबारलै दिषणषानैं

बैठाया का त्यानैं अद्र बुलाया त्याकी मुलाजमत हुई

मारफत राजा अयामल की यानैं दे डेरा बिदा किया

सुगंदग्रह थे दिया

(Cont.)

जसोतराय अणंदराव पवार का बेटा

सम्वत १६६८

मिती भादवा सुदि १३ मुवाफिक कौल इनाम जईस्म मलार राणाजी वा जसवंतराय व पीला जादव मैदा पंडित कें वास्तें मिती जेठ सुदि १४ साल सम्वत १६६६ हुकम हुवा रुपया १५०००) तीगे ईनामकें रुपया १५०००) तीम्ये मुशारन अल्हे नें ३०००)

मुवाफिक कौल मिजमानी जईस्म जसवंतराय पवार जमीत ले हजूर आया सो मिजमानी कें वास्तें मिती सावण सुदि १ साल सम्वत १६६६ हुकम हुवा रुपया १०००) तीगे मिजमानी कें १०००)

सम्वत १६६६

मिती कातो सुदि १४ मुवाफिक कौल मिजमानी जईस्म राणा सिध्या वगैरह कें वास्तें मिती जेठ सुदि १० साल १६६६

हुकम हुवा तीगे मिजमानी कें रुपया ३५००)

राणा सिध्या १०००) मलार १०००)

मैदापंडित १०००) जसवंतराव पवार ५००)

म्ये मुशारन अल्हे ५००)

(Cont.)

सम्बत १८००

मिती आसोज बुदि ५ मुवाफिक फरद करार मिती भादवा
बुदि १४ सम्बत १७९८ बईसन जसवंतरावपवार नैं
फौज दिषण्या की नैं हजूर सौ रूकसत कियो
तीनैं रूपया १५४००) और दिया तब पीछ व राह षरच
वा सौ पीछै गैला षरच कैं रूपया १५४००)

सम्बत

मिती पोस बुदि ६ नैं मुकाम गांव बणथली प्रगना
टोडा राजा रायसिंघ का रामचंद पंडित का जसवंत
राय पवार आया त्यानैं अद्र बुलाया तोरा वगैरह
दिया का सो राष्या नही

मिती फागण बुदि १३ मुकाम कोटा जसवंतराय पवार
आयो सौ टीका का नजर किया थान ११
फेर मातमी कर डेरा गया

(Cont.)

मिती फागण सुदि ८ मुकाम कोटा राणाजी सिंध्या

वा मलार वा रामचंद पंडित जसवंतराय [redacted] पवार वगैरह

नैं बिदा किया सो बिदा का सिरोपाव तोरा रकम

वगैरह दिया सो रोकडा राणाजी सिंध्या के नाम

षिताया तपसीलवार नावाय नाईं न्ही ती सूं

P-1023-29
D.C.
Vol X
J.S.A.B.

L. N. 102 30th October 1742

जसवंतराय (दभाडे) बेटा उमाबाई षाडेराव की बहु का नैं

सम्बत १७९९

मिती काती सुदि १३ जो रतनग्रह थे उमाबाई

षाडेराव की बहुकनैं भेज्या ती न्धि मुसारनअल्हे

नैं कीमंती साबिक थांन ६ℓ
१३१०=)

कलंगी जडाउ

११९६ ॥=)

१

कपडो सिरोपाव बालाबंदी

सरपेच मुकेसी सुधा की

कीमंती थांन ५

१६०॥)

P-1034
D. C.
Vol. X
J. S. A. B.

L.N. 103 25th February 1745

जयाजी आपा नैं बेटा राणाजी सिध्या का

सम्बत 1801

मिती फागण सुदि 5 ने मुकाम कोटा श्री जी सवार होय मुसारनअल्हे के डेरै पधार्‍या तब मुसारनअल्हे नजर किया कीमंती 104) थांन 5 घोडो १ अर श्री जी जयाजी आपा राणाजी सिध्या का बेटा नैं दे आया

थांन 18 रास 1

मिती चेत सुदि 5 मुवाफिक करद करार मिती सदूकडा की जोडी राणाजी सिध्या का बेटा जयाजी नै जडाउ षरिद करी दीन्ही तीका रूपया 3500) चाहै से सींगै षरच दै रूपया 3500)

P. 1035-36
D.C.
Vol. [redacted] X
J.S.A.B.

L. N. 104 6th october 1746

कुसावा (कुसाजी गणेश) मुतसदी जयाजी का

सम्बत 1803

मिती काती सुदि 3 नें तोसाखाना थे मुसारन अल्हे ने त्रफ

बूंदेलषंड की भेज्या हस्ते बकसीराम सिरोपाव कीमती

साबिक 65) थांन 3

P-1042
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

बईस्म केरोजी मरहैटा (पवार)
सम्बत 1803

मिती सुदि 8 ने मुवाफिक फरद किता 2 म्धे मुसारनअल्हे

ने 200)

(28 मार्च 1747)

मुवाफ्कि फरद करार चेत बुदि

14 सम्बत 1803 नीवाजी

वगेरा व मलार वगैरह की

त्रफ आया सो परच मिजमानी का

रुपया 400) म्धे केरोजी जयाजी

की त्रफ आया तीनैं रुपया 100)

(8 मार्च 1747)

फरद करार मिती प्रथम चेत

सुदि 8 सम्बत 1803 नीवाजी

मारहटा त्रफ मलार की व राम

राय मुनशी वा रामचंद की त्रफ

केरोजी मरहैटा जयाजी की त्रफ

आया सो परच का 300) म्धे

केरोजी त्रफ जयाजी की आयातीनैं 100)

(24 जून 1747) (6 मई 1747) [redacted]

मिती असाढ़ बुदि 13 मुवाफ्कि फरद करार मिती बैसाष सुदि 8

साल 1803 नीवाजी वगैरह राव मलार की त्रफ वगैरह

आया सो बिदायगी का घोडा 3 का सीगै ईनाम रुपया 600)

ती म्धे केरोजी मरहैटा त्रफ जयाजी का ने घोडा रास 1

का रुपया 200)

P. 1042-43

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 106

4th May 1747

रारणजी भूरट्या (रानोजी ओइटे)

सम्बत 1803

मिती बैसाष सुदि 6 अजइय म्हरवानगी सिरोपाव

मेज्या कीमंती साबिक थान

५५।।।= ३
)

P. 1046

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 107

5th April 1749

जनारजन पंडित मुकासदार ईंद्रगढ़ का

सम्वत १८०५

मिती बैसाष बुदि १४ अजईय म्हरवानगी सिरोपाव

कीमंती जाबिक थांन २

४०।)

P. 1046-47

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L. N. 108

जादुराव वकील राजा साहु का मुनसी

सम्वत १७८२

मिती सावण बुदि ६ नै मुकाम जैसाधपुरा दिली का

बईस्म जादुराव मुनसी चाकर साहु राजा का जो

राणाजी श्री संग्रामसंघजी कनैं उदैपुर आयो

जो तीनैं अजइप म्हरवानगी सिरोपाव बकस्यां हस्ते

नोनतराय का पथ थांन ४

तोसाषानां थे सिरोपाव कीमंती

मालिक १६।) थांन ३

सिलिहषानां थे अजइप म्हरवानगी सरपेच

जड़ाउ कीमंती थांन १
३२५)

सम्वत १७९२

मिती फागण सुदि १३ नैं मुवाफिक हु•कम बाजेराव

की मा (राधाबाई) वगैरह कै वास्तै हुकम

हुवा रुपया ३२१००) जीगै षरच कै ती मधे

जादुराव पंडित नैं मिती काती बुदि ६ सम्बत

१७९२ नै रुपया १००)

(Cont.)

सम्बत १७८६

मिती सावण बुदि ५ नैं मुवाफिक डोल षरच बईस्म

माहादेव पंडित व जादुराव बाजिराव कनैं आया पो

षरच नैं वास्तैं मिती बैसाष सुदि ७ साल सम्बत

१७८६ हुकम हुवा तीगै षरच नैं रुपया २००)

म्धे मुसारनअलै नैं १००)

P- 1047- 50

D. C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 109 18th August 1750

जादो पंडित

सम्वत १८०६

मिती भादवा बुदि 13 नैं मुकाम पोहकर (पुष्कर) जी बेहला थे मुसारनअल्हे दिषण्यां का लसकर सूं सदासीव की लार आया तीनैं मिजमानी का ५०)

P. 1051

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L. N 110

जानोजी

सम्वत १८६४

मिती बैसाष सुदि १ नैं साबत बाबुराव बाजिराव

का भाई की साथ आया दिली नैं जाय का

तीनि सिरोपाव कीमती तालिक ८६ ॥=।
३

रुपया ८००) षरच का मुताफिक ढोल रीक

पाया सो एक वालैडा पंडित कै नाम (अस्पष्ट)

सावण सुदि १२

P- 1051
D. C.
Vol X
J. S. A. B.

L.N. 111

4th May 1747

जीबाजी पवार

सम्बत 1803

मिती बैसाष सुदि 6 ने अजर्ईष म्हरवानगी

सिरोषाव भेज्या मारफत दिवाण हरगोबिंद

की कीमंती साबिक थान ५

७४ =

P.1052

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 112

तुकजी पवार

सम्बत १७६८

मिती जेठ सुदि १४ मुकाम फतीयाबाद धौलपुर

वा जो बालाजीराव नै बिदा किया तब मुगारनअल्ले

नै दिया कीमती बाबिक ४६१॥।)

६८

धुगधुगी जडाउ कीमती तोरा १ कीमती बाबिक १८१॥।)

२१०) थांन १ थांन ५

P-1059

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 113

तात्याजी नैं

सम्वत १८०५

मिती असाढ़ बुदि ३ नैं वाके वैसाष बुदि ४

नैं किरकिराणानां थे जो किष्णी ऋफ आगरा

की आया जो मारफत राव केसोदास की

माल भेज्यो तब मुसारनअलै नैं कीमंती ४८२।)

थान दाणो १

६ ॥

P. 1059

D.C.

Vol.X

J.S.A.B.

तुकोजी भाई जयाजी आषा का

सम्बत 1803

मिती काती सुदि 3 ने किरकिराषाना थे मुसारनअल्हे

[redacted] नें त्रक बुंदेलषंड की भेज्या हस्ते बकसीराम

षत्री तोरा । कीमती साबिक 133) थांन 5

मिती बैसाष सुदि 6 ने अजश्व म्हरवानगी

भेज्या सिरोषाव कीमंती साबिक १५५ ॥= थांन ५

मिती बैसाष सुदि 7 ने किरकिराषांना थे

जयाजी का भाई नें पोंहची जडाउ कीमंती ५३६ ।।।=

जोडी १ तीका सरपेच २ (बरगाच [redacted] दोन्यो

माया [redacted] नें भेज्या सो मुसारनअल्हे

नें कीमंती २८६ ।।।= थांन १

मिती असाढ़ सुदि 13 ने तोसाषानां

थे भेज्या सिरोषाव कीमंती साबिक १२५ ।।।)

थांन 5

P. 1064-65

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

No. 115

(दत्ताजी) दाता वा भाई जयाजी आपा का

सम्बत 1803

मिती काती सुदि 3 किरकिराषाना थे मुसारनअल्हे

ने त्रफ बुंदेलषंड की भेज्या हस्तै बकसीराम

तोरा । कीमंती साबिक 130) थान 5

मिती बैसाषसुदि 6 ने अजइय म्हरवानगी भेज्या

सिरोपाव कीमंती साबिक १२१।≡ थांन ५

मिती बैसाष सुदि 7 ने किरकिराषानां थे

जयाजी आपाका भाईने भेज्या पोंहची जडाउ कीमंती साबिक ५३६।॥≡

कीती की सरपेच बणाय दोन्या नैं भेज्यो

सो मुलारन अल्हे नैं सरपेच जडाउ कीमंती २८६।॥≡ थांन १

मिती असाढ़ सुदि 15नैं तोसाषाना थे भेज्या

हस्तै बकसीराम सिरोपाव कीमंती साबिक १२२॥)

थांन 5

P. 1066-67

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 116

दादुराव वकील

सम्बत १६८४

मिती फागण सुदि ६ नैं मुवाफिक डोल षरच

म्हाराणी जी वा मुनषी तोमाराम वा

दादुराव वकील साहु राजा को हजूर

आया त्याकी षरची कैं वास्ते मिती पोस

सुदि ६ सम्बत १६८४ हुकम हुवो तीगे षरच

कैं दनो रुपया १५०) म्धे तोमाराम कैं नाम

५०) बाकी मुषारन अले नैं १००)

सम्बत १६८६

मिती प्रथम असाढ़ बुदि १२ अजइप म्हरवानगी

बाबत सीष का बकस्यां थान ६ रास १

तोसाषांना थे सिरोपाव कीमंती साबित ११६ ॥=

थान २ घोड़ो कीमंती २००) रास १

P-1067-68
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N.117

महीमतीराव पंडित दामाजीगायकवाड का नै

सम्बत १८६६

मिती बैसाष बुदि २ मुवाफिक फारद करार

मिती बैसाष बुदि साल सम्बत १८६६

बईस्म म्हीमतीराव पंडित दामाजी

गायकवाड का नै षरच लाया १००)

पीगै षरच नैं दे बिदा का सीष १००)

P-1074
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L. N. 118 5th February 1742

आनाजी पंडित

सम्बत १८००

मिती आसोज बुदि ५ मुताफिक फसद करार

मिती माहा सुदि १२ सम्बत १७९८ बईस्न

मुतारनअल्हे दामाजी गायकवाड का वकील

ने षरच का रुपया १५०)

P- 1078

D. C.

Vol. X

J. S. A. B.

L.N. 119 7th September 1744

देवराव बेटा म्हादेव पंडित का

सम्बत 1801

मिती भादवा सुदि 12 मुकाम [illegible] दिली

अजह्य म्हरवानगी सिरोपाव कीमंती साबिक

62) थांन 3

P. 1080

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 120   18th May 1741

पीलोजी जादम (जादव)

सम्बत १७९८

मिती जेठ सुदि १४ मुकाम फतीयाबाद धौलपुर

का जो बालाजी राव नैं बिदा कियो तब

मुगारनअल्हे नैं रतनग्रह थे दिया कीमती ११६ ।।।=) ९६

सरपेच जडाउ कीमंती साबित ६३५९ ।।।= १   तोरो कीमंती साबित १८३) थांन ५

P-1083

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 121 19th March 1750

वैंकटराव पंडित मुकासदार बूंदी का

सम्बत १८०६

मिती चेत बुदि 6 मुकाम रेण्या जो दिषण्यां

सेरपुरा ला फोजदार नैं मारयो ती थे

सिरोपाव कीमती साबित ४० ।।।)
३

P. 1087

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

बालाजीराव बाजेराव दिषणी को बेटो राजा साहु

का प्रधान सवाई बाजेराव

तोरा वगैरह

सम्वत १७९७

मिती जेठ सुदि ६ मुकाम फतीयाबाद धोलपुर

का बालाजीराव बेटो बाजेराव को दिषणी

श्री जी की हजूर मिलबा आया तब पीगै

ईनाम में दिया

थान बबजा जोडी राम जंजीर

रतनग्रह थे दिया कीमंती माफिक १२८७९॥७

थान बबजा १ जोडी १

३६

मिती जेठ सुदि १४ मुकाम फतीयाबाद धोलपुर

बालाजी बाजेराव का बेटा वगैरह दिषणी नैं

बिदा किया तब मारफत राजा अयामल की

दिया हस्ते महादेव हथणी बाँत कीविला

रतनग्रह थे दिया कीमंती वा थान जोडी

११४३२॥७ ४७ १

(Cont.)

मिती असाढ़ बुदि १ नैं गजशाला थे जो मुबारकअली
श्री जी की हजूर मिलबा आयो मिती जेठ सुदि ६
नैं तब दिया मुकरड़ा जंजीर १ थान ३४
हाथीराजगज १

मिलाप

मिती जेठ सुदि ८ मुकाम फतीयाबाद धौलपुर
बालाजीराव बाजेराव को बेटो मचकुंदकुड़ै आय
डेरा किया त्यांनैं मिजमानी भेजी रोक ५०००)
मिठाई मण ८।/५ आंबा २ षरबूजा का ५
मिती जेठ सुदि ६ मुकाम फतीयाबाद धौलपुर मिलाप
बालाजी बाजीराव को श्री जी सवार होय बालाजीराव
बाजेराव का बेटा सो मिलबा पधारया जोजन ॥= कै
नजीक तो घोड़सवार हुवा सो बालाजीराव डेरा सूं
आधी दूर आयो आधी दूर श्री जी पधारया सो
बालाजीराव हाथी सवार थो सो घोड़ै सवार हुवो
सो आंब का पेड़ कनैं बिछावण कराया था
जीठै घोड़ा सो उत्तर बगलगीरी करी श्री जी
जुहार कियो बालाजीराव खड़ा है सो कहयो
पैहली राणाजी सिंध्या का मलार वगैरह सौं
बगलगीरी करी छी आंब का पेड़ नीचैं बिराज्या
घड़ी ॥ पाछै बालाजीराव नैं सीष दीन्ही श्री जी
डेरा आय बिराज्या (cont.)

मुकाम फतीयाबाद धोलपुर दिन घडी 2

श्री जी दरबार कर बिराज्या नवाब आलमषा

वा म्हमद ईदषा वा राजा दलेलसींघजी वा

नवाब समसामदौलाजी आधा घडी 1 दिन थे

बालाजीराव वगैरह दिषणी आया त्यां ने श्री जी

आरली कोठी वा डेरा चा अंद्र पेसवा आय

दिवाणषानैं जाय बिराज्या श्री जी की बराबर

तरफ बाई बालाजीराव बैठ्यो वा नीरे मलार

वा राणोजी सिंधो वा मानसींघ उदापवार वा

बेटा वगैरह बैठ्या तरफ ऐल्नैवाब समसामदौला

जी वगैरह बैठ्या मन ब्यारदरी अद्र षिलवत वा

डेरा में भेज्या नवाब समसामदौला वा

मलारवा राणा आलमषा वा मैमद ईदषा

सिंधा वा मानसींघपवार

वगैरह

(Cont.)

राव दलेलस्यंघजी

श्री जी वा बालाजीराव दरबार बिराज्या रह्या

पान जवाहर वगैरह दिया दो पघड़ी राल गया बालाजी

राव वगैरह नैं सीष दी ई पाछै नवाब कमरुद्दीन

दौलाजी वगैरह नैं सीष दीई पाछै डेरै पधारया

बालाजीराव नैं दिया जवाहर कीमती 10680 ।।। ≈

थान 3 दुसाले 1 जोडी 1

कटारी जडाउ कलंगी जडाउ

मिती जेठ सुदि 10 मुकाम फतीयाबाद धौलपुर श्री जी

सवार होय बालाराव कै डेरै पधारया जो

बालाजीराव नजर किया

हाथी 1 घोडा 4

मिती जेठ सुदि 14 मुकाम फतीयाबाद धौलपुर

श्री जी तीसरै पहर दरबार आय बिराजा

बालाजीराव बाजीराव का बेटा हजूर आयो तीनैं

डेरै ले गया पाछै नवाब आजमखांजी आया

पाछै कमरुद्दीनदौलाजी आया पाछै मलार वगैरह

आया त्यानैं बिदा कर दिया बिदा का तोरा वगैरह

बालाजीराव व राणाजी सिंध्या वा मलार वा पीलोजी

जादम वा रामचंद पंडित वा जसवंतराव पवार वा [redacted]

मैदाजी पंडित वा तकूवार वगैरह नैं दिया तोरा

रकम वगैरह रो वकायाका खाता गेना व बाब

में तफसीलवार जिताया है

(Cont.)

सम्बत १७६८

मिती भादवा सुदि १ ने रत्तनग्रह थे मारफत

राजा शामल की वापडो भेज्यो कीमती माफिक ११०८॥=

थान २१

मिती भादवा सुदि १३ मुवाफिक कौल मिजमानी

बालाजीराव बाजेराव का नैं मिजमानी रैं वास्ते

मिती जेठ सुदि ८ साल सम्बत १७९७ हुकम हुवा

रूपया सीगे मिजमानी रैं रूपया ५०००)

५०००)

बालाजी बाजीराव

सम्बत १७९९

मिती पोस सुदि ८ रत्तनग्रह थे बालाजीराव

बाजेराव का दिषणी रैं बेटो हुवो तब

भेज्या मारफत राव किरपाराम की हस्ते

मोतीराम अगरवाला

थान जोडी दाणा तोला ६३/१

२० १ १४१

जवाहर कीमती माफिक का

२३५२॥।) P-1095-1117

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

बालाजीबाजीराव

सम्वत 1801

मिती चैत सुदि 13 नैं मुवाफिक करार कराए मिती

चैत सुदि 13 सम्बत 1801 बालाजीराव की फौज बुलाई

त्यानैं जमीयत षरच का देणा ठहराया बिल

मुकता रुपया १६००००० उगरणो सलामतीम्धि

रुपया दस लाष तीनैं सैदयो रुपया १००० ३००)

जमीयत षरच का रुपया

	बटा का
100000)	300)

मिती असाढ़ सुदि 2 नैं तबेला थै ावाई बाजीराव

नै भेज्या मुकरडा

रास 3	थान 66

कीमती हाली 600)	650)	500)
।	।	।

P. 1120

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 124 30th May 1745

मिती फागण बुदि ७ नैं वकि जेठ सुदि ।।

सम्बत 1801 नैं बालाजी बाजेराव दिषणी नै

भेज्या बाबत बेटो हुवो तीका मारफत राजा

अयामल हस्ते प्रोहत लोकमणी ले गया कीमती ६१८६)।।

थान ५४।। दाण २ जोडी १ गज १।। ≡।।। तोला ऽ४)

बेटा बालाजी बाजेराव का नैं ४०५१) ।।

थान १६१ जोडी १ तोला ऽ४) दाणा २

जवाहर कीमंती साबिक ३४४५।।ऽ।।

P. 1123-25

D.C.

Vol.X

J.S.A.B.

L.N. 125　　　　3rd July 1750

बालीजीराव

सम्बत १८०६

मिती असाढ़ सुदि १० सम्बत १८०५ नैं जो

मुबारनअल्ले के बेटा हुवा ला भेज्या मारफत

दिवाण विद्याधर हस्ते बहादुर साडया कीमती ५२ ६७ ॥=

ला

थान	जोडी	दाणा	दणी	वजन	गज
५७	१	१४३	२	ऽ६)॥	४।।।•।।

जवाहर

३४४३।।।)

P. 1130

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 126 17th May 1741

वकु बालाजी राव जी नैं

सम्वत १७९८

मिती जेठ सुदि १३ मुकाम फतीयाबाद धौलपुर

का रतनग्रह थे बालाजीराव जी वकु नैं दिया

हस्ते महादेव पंडित

थांन जोड़ी २ दाणा १३२

१६ जवाहर

५२६१७

P-1134
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N. 127 6th January 1744

गोबिन्दराव मुवासदार उदैपुर का

गुमास्ता प्रधान पंडित का

सम्बत 1800

मिती माह सुदि 3 नैं मुआरनअल्हे नैं दिया

मुकरडा थांन 18 रास 1 कीमंती 300)

P. 1138

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 128 6th January 1744

स्यामराव गुमास्ता गोबिंदराव का

सम्बत 1800

मिती माह सुदि 3 मुसारन अल्दे पंडित

प्रधान की त्रफ आयो तीनें सिरोपाव

कीमंती तालिक 31)

थान 3

P. 1139

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 129

बैबाजी पंडित बालाजीबाजिराव का बेटा को मुनसी नै

सम्वत १७६७

मिती चैत सुदि 55 मुकाम सागरे सिरोपाव कीमती

गाजिव ६३) थान ३

सम्वत १८००

मुवाफिक फरद करार मिती चैत सुदि १ सम्वत १७६८

मुसाहनआले को वकीलो ध्याई मैपुर मैं रहै जतैह

महा रुपया ५०) देबा आवई सुभ हुती तो पेसगी

महीना १ का रुपया ५०)

P-1142-46
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N. 130

म्हादेव पंडित वकील

सम्बत १७६६

मिती आसोज बुदि ८ मुवाफिक स्याहे हजूर बईस्म

म्हादेव पंडित दिषण्या को वकील ला सदास्योव

मुनसी (अस्पष्ट) को दिली सुं हजूर आया तीनें अठ

बुलाया मुलाजमत हुई मिजमानी का भेज्या

म्हादेव नैं ५००) सोदा मुनसी ५०)

मिती पोस बुदि ७ अजइप म्हरवानगी सिरोपाव

कीमंती साबित थांन ३
८८।)

मिती पोस बुदि ऽऽ नैं मुवाफिक फरद करार पोस बुदि ११

सम्बत १७६६ म्हादेव पंडित बालाजीबाजेराव का

वकील नैं सीगे षरच कैं दयो रपया ५०००)

P-1145-46

D.C.

Vol X

J.S.A.B.

L.N. 131 29th August 1746

रुघनाथ पंडित

सम्बत 1802

मिती आसोज बुदि 9 बाबत बूंदी हाडा सूराड

हुई तीमैं भला दिषाया फते करी तीका अजइय

म्हरवानगी सिरोपाव कीमंती साबिक ३६)

थांन २

चाकर कही को लिष्या नही

P. 1149
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L. N. 132

बाजीराव दिषणी दिवाण राजा साहु का

तोरा वगैरह

सम्बत १७७५

मिती फागण सुदि २ नैं मारफत नानुराम चोधरी

की सिरसिराषानां थे भेजा थान ६ जोडी १

मोत्या की जोडी सोना की तोरा १ कीमंती साबिक

२६०३) जोडी १ ३८१) थान

सम्बत १७८६

मिती बैसाष सुदि ५ ने सिरसिराषानां थे राजा साहु

वगैरह दिषणा नैं भेजा हस्ते दीपसंघ लुंमाणी

की मधे बाजीराव नैं बाबत बेटी का व्याह का कलंगी

जडाउ कीमंती ६५१) थान १

मिलाप

सम्बत १७६२

मिती माहा सुदि ११ सिरसिराषाना थे बाजीराव दिषणी नैं

गज १

राजामलजी ले साथा थान १०८

जवाहर ८०१३ ।।।)

सरपेच जडाउ कीमंती ६४६८)

(Cont.)

मिती चेत बुदि १० बुधवार मुकाम गांव झाड़ली मिलाप

मुलाजमत जो बाजेराव प्रधान साहु राजा का सौं श्री

म्हाराजाधिराज (ज) डेरा थे कोस ।।। पर जाय उभा का

जब बाजेराव प्रधान आय मुलाजमत करी श्री

म्हाराजधिराज का बाजेराव मुजरो कियो म्हाराज भी माथे

हाथ. धरयो राम्चंद दिवाण बाजेराव का वगैरह

आदमी ६ नो म्हाराज बगलगीरी करी बाजेराव

नैं डेरा नैं सीष दीन्ही म्हाराज डेरा आय दाषल हुवा

दिया कोदून्ही

मिती चेत बुदि ११ मुकाम झाडली प्रगना मालपुरा की

एक पहेर च्यार घड़ी दिन बाकी थे सरज पहुंची बाजेराव

आवै छै अगाड़ी काऊं डाव नैं आगो तब श्री जी

दरबार कर दिवाण षानैं आय बिराज्या बाजेराव

नैं राजा अयामल डेरा थे ले आयो म्हाराज पास

दाज कनैं आया बगलगीरी करी दोन्या सिर पर हाथ

(Cont.)

धरयो म नदग्रबाजेराव नैं बैठा श्री जी बिराज्या पाछै
अंद्र पधार गलार बाजेराव राजा आमल रामचंद
दिवाण बाजेराव का अंद्र गया पहेर १ षलबत में बैठ्या
पाछै श्री जी व बाजेराव बारला दिवाणषानां कने उभा
ही डेरा नैं सीष दीई आप म नद प्र बिराज्या पाछै अंद्र
पधारया राणी (नाम नहीं) जी देव लोक हुवा री षबर
आई तीथे ष ाबोई पन धरयानथी

मिती चेत सुदि १ नैं	और तोरा वगैरह माल
मुकाम गांव झाडली ऐक पहेर	दियो छै
दोय घड़ी दिन रहया श्री जी दरबार	
कर गो बाजेराव हजूर आयो	किरकिराषानां थे दिया
तीनैं अंद्र षिलबती में लेगया	कीमंती गालिक समया
षगबोई पान बकसी तोरा	१४ ५४ ८ ५ ।।।
वगैरह दिया घडी २ दिन थे	
डेरा ने बिदा किया	

(Cont.)

मिती चैत सुदि ६
मुकाम झाडली बाजेराव
हजूर आया सीमे अंग्रले
गया पालकी २ जनानी
वा मरदानी दोन्ही
साजस्यूधी व का काया
का स्याहा स्यू सिजी है
मिती चैत सुदि १२ मुकाम मोरला
श्रीजी सवार होय बाजेराव के
पधारया
मिती बैसाख बुदि १ मुकाम मोरला
जीश्री जी हजूर आया तब दिया
थान ४४
मिती बैसाख बुदि ६ मुकाम गोहलपुर
मुसाफर अल्हे आयो सो अंग्र
गयो पाछे डेरा ने बिदा कियो

(cont.)

मिती प्रथम जेठ सुदि १

मुकाम गैहलपुर श्री जी

सवार होय राजा साहुका

प्रधान बाजेराव कै डेरै

पधारया

मिती प्रथम जेठ सुदि 2 नैं

मुकाम गैहलपुर जो बाजेराव पोक्कर (पुस्कर) जी जाय

आयो तीनैं घडी 2 दिन थे राजा अयामल हजूर ल्यायो

जब श्री जी अंद्र ले गया यानैं दिया जवाहर वगैरह दे

सीताग. (तलारा) नैं बिदा किया रात पहैर 1 गया

मुकाम गैहलपुर जो बाजेराव वगैरह दिषणी

साहु राजा का जो श्री जी की हजूर बिदा होबा आया

तब तावा दिवा नैं हस्ते राजा अयामल कै किया

मुवाफिक तपसील जेल थान 26 जोडी 1 दाणे 1 गज 3।।

मिती प्रथम जेठ सुदि 3 नैं लेलाजी न थाना थे दिया

बाबत बिदा का रास 6 थान 126

(Contd.)

मिती दुतीक जेठ बुदि १ नैं मुवाफिक कौल मिजमानी

बाजेराव की मा उदेपुर गो सवाई जेपुर आवें

छै ती वगैरह वास्ते मिती ला ीज जैल हुकम

हुवा रूपया ६०००) मिजमानी का दयो तीम्धे

बाजेराव दिषणी आयो गो मिजमानी का

मिती चेत बुदि १४ सम्वत १७९२ नैं दिया रूपया
५०००)

(Cont.)

बाजीराव

सम्बत 1763

मिती माह बुदि 1 नै पीलषानां थे दिया वाके

मिती भादवा सुदि 2 सम्बत 1762 नै अजइप म्हरबानगी

रथ हाथी कोई को साज सुंधा दियो वाकै प्रथम जेठ

सुदि 2 सम्बत 1762 नै दियो है बिदा होबा आयो

तब दियो

मिती फागण सुदि 2 नै कोठा थे वाकै चेत सुदि

10 सम्बत 1762 नै दिया थान 181 सेर ॥ 8 ॥

मिती बैसाष बुदि 1 नै पीलषाना थे जो मुसारन अल्हे

पोहकरजी सापड़बा गयो तब दीलाणवाली थान 2

रषल सुंधा दिया मुकरडा थान वाके मिती जेठ बुदि 2

सम्बत 1762 नै थान 12

मिती सावण बुदि 1 नै फरासषानां थे

वाकै भादवा सुदि 2 सम्बत 1762 नै बाजेराव

दिषणी नै पेसषानो बणाई दिया

थान	जोड़ी
602	14

P- 1150-1205
D. C.
Vol. X
J. S. A. B.

L.N.133

बाजेराव की मा राधा आई तींनि

सम्बत १७९१

मिती असा. बुदि ऽऽ नै श्रीजी पालकी सवार होय

बाजीराव की मा कैं पधारया

मिती सावण बुदि ६ नैं किरकिराखांना थे बाजेरावकी

मा आई तब दिया थांन १० माला मोत्या की

कीमंती १७५८ ॥)

मिती भादवा बुदि १ श्री जी पालकी सवार होय बदन संघ

जाट की हवेली मैं बाजेराव दिषणी की मा नैं गया

जीनैं बिदा करबा गया तब बाजेराव की मा नजर किया

थांन ४६ त्यांम्धे दिया थांन ४०

कवर इसरीसंघजी नैं ५ कवर माधोसंघजी नैं ५

जनानी ड्योढ़ी

दिया ३० बाकी राष्या थांन ६

जो बाजेराव की मा नैं श्री जी बिदा करबा पधारया

तब दे आया मुवाफिक तफसील जैल

कील षानां थे बाजेराव की मानैं बिदायगी

का दिया जंजीर १ थांन ८

सम्बत १७९२

मिती काती बुदि १४ नैं मुवाफिक कौल पुन्य बईसम

बाजेराव दिषणी की मा कैं वास्ते मिती असा.

बुदि ऽऽ साल सम्बत १७९१ हुकम हुवा म्होर

हजार १०००) सीगै पुन्य कैं दयो म्होर १०००)

(Cont.)

मिती माहा बुदि १ नै लोठा थे बाजेराव की मा गयाजी गई तीनै दिया वदि मिती भादवा बुदि ऽऽ सम्बत १६६१ थान २०

सम्बत १६६२

मिती [redacted] सुदि १३ नै मुवाफिक डौल पुन्य अनकोट वगैरह नैं वास्तैं मिती तपसील जैल हुकम हुवा सीगै पुन्य के दयो म्होर १०ऽऽ(१२६००) ती मधे बाजेराव की मा नैं सीगै बरषागण दैं वास्तैं मिती भादवा सुदि १ साल सम्बत १६६१ नैं हुकम हुवा रुपया १२५००) सीगै पुन्य दे दयो रुपया १२५००)

मुवाफिक डौल षरच बईस्म बाजेराव की मा तरफ गयाजी की जात्रा स्त्या वगैरह नैं दिया सो वास्तै रुपया दे मिती तपसील जैल हुकम हुवा रुपया ३२१००) सीगै षरच दैं दयो ती मधे बाजीराव की मा तरफ गया जी की जात्रा सो षरच दैं वास्तै मिती भादवा सुदि १ साल सम्बत १६६१ हुकम हुवा सीगै षरच के दयो रुपया २५०००)

मिती बैसाष सुदि ६ मुवाफिक डौल षरच बईस्म बाजेराव की मा नै म्होर १०ऽऽ म्हाराजकवारजी चढाई तीतैं वास्तैं मिती भादवा सुदि १ साल सम्बत १६६१ हुकम हुवा सीगै षरच के दयो म्होर १००ऽऽ

(Cont.)

मिती प्रथम जेठ बुदि ८ मुवाफिक डौल मिजमानी बाजेराव
की मा मिती सावण बुदि ५ साल सम्बत १७९१ मैं
रणवास मैं आई सो म्हाराज मिजमानी की म्होर 100)
दी नही सो वास्तैं म्होर दें मिती सावण बुदि ६ साल
सम्बत १७९१ हुकम हुवा सीगै मिजमानी के दयो म्होर 100)
मिती दुती जेठ बुदि १ मुवाफिक डौल मिजमानी बाजेराव
की मा उदैपुर सूं सवाई जेपुर आवैं है ती वगैरह दें वास्तैं
मिती तफसील जेल हुकम हुवा रूपया 6000) सीगै मिजमानी
दें दयो तीम्बे बाजेराव की मा ने उदैपुर सै सवाई जेपुर
आवे है त्या सा म्हा प्रोहित दौलतराम भेज्यो है सो
मिजमानी वगैरह का षरच मैं मिती असाढ बुदि ४
साल सम्बत १७९१ मैं मिजमानी का रूपया 1000)
मुवाफिक डौल षरच रोजीना सईस बाजेराव की
मा सवाई जेपुर मिती असाढ बुदि ८ साल ~~सम्बत~~ सम्बत
१७९१ आई तीदें वास्तैं मिती असाढ बुदि ८ साल
सम्बत १७९१ हुकम हुवा रूपया 125) सवाई जेपुर
रहे जते देतो रहो अर सीगै षरच दें दाषल करो
मुवाफिक तीमिती तफसील जेल रूपया 8500)

सम्बत १७९४

मिती फागण बुदि १२ मुवाफिक डौल पुन्य बरषासण
बाई राधा बाजेराव की मा कनैं हुंडी रूपया 25000)
की साह भिषारीदास लुणकरण की औरंगाबाद
कराय भेजी सो वास्तैं रूपया दें मिती बैसाष
बुदि ३ साल सम्बत १७९३ मैं हुकम हुवा रूपया 25000)
की हुडी सीवाय हुडावण सीगै ~~श्र~~ पुन्य दें दाषल
करो रूपया 25000)

P-1219-29
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N. 134

सम्बत 1801

मिती जेठ सुदि 5 मुवाफिक फरद करार मिती जेठ

बुदि 11 साल सम्बत 1801 राधाबाई बाजिराव की मा

नैं बरषासण का रुपया हमेस दिज्यौ सौ सम्बत

1801 का साल का रुपया 25000) भेजरणा सीगै

बरषासण दैं रुपया 25000)

साष स्यालु	साष उन्हालु
12500)	12500)

P. 1231

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L. N. 135

गजेराव दिषणी चाकर बाजेराव की मा का

सम्बत १८६१

मिती बैसाष बुदि १० नै बाबत गजेराव सीसोदया चाकर

बाजेराव का हजूर आया तीनै बाबत बिदा का अंजइय

म्हरबानगी सिरोपाव कीमंती नाकि ५०।) थांन २

नाम ई मात लिष्यो

मिती असाढ़ बुदि ८ नै मुवाफिक चिठी बईस्म

गजेराव दिषणी बाजेराव की मा की तरफ हजूर

आयो तीनै षरच का मुवाफिक करद करार मिती

बैसाष बुदि ३ सम्बत १८६१ सा । १०)

P-1233
D. C.
Vol. X
J. S. A. B.

L.N. 136 8th August 1735

बाजेराव की बहैण नैं

सम्वत १७९१

मिती भादवा सुदि १ नैं जो बाजेराव की म नैं गयाजी

ने बिदा करता श्री जी पधारया तब मुकारनअले नैं

सिरसिरापाओं थे दिया थान तणी गिरह

४ १ ।।।

P-1235
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N. 137 2nd March 1736

बहु बाजिराव वी नैं

सम्बत १७९२

मिती चेत सुदि १ नैं विरविराजाना थे मुकाम झाऊ ली

वा दिया जो बाजिराव श्री जी वी हजूर आया

तब मुजारन अल्हे वी बहु नैं दिया वीमती वा

६३१५।≡

थान १८ जोड़ी २ गज

१४

जवाहर वीमती

५५१३॥≡

P-1236

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L. N. 138

वाकिद हलकारा

सम्बत १७६२

मिती काती सुदि १५ बाजेराव री मा का कासिद नैं २)

मिती माहा सुदि ३ नैं वाकिद हरकारा बाजेराव का नैं ५)

सम्बत १७६३

मिती फागण बुदि १३ नैं बईस बलु षा वाकिद

बाजेरा का नैं बिदायगी का ४०)

P-1239-40

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L. N. 139 8th August 1735

महैता नायक नैं

सम्वत १७९१

मिती भादवा सुदि १ नैं बाबत बाजेराव की मा नैं श्री जी

बिदा करवा पधारया तब साथ वा नैं दिया तब

मुसारनसले नैं सिरोपाव कीमती साबित थांन

३४) २

P-1241

D. C.

Vol. X

J. S. A. B.

L. N. 140 30th January 1736

गणेश पंडित

सम्वत १७९२

मिती फागण बुदि १४ नै अजइप म्हरबानगी बिदा

को सिरोपाव दीगीती गाबित ४२।) ३

P-1241
D. C.
Vol. X
J. S. A. B.

L.N. 141

दीनानाथ वकील

सम्वत १७६१

मिती सावण सुदि ५ नै मुवाफिक कौल करार वईस्म

दीनानाथ वकील बाजेराव रा वगैरह नै तासूँ हुकम

हुवा रुपया २६००) दयो तीम्हि मिती मागश्र सुदि

१५ सम्वत १७६१ नै रुपया १००)

P-1242

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 142 8th August 1735

बाबु नागव

सम्वत १७९१

मिती भादवा सुदि १ नै जी मालेराव की मा नै

बिदा करबा श्री जी पधारबा तद हाथ का नै

दिया तब मुयारनअले नै

सिरपिराबाना थे मोती की जोड़ी १ कीमती १२०४)

दाणा	तणी	मासा
४	२	ऽ३)२

P-1243
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L. N. 143 8th August 1735

मानसींघ षत्री

सम्वत १७९१

मिती भादवा सुदि १ नै जो बाजिराव की मा नै श्री जी

गया जी ने बिदा करवा पधारया तब साथ वालोगा

नै बिदा का दिया तब मुसारनअलै नै सिरोपाव

कीमती पालिक थान २

३३ ।)

P-1254
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N. 144

रामिचंदि पंडित दिवाण

सम्वत १७६१

मिती बैसाष बुदि २ नैं मुकाम गांव आबावाल

का मुकारनअल्हे नैं मारफत राजा अयामल की डेरै

भेज्या थांन ४ तणी १

दिरविराषाना थे परपेच बीमाती १२३०)

थांन तणी १

१ सम्वत १७६२

मिती फागण सुदि १३ नैं मारफत राजा अयामल की जो

मिती माघ सुदि ११ सम्वत १७६२ नैं सवाई जेपुर स्यो

दिषण्या मा हु चाल्यो तब कपड़ो ले चाल्यो सो मुकारन

अल्हे दे आया थांन ७

P-1255-56

D. C.

Vol. X

J.S. A. B.

L.N. 145

आभैजी नायक बाजिराव वो बैणैउ दाखोव

का बेटा नैं

सम्वत 1781

मिती भादवा सुदि 1 नैं जो बाजिराव की मा नैं श्री जी

गयाजी नैं बिदा करवा पधारया तब साथ का नैं

बिदा का दिया तब मुजारन अलै थांन 4

सम्वत 1782

मिती फागण सुदि 2 नैं मुजारनअलै हजूर आयो

तीनैं राजामल की हवेली थी चंद ब्रजनाथभट

जाय अंद्र ले आया मुलाजमत हुई

विराबिराअानां थे मुजारनअलै ने पाणी नो लपडो

भेजो मारफत दयाराम खत्री थांन 199

P-1258-59
D. C.
Vol. X
J.S.A.B

L. N. 146

बाबु प्रभु श्री

सम्वत १८८६

मिती चैत सुदि 10 नैं जो मुसारमा के माहुजी बाघ

की लार हजुर आया तीनैं सिरोपाव कीमती

माफिक ४७॥)

मिती चैत सुदि 55 नैं जीनषाना थे बईस्म बाबुजी प्रभु

दिषणी दिवाण हुलकर मलार की हजुर आयो

तब राम १ थान १२

घोड़ो कीमती माफिक १७५)

शाल कीमती २००)

सम्वत १८९१

मिती मागश्र सुदि ४ नैं मुवाफिक कोल ईनाम म्हाराजकवार

माधोसींघ जी वगरह दें वास्तें हुकम हुवा रूपया ४५००)

जीगे ईनाम रे दयो तो म्धे बाबु प्रभु नैं मिती जेठ सुदि ५

सम्वत १८९० नैं षरच मा लाग्या २०००)

मिती माघ सुदि ४ मुवाफिक कोल म्हमानी राजा

गोपालसींघ जी वगैरह आया त्यां दें वास्तें मिती

जेठ सुदि ६ साल सम्वत १८९० हुकम हुवा रूपया

६००) जीगे म्हमानी रे दयो तो म्धे बाबु प्रभु म्हाराज

को वकील हजुर आयो तीनैं षरच मा दिया रूपयो २००)

P-1268-71
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N 147

म्हादेव पंडित

सम्वत १८६२

मिती प्रथम जेठ सुदि १४ तथा १५ जो बाजेराव की मा

ऊफ गयाजी की गई ती की लार दिवाण नारायणदास

नैं भेज्यो को पो दे आगो सिरोपाव कीमती नाबिद ३३)

थान २

सम्वत १८०२

मिती फागण सुदि ६ वातैं भादवा सुदि ११ सम्वत १८०१

नैं म्हादेव पंडित की मा नैं ला ड़ु नैं थिरमा मारफत

राजाअयामल की कीमती थान ४

८३ ॥)

P- 1205-06
D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N. 140

राव मलार हुलकर

सम्वत १७६२

मिती चैत सुदि ७ मुवाफिक तोल षरच जो साल सम्वत

१७६१ में बुंदी का डेरा में राजा अयामल नें नक्दी

की फौज देगनीमकी साथउ जीण की तफ भेजा और

जमीयत रष वगैरह कैं वास्तैं सरकार सो पादशाही षजानां

का रुपया मध्ये मारफत राव किरपाराम कनैं रुपया

ऐक लाष दश हजार दिवाया था ती मध्ये रुपया २००००)

राणा सिंधा व मलार वगैरह नैं षरच का दिया तीकैं

वास्तै हुक्म हुवा मिती चैत सुदि ५ सम्वत १७६३ नैं

सीगै षरच के दयो तीम्धे मुजारनवाले नैं १००००)

P-1290-94

D. C.

Vol X

J. S. A. B.

L.N. 149 16th February 1727

मयाराम वकील साहु राजा का

सम्बत १७८३

मिती फागण सुदि ६ नै मुकाम जैसिंघपुरा दिली का

बाबत मुसारन अल्हे का बाप काल कसि हुवा तीका

सिरोपाव कीमती मालिक थान ३

(621)

P-1294

D.C.

Vol. X

J. S. A. B.

L.N. 150 11th February 1745

रावमलार होलकर

सम्बत 1801

मिती फागण बुदि ६ नैं राणाजी सिंध्या

व रामचंदर्पंडित वा मलारजी कनैं भेज्या

कीमती २४८) छींट आलम२४ म्धि मुसारनअल्हे

थांन ८

P. 1295-96

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

मिलाप

सम्बत 1801

मिती मागश्र सुदि ११ मुकाम गांव बणाथली प्रगना टोडा

श्री जी दरबार आयबिराज्या राणाजी सिंध्या वा मलार

दिषणी हजूर आया तब श्री जी मसनद प्र उभा होय

माथा प्र हाथ धरयो तब दिषण्या भी माथै हाथ धर

मुजरो कियो घडी । बिराज्या सिरोपाव तोरा श्री जी की

नजर किया राणाजी सिंध्या २५४)

मलार कीमती ३२६) १०

थान १०

पाछे डेरा नें सीष दीई

बाही त्रफ बैठना उप्र मलार नीचे राणाजी सिंध्या

मिती फागण सुदि ५ मुकाम कोटा श्री जी सवार

होय मलार जी के डेरै पधारया तब ल्याया

जवाहर कीमती ८८६॥) थान २

घोडा रषत सुधा रास २ ३००)

२५०) हाथी मजीर १ १

१

P. 1299- 1301
D.C.
Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 152

राव मलार होलकर

सम्बत 1802

मिती काती बुदि 6 नैं मुवाफिक फरद करार मिती

जेठ बुदि 13 सम्बत 1801 राव मलार व राणाजी

सिध्या कनैं रुपया 300000) की हुडी औरंगाबाद की

सीगै जमीयत खरच कैं भेज्यो ती म्धे मुसारन अल्हे नै

आया

150000)

P- 1301

D.C.
Vol. X
J.S.A.B.

L.N. 153 10th January 1746?

मीजराव मलार को सालो

सम्बत 1802

मिती माहा बुदि ११ नै मारफत राजा अयामल दिषण

भेज्या सिरोबाव कीमती साबिक ३६ ॥>॥ २

1314

P.N. [redacted]

D.C. 10

J.S.A.B.

L. N. 154

माहजी बाघ

मिलाप

सम्बत १६८६

मिती चैत बुदि १० नैं मुलाम गांव षीजुरया प्रगना

मंदसोर माहजी बाघ दिषणी चाकर राजा साहुका नैं

लेबा दौलतसंघ कुंभाणी दीपस्यंघ का भाई नैं भेज्यो

सो दोफेरा हजुर ले आयो श्री जी दरबार कर बिराज्या

का राजा श्यामल का केसोराय का भाणजा का

आदमी १ राणाजी की त्रफ को ड्योढी बनैं पेसवा बैठ्या

नजर करी रुपया ५) म्हाराज फरमाई थे षात्र जमा राषो

अर नीगे ईनाम कैं बकस्यो रोक चैत सुदि ६ नैं

रुपया १००)

हजुर आया तब बकस्यो

थान जोड़ी १ राम २

५६८

मुसारनअले नैं

कड़ा सौना का कीमंती

४१५

बाबू प्रभु नैं

घोड़ा राम १

P-1318-19
D. C.
Vol. X
J. S. A. B.

L.N. 155

रामचंद पंडित

मिती सावण बुदि 7 मुवाफिक करार करार असाढ़

सुदि 13 साल 1802 ईनाम रामचंद पंडित नैं गांव

ब्रजमानपुर परगना सवाई जेपुर का ईनाम रुपया 20000)

का दिया जाती मधे रुपया 10000) की हुंडी तो

आगै भेजी अर हाल रुपया 10000) की हुंडी और

भेज्यो सम्बत 1802 हाल साल ऐवज गांवा की

सीगै ईनाम रुपया 10000)

P. 1332

D.C.

Vol. X

J.S.A.B.

L.N. 156 18th October 1749

रघुजी घोसल्या (भोसले)

सम्बत १८०६

मिती काती बुदि ८ किरकिराषाना थे मुसारनअल्हे

नें भेज्या मारफत सुषानंद गुजराती कीमंती १११११॥=

थान जोड़ी १

२६

P. 1357

D.C.

Vol. IX

J.S.A.B.

L.N. 157

10th July 1756

[redacted]

सम्बत १८१३ असा॰ सु १३ वैलवाडी व वरवाडा

वीराढ में जो दिखण्या सु हुइ जोरावरसिंह बहादुरसिंह

फतेसिंह धीरावत आच्छा दिखायो

P-5

D.C.

Vol. XI

Sya Hazuri

J.S.A.B.

L.N.156

जेठ सु. १२ सरबते भद्र महल में

दरबार करी महाराजकुमार ईश्वरी सिंहजी न जुगराज

को खिताब दियो ।

सं. १८०० सावण बु. १० मुकाम जे सिंघपुरा दिल्ली

श्री जी पातशाही मुहम्मदशा जी की

हजूर बाबत रुखसत पधारी

सं. १८०६ जेठ १ रावजा राज जैतासिंघजी कामाका

देवलोक हुआ बाकी मातमी की राजा रामसिंह जी

जोधपुर व श्यामसिंहजी रूपनगर का न लेख

आया

सं. १८२१ पोष बदी ९ न कोटा महाराणी चूडावतजी क

महाराजकुमार चिमनाजी हुआ

P-58-107

D.C.

Vol. XXIV

J.S.A.B.

L.N. 159 18th November 1759

मुआजना खुर्द

सम्बत १८१६ मगसर ब. १४ ककोड़ म दिखण्या सू राड़ हुई तीमे

गुलाबसिंह सावंतसिंह चतुरभुजोत को रिसालो होकाम

आया घोडा

D.C. (Chaturbhujots)

J.S.A.B.

L.N. 160 6th May 1757

सम्बत १८१३

अजीतसिंह राजावत वगैरान स्को कारार मिती

बैसाख वदि ३ सं १८१४ अप्रच दिखव्या सु थे राछ करी

ती का समाचार हरकारा मालुम किया ती की साबासी

थान कीठा ताइ लिखी म्हाका कदमें सारीखा थे ही

जो थेणी काइ लिखा इबात की घणी दाद पावोला

और उठाकी घणी मजबूती राखोला अठा सु भी

सरंजाम पहुंचला

अजीतसिंह	मेघासिंहोजीन	विक्रमाजीतन
१	१	१

D.C. (Rajawats)

J.S.A.B.

APPENDIX —
DRAFT OF KHARITAS
J. S. A. B.

L. N. 1

29th September 1725.

महाराज अभैसंघजीनै रामजी

अप्रंच दीवाण की लिष्यी आयी जो प्रगना इडर मे

दिषणी आवे छा सो म्हे जागीर जेठे जमि सीतोवाण (अस्पष्ट)

फेरि म्हानि अर महाराजा नै ही(अस्पष्ट)तोस्यो बैठे

जमीयत मेजिजाबगा(अस्पष्ट) अर प्रगन ईडर महाराजा जागीर

मे हुवी सो बाकी त्रफ दौलतसींघ(अस्पष्ट) थाणो उठा

दीषणी केरिदवा (अस्पष्ट) सो थाणो हाल म्हा जो उठावा की

सलाह नहीं (अस्पष्ट) महाराजा कहेला सो कराला

जेठा बेठा का व्योहार में तफावत छे नहीं सो या वात

मी. आसोज सुदि 4 सं. 1782 लीषी

Draft Kharita
D. N. 2/37
New 135
old 30
B. N. 4/492
J. S. A. B.

L.N. 2 November-December 1725

महाराणाजीनै ।। रामजी ।।

अप्रंच महाराजा अभैसंघजी नै पातिसाहजी सरबुलंदषा

पाका सौ वे न गया तीस्यौ पातीसाहजी बहौत इष (अस्पष्ट)

अर म्है(अस्पष्ट) लिवा की ताकीद लीषी छौ सौ वा

पातसाहजी षरची देता दीषै नही अर वे सरबुलंदषा

कनै न जाय तौ पातिसाहजी(अस्पष्ट) या सुरती छै आप

नै वाकिफ होवा कै वासते लीषी छै और वानै फेरि

ताकीद लीषी छै अर राजा साहुजी जादौराव प्रभु

मजकुर आगे नवाव षानदौरजी वा षीदमतीगारषां

सौ की पौंछी सो सरबुलंदषा त्रफ गुजरात भी गयौ

तीस्यौ सौ अब फेरि रदृबदल होयली सौं आप

कागद स्मांचारलीषावता रहोला मीती मागीरावदि

(33) संवत 1782 लीष्या

Draft Kharita
NO 136
B.N. 4/515
D.N. 2/171
J.S.A.B.

L.N. 3 1725 - 26 ?

महाराणजीनै रामजी

अप्रंची कागद आपको आयो स्माचार पाया सरबुलंदषा (अस्पष्ट)

सो पतीसाहजी को फुरमान आयो (अस्पष्ट)

पातसाह जी से मुलाजमती करी

(अस्पष्ट)

अर राजा साहुजी की तरफ सो एक दोये (अस्पष्ट) अठे और

पावे सो सुलह की बात धरंधर करिता फिरे है सोईबात

मैं सुवकी होय है अर काम मतालबा को ठीककोई

लागिलोनही ती सो जादोराव ने ठाकी तह फुरमावाला

जो याने ताकीद करी जादों उकील राजा साहु पेरे म्हे कने आपो छो
सो मरैहटां म्हा ए मुलक मैं खलल कीयो तदिह सरमंदगी से
वै म्हाकनै रुषसद मांगी जो हुम मरैहटा पासि जायत ताकीद
करिसों सो रुषसद होय गयो छो फेरि जाहिर हुई जो वो
सरबुलंदषा कनै गयो (अस्पष्ट)

Draft Kharita

No.48

Old No. 124

B.N.4/661

D.N. 2/232

J.S.A.B.

L.N. 4 24th January 1726

महाराणाजीनै ।। श्रीरामजी ।।

अप्रंच कागद आपको आयो लिषायो जो खिजमतगारषां को

षत कासीद हाथि आयोतीमै लिष्यो आयोजो जादौ उकील

राजासाहु का ने सरबुलंदषा कने भेजि दीज्यो सौवां का

लिष्या सौं जादौ ने सरबुलंदषां कने भेज्यो छै पणि

निजामलमुलक ईवात सौं वुरी मानि तो कोई सलाह सो

स्माचार पाया म्हें तो आपने वेका भेजवातई कोई लिष्यो

षत
नहीं खिजमतगारषां [redacted] म्हाकने भेज्यो अर था कह भेजीयो

षत महाराणाजी कने पहौंचा सो वांका कहया सो षत आप

कने भेज्यो अर स्माचारां सो वाकिफ हुवा नहीं जो काई. लिष्या

छै सो अब ई वात की कीया सलाह छै नीजामुलमुलक वुरा

माने तो वनि या लिषावोला जोर सगीयत लेवा घणी गयो छौ

सो वेठा सौं राजासाहु वाघजी के साथि जादौ ने भेज्यो छौ सो वैने

उठै आया पाछै असी जाहरि हुई जो षिदमतगारषां को षत भी इने बुलावा

को गयो छौ सो अब षिदमतगारषां को षत ईनै फेरि सरबुलंदषां पासि जावा

को आयो तीस्यौ सरबुलंदषां कने गयो छै अर याका जुवाव सुवाल सौं

म्हे वाकिफ नहीं अर राजासाह की रदबदल आगे षांनदौराजी वा

षिदमदगारषां की मारफत पातिसाहजी सौं अरजकरि ई भांति ठहराई छी

Contd...../

जो वांका लोग नेवाकर राष्य अर गुजरात वा उजैणि की जायगा

रुपया लाषबीस की दीजे अर वे दौड़ वा सौं बैठि रहे सौ

अब काई को लिष्या सौं पातिसाहजी फुरमाई तुरत या बात मौकुफ

राषी सो हाल तो बात मौकुफ रही है पणि अैठे

दिन ब दिन और ओर बात होय है सो फेरि

जो ठाहरैली सो आपने लिषाला कागद स्माचार

लीषावत रहोला मी.मह सुदि 2 सं.1782

Draft Kharita

No. 114

B.N. 4/476

J.S.A.B.

L. N. 5 6th August 1726

भंडारी रघुनाथ श्री

अप्रंच अरजदासती थाकी आई अरज लीषी जो प्रवान आणबावती इनायत हुवो को सोवाई जीने अरज लिषी है सोजवाव आप लिषस्यो अरु आणदसंघ दीषण्या सौ सगाई वगेरह ठहराबे है ती की जतन (अस्पष्ट) अरज पहोंची अब जबाब आयौ हो लीष्यज्यो अर जोसी संभूराम ने आगे दिषण्या की त्रफ भेज्यो छो अब हे बात(अस्पष्ट)लीषी है अर राजा साहु नै भी लीष्यो है सो फोज का सरदार ने ताकीद करि आणदसंघकी रदबदलमोकुफ रषावला अर बैठा का साहुकारां जैठा की साहुकारां ने लीष्यो जो अण्दसंघरायसंघ बेठवा ने जायगो चाहे है अर वाकने ठाकुर लोग केसी जागीर चाहे है अर चाकरी करनी कबुल करे है सो बात साच है अणदसंघ रायसंघ सौं वा ठाकुर लोगां सौ(अस्पष्ट) सलाह कर वो सलाह ही है जे बात में फीसाद मीटे अर पातसाहजी चाकरी(अस्पष्ट)सौ करौला और सारा सांचार तपसील बार महाराजा(अस्पष्ट) मीती भादवा बदि 6 संबत 1783 लीष्यो

Draft Kharita
No 1, old 22/17
B.N. 4/539, B.N. 3/452
J.S.A.B.

L.N 6 24th October 1726

महाराणाजीनै (श्री)

अपरंच व दरबार का समाचार तो आगे आपने लिष्या ही

क्षा सो मालुम हुवा क्षोसी सरबुलंदषा जी गुजरात की (अस्पष्ट)

सगली आपणे जी मैं करिलीन्ही (अस्पष्ट) दखान

नजमुदीअलीषां नै मालवा (अस्पष्ट) मुकरर कीया अर

निजामलमुलकजी की सुलह ही हुई (अस्पष्ट) वकीलवाके म्हाके

वास्ते अरजकरी जो यानि भेजोला तो नवाव वसवास (अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) बदरीनाथ का षत की नकल (अस्पष्ट) अर सरबुलंदषा

के गुजरात की वात जो आगे ठाहर गई क्षी अर अब मालवा

नै नजमुदीअलीषां नै भेजवो मुकरर ठहरायो अर म्हाणे

भेजवो मोकुफकीयो तो परि म्हे अरजकरी जो मालवै गया

निजामलमुलकजी के वसवास होय छै तो पहेले भी बार

महाराणाजी के देस मैं गनीम आधा क्षा सो अब भी आसी

म्हानै सीष दो तो महाराणाजी की वा मालवा की हद पर जाय बैठा

आगे न जावां सो या वात भी अवार तो वाका मन मैं न आई छै

(Cont.)

परि म्है वात का तलास मै लाग पारहया छा अर

नरायणदास ने मालपुरै राष्यौ छै सो जदि आप

(अस्पष्ट) आछी जमीयत-प्रहौचसी कागाद समाचार

लीषावता रहौला मीती काती सुदि 10 सैवत् 1783 लीष्यो

Draft Kharita

New 162

old 12

B.N. 14/73/12

D.N. 3/304

J.S.A.B.

L.N. 7

16th March 1727

महाराजा अभैसैंघजी नै   ।। श्रीरामजी ।।

अप्रंच पातिसाह जी सौं अरजपहुंची जो गनीम दिखणी सुबारहजार

चालीस कसबे साढ़ोरे नलवद्र(नरबद) की हद में आयलुटि

षसोट करी तीपरि षांडिराब मुतसदी राजा छत्रसैंघजी ने

गनीमा सौं राड़िकरी अर स्योपुरी में राजा छत्रसींघ जी का माणस

छै जैठे गनीम आवत छै राजा छत्रसैंघजी गुजरात छै सो सीताबी

मदत होब सो (अस्पष्ट) चैत सुदि 5 पातिसाहजी म्हानि हजुरिबुलाब

ताकीद फुरमाई जो थांका सुबा में गनीम आया छै सो आज ही

रूषसत होई तो परि म्हे अरज करी आज्य तीनी रात्र छै रूषसत

मुनासिब नहीं सो नीठ से चैत सुदि 10 रूषसत होवो ठाई जोछिबा

कूच की ताकीद (अस्पष्ट) मुकरर हुवो छै (अस्पष्ट)राज्य वठै

मिलबो होयसी ताकीद तो पातिसाहजी की ज्यादा (अस्पष्ट) राजा

छत्रसींघजी (अस्पष्ट) सीतब (अस्पष्ट) सो राज्य मुथराजी कै

ही राह पधारोला बैठे मिलना (अस्पष्ट) फेरि मथुराजी केही

राह पधारोला मीती चैत सुदि 5 संवत 1784 लीख्यौ

Draft Kharita
D.N. 3/259
Basta 3
New 16
Old 73
J.S.A.B.

L.N. 8 11th February 1751

कागद महाराजारामसींघ

[illegible]
अप्रंच कागद राज्य को आयो समाचार तफसील
बार जाण्यो और (अस्पष्ट) मलहार (अस्पष्ट) बेठो
सिताब बजेला और समाचार प्रोहित जगनाथ
लिख्या के सो जाहर करेंगे मीती फागण वदी 12
सं. 1807

Draft Kharita
New No.11
Old No.184
D.N. 4/531
B.N. 11/23
Basta No. 4
J.S.A.B.

L.No. 9 [redacted] March 1751 ?

॥ श्री ॥

मलाररावजी ने

अप्रचि अनोपराम को लिष्यो आयो जो मालजी पटेल

हुंडी ५००) की भेजी छे सो प्रमाति वारवज्यो

हमेसा लिषवा रहीला अठे सारो व्योहार राज्य

काही क: [redacted]

Draft Kharita

D.N.4/582 [redacted]

J.S.A.B.

15th July 1751

L.N. 10

240

[redacted]

[redacted]

मा. रावद्रजनसालजी ने

अर्प्रचि कागद राज्य को आयो समाचार बच्या लिख्यो जो

महाराणा श्री जगतसिंहजी देवलोक पधारया सो बड़ी ही चिंता

हुई सो लिखबा न आवे छै सो महाराज भी विशेष चिंता

न कीला(अस्पष्ट)आर लिख्यो जो दिक्षया बाबति आप

सब मिलि अर ऐकलाकरणी सो तो आगे ही बिचारी छोसे

म्हाराणा श्री जगतसिंघजी तो आपन सो सारी ही बाता सामिल

छा अब राणा प्रतापसिंघजी को सांधन करि भट आपनेहाथि

करणा छ जरुरि तीको म्हाराज बिचारि सलहा लिखबोला

(अस्पष्ट) (अस्पष्ट)

सो प्रतापसिंहजी सौं आपण -/- अंतर को राठोड़ा -/- समाचार

बान्हो लिख्य चलाया छि अर राज्य ने भी लिख्या छे और

अंगदीन दलाल ने भेज्यो छे सो प्रतापसिंघजी की सल्हा होसी तो

माफिक कीज्ये और समाचार लिखावता रहोला

मीती सावण सुदि 4 सं. 1808

Draft Kharita

New 137

Old 423

D.N.4/596

Basta No.4

J.S.A.B.

26th July 1751

L.N. 11 [illegible]

।। श्री ।।

मलारराावजीने

अप्रंचि कागद राज्य को आयो समाचार वाच्या और राजा

वषतसंघजी जोधपुर सहर में वा किला में अमल करि या

(अस्पष्ट)
और करणीदान बारहट बषतसंघजी को भेज्यो अठे/काछे

सो यो यांकिहे छे म्हांको अमलसारे होय गयो छे सो

अव रामसंघजी को उपर न करे और म्हाराजा रामसंघजी को

भेज्यो प्रोहित जगू अठे आयो छे सो (अस्पष्ट) म्हांको उपर

कीज्यो और रामसंघजी का लोग वा मुतसदी वषतसंघजी

स्यो मिलि गया सो रामसंघजी राज्य कनार आवे छे

सो अब राज्य की वात (अस्पष्ट) आ मिलछा रामसिंघ(अस्पष्ट) सु

कूंच करि मारोठ की मुतसिल आया छे सो अव अर राज्य

कनारे आवे (अस्पष्ट) और अनोपराम की लिष्यो आयो जो सूवेदारजी

ने पंडित को लिष्यो आयो जो अव प्रभारी वात नान्हांजी सो वा

पंडित रामचंदजी सो करे छे सो या वात लिषी छे म्हें तो वांसु

आगे ही वहोत तनकरी आगे कागद महाराज ईसरीसंघ वान्हे

लिष्या छा सो राज्य कनार आया रहया छा सो म्हेही लिष्या होसी

वदसलूकी कही बात की नजाणोला म्हाने राज्य

सो सलूक ही राषणी छे मिती भादवा वदि । सं.1808

Draft Kharita,New No.136,D.N.4/687,Basta No.4
B.N.4/619, J.S.A.B.

16th August 1751

L.N. 12

[redacted]

श्री ।। ।। ।।

मलारराव नै

अप्रंचि कागद राज्य को आयो समाचार वांच्या लिख्यो सो सुणवा में आई जो राजाबता वगेरह नेणवा व बुंदी की तरफ कजिया कीया चाहे छे सो उठा का लोगनि ताकादी कराबोला जोलदबी न करेगे जायगा म्हांकी छै सो अठेईबातको ठीक करायो सो राजि ने बरवात कहो खिलाफ जाहरिकरी छै अर म्हां की अर राजश्री जायगा की सो दोय छै सारो व्योहार एक ही जाणोला और किसनसिंघ हाजर वास्ते लिख्यो जो थाने राख्या छै सो थांसु कोई बिगाड़ हो चलो सो अठे बेजायो सुंको हतर है करे बिगाड़ न होवलो ए आगे हमेसासोअठे रहीआया छै सो हबीन भेला लिए अने आया छै

मीति भदव सुदी 7 सं.1808

Draft Kharita

New 187

Old 282

D.N. 4/583

J.S.A.B.

L.N. 13

[redacted]

17th August 1751

जयाजी नै   श्री ॥ ॥

अप्रंचि कागद राज्य को आयौ समाचार वांच्या लिष्यो जो आपको

(अस्पष्ट) नेणवा व जातु छे सो बुंदी नेणवा व तो हमारी षासजागीर

छे सो उधरि कुछ ही षेचल करवी आपने मुनासव नही सो

आ बात कही राज्य ने खिलाफ जाहिर करी छै अर म्हां की

अर राज्य की जायगा किसी दोय छै जारो ब्यौहार एक ही

जाणोला ओर लिष्यो जो किसनसंघजी ने आब

वुलाया छे सो ऐ आव पासि आया छे सो कि (अस्पष्ट)

मीति भदव सुदी ७ सं. १८०८

Draft Kharita

D.N.4/605

New 189

Old 267

J.S.A.B.

L.N. 14 1751 अक्तू.23

श्री ।।

मलारराव ने

अप्रंचि कागद राज को आयो समाचार वाच्या राज्य दीवान कन्हीरामने भेजिबा वास्ते लिख्यो सो पेहली ही भेजिबाकी तयारी कराई छी बरि पंडित देवाजी गोविंदराव की जामिनी ग्रहइ छी ती मधे कथों हिसाब की हबाकी कात्य का सलूक वास्ते ढील हुई छै सोव्याती सरबराहका देदी छै क्यो छेट छै तीकी निसा कराय देवाका थे सिताब होय पहुंचेत्यो म्हबे केती राज्य सु सलूक ही राखवा को तरद्द छै और जोय ईसांको करारदाद ठाहाजो छै सीतो दोयदिन अणोया छै पहुंचविजासी और कोई दिन की ढ़ील हुई छै सो मुलककी खरावी करि हुई छै और बीच्य का आय सकादिला में तकावत वाडि दियो छे सो कन्हीराम पहुंच्या सारी तकावत निकल जासी म्हाके ती राज्य सु की जुदायगीत छै समाचार लिषावला रहीला

मीती कार्ती सु. 15 सं.1808

Draft Kharita

New 188

Old 252

D.N. 4/580

J.S.A.B.

L.N. 15 1751 नवम्बर 8

मलाररावजी ने श्री ।। श्रीरामजी ।।

अप्रचि म्हां केयो बिचार की जो सूबेदार पठाणा ने तंबी

करिबा चालिसी सोम्हैनी भारी फोज करि तोपषानों लार ले सूबेदार

की साथि चालिस्या अर नबाब बजीर स्यो मिलस्या अर पठांराा

ने तंबी करिष्या और आका काम करिष्या परबीच्य में परमेस्वरजी

अकस्मात हीया करीती राजि का दिल में कसर पड़ि (अस्पष्ट)

अर माही (अस्पष्ट) राज्य के साथ चालबा को बिचार

रहि गयो अर राज्य ही चाज्य भी चालबा की बात न कराई (अस्पष्ट)

म्हाके तो भलो ब्योहार के सो राज्य को के राज्य सिवाहि और

कोई बात न के म्हांको मरोजो राज्य को के राज्य अब नबाब

वजीर की साथि पठाणा नो तंबी करिवा चाल्ला सो राज्य ने

इ काम को जस ही आसी

और स्माचार कन्हीराम लिष्या मिती मार्गशिर सुदि । स. 1808

[redacted]

Draft Kharita

New 133
Old 174
D.N. 4/ 656
Basta No.4

J.S.A.B.

L.N. 16

[redacted]
16th July 1752 [redacted]

बषतसंघजीनै ।। श्री ।।

अप्रचि राज्य बी दसषता आयो समाचार बांच्या मुस्याली हुइ (अस्पष्ट)

लिष्यो जो राजसंघजी नै मलार जी कनै मेलिया छै सो

कन्हीरामन ऐ साथि जायसो (अस्पष्ट) तो राजसंघजी

नै सवाइजेपुर बुलाय नै विदा सो सल्हा जाकी लिषी

हरगोबिंद नै (अस्पष्ट) भेज्या छै

लि. कन्हीराम को नीमस्कार

राधाकिसनजी हरनारायणजी

सिबनाथ जी नै ताकीद करार छै

पानसिंघ बंगारोत मिती श्रावण बदी 3 संवत 1809

Draft Kharita
No.91

D.N.4/557

Basta No.4

J.S.A.B.

L.N. 18

1753 नव. 30

मलारराबजीने श्री

औरंगाबादकागद आगे भेज्यो थो त्या सू समाचार जाणमा आसी और

(अस्पष्ट)
म्हे सवाईजैपुर के मुतसदि आय डेरा / पाये और यो मुलक

तावत हीम छे सो मुलक तो म्हांको राज्य को एक ही छे

(अस्पष्ट)
अर पहली को / सवील बाणिसी सो मुलकस्यो ही वणि

आबसी अर मुलक उजेडिगया खलु उन्हालु विगडि गया (अस्पष्ट)

पहला को सलूक रहैहैसी

मागीसर सु.5 सं.1810

Draft Kharita

New 42

Old 169

D.N. 5/719

J.S.A.B.

L.N. 18 18th March 1757

मलाररावजी ने कागद श्री ।। ।।

अबरंच कागद राज्य को आयो समाचार मालुम हुवा लिष्यो जी दिन सूं राज्य सवाईजयपुर दाषिल हुवा सोही दिन आजितई एक ही करिवतायो न सचोटी मामलति में वहित व्योहार लिष्यो कौं तीही तरह जो हरि में आया सो राज्य ऐसो बोहिमो लिष्यो सोराज्य ही विचारि अठै आपात दिजो वयो छे से दे राज्य सूरजांवधी राखी पाकिम्हा मो [illegible] दिलतरफ जावो हुवो सो उठै षरच पडयो अर वेही उषत परि रघुनाथरावजी को वा राज्य को आवो हुवो तदि सलूक कीयो और कन्हीराम राज्य सूं करार करि आयो छो सो जनवू जीका बखेडा (अस्पष्ट) म्हांका मुलक में (अस्पष्ट) हुवो तीसूं (अस्पष्ट) स्वार करार (अस्पष्ट) ढील हुई सो राज्य ह वात तो विचारि (अस्पष्ट) म्हा की जीमा मे ती ढील हुई छ नही और हाल सहवोजी रामपूरे (अस्पष्ट) तो ही आयो वा देवा (अस्पष्ट) लूटिवाला (अस्पष्ट) व्यवहार उपरि निजरि राखी नहीं और कन्हीराम ने राज्य हुंडी भेज्यो (अस्पष्ट) अर व सहवाजी सूं मिलयो (अस्पष्ट) सो सहवाजी कने वो गयो (अस्पष्ट) अनारदसंघ (अस्पष्ट) वास्ते भेज्यो

Contd...../

गया तो राज्य को म्हांको ब्योहार देष (अस्पष्ट) लूट तो ही

(अस्पष्ट) वास्ते दीज्ये छै (अस्पष्ट) कुर लोग जागीरदार मेला

हो गया छै (अस्पष्ट) राज्य आवीला जद दिसारी वात नजरि

आय जावली और जनकूजी की फोज इत्र आवै तो (अस्पष्ट)

हिंदुस्थान की मामलति तिन्हे ही दीता मालूम छे (अस्पष्ट)

हिंदुस्थान की मामलति (अस्पष्ट) हिंदुस्थान की मामलति

(अस्पष्ट) अवदाली दिली आयो (अस्पष्ट) अमली दीयो तो

इजी समय में आपस दो हिंदवाणा धरम की (अस्पष्ट)

मारहठा ही (अस्पष्ट)

Draft Kharita
New 167
Old 129
D.N.5/879
B.N.12/2558
J.S.A.B.

L.N. २७ 23rd March 1757

मलाररावजी ने कागद श्री

अप्रंचि बिसनदास का लिषया सूं समाचार मालूम हुवा और

पठाण मुथरा व्रंदाबन मारया और उठकै (अस्पष्ट) ही उठे आयो

तींका समाचार राज्य कने पहोंचता ही होसी यो जबरदस्त

धरम को विरुधी है इनको कौल बचन को इतबार

न है (अस्पष्ट) और फौज ईंकी भारी आगरे पहूंची है और

हमेसा भेज तो जाय है फौज को हिंदुस्थान ने दबावा

की है सो अब सारा हिंदवा ने एक हुवा हिंदवा का धरम

की मरजाद रहैली राज्य सारी बात का जाणिवा वाली है

बषत में आपसकी इतफाक मन कर करि राष्या सारा ही

की बात भारी (अस्पष्ट) और समाचार बिसनदास नौ लिष्या

है सो कहसी मि. चैद सु.4 सं 1814

Draft Kharita

New 275

Old 5/953

J.S.A.B.

L.N. 2~~1~~ 8th July 1757

मलाररावजीने

अप्रचि रावराजा उम्मेदसंघजी ने राज्य बूंदी बैठा पाका

अब सीध्यामिलक में बषेठा करि राख्यो के

सामीधी बगैर तो अमल कर रिलीज्यो के अर नैणवा व फौज अरराज्य

व षेठ़ा कर के सो यो काँई कारण के

मिती सवण वदि ~~ट~~सं।814

Draft Kharita

U.No. 160

B.N. 6/1118

J.S.A.B.

L.N. 22 15th [redacted] April 1757

महाराव अजीतसंघजी ने कागद ||श्री||

अप्रंचि कागद राज्य को आयो समाचार बांच्या लिष्या

आगरा के दरम्यान पठाण को हंगामो छे सो ई उपरि सल्हा

विचारी होय सो म्हाने लिषावोला सो पठाण का

कागद तो आवोको छा अर जेठा सूं भी पहोंचिवो करे

छा परि इतवार वेको क्यो न छो मथराजी के डेरा छा

सो वेठा सूं कूंच करि दिली पार गया छा समाचार

आया छे अब बकी देस ने जावा की षबरि छे सो

राज्य के समाचार पहोंचता ही होसी और कागद

समाचार लिषावता रहोला

श्री ।। १ ।।

हीमतसंघझाला व पंचोली

अभेराम

अप्रंचि अरजदासति थांकी आइ समाचार मालूम

हुवा और अरिजदासही हमेसा लिषता रहेज्यो

मि. वेसाष बदि 13

सं. 1814

Draft Kharita

D.N.6/983, New 280, B.N.5/950,J.S.A.B.

L.N. 23 23rd October 1757

।। श्री ।। ।। ।।

महाराव अजीतसंघजी ने कागद

अपरंच कागद राज्य का आया समाचार बांच्या लिष्यो

महाराजा नाथ जी वा जसवंतसंघजी वा उमेदसंघजी मेवाड़

का गांवां सूं बषेडो कीयो तीका समाचार मालूम हवा होसी सो

उपरी काई विचारी सो लिषावोला सो ई वास्ते दिष्ण्या ने भी

लिष्यो छे अर अठे भी तैयारी कराई छे ओर कागद समाचार

लिषावता रहोला मि. आसोज सुदि ।। सं. 1814

अखैराम पंचोली ब्रस्ते श्री ।। १ ।।

अपरंच अरजदासति थांकी आई समाचार मालूम हुवा अठे थां को

दरबार कै अरजदासति हमेसा लिषवोला आसो सु. 14

सं. 1814

श्री ।। ।।

व्यास गोपालरामहसी

अप्रचि अरजदासति थांकी आई समाचार मालूम हुवा लिष्यो

महाराजा नाथजी वा राजा उमेदसंघजी रावत जेसंघजी मेवाड़ में

बषेडो उठाय राष्यो छौ पर श्री दीवाण डेरा दाषिल हूवा छै सो

जो सल्लाहा विचारी होय सो लिषि फुरमावोला सोहवास्ते अठा सूं दिष्णयो

छे लिष्यो छे अर अठे भी तैयारी कराई छे मि. सासोज सुदी ।। सं. 1814

Draft Kharita No. 277, D.N. 6/908, B.N.5/955

J.S.A.B.

L. N. 24 8th April 1758

॥ श्री ॥

जनक जी ने कागद

अपरंच कागद राज्य को आयो समाचार बांच्या लिष्यो हाल का

करार में रुपया बाकी है सो हुंडी कराय मेजोला सोम्हाकी

रुपया भेजवा की जरुर है ढील हैवास्ते हुई है जो साहबोजी या दिन

प्रगना में बखेडो उठायो हो सो समाचार राज्य सुण्या

ही होसी अब पाका थे सिताब ही पहोंचावा का और

कागद समाचार लिषावता रहीला

मीती चैत सुदि । सं. 1815

Draft Kharita
D.N. 6/1139
New 32
old 2
B.N. 15/3290
J.S.A.B.

L.N. 25

May 1750 ? 256

श्री ।। 7 ।।

मलाररावजी ने

अप्रंचि कागद समाचार राज्य का या दिना में न आया सो लिषावोला ओर (अस्पष्ट) वो राज्य कूंच लाहोर ने कीयो वा जिहांन षां वरि फौज विदा करी (अस्पष्ट) अमल हुवो तीका स्माचार तफसीलवार (अस्पष्ट) लिष्या सूं मालूम हुवा सो इ वात मी बहोत षुसी हुई की राज्य ने परमात्मा बड़ी जय दियो (अस्पष्ट) अब वठै का वंदवस्त को जो विचार होय तींकी इतलाय करोला

Draft Kharita
D.N. 6/1119
New 118
old 62
B.N. 15/3273
J.S.A.B.

L. N. 25 May 22nd [redacted] 1758 257

(नाम नहीं ?) ई

(पहला पृष्ठ नहीं)

एक नौषदाज्यौ जौ चाकरी करै है बाधे (अस्पष्ट) मामलति राजा

हरीसींघजी ती माफिक करसी दीज्यौ (अस्पष्ट) आपका कहैता

और स्माचार लीषाया नहीं है वास्ते लीषाया है सौ [redacted]

(अस्पष्ट)

सारा समाचार की जवाब बा श्री हजूरी की सौ सीताब

लिषावीलाजी और दीवान नंदलाल प्रथम अठे आयौ पेसकस

के वास्ते माल जबत कीयो जदी म्हैं वांसु कहीं माल बोहरा प्रगणई है

(अस्पष्ट)

त्यानि लेबा (अस्पष्ट) रेहबार की पेसकस देणी है बोहरा को करि

हुई (अस्पष्ट) श्री प्रमिश्रुजी की हंसी है (अस्पष्ट) जौ अठे व्रषा हुई

सौ लौगां का नुकसान ज्यादा हुवौ (अस्पष्ट) और अबकी साल में

मनाकी बारह हुवी सौ षरच (अस्पष्ट) तीसु रुपया हजार तेरा

पेसकस में म्हानि देणगी में हुंडी रुपया हजार नी ती लेज्यौ और

रुपया हजार (अस्पष्ट)

मिती जेठ बदी । संवत 1815

Draft Kharita

D. N. 15
New 119
old 60
B. N. 15/3271
J. S. A. B.

L. N. 27 July 1758 ?

मलारराावजी नै श्री ।। १ ।।

अप्रचि दीवान वन्हीराम भैज्यो छै सो सारा समाचार राज सु

जाहिर करिसी म्हकि राज्य सिवाय और कोइ वात न छ राज्य

हमेस सु अठा का कामने साथि राषिया बर उतौरी छ म्होहो भांति

चार उतारी ला और पांचू प्रगना में राज्य का पंडित कै (अस्पष्ट)

Draft Kharita
D. N. 6/1127
New 109
B. N. 15/3282
J. S. A. B.

L. N. 28 15th July 1758 259

मलाररावजीनै श्री ॥ १ ॥

अपरंच उदेरामनायक ने रुपया की निसाँ वास्ते भेज्यो

सो बाकी रुपया की निसा दीई छै क्यों बाकी निसाँ देणी

रही छै तो बात प्रसराम ने भेज्यो छै सो निसाँ

करसी और राज्य का पांच साल काम अठे हुआ

अमदानी
करिबा प्रग्रनामें बाहजोत [redacted] में कसर पड़ी

सो म्हां का राज्य (अस्पष्ट) या बात राज्य ने जोग्य न की

अठे सारो ब्योहार राज्य को जाणोला कागद

समाचार लिषावता रहोला और समाचार उदैराम

नायक राज्य ने कहसी

मि. असाढ़ सुदी 10 सं. 1815

Draft Kharita
D.N. 6/1126
New 114
old 66
B.N. 15/3277
J.S.A.B.

L.N. 29 30th September 1758

सूरजमलजी नै श्री ।।१।।

अपरंच अरजी थाकी आई समाचार मालुम हवा लिष्यो

पातस्याह वा नवाब वजीर का भेजा हुआ म्हारा बुलावा

वास्ते राजा नागरमलकी वेटी वा नवाव जलालदौलावा

राधाकिसन षजानची आया का सो वांकी साथि

नाहरसंघ नै बरसाणा सूं भेजि हूं दीघ आयो छू सो

समाचार जाण्या और लिष्यो दिषण्यासूं सल्हा छै सो

आकी बात छै नही मैं फौज सुधा हाजिर सो दिषण्या

स्यो तो सुधि हाल हुई छै परि दहूसरा हाय परिथ्ये अठै

आवैला

मि. आसोज वदि 13 सं. 1815

Draft Kharita
D.N. 6/985
New 136
old 37
B.N. 15/3256
J.S.A.B.

L.N. 30

October 1758 ?

जनकूजी नै श्री ॥१॥

अप्रंचि कागद राज्य को आयो समाचार वांच्या दीवान

कनीराम वासिठ घनेश्वर प्रसराम कूकडा नै रुपया 6 लाष

की निसां को करार कराई राज्य कनां भेज्या छो सो

राज्य अवताई कूंच कीयो नहीं सो या राज्य नै जोग्य नहीं

ई जायगा घरि मुकाम राषिने सा हुमारा घरसांनी वहो पिनाली

दी होय छै (अस्पष्ट) तीसूं सिताब कूंच करोला और भिषारीदास

(अस्पष्ट) वास्ते लिष्यो सो या रुपया की तनषा हतडाय

भेजी छै सो वाकि करार (अस्पष्ट) और समाचार कनीराम

ते लिषाया छै सो जाहिर करसी

Draft Khareeta

D. N. 6/1120

New 117

old 63

B.N. 15/3284

J.S.A.B.

L.N. 31 21st March 1759(?)

महाराजासिवसंघजीने

अपरंच कागद राज्य को आयो समाचार बांच्या लिष्यो पठाणा

बा दिषण्या को उठै बहेवो छै सो लिष्यो आबा लिष्यो

आव फौज भेजा सो म्हानैं तो राज्य को भरोसो ही छै हाल

तो अठां सूं बहेद्यो दूरि जाय पड्यो छै दिषणी तो

जमुनापार होय गया छै अर पठाणदिली जाय पड्यो छै

और कागद समाचार लिषावतारहोला - मि.चेतवदि 9 स.1816 (?)

महाराजा गजसंघजीनै श्री ॥१॥

अपरंच कागद राज्य को आयो समाचार बांच्या लिष्यो

अबे आप के कांई विचार छै सो लिषावसी सो समाचार

देवदत्त ने कह्या छै सो जाहरि करसी और कागद

समाचार लिषावता रहोला - मि.चैत वदि 9 सं.1816 (?)

स्यामनाथ पंचोली हस्ते - श्री ॥ ॥

अपरंच अर्जदासति आई समाचार मालुम हुवा अठै थांको

दरबार छै अरजदासति समाचारा की लिषबो कीज्यो

और मिश्र श्री किसन का लिष्या सूं जाणिज्यो

मि.चैत सु.2, 1816 (?)

Draft Kharita
New 79, old 240
B.N. 8/1502, J.S.A.B.

L. N. 32 4th September 1759

जनक जी ने कागद श्री ।।१।।

अपरंच कागद राज्य का आया समाचार बाच्या लिख्यो सदाशिवजी

के तरफ सूं दौडि की ती सूं नैणवाव वगैरह में म्हाका थाणा के

सो उठी ने राज की फौज गई के सौ वाने ताकीद लिषावोला

जो नैणवगैरह गांवासूं कुछ ही वेचलन न करे सो फौज बैठी ने

गई की सो राज्य का गावां सूं की इही तरफ की वेचलन करी के

सोराज्य का मुकसदारा राज्य ने लिख्यो ही होसी अठे सारी

व्योहार राज्य को जाणोला जुदायगी कही बात की न जाणोला

कागद समाचार लिषावता रहोला

मिती भादवा वदि 13 सं. 1816

पंडित सदासिव हस्ते श्री ।। ।।

अपरंच अरजदासति थाकी आई समाचार बाच्या कागद

सूबेदारजी का भेज्या सो जुवाव लिषाय भेज्यो के ओर नैणवाव

वगैरह वास्ते लिख्यो सो वैठा का मुकासदारा को थाने

लिख्योय (अस्पष्ट)

Draft Kharita
D. N. 7/1339
New 104
old 262
B. N. 8/1533
J. S. A. B.

Appendix E — Draft Parwanas of J.S.A.B.

L. N. 1 3rd February 175

[redacted]

श्री रामजी

बालकिसनमोतीराम को श्री

अब्रुचि मलारराव ने हुंडी रुपया साढ़ातीनलाष की थाकी सरकार स्यों

घाटे सो रुपया या निवेसाष सुदि 15 लाहि[redacted] मुवाफिक तपसील

प्राजचेला

3 तीन लाष चौंसठि हजार सातसै (364700)

असल हुंडी 350000)- जामिनीका 14700)-

और करार सिवा मीती फागण वद 3

सं. 1807

परसरामबखतराम अब्रुचि मलाररावने हुंडी रुपया डीढलाष

की थाकी सरकार स्यों घाट सो ऐ रुपया थोन विसाष सुदि

15 प्राज्चे जठा मुवाफिक तपसील एक लाष छप्पनहजार तीनसौ

(156300) जामीनी

असली हुंडी 150,000) 6300)-

मीती फागण वद 3 सं.1807

Draft Parwana

D.N. 4/532

New 36

old 173

B.N. 11/2380

Basta 4

J. S. A. B.

L.N. 2 28th July 1751

संवत १८०८

नक्ल करारमीती संवत 1808 भादवा वदी 3 सं. 1808

मुकाम सवाई जेपुर सिध श्री म्हाराजी[redacted]महाराजा

श्री सवाई माधवसिंहजी देव वचनात प्रतापसंघ सेखावत

से सु प्रसाद वंच्या अप्रचि अरज पहुंचीजो

गाव चेनपुरयो प्रगना अमरसर [redacted] भाटमौर जाट

हजार मारयो के सौ दीण्ण्या भैगावश

मानसंघ (अस्पष्ट) लूटी लीओ सो गाव(अस्पष्ट)

वास्ते थाने फुरमावा (अस्पष्ट)

Draft Parwana

[redacted]

New No.156

Old No.33

D.N.4/571

J.S.A.B.

L.N.3 4th September 1751 266

बालकिसनइसरामगोतीराम

श्री रामजी

अप्रचि हुंडी रुपया 500000) रुपया पांच लाषकी थांकी दिष्ण

प्रनिप्रा सी भेज्यांन भानाजर के 540000)-

असल 500000)- ब्याज हुंडी 40000)-

सोदेणा

कसबा सवाईजेपुर प्रोहित नोमदरामवाली 83000/-

विराड़ 55000/-

सुषानंद । परगनाका 150000/-

99000)-

मौजावाहिनीराणी

3400/- 5000/-

वजीरपुर सांभरदि

3000/- 10,000/-

घमरी भंढा

10,000/- 6250/-

प्र. मंडली का माटुका

नारेण

90000)

24000/-

हरगोविंदजी का वेसकस 81000 प्र.चाटसु 18350/-

75000/-

धमारोड़ का दीवीसंघचत्रजर प्रो. धानी

10,000/- 5000/-

बदनसंघने गुलाबसींघवीसोता

20,000/- 5000/-

राजसंघ राजाभूपसंघरा बलका जाव्लका

ब्रिजसंघजी रजव्हा 6000) 20,000/- ~~8000~~ 6000/-

दलेलसंघराजावत व नेणवाका का दौला मटकार

24000/- 20,000/-

मीती आसोज बदी ।। सं० 1808

Draft Parwana
New 148, old 26
D.N. 4/579, Basta 4
J.S.A.B.

L.N. 4 26th April 1753

संवत 1810

वनाम वालकीसन

प्रवानी करार मि वैसाषवदि 9 सं. 1810 अप्रंचई 200000 दोय लाष थाकि नीजराना का ठाह (अस्पष्ट) ती मधे 10000) माफकी पाछ वो की ई एकलाष निवे हजार मु.जेलली जेला 190000)- वृदावनदासजी ष जाने जमा करासेषावत के करज पूक वजालीज्यो थाको आवे छे ती मधे रु. 177000) जामिनी [illegible] प्री. षाजीराम वा संभु (अस्पष्ट) थामे क सी दष्यणा (अस्पष्ट) की हुडी में भेरि दीज्यो

13000)-

आपणी षातरि जमा राषिवो ण व्यापार करवो कीज्यो

Draft Parwana
New 53
old 123
D.N. 5/726
J.S.A.B.

L.N. 5 1753 डिसेम्बर 26

श्रीरामजी

रघुनाथ रावजी मोमोधप (अस्पष्ट) नामल (अस्पष्ट) लीखतं

मुतसदी म्हाराज जी (अस्पष्ट) जनरावजश्री (अस्पष्ट) 1650000/-

साढा सोला लाष दीणा वाबत (अस्पष्ट) तपसील (अस्पष्ट) हाल ठाहरा

हाल नीसा देणी मा.... मी ---- देणा

हुंडी वागहर

850000/- जेठ सुदी 15 मादव 400000/- दीषण

400000/-

इ माफक देणा तपसील

(अस्पष्ट) श्री रघुनाथाराव

1525000/- 125000/-

मीती पौसुसुदी 2 संवत 1810

Draft Parwana

D.N. 7/721

New No. 47

Old No. 47

J.S.A.B.

L.N. 6 23rd March 1756 ?269

द. पा. जोधसींघजी

रा अजीतसींघजीनै

।। स्वौ ।। अप्रंच अरजदास्त थांकी आइ समाचार मालूम हुइ थे लिष्यो

अबार पठाण की फोज आवे तो महाराजा श्री मा. धजी की सीज

स होय सो पठाण को तो दिलि सूं चाहूयौजादि ही को दिष्णा उपरब

रोकस्त के अर आप ही सूं दोय च्यार बार लिष चुक्या के जी

दिष्ष्या ने हु मामला तबीकारसूं इ बात में क्यूं थासूं जो

तरदूद होय तो म्हांकी बड़ी रजावंदी के सो म्हे वासूं दिष्ष्या ने

तबी करवाकी आपणो जिमो कीयो के अर राजसींघ बणवीरपोता

नै वा १ बांको उर्करन टोपरि वालो आयो को. जी ने भेज्या के

सो सिताब ही मुष्य तो करोला ही अर कीसांका जाटां भी

कस्त के जी सूं कदापि कीलो को इदिन जाटा में अटक्यो तो

फौज तो हजार तीस पैतीस की सिताब पाबो ही ----- अरि

अबाकी कजिया मिथबहीत नीको पहोचि आया को जो

बहोत दादिया वोला म्हाके थां सारिषो ओर कुणा के घणी काई

लिषो चैत वदि ६ सं 1813 (?)

Draft Parwana
D.N. 5/880
New 168
old 120
B.N. 12/2574
J.S.A.B.

L.N. 7 23rd April 1757

॥ श्री ॥

अप्रचि आज पहोंची जो अबके थे चाकरी में आय [redacted] दिखा

सु काम (अस्पष्ट) अब थे उठे भीमगढ़ में छौ

सु उठा कि मजबूति राषिज्यो

(अस्पष्ट) भीमगढ़ में कसबा टोड़ा

मी. बैसाष सुदि 5 1814

Draft Parwana

New 193

D.N. 6/1034

B.N. 14/61/71

J.S.A.B.

L.N. 8 31st December 1757

सूरतरामजी

अप्रंचि हिंगलाजगढ़ मलाररावजी ने देणी ठाहरयो के

सो थांका भला माणस के हवाले कीज्यो अर

अठां फौज भीरो तो वधानो बा पैला भानी जो होय सो

केसरीसंघ (अस्पष्ट) ने भेज्यो के सो इके हवाले कीज्यो

और सारा ठाकुर लौगा ने साथ भेज भीरा लार

हजूरि आज्यो उठे वस्त जो होय सो (अस्पष्ट) लिवाता आज्यो

मि. म्हा सु. 6 स. 1814

Draft Parawana

No. 282

D.N. 5/909

B.N. 5/960

J.S.A.B.

L.N. 9 28th March 1758

राजा इन्द्रसंघजीने

अपरंच कागद थांको आयो समाचार बांच्या लिख्यो मिश्र की

सल्हा माफिक जेठा सुवाबा सुंदरदास का बेटा जानकीदास ने

दोष से सुबार दोष सेवककदाजा सुं मिश्र की साखि करि दीयो

छे और आगे तो दिखण्या सुं या बात छिपी थी अब

मिश्र का मिलबा सुं जाहरीत मे आई तीसुं दीखण्या को म्हासु

दोष बंध्यो सो म्हाकी सब तरह महाराज ने सहायता

करनी छे सो समाचार जाण्या अब दिखण्या सुं हित अर अहित

जो जो छे सो म्हाको थांको सामिल छे

मिती चेत वदि 6 सं. 1815

श्री ॥ १ ॥

मिश्रसिरीकिसन हस्ते

अपरंच राजा इन्द्रसंघजी कामकाज वास्ते लिखे तीको षत मानी

राष्यज्यो ----

मिती चेत वदि 7 सं. 1815

Draft Parwana
D.N. 6/1147
New 122
old 55
B.N. 15/3262
J.S.A.B.

L.N.10 18th September 1758

दीवानकनीरामहस्ते

अप्रचि अरज पहोचीजो साहिबो पटेल नैणवाव के गढ़ लागि रहयौ

है सौ की उणियारा वगैरा सरकार का गांवा मै भेजि है सो

गाव (अस्पष्ट) वा लूटि ले है अर राब सरदारसंघ नै कहि भेज्यो

है जो म्हासू आय मामलीत करो सो ए न्यारी न्यारी

मामलति कीयो चाहि छ अर मुलक षराव करै है सौब

इसा तो मुलक ही (अस्पष्ट) दीज्यो है तीसू फुरमावां का

जनकू जी नै ए साहिबा पटेल नै ताकीद लिषाज्योजी

उणियारा वगैरह सरकार का गावां मै कही न भेजि अर

मैथ ---- मीतका ---- मिती सावण वदि 14 सं.1815

Draft Parwana
D.N. 61/1198
New 45
B.N. 15/3339
J.S.A.B.

L.N. 11 8th March 1759

राजा हरीसंघजी नै

अपरंच अरजदासति थाकी आई समाचार मालूम

हुवा लिष्यो गांव उदरेणि की गढ़ी महां सूं आगें

सावंत संघ कल्याणोत ने काढ़ि दीयो को सो हाल

पठाणा का वा दिषण्या का बहे च्या मे गढ़ी उदरेणिवा

षेडली की मै आय बेठा के सो किल्याणो तावां

वां कावता वगैरह नै प्रवाना इनायत होय तो

वान्हें बेठा सूं काढि दीज्यै सो थाका लिष्या

माफिक प्रवाना लिषाय भेज्या के सो वानै

काढि दीज्यौ

मिती चैत वदि 6 सं. 1816

Draft Parwana
New 29
old 28
D.N. 7/1383
B.N. 12/29/2
J.S.A.B.

L.N. 12 22nd April 1759

पंडित पुरुषोत्तम महादेवने

अपरंच अरजी थांकी आई समाचार मालूम हुवा लिष्यो

श्री हजूरि सूं दफ्तरगने दीवानकन्हीराम ने भेजे के सो

उठे श्री बालाजीराव कने पंडित बापूजी के सो उठा

लायक कामकाज होय सो हजूरि सूं फुरमावि व बिजाय

सो थे दरबार का सुभचिंतक को अर म्हाने थांको

भरोसो के जो को है उठा को काम होसी तीं वास्ते थाने

लिष्या मि. विसाष वदि ।। सं.1816

पंडित गोबिंदरावहस्ते श्री ।। ।।

अपरंच अरजदासति थांकी आई समाचार मालूम हुवा

लिष्यो मिश्र सिरी किसन तलहेठी म्हौं की मरजाद राषी

आगांस बिसेषराष वाको ज्योरो लिषसी मिश्र ने फुरमायो

दीयो के जो थांकी मरजाद (अस्पष्ट) वेही भांति राषिसी म्हकि

सूबेदारजी सूं (अस्पष्ट) जुदायगी न क थे बहोत षा त्रिजमा राषिज्यो

पंडितराधोसेकर भगवंतरावसेकर श्री ।। ।।

अपरंच अरजदासति थांकी आई समाचार मिश्र सिरीकिसन मालूम

किया जुबाब थाने फुरमायो क. सो लिषिसी

Draft Parwona
D.N. 7/1491
New 62, old 256
B.N. 8/1538
J.S.A.B.

L.N. 13 1st July 1759 ?

श्री ।। श्रीरामजी

अथरंच सुरतराम सोब्रहमपोता ने पाठाण भेज्यो के

सो थे पहोचता प्रवाना सिताव जमीयत सु सामिल आय

होज्यो

सालिमसंघ

सी चांद

मुबालसंघ [redacted]संघ सेखावत

अनरदसंघ राजसंघ

घषंगारन सीध सो क केसरीसंघ

Draft Parwana

D.N. 7/1294

New 85

old 255

B.N. 8/1497

J.S.A.B.

L.N.14

9th February 1760 ?

श्री ।। १।।

अपरंच दिषण्या को वा दषणा को वहे दखो जेठा सुं

नजदीक छै इ वास्ते फुरमावां छा पहौंचता प्रवाना

के आछी जमीयत साथि ले सिताव हजूरि आज्यो

रावसरदारसंघनरू जगतसंघ षंगारोत हस्ते (अस्पष्ट)

Draft Parwana

D.N. 7/1377

B.N. 12/17/6

New 31

old

133

J.S.A.B.

APPENDIX – D

Gulgule Daftar Hindi, quoted by Beni

L.N. 1 October 1745 ?

सीध श्री महाराधिराज उमेद सिंह जी देव वचनात

पं. बालाजीदीसि सु प्रसाद बंच्या । अठा का समाचार

श्री जी की कृपा सूं भला छ । आबना मालूम की जे ।

अबरंच था हैं उदक गांव मंगलवाल तफा सीलोर

रेख रु. २००० को दी छे । मीती आसोज बुदि सं. 1802

Gulgule Daftar
Beni 88

हवालगीर परगना सरहला पंडित गंगाराम
कसबा सारहला च. बालाजीह मुकात दोनी के साल तोडू कोतवाल

४ सो गाव की जमीती करबा दीजो अर मुकाता का साल

का यासु ठाहारिया ~~रुपिया~~ :-

१०८०६ रु. ५ आना

सं. १७९९ का साला का १७८४ रु. ४ आ.

सं. १८०० का २२३०१)४ आ.

स. १८०१ का २६२७१)२ आं.

सं. १८०२ का ३८६७१)२ आ.

रजुदफ्तर खालस गांव का जुं जुं मुकाताका

साल ~~(असल)~~ का रु. दस हजार आठ सौ

६ आना पांच वस्ती माफक भरावना

Gulgule Daftar - Hindi
Vol.II
No.805
Sitamau

L.N. 2 [redacted] {10th March 1744}

हुकुम {औपटराम} →

आपाजी की टीप रुपिया एक लाख की गनीमा का

लेखाम दीवाई के त्यांकी ब्रसाना का जिला उघरी

तनखवा करी के सु षं. बालाजी की नसा की जो

तीको तोड़ो घेसकसीस (अस्पष्ट) माल हासील [redacted]
50000)

उनमान (?) 50000) रु. मी. चैत सुदी ८ सं. १८०१

हुक्म हजुरी हुओ श्रीमुख

Gulgule Daftar - Hindi

Vol. II

No. 800

Sitamau

L.N. 3 9th September 1744

[.]

हुक्म पं. बालाजी हं अपरंच थांहू मो. डूंगरपुर तका

सारहला प्रगना ब्रसाना का रेख रुपिया पांचसो

कीम ऐवज मौ. बीराखेडी प्रगना उरमाल की की

बगसो के स्पाया जा सो हुकम हजूरी हुवो

श्री मुख । मी. भादवा सुदी 10 सं. 1801

Gulgule Daftar - Hindi

Vol.I

No.6

Sitamau

L.N. 4 1745 - मार्च 5

लिखतं खवास उदराम पंचोली रामकिशन अर्जी आग प्रगनी

बाटनी को दर बसत मालवा जीगाती नावा का हासिल सुधा

आधी मुकात थी साल केई सवंत 1801 तीं स.1806 का

मालताई साल छै का मुकाता का ठाहारा रखया ।

११७०००६) -

सं.1801 का साल का 55001) रू. सं.1802 का साल का रू.155001)-

सं.1803 का साल रू.185001) सं.1804 का साल का रू.215001)-

सं.1805 का साल का रू. 255001) सं.1806 का सालका रू.305001)-

लीखत खवास उदराम रामकिशनजी इ[illegible]माधिक करनी

सूंटोटा का धाम आधु आधी सामली सीरदारगी बालाजी

काम बुती सामली हाईकरनी - मि.फागुन सु.13

बरस 1801

डेरा मुङलाका

[illegible]

Gulgule Daftar - Hindi

Vol.I

No.7

Sitamau

L.N. 5 [4th ~~August~~ July 1745]

हुकुम भोपाराम

थांकी अरज माकु की पं. बालाजी व हरजी वा आभाजी
वागर पंडत थाकी गोढ़ी मोकल्या छे सु यां का रुपया
कीनीता करावनो को समादान अर बोहारो खजी(?)मोकल्यो
छै करी दीजो हुकम हजूरी हुवो श्री मुख
मी. सावन वदि २ सं. १८०२

Gulgule Daftar - Hindi
Vol.I
No.9
Sitamau

L.N. 6 पंडित हरीराम (14th ~~October~~ September 1745)

प्र. देलनपुर का हवालगीर गोमद सीव हाडा पं. हरिराम

दीसि अपरंच पं. भिवश्याम :- इको सीरकार में चाकर राखो

तीको पहो ठाहारो रेख

सं. १८०२ की रेख - १६००) सं. १८०३ की रेख १६००)

डी. १ घो. १ ता. घो. ६ डी. १ घो. १ ता. घोडा ६ हुई
४००) १२००) ४००) १२००)

सं. १८०४ की रेख २०००)

डी. १ घो. १ ता. घो.
४००) १६००)

तीम जागीरी मोकल सरडो दियो छो सु. सावन वद १ सु गांवको

अमलदीजो जाबतो घोडा ६ असकी साल नाजी तुरकी सुदेसकी

चाकरी करसी आगला साल सु. पटा ब्र. ह. जावतो दो असी

जाबता म घोडो धाती राखसी तीकी गोर, हाजरी भरी देसी

चौधरी भोमी मोगनो वीसती माफकी भरसी । प्रवाना मु. गांव

को [redacted] अमल दीजो । जावतो प्र. ह. दोड़सी [redacted] असकी साल

घोडा सात सुं दोड देसकी कारकी श्री.असोज वदी १४ सं. १८०२

Gulgule Daftar - Hindi

Vol.I

No.10

Sitamau

L.N. 7 30th January 1747

कबूलाईती महारावजी श्री दुर्जनसालजी आगे बूंदी को राज समिती

मुलक वाकीलो महाइदीयो तीको करारनामो ठहरो, सुकरार

माफकी करनो :-

अलादी जागीरी चलती है सुसदामदी चलावनी-

१ प्र. पाटनी दरो बसत सीरकार व सीरकारके

१ राज श्री जी पाजी सीधा के तालुक का प्रनी

गाव ६ असली ७ दाखली २

१ राजी श्री बाबा रामचन्द्रजी कमा दुबलानोतीको

ऐवज वोर गाव देनो

१ मागोस राजी श्री गंगाधरजी प्रतापसींघ दलेल सीघ हाहाक जागीरी-

१ प्र. ननवा वा समीधी दलेल सीघ जी ई देनी

१ प्रतापसीघजी ए बरवर वा समीधी का गाव है सु देना

ये दोनो चाकरी माहाराजी श्री ईसरी सीघजी की करसी अरथोयी

सिरकार की दरोबस्तदीन्ही

१ राजी श्री बाबूजी महादेव दामोदर जी महादेव क गाव

दोई सु. रोखना

ईसीवाई बूंदीका राजको मुलकवाकीलो

महाइदीय तीको करार ठहरो सुकरनी

Contd...../

दरोबसत अंमल मालवा साईरी वागेरे की

चौथीसाल द साल देनी

सरकार को नजरानो साल मजकूर ठाहरो :-

१०००००) तफसील लाख दस की मारफती सिरकार हाल ठाहरो

ईसरीसिंघजी को नजरानो
६२५०००)   ३७५०००)
तीको वादो -
आगला सालम देना

जेठ सुदी १५   ५०० ०००)
सं. १८०४

५००००) तुंदीम कावीलाम तो याजखीरो

राजी श्री उमेदसीघजी बुंदी बठाव होई सु महाराजी श्री ईसरी सींघजी
५००००)
ना जाईगाभेंट रोटी की देनी रुपिया/ को होई सु जपुर पोहचावना

ईकरार माफकी करनो ही सीवाई न करनो अर महाराजी ईसरी

सींघजी सु सदा मदी माफकी भलो रहिना बीदमान ठा. मोषतीरामजी

पंचोली अखरामजी मी. फागुन सुदी १ सं. १८०३

Gulgule Daftar -Hindi

Vol. I No. 14

Sitamau

~~Contdx.xxxx/x~~

L.N. 8 21st December 1747

XXAX [redacted]

"हुकम चौधरी हरिगोविंद है अबरंच गनीमा का

लेखाम दीखावा रुपीया अढ़ाई लाख मे पंडताकी

किधी रुपीया साठी हजार की [redacted] तीस रुपीया 10,000)

माला कुलाप का तालुका म पंडता है तनखवा

दी है। सु याकी नीसा कीजो । हुकम हजूरी

मी. पोस सुदीसं. १८०४

[redacted]

Gulgule Daftar - Hindi

Vol.II

No.801

Sitamau

L.N. ९ 21st December 1747

हुकम पंचोली किशनभट

कुशलराम है अपरंच

गनीमा का लेखाम दीवाया रुपीया अढ़ाई लाख तीम्धि पंडता

को षत्र कीयो रुपीया साठी हजार को तीम रुपीया २२०००)

नवादा खालसा का तालुकाम पंडता है तनखवा दी छै

सु या की नीसा कीजो हुकम हजूरी श्रीमुख

मी. पोस सुदी ११. १८०४

Gulgule Daftar - Hindi

Vol.II

No. 802

Sitamau

L.N. 10 21st December 1747

[redacted] [redacted]

हुकम पंचोली लालू बं. महाराम है अपरंच गनीमा का

लेवाम दीवाया रुपिया अढ़ाई लाख पंडता की पत्र

किधी रुपिया साठी हजार को तीम रुपीया 20 000)

काती की कलतीम पंडता है तनखवा दी छे सुपां की

नीला कीजे मि. पोष सुदी ।सं. 1804

Gulgule Daftar - Hindi

Vol. II

No.803

Sitamau

October

L.N. 11 8th [redacted] 1748

[redacted] [redacted]

हुक्म लाल सीयजी राजावंत चौधरी हरदराम वं. महा

राम हं अवरंची गनीमा का सं. 1804 का सालताई की

बरनी का दीवाबा रुप्या पांच लाख तीर्म्ह रुप्या अंके

पचेहत्री हजार प्रगना प्रसाना का सं. 1805 का 75000)

हाँसिल मैं सुं दीवाबा के सु पंडत की नीसा कीजो हुक्म

हजुरी हुवी श्री मुख - [redacted] मि. कार्ती सुदी 14 सं. 1805

Gulgule Daftar - Hindi

Vol. I

No. 15

Sitāmau

L.N. 12 — 8th October [redacted] 1748

[redacted]

हुक्म पंचोली रामकिशन भट सखाराम है अपरंच

गनीमा का सं. 1804 का साल तोड़ की बरनी

का दीवाया रुपया पांचलाख तीम्बे रुपीया 100000) अंके

एक लाख नबादा तालुका का सं. 1805 का हासिल में

सूं दीवाया है सु पंडता की नसाः कीजे हुक्म हजुरी

हुवो श्रीमुख मि. काती बदी 14 सं. 1805

सं. [redacted]

Gulgule Daftar - Hindi

Vol. II

No.793

Sitamau

L.N. 13 19th June 1749

सही

महाराज दुर्जनसाल जी बचना उ. मौ. समरील तका सारला

तीका पटेल पटवारी दीसे अपरंच था की गांव पंडत बासदेवजी

(अस्पष्ट) जागीरी दीयो के सु गांव की अमल दी जो तै

गिरी गौतम सीच चन्द्रावत की - मा. सावन बुदी ११ १८०६

Gulgule Daftar - Hindi

Vol. I

No. 18

Sitamau

L.N. 14

June - July 1751

सही

साह राजी माहाराज श्री दुरजनसालजी बाँचनात तफम उका

हवालगीर पचोली दोलतराम हरसीकर साहालालजी दसे

अपरंच मा. बरड़ गुवालीतफ्फ हरीगढ़ को पंडत बालाजी हं

जागीरी रेख

1000)-

डील । घोड़ा । का ऊ ताबीन दारा का घोड़ा रदी 200)-

600)

तीका - ऊ

400/-

जंकारख ऊ. एक हजार की मदीयो क एवज मा. ऊ वरी तफ्फ

साहारला को तीकी जावती घाडो 3 तीन ताजी तुरकी सुं

चाकरी देस की करसी जावताम घोडो घाटी राखसी तीको

गेर हाजरी भरी देसी चोधरी मोम वागैर वाक लागक

सुं खुवरा प्र हुक्म देसी - मी. सावन बुदी सं. 1808

रजु दफ्तर रवालीगांव एक जागीरी

दीयो रेख रु. ऐक हजार चाक -

री देसकी जाव तो घोड़ा तीनम

सुं सावन वदी एक सुं अमल दीजो

दा. ता. वगसी

Gulgule Daftar - Hindi
Vol.I
No.26
Sitamau

L.N. 15 29th May 1754

प्रवाना व हुकमलपिया

चारस माफ होसी

महाराजी महारावजी श्री दुरजनसाल जी वचनात बुबा ईडली

का बेड़ा की मुकाती पंडत बालाजी क दीसे अपरंच थांका

मुकाता का गावा म सीको दरकल दुवोती की साख की कमी

जानी अस की साल रु 400/- माफ करिया के सो

मुजर पावसी मी. जेठ सुदी ८ सं. १८११

Gulgule Daftar - Hindi

Vol.I

No. 29

Sitamau

L.N. 16 3rd June 1757

।। श्री रामजी ।।

पंडतजी श्री बालाजी योग्य ली. सीबसींघ जी पचोली

अरबेराम को (अस्पष्ट) बंच्या अपरंच गनीम काले का

मैं सातलाख बीयालीस हजार के जुमल पाचलाख

मये रुपिया 40,000/- अंके चालीस हजार देना रह्या

सो जोगीरामजी हर दावत बा करबाड पीपलादाका हरदावता

की पेसकसी म सु पुरा कराहदेस्यां अर कदाची

ई आकमे घटेगा तो ओर ठापु पुरा कराहि दे स्या मी.

असाढ़ व.12 सं. 1814 ये रुपीया मास एक मे देना मी.

असाढ़ व.12 सं 1814

Gulgule Daftar - Hindi

Vol. I

No.31

Sitamau

L.N. 17 3rd June 1758

रामजी

जेत्रीकृष्णवंचवा जेत्रीकृष्ण वंच्या

पंडत जी श्री बालाजी जोग ली. सीवासिंघ जी पचोली अवराम

बंच्या अप्रंची गनीमा का लेखाम सात लाख बीयालीसहजार

मधे रु.180,000/- एक लाख असी हजार देनारह्या सु

देसका जागीरदारां का बीराड्म सु पुराक राई देना कदाची

ई ओकमे घटेगा तो ओर ठासु पुरा क राई देस्यां

मी. असाढ़ व. 12 सं. 1814

Gulgule Daftar - Hindi

Vol. I

No.32

Sitamau

L.N. 10   19th July [redacted] 1758

महाराव अजीतसींगजी बचनात मोग्बलास रो तफा मोई
प्र. प्रसाना की तीका पटल परवारी दी से अपरंच थांको
गांव पंडती बालाजी ह जागीरी दीधी छे सु याद गांव
को अमल दीजो मा. सावन बद 1 सं. 1815

Gulgule Daftar - Hindi
Vol.I
No.33
Sitamau

L.N. 19 28th August 1758

महाराजा अजीतसिंघजी बचनात मा. गुलजोनी तफ्र

गोलाना की तीका पटल बटवारी दी से अपरंच

थांको गांव चंडत गोपालराई हं जागीरी दीयो के रेख

रुपिया १०००) एक हजार कीम दीयो के सुं परवाना

कीमती सुं गांव को थांह को थांह अमल दीजो

जाबतो घोड़ा ३ तीन तुरकी ताजी सुं चाकरी

देस की करसी जाबताम घोड़ो घाटी राख सी तीकी

गेरहाजरी भरी/देसी तगीरी अमरसिंघजी राठोड की-

मीति भदवा वदी 4 सं. १८१५

रजुदफ्तर खालस डील एक

गांव एक रेख रुपिया एक हजार

जाबतो घोड़ा तीन गांव की अमल

पटाकीम तीसुं दीनी-

Gulgule Daftar - Hindi

Vol. I No. 34

Sitamau

APPENDIX — F
GWALIOR KHARITAS
OF
J.S.A.B.

L.N. 1 1754 मई 26

श्रीरामजी

श्री महाराजाधिराज श्री राजराजेन्द्र श्री सवाई माधोसींहजी
जोग्य पंडीत श्री रामाजी अनंत केन्य बांचने आपका सदा
सर्बदा भला चाहिजे अठा का स्माचार श्री जी री कृपा सु
भला है हेत मेहरबानी राखोबेत्तीण सु बीसेष राखबी
करीला अप्रंच अठे सुं राजि श्री हरगोबिंद जी बिदा
होकर आपके त्रफ आये है इहा की सब हकीकत बिगल
वार जुबानी कहसी तीसु मालुम होवेला और
स्माचार सुबेदार राज श्री आपा साहेब के कागद
ते मालुम होवेला कागद स्माचार मेहरबानगी
कर हमेसा लीषाबोला मीती जेठ शुध 5 संबत 1811

Gwalier Kharita
New No. 56
Old No. 55
B.N. 3/63
J.S.A.B.

L.N. 2   5th March 1759

श्री महाराजाधीराज श्री राजराजेन्द्र श्री राजा सवाई माधवसींघजी

जोग्य राज श्री सुबेदार श्री जनकोजी सींदे केन श्री बांचजो

आठा को स्मांचार भलो के राजरो सदा सर्वदा भले चाहीजे

अप्रंच ठांना कणिवा (नेनवा) वागेरा मो सरकार रो

आमल के सो मो सा हमारी ठानीदारांस्यों उठाये राजको

आमलदार बैठे है सो ये बात आछीन करी के सरकार को

आमल उठाये देना से बीचार तुमस्यों अस्ला थये है हाल

बांचते ही पत्र श्री राघो संकर वा श्री भगवंतराये संकर जेहीत्र

हैं स्यों घुसी होयेकाराजी रहे ठांना बाबत्ती आगों ही

[redacted] बं भेजीब अंमल सरकार को चलो जाये कीसी बात

स्यों चीचल न हो वे सोही करोला यां मो संतोष के फेर

नालसी नहीं आवेगी सो करीयो पंडीता कोराजी नामो राजरो

त्रफ स्यों सुलाह हुवी को सीताबस्यों सुलाह हुवी को

सीताब स्यो भेज देना हरी भांत स्यों पंडीता को गोर करीने

सलुक के बाब पत्रतीणा को आवे सो ही करजो या मों आछो

के   मीती फागन शुध 7 संवत 1815

Gwalior Kharita

J.S.A.B.

L.N. 3 19th August 1759

श्री माहाराजाधीराज श्री राजराजिन्द्र श्री राजा सवाई माधवसींघजी

जोग्य राज श्री सुबेदार श्री जनकोजीसींदे केन श्री बाचजो

आठां को समाचार भलो छे राजरो सदा सर्वदा भले चाहीजे

आपरंच ठांनी नैनवा वागैरां सरकार कोठानी बा मुलकां

मो राजने षराबी करवा को मुलकां मो गांव ब गांव

लुटी छे सो बात राज लायक नहीं है हाल आपणीं लोका

सौताकीदी करी ने परगने नैनवा को ठांनी वागांव बगांव

मो कुच ही षी चलन करैंगे सो ही करोला यां मो सैनै

ह की व्रध्धी दीन दीन जीयादो ही होवेगी सौंकर

राज श्री सदासीव पंडित सरकार को आमीलां के

णा/नाव बठां नां मों है सो राजस्यौ केते कताकीदी

वास्तें लीषेंगे सोग मोजीब बंदोबस्त करोला

मीती सावन बदी 12 संवत 1816

Gwalior Kharita

D.N. 1/25

J.S.A.B.

APPENDIX- ग
INDORE KHARITAS
OF
J. S. A. B.

L.N. 1 ॥ श्री ॥ 17th October 1750

सीध श्री सर्व उपमा लायक महाराज श्री माधोसींघजी जोग लीखायेंत

खडिराव होलकर केन रामराम बचना अठा का समाचार

भल छे अपका समाचार सदा भला चाहीजी अप्रच श्री

सुभदार का कगज पान आयो ती म लख्या आयो जो

लोका समसजास का पैसा की तदबीर सीताब कीजो

और पेमसीघ कु व कनीराम कु सीताब बुलाय लीजो सा

कनीराम व पेमसीघ को सीताब भेजो जो पैसा

की तदबीर सीताब कीया चाहीजे ताकीद जादा छे

और भीमवसर अप बाज खाये छे सु सुबेदारजी ने

राजी कीया और समाचार कनीराम के लिखे से

मालुम होयला हमेशा कागज समीचार लीखीबाकर जा

मीती आसोज वदी १३ समत्त १८०६

Indore Kharita
New No. 7
Old No. 4
J.S.A.B.

11th August 1751

L.N. 2

[redacted]

श्री

स्वस्ती श्री महाराजाधीराज राजिन्द्र श्री सवाई माधोसींघ जी जोग्य

ली. श्री मल्हराव होलकर केनश्री • बंबजीजी अठी का समाचार भला

के राज का सदा भला चाहीजे अर्ज तुमारे सरकार में हमारे मानगी

रैवज देणा करार कीया के इस सबब आगे श्री कन्हीराम हुजूर आये थे

तब श्री हरगोवीदजी के हाथ की चीठी ले तीमायक कबूलहोकार

आपके पास आया [redacted] होसी अब खरच [redacted] की नीकड़ है सो अपने मुत्तसदी

कुं ताकीदकर पैसो की हुंडी करभेजदीजोजी अमनान करोमत हमेसा

खत में सारा समाचार लीखबो करोला मीती भादो सुदी 1 संवत 1808

Indore Kharita

New No. 21

Old No. 21

B.N.3/17

J.S.A.B.

11th August 1759 304

L.N. 3
[redacted]

[redacted]

सिधश्री माहाराजाधिराज राजराजेन्द्र श्री सवाई माधवसिंहजी

जोग्य श्री मलारराव होलकर केन श्री बेचजी बंठा का

समाचार मला के राज का सदा मला चाहीजे अप्रंच बंठत

हरबाजी -- ब्राह्मण सरकार की चाकर सवाइ जेपुर में

व्यासाचार्य बहीत बर्सासु बडे महाराज जी के आश्रित के बां

सु सगाई की इ इसबब्राह्मणां का सेमत सुबीर अब

आचार्य श्रीन्टसिंह मंत्र सुबेडाहुवोविमन मीन जे सोबकेकुवा

बार सु बंठत मजकुर जंजाल में बडवी के ई वास्ते उठा

का समरत्त ब्राह्मण निकागद लिष्यो के तो राव सर्व

ब्राह्मणां सु धर्मन्याव सेमत बीचार जी में बंठत मजकुर

सुधचलन रावली करोला ओर सेमत बत्र दीबानो ला

मीती भांदो सुध । सेमत 1808

Indore Kharita

New No.22

Old No.21

B.N.3/40

J.S.A.B.

L.N. 4 [redacted]

1752 अप्रेल 29

श्रीरामजी

स्वस्ति श्री माहाराजधिराज राजराजिन्द्र श्री सवाई माधवसिंघजी

जोग्य श्री मलारराव होलकर केन श्री बंचजी अठो का

समाचार भला है राज का सदा भला चाहीजे अप्रंच परगणै

तोड़ा के कदीम चोधरी कानूनगो थे अब बषतराम नामिवा नै

धाभाई के बीच मोस्लबत रुपैये पंधरा हजार दे ओर धाभाई

मजकुर ने राजकने आयकही तीसु परवानी राज का सरकार की

बषत रामके नाव कर दीया सो परगणै मजकुर में जाय कदीम

चोधरी कानूनगो नीकाल दीया ओर परगणै मोजकुर में फेलकरे है

तो या बात कांई है इ बात भी सरकार की नुकसानी है

अब बाने तलब परवानी भेज हजुर बुलाबोला अठे दीवान

कन्हीरामजी ने भी कहयो है बाका लीषा सु मालुम होसी

ओर पंडत गणेसजी भी राज ने लीषसी तीसु मालुम

होयली कदीम चोधरी ने वा कानुगो ने राषीला गेर

मरजाद करवी जोग्य नही मीती वैसाष बदी 12 संमत 1809

Indore Kharita

D.N.42

New No. 26

Old No. 25

B.N.3/32

J.S.A.B.

L.N. 5 1752 मई 24

श्रीरामजी

श्री सकलन्ट पबर्याधीस्वर माहाराजाधीराज श्री राजराजेन्द्र जी सवाई माधोसींहजी जोग्ये राज श्री राव मल्हार जी होलकर वा राज श्री जयाजीसीदे सुबेदार केन श्री कंवणा ओठा का स्मांचार भला छे आपका सदा सर्वदा भलेचाहिजे आप्रंच सेरपुर वा आलमपुर वा गेर सरकार की ओमल छे सो आप की मालुम छे उवरो आप तरफ सो फोज रवांना करी छे सो जाहर हुवा तो सरकार के ठानि बेठा छे ओमल मा खेलकरना ये बात आपला येक नहीं छे कोई रवानी कर भेजा होगा तीनको ताकीद कर प्रति मजकुर मों कजीयो न करें सो बात करना फेर नालसन आवे सो ही करोलाजी ॥ मीती जेठ वदी 7 संवत 1809

Indore Kharita
New No. 27
Old No. 26
D.B.N.3/29
J.S.A.B.

L.N. 6 1752 मई 24

श्रीरामजी

स्वस्ति श्री माहाराजधिराज राजराजेन्द्र श्री सवाई माधवसिंहजी

जोग्य श्री मलारराव होलकर (अस्पष्ट) श्री बचजी अठोका

समाचार भला है राज का सदा भला चाहीजे अप्रंच पंडत

बालाजी (अस्पष्ट) व पंडत सदाशिव गोपाल कमावीसदार

सेरपुरतलहठी व बूंदी बगैरे को लीषी आयो जो राज ने फौज

अपनी सेरपुर तलहठी व अलणपुर व पंचमाहाल में बगैर भेजी

या माहाल की अमल म्हा के तरफ है जेठ फौज भेज (अस्पष्ट)

प्राबबाते सीताबी सुं बुलाय लेवोला जो मुलक में दखली न करै

मीती जेष्ठ बदी 7 संमत 1809

Indore Kharita

New No. 28

Old No. 27

B.N. 3/35

J.S.A.B.

L.N. 7 1752 जुलाई 3

श्रीरामजी

स्वस्ति श्री माहाराजाधिराज राजराजिन्द्र श्री सवाई माधवसिंघजी

जोग्य श्री मलारराव हौलकर केन श्री बंचजो अठा का समाचार भलो छे

राज का सदा भला चाहीजे अप्रंच अठां सु सरकार को कालिखाना मैं घोड़े चारा की वगैरे ल्याने का वास्ते भेजा सो घोड़ा चौदा

[redacted] खरीद कर ले आवता हता बीचमो महमदगुलाम बेटो खुदाबारखां

नलटी-कायनि जबरदस्ती का घोडाचिरा की बहोत आछी था सोलीयो छे

ई बास्ते अठा सु जोडी कसदा की राजन थने भेजी छे और दीवान

कन्हीरामजी ने भी कहयो छे तो राज आपनी जोडी कासदा

की लटी पास कागद भेजोला और आछीतरह लीषोला जो घोड़ा

न देसी तो भली बात न होवेली और षाराबी थाकी होवेली बा

को जबाब जो बो लीषे सो अठे भेजोला माफकतजवीज कीईजामी

सीताब जोड़ी रवना करोला मीती प्रथम आषाढ सुध 4 सैमत 1809

Indore Kharita

New No. 32

Old No. 30

B.N.3/36

J.S.A.B.

L.N. 6 1752 अगस्त 3

श्री

श्री महाराजधिराज श्री राजराजेन्द्र सवाई माधोसिंहजी जोग्य लि:
श्री पंडीत गंगाधर जसवंत केन श्री बांचजो आपका सदा सर्वदा
भला चाहिजे ईहाके समाचार भले है हेत प्यार राषी को तीथी
बिसेषरषावीला अप्रंच सलाबतजंग केताईं तंबी कर नवाब
नीजामनमुलक गाजुदीषां बाहादरजीण को दक्षण के सुबे पर
बेठावणा ये मसलत श्रीमंत राज श्री पंडीत प्रधान जी के मर्जी
माफक ठहरी है नवाब ह भेले होकर दीली से दरमंजल
नरमदा किनारे आन पोहचे अणा समयामो फोजरी दरकार
जाणकर राजश्री दोनो सुबेदारजी ने आपको पत्र लिष भेजा है
अणी प्रमाण आप ने षातीर मोलिकर फोजरी तयारी कर भेज
देवीला अणीबात सें दोनों सुबेदार जी रीषुसी आर
श्रीमंत पंडीत प्रधान जीरी भी बढ़ी षुसी है सो हि आप
करोला मी. श्रावण सुद 5 संवत 1809

Indore Kharita

New No. 35

Old No. 33

B.N.3/34

J.S.A.B.

L.N. 9 After 4th Nov., 1752 ?

श्रीरामजी

सिध श्री माहाराजधीराज राजराजिन्द्र सवाई माधवसिंह जी जोग्य
श्री मलारराव होलकर केन श्री कंवजी अठा का समाचार
भला छे राज का सदा भला चाहीजे अप्रंच अठा की त्रफ
का समाचार दीवाण कन्हीरामजी मालुम कीया होसी अप्रंच
राव की सरकार में दो हाथ्यां को रथ छे जो सो हाथ्यां
सुधा मेजोला हाथी रथ सु सजा छे जीं सुं तयार हाथी सुंधा
मेजोला ई हाथी को अेवज दीया जासी या अेवज हाथीआं
हीसाब में हर भांत होसी पण जरुर भेजोला ।
समाचार साह अनुपराम का लीषा सुं जाणोला कागद
समाचार हमेस लीषता ब रहीला मीती (अस्पष्ट) वदी 6
संमतु 1809

Indore Kharita
New No. 29
Old No. 28
B.N.3/31
J.S.A.B.

L.N. 10 1753 मई 4

॥ श्री रामजी ॥

सिधश्री सर्बउपमा जोग्य दीवान श्री हरगोबींदजी जोग्य श्री
मलाररावहोलकर केन श्री बंचजी अठाका समाचार
भला छे थां का सदा भला चहिजे अप्रंच पंडत बिसनाजी
हजुर आया थांका कहया माफक सब समाचार मालुम
कीया अठां की बातथेट सुंयांहके ही मारफत ठाहरी छे
और इसत्यारई बातको थां उपरी ही छो बीच मेंपतरी हुवो
उपर भी नजर न दी ई फेर ओतरो उठां ही सुं होता आया
छे ई बात सुं थांकी सचोटी बा इत्तबार कुण भांतरे लो
तदपी अठांकी बचन छे सो छे ही ई उपर भी तफावत
राषोला तो दुषणकी पर हीवेलो जी पर पंडत मजकुर का
कहया प्रमाण ने हधे पुखकनी: क पटसुंकरबा की छे तो
रूपया की नीशां कराय बेवसवास थे अठे आबोला मीलया
सगली बातां की फडयो होसी ईकी बेवरो पंडत मार काकहया
सुंजाणोला मीती बेसाष सुदी । संमत 1810

Indore Kharita

New No.12

Old No.69

D.N.5/701

J.S.A.B.

L.N. 11 1753 जुलाई 16

श्रीरामजी

स्वस्ति श्री माहाराजधिराज राजराजेन्द्र श्री सवाई माधवसिंह

जी जोग्य श्री मलाररावहोलकर केन श्री बंचजो अठों का

समाचार भला छे राज का सदा सर्वदा भला चाहीजे

अप्रंच वेदशास्त्र संपन्न श्री हरिगुरुभक्तिपरायण पं. श्री

तीमया गोसांईजी को वर्षासन राज उपरे छे और ये

ब्राह्मण येठ सु शुभचिंतक राज का तथा म्हा का छे

वासकमीसदा [illegible] वृतदे ब्राह्मण और हर कौम ने अन्न

दीया जावे छे जो द्रव्य याने पोंहचेलो सो सदव्यवहार ही ही

वाम जावे छे जी सु राजलीषाका तो साल गुदस्ता का तथा

साल हाल का रुपया वर्षासन का सरकार सु पंडत

बालाजीराम हजुर पोहचेलो यां की नीशा करावोला

धर्मकार्जमो आरषां काई लीष्या औवे

मीती आषाढ बद । संमत 1810

Indore Kharita

New No. 41

Old No. 39

B.N.3/51

J.S.A.B.

L.N. 12 1753 जुलाई 14

श्रीरामजी

शुभचिंतक बापूजीमाहादेव व पुरुषोतममाहादेव केन (अस्पष्ट)

अपरं बालकुंद पौहो माहाराज वे हुकम मागुस

(अस्पष्ट) का समाचार बहबासो पातसहा सुं अर्ज की (अस्पष्ट)

पातसाहा बहोत राजी हुबा मन लाबा बास्ते अरज

करी सो दीवाणजी हरगोविंद अरज करैला म्हेनीं

मीती असाढ सुदी 14 सं. 1810

Indore Kharita

New No. 43

Old No. 42

B.N. 3/46

J.S.A.B.

L.N. 13 1753 अगस्त 20

श्रीरामजी

स्वस्ति श्री माहाराजाजधिराज राजराजेन्द्र श्री सवाई माधोसिंहजी .

जोग्य श्री मल्हाराव होलकर केन श्री बंचजी अठीरा समाचार भला छे

आपका सदा भला चाहिजे अप्रंच कागद आपका आया समाचार

बाच्या आप लीषी जो दीवान कनीराम श्री सुबेदार जी हजुर

आबे छे सो सारो ही सलूक कराब भेजा छा अब दीवान कनीरामजी

आय सारा ही समाचार कह्या पर सलुक की बात तो क्युं नजरी

आई नहीं सो आपको बा सुबेदारजी की असो छे ब्यौहार नही छोजी

बात मो तफावत पड़े सारी बात की तफावत आप ही के त्रफ

सुं छे यौं बात के ले श्री सुबेदारजी म्हो सु ताकीद फर्माबे छे जो

थां का भाई सु म्हापु सलुक कारहसी नहीं या की जतन कांई

बीचारो छे सो सीताब लीषाबोला हमेस कागद समाचार लीषाबोला

मीती श्रावण बदी 6 संमत 1810

Indore Kharita

New No.43

Old No.42

B.N. 3/49

J.S.A.B.

L.N. 14

1753 सितंबर 26

श्रीरामजी

स्वस्ति श्री माहाराजाधिराज राजराजिन्द्र श्री सवाई माधवसिंहजी
जोग्य लिषातं श्री मल्हारावहोलकर केन श्री (अस्पष्ट) बंचजो
अठां का समाचार आपकी कृपा सुं भला छे आपका सदा सर्व
पावां तो घणी खुशाली होय अप्रंच आगुकरार उठां की मामलत को
ठेराय जेपुर सुं कुच श्री सुबेदारजी की होय अंतरवेद मो गया
उठां सु फीरया जद दीवान कनीराम ने भेजा सो वाने कीश्री
के बातां को करार ठेराया आप कने आया पण अबारते रुपया को ये
क सलुक अमल मो न आयो और हुंडी रुपया तीन लाष की भेजी
सो भी सावकारां ने उठें रुपया न पोहच्याजी सु अठे औरंगाबाद
मो हुंडी का रुपया दीया नही ये बात क्युं त्रह सुधारसी आपका
आब आपकी त्रह आप आपती डील सुं आदेशाकर, [illegible] रूपया काढ़ा सुं
मुतसदी का कहबा सु ई भांत होवा में आवेकी पण/ सदबाजीराजीला
व नीवाजीभटक्या दोन्या सरदार की नीशां कराय देवीला और
तीन लाष बाबत हुंडी की उठें सावकार की नीशां होय जद
अठे मीलना ई बात मों आप दारशा को अबी त्रह क्या कसर
बाकी झाडा सुं होन्या सरदार की नीशां करोला घणो काई
लिषां मीती भादो बद 14 संवंत 1810

Indore Kharita

Old No. 46

New No.
B.N.3/65

D.N. 62

J.S.A.B.

L.N. 15 1753 अक्तू. 25

श्री

स्वस्ती श्री महाराजा [redacted]धीराज राजेन्द्र श्री माईजी श्री सवाई माधोसींधजी जोग्य ली. श्री मंडेरावहोलकर केन श्री बंच्या अठां का समाचार भला छे राज का सदा [redacted] भला चाहीजे अप्रंच आगे राज कुं षत मेला छे सो पोहच्या होयगा आगे राज ने शहर औरंगाबाद की उनचालीस हजार की हुंडी भेजी वा सरकार के पैसों की हुंडी भेजी थी तेकी पेठ हुंडी कीदीकत हुयीपैसे पलो में पडेनहीं बाबत की पैसों की रहा न हुयी सबब अब षत लीष्यो छे सो आपके दील में पैसे देने होय तो औरंगाबाद की हुंडी की पैठकर बाकी पैसों की तजबीज कर भेज दीजो नहीं तो साफ जवाब लीष भेजो तो माफक करणा होय सो करांगा स्पयों वास्ते श्री हरगोवींदजी कुं ताकीद कर नीशा करोला हमेसा षत में सारा समाचार लीषबो करोला मीती कुंवार सुदी 14 संवत 1810

Indore Kharita
New No. 50
Old No. 40
B.N. 3/45
J.S.A.B.

1753 ?

L.N. 16 [redacted]

श्री

स्वस्ती श्री माहाराजाधीराज राजिन्द्र श्री महाराजा भाईजी श्री

माधोसींधजी जोग्य ली. श्री षंडेरावहोलकर केन श्री

बंच्या अठा का समाचार भला के राज का सदा आरोग्य

चाहिजे अप्रंच राज के सरकार मां मारफत हरगोविंदजी षानगी

पैसीका करार कीया के तीमि बाकी पैसा रहे सो पैसों

में तनषादार गंधी परसराम आगरेवाला गुंसाईं

रंजी लगी (अस्पष्ट)

Indore Kharita

Old No. [redacted] 47

B.N. 3/44

J.S.A.B.

L.N. 17 1753 ?

स्वस्ति श्रीमन्मुकुन्दचरणद्वंद्व निर्द्वंद्वभजनासादितसमस्त

विभववृंदेषु महाराजाधिराज श्रीमहाराजमाधवसिंहेषु ।।

श्रीरघुनाथराव विहिताशीराशय: समुल्लसंतु ।। माघ

कृष्णत्रयोदश्यवधिकं शमस्माकमावेदयन्तत्रत्यं तत्परि

पृच्छति कर्णनिकरपोतम् ।। उदंतस्तु तत्रभवद्भि:

श्रीमद्भि: दीयमानस्य नियमितकालांतर्गतस्तृतीय:

कालोऽतीत: ।। तदर्थं तृतीयकाले दीयमानं सार्धलक्ष-

दयपरिमितं द्रव्यमद्यापि नागतं ।। अत: स्वकीयकार्य-

भारधुरन्धरानाज्ञाप्य तत् द्रव्यम् अविलंबेन अस्मत्सविधे

यथाऽयाति तथा विधानुं समर्था एव तत्र भवन्त: ।।

एनत्कालातिक्रमेणाति नि:स्नेहतासंभावना भविष्यती-

त्यलमतिविलंबेन सुज्ञाग्राति ।।

Indore Kharita

J.S.A.B.

L.N. 18 12th May 1754

स्वस्ति श्री माहाराजाधीराज राजराजिन्द्र श्री सवाई माधवसींहजी

जोग्य श्री मलारराव होलकर केन श्री बंचजो अठां का समाचार

भला के राज का सदा भला चाहीजे अप्रंच वेदशास्त्र संपन्न

पं. श्री ललाचार्य ब्राह्मण कदीम सुं म्हाको शुभचिंतक

के व बहत जोग्य के यानि कर्ज हुवो के ई वास्ते राजन पै

आया के तीसु राजयां की स्थापना कर अग्नहोत्र सीध्द

होय और करज सुं छुटे सेकरोला ये अग्नहोत्र सीध्द कर

शुभचिंतक राज की कारसी मीती जेष्ठ वदी 7 संमत् 1811

Indore Kharita

New No. 53

Old No. 52

B.N. 3/58

J.S.A.B.

L.N. 19 18th May 1754

॥ श्रीशिवो जयति ॥

स्वस्ति श्रीमान्निखिल दारकवृंदवंदितपादारविंदोपास्य

दैवताचरण (अस्पष्ट) दाप्तसमस्तपुरुषार्थेषु

अभिनवगुणग्रामाभिरामसौजन्यासिंधुषु

दुष्ट शिक्षण शिष्टरक्षणदक्षेषु निजकुलावतंसेषु

राजराजेन्द्र श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमन्माधव-

सिंहेषु ॥ श्रीरघुनाथबाजीरायविहिताशी-

राशय: समुल्लसन्तु विशेषस्तु-

आपने दीवानजी राजाहरगोविंदजी के साथ तो (अस्पष्ट)

बात श्री जे जाहल्यो तथा फरद घोडा असवार भेजा सो आया

आछि तरा से चाकरी करिमाने व (अस्पष्ट) बताय्यो

मीति जेष्ठ बीदी ।3 संम्मत ।8॥ मुकाम कुंभेर

Indore Kharita

New No. 55

Old No. 54

B.N.3/62

J.S.A.B.

L.N. २० 1754 मंई 26

।। श्री शिवीजयति ।।

श्री महाराजाधिराज राजराजेन्द्र श्री सवाईमाधोसिंघजी

जोग्य श्री पंडत सखारामजी को श्री बंचरोा अठा का

समाचार भले है आप को भली चाईज अपंर

दीवानजी श्री राजा हरगोबींदजी श्रीमंत श्री दादासाहब

के पास आये इहा की रजाबंदी राषीने दादा साहब

को रजाबंद करयी सरब हकिकत श्रीमंत के लिषि

से मालम होसि इहा सब बेहार आपकी जाणेला

हम तुमारे हैं वे सर बदी दीवान जीके कहे से जाणेला

मिती जेष्ठ सुद 5 संवत ।8।।

Indore Kharita

New No. 58

Old No. 56

B.N. 3/60

D.N. 3/64

J.S.A.B.

L.N. 21 24th July 1754

श्रीरामजी

स्वस्ति श्री महाराजधीराज राजराजेन्द्र श्री सवाई माधवसींहजी

जोग्य श्री मलाररावहोलकर् केन श्री बंचजो अठां का समाचार

श्रीजी की कृपासुं भला छे राज का सदा भला चाहीजे अपरंच

समाचार राव मोहनसींघ के जुबानी मालुम हुवा इह में

म्हाकी घणी षुषी हुइ और समाचार यानि कहबा के सा

यकि लीषि माफक करोला और राव मजकुर म्हां की षुसी माफक

षबरदारी सुं जवाब सवाल मे हाजर छे यां की

तरफ सुं षातर जमां राषोला मीती सावण सुद 5

समत् 1811

Indore Kharita

New No.52

Old No.58

B.N.3/61

D.N.70

J.S.A.B.

L.N. 22 22nd November 1754

॥ श्रीरामजी ॥

श्री माहाराजाधिराज श्री माहाराजा श्री राजामाधवसींघजी जोग्य श्री
मलारराबहोलकर केन बचना इहां के भले हैं राज के समाचार
भले चाहिजे अप्रंच बेदशास्त्र संपन्न पं श्री कृष्णा [redacted] कदीम
सु हमारे शुभचींतक हैं और बहुत जोग्य तपस्वी बीद्वान
गुरु के स्थान हैं ती सु आगे तुमारे तईं सीफारसी लिषि थे
सौ तुमने ईनका आदर सनमान कर अग्नहोत्र चलने की
उपा बकीयो नहीं अब जो कागद बांचता ब्राह्मण अग्नहोत्र
सुधां जयपुर में रहे और आसीरवाद द सो करोगे ई बात
सु हमारे तईं संतोष घणी होय ईकागद का जबाब सीताबी
लीष भेजोगे नही तो दसीस असवार लारे हयाके
लसकर मे पोहचाव दीजो गई सर्वथा करो मती
मीती मागश्र (मार्गशीर्ष) सुधि 8 संबत ।8।।

Indore Kharita
New No. 49
Old No. 62
B.N. 3/57
D.N. 28
J.S.A.B.

L.N. 23 7th June 1755

स्वस्ति श्रीमन सवाई महाराजाधिराज राजराजिन्द्र श्री सवाई

माधवसिंघजी जोग्य श्री मलारराव होलकर केन श्री

बंचजो अठा का समाचार श्री की क्रीपा सु भला है

राज का सदा भला चाहिजे अप्रंच कीसनसिंघ हाडा

के वास्ते दीवाण कन्हीरामजीने प्रवानो भेजो

या सारी हकीकत मालुम की इसी अबार तो म्हाकी

देस की अफजाबी ठाहा सो वाती सर उप्रांत जद

आवाला जदी राज की म्हाकी सलाह सु ठाहारेली

सो करबा में आवेली बेवेरो दीवाण कन्हीरामजी

मालुम करसी कागद समाचार लीता रहीला

मीती जेठ वदी 13 संमत्त 1812

Indore Kharita

New No. 53

Old No. 63

D.N. 74

B.N.3/68

J.S.A.B.

L.N. 24 7th June [redacted] 1755

।। श्री रामजी ।।

स्वस्ति श्रीमन महाराजाधिराज राजराजेन्द्र श्री सवाइमाधव

सिंह जी जोग्य श्री मलारराव होलकर केन श्री बंचजो

अंठा का समाचार श्री जी की कृपा सुं भला के राज का

राज का सदा भला चाहीजे अपरंच कागद राज को

आयो समाचार सारा तपसीलवार परगणा वगेरे

का दीवाण कन्हीराम जी कह्या सो मालुम हुवा सो

अबार तो म्हाको देस की, तरफ जावो होसी चार

महीना बाद [redacted]K छावणी का डेरा दीवाण

कन्हीरामजी ने भेजोला उठे सारी हीसाब देख दुरस्ताइ

कर दीजेलो और समाचार कन्हीराम जी ने कह्यो

सो मालुम करेला कागद समाचार हमेस लीषाबोला

मीती जेष्ठ बदी ।3 समत् ।8।2

Indore Kharita

New No. 54

Old No. 62

B.N.3/66

D.N.75

J.S.A.B.

L.N. 25 7th March 1756

श्रीरामजी

श्री माहाराजाधीराज श्री राजराजेन्द्र राजाजी श्री सवाई

माधोसींघजी जोग्य लीषत दीवाण श्री आनुतराव जी केन

श्री (अस्पष्ट) बंचजोजी आठा का समाचार भला के आपका

सदा सर्वदा भला चाहीजे हे तई मलास रावकोती

सुब मेघाभावजोजी जाप्रचे पंडत राज श्री गोबीदरावजी कु

अजमेर का सुभा दीया के सो आपका और पंडतजी का

हमेसा से कला अके तीमाफक आब जादाकट काणा

कई बात की तफावत रषणा नहीं और मोजि बोरला हा

92 गाव आजमेर का के सो आब आपके तरफ हैं सो

(अस्पष्ट) प्रमाणे गाव सुमे आजमेर के तालुका में

पंडतजी के हवाला काणा आप तो सब बात्ता

जाण हो मीती फागन शुधी 6 बिक्रम समत्त 1812

Indore Kharita

D.N.151

New No.64

Old No.65

J.S.A.B.

L.N. 26 31st December 1756

सिधि श्रीमन महाराजाधीराज राजराजेन्द्र श्री सवाई श्री

माधोसींघ जी जोग्य लीषीतं सटबाजीराजीला केन श्री बबजी

अठा का समाचार श्री महाराजकी क्रुपा सुं भला के श्री महाराज

को सदा भला चाहिजे तो म्हाने परम संतोष होइ जी

अप्रंच श्री सुबादारजी के हुकम माफक रामपुरा मानपुरा

अमल कर लीयो रुपया की पकी नीसा लेबा वास्ते

म्हे इठै आया सो दीवानकनीराम श्री आज मील्या

जबाब सवाल हुवा पाछे दीवाणजी ने ठहराबा जो

पाछला बाकी रुपया लेर श्री सुबादार के हजुर

जावा का उठे गया पाछै रामपुरा बाबत अरजकरांला,

कोडसी तो थने परवाना मोकलांला तब ताई मुलुक

को उजाड़ बीगाड़ करो मती साबकदस्तुर रहना को

थाने आग्यां आसी तीमाफक करांगा याकी हकीकत दीवाणजी

ने लीषी के सो हजुर मालुम होसी जी मे श्रीजीका व

सुदेबाराजी को स्नेह हमेसा सो फरमावोला मीती

माहा पोश सुद १० संवत १८१३

Indore Kharita
New No. 67
Old No. 66
B.N. 3/175
D.N. 65, J.S.A.B.

L.N. 27 30th January 1757

॥ श्रीरामजी ॥

स्वस्ति श्री माहाराजाधिराज राजराजेन्द्र श्री सवाई माधवसिंघजी जोग्य श्री मलाररावहोलकर केन वंच्या अठा का समाचार भला छे राज का सदा भला चाहिजे अप्रंच कागद राज को आयो समाचार मालुम हुवा सद्‌वाजीराजोल्या को और कन्हीराम दीवान को समाचार लीष्या और कीरी तेरे कीजुदागी नखेर ई भांत बेवरो लीष्यो सो मालुम हुवो जी ही भांत जाहरी मैं आई जींदीना सुं राज सवाई जेपुर दाषल हुवा सोही दीन आज ताई ये कही कर बताया सचोटी मामलत मे तथा हेत बेवार मे ज्यु रीत बड़ा राजा की रीत छे ज्यु ही जजनायो इमि राज उपर कई दुसण छे ज्युग की रीत ईही भांत छे म्हाकी रीयत की जीकी हद होय चुकी राज कामन मे युंही आई सो थणी आकी बात छे आगासुंचीत मानसी सोही करोला धणी कोई लीषा मीती माह सुध ॥ संमत् ।8।3

Indore Kharita

New No. 55

Old No. 69

B.N. 3/72

J.S.A.B.

L.N. 20 3rd November 1757

श्रीरामजी

स्वस्ति श्रीमन महाराजाधीराज राजराजिन्द्र श्री सवाई माधवसिंघजी

जोग्य श्री मलाररावहोलकर केन श्री केवजी अठों का

समाचार भला छे राजका सदा भला चाहीजे अप्रंच ब्रम्ह

मूरत स्यारामकटारी आपकी पुरोहित छे म्हांसु उदक गाव

नंदिरा परगने का माकारास्तिढ मेदवार होय राजको लोषाना

वास्ते कह्योजी उपर म्हें कबुल कीर राज की लीष्यो

छे तो धर्म को कार्ज छे ओर पुरोहीत की इछा मनोरथ

राज पुरन करोगा ई गाव की [illegible] सनद उदक की कराय

मेजोला ईमें [illegible] म्हा की षुसी छे ई गाव की सनद कादीश छे

राजभी कराय देवोला गाव की धरती दोय हजार की छे

सो जरुर सनद कराय देवोला मीती कार्तीक बदी 7 संमत् 1814

Indore Kharita

New No. 58

Old No. 71

B.N. 3/66

D.N. 86

J.S.A.B.

L.N. 29 5th October 1758

श्री राम

सिध श्री महाराजाधिराज राजराजिन्द्र श्री सवाई माधवसींहजी

जोग्य श्री मलाररावहोलकर केन श्री वांचजो अठां का

समाचार भला छे राज का भला चाहीजे अपरंच अबके

दीवानकन्हीराम सु म्हाकी चीत जादा तुटी थे और राज

सुं श्री नाखुसी दरमायान आइ थी परन्तु राजाअलेसींघजी

के आवेगी रानीचीत्त की दुर हुई ये राज का घरेणा

ने कथाह छे यां को राजने समाधान करागी जोग्य छे

राज की यां की ती मेल पवेहार पीढ्या सुं छे

म्हा का लीखनाताई क्यु जरूर नहीं और समाचार

मुफस्सलया की जुबानी सुं जाहर होसी मीती असोज

सु.3 स. 1815

Indore Kharita

New No. 59

Old No. 75

B.N. 3/78

D.N. 78

J.S.A.B.

L.N. 30 [redacted] 1758?

स्वस्ति श्रीमन्मुकुन्दपादारविंदद्वंद्व निर्द्वंद्वभजनासादितसमस्त
विभववृंदेषु सौजन्यसिंधुषु ।। श्री महाराजाधिराजश्रीमाधवसिंह
नृपवर्येषु ।। श्रीरघुनाथबाजीरावविहिताशिषः समुल्लसन्तु ।
आश्विनासितपंचम्यवधिकं शमत्रत्यमावेदयन्तत्रत्यंत तत्परिपृच्छति
वर्ण्यनिकराधीतम् गोचरस्य श्रीमद्भिः पारितोषिकत्वेन
दीयमानं किंचितद्रव्यं नियामितमासीत् तन्मध्ये पञ्चाशत्सहस्र
परिमितं द्रव्यमुर्वीरितमस्ति तदद्यापि आत्मसात् न जातं
तर्हिदं (अस्पष्ट) नुचितार्थं ति भाति ।। तर्हि तत् द्रव्यं सत्वरं
प्रेषणीयमिति भवदीय कार्यधुरंधरा आज्ञपनीया । अथ च धनेश्वर-
हस्तात् श्रीमद्भिर्यत् द्रव्यं दापितं तन्मध्ये धनेश्वरेण सपाद-
लक्षमितं द्रव्यं हुंडीपत्रं दत्त्वा अवरंगाबादाख्यनगरे दापितं
परंतु त (अस्पष्ट) हुंडीपत्रं परावृत्य गतं नहि धनेश्वरमाज्ञाप्य
पुनः सत्वरं हुंडीपत्रं प्रेषणीयमिति श्रीमता पूर्वलिखित मासीत्तदनु
सारेण (अस्पष्ट) ज्ञापनीयं श्रीमद्भिः अन्यथा स्नेहसंरक्षणं न भविष्यतीति
लेखनाडंबरेण संमत ।8।5 वर्षे मुकाम गंगतीर

Indore Kharita

J.S.A.B.

APPENDIX 7
JAIPUR KHARITA FROM JODHPUR RECORDS
OF
R.S.A.B.

L.N. 1 7th August, 1726

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराज श्री सवाई जैसैंघजी देववचनात भंडारी रुघनाथ दिसेसुप्रसादवंच्या अपरंच अरजदासति थांकी आई अरज लिषीजोग बांनु जीरणाबवाति इनायत हुवो छै सो सवाईजी नै अरज लिषी छै बेठा की जवाव आया अरज लिषस्यो अर अणदसींघ दिष्षणा सो सगाई बगैरह ठेहरावि छै तीको जतन कराणी सो हकीकति अरज पहोंची अब आणिबावति जवाव आयो होय सो लिष्ष ज्यो अरजोसी संभुराम नै आगे दिष्षणा की त्रफ भेज्यो छो सो अब इबात की ताकीद लिषी छै अर राजा साहु नै भी लिष्यो छै सो फौज का सरदार नै ताकीद करि अणदसींघ कीरदबदल मौकूफ रषावैला अर बेठा का साहुकारा अेठा का साहुकारा नै लिष्यो जो अणदसींघरायसींघ बेठबाने जायगा चाहे छै अर वांक नै ठाकर लोग छै सो जागीर वाहै छै अर चाकरी करबी कबुल करै छै सो बात सांच छै तो अणदसींघरायसींघ सौं वा ठाकर लोगां सौदुरसता है करवी सलाह ही छै जेवात में फिसाद मिटै अर पातसाहजी की चाकरी करीसये सो करीला और सारा स्माचार तपसीलबार महाराजाका कागद सो जाणौला

मिती भादबाबदि 7 सवत 1783

[redacted] Jaipur Kharita
Jodhpur Records
No. 7 Pad No.5
R.S.A.B.

APPENDIX I

JAIPUR RECORDS · HINDI
AT
SITAMAU

L.N. 1 9th December 1728

श्री सांबशिव

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराज श्री राजाधिराज सवाईजयसिंघजी

जोग्य लिखीतं राणा संग्रामसिंह मुजरो मालुम हुवे अपरंची दिलरासी

ईरासी मंगल माहे सदा आवे उपद्रव करे है तीठा अरज की जदी

चार
आप फरमायी सो ए तो [redacted] हैं इशारो कांई विचार है सो

अबार तो सोबो मारे लीयो ने नीदान जतन नही होगा तो इंदको

बहदो हेगा पाछे तो श्री महाराज विचारेगा सो सही संवत्

1785 वरखे पोष वदी 5 सोम -

J.R.H. [redacted] SItamau
No. 954 Page 82
Vol. III Pt. V

APPENDIX 9
JODHPUR KHARITAS
OF
J.S.A.B.

L.N. 1 12th March 1725

स्वस्ति श्री राजराजेन्द्र महाराजाधिराज माहाराज श्री सवाई जै सिंघजी

जोग्य राजराजेश्वर माहाराजाधिराज माहाराजा श्री अभैसिंघजी

लिषावतं जुहार अवधारजो अगरा समाचार भला के राजरा सदा

भला चाहीजे राज वड़ा छौ सदा हेत रषावीको जुवादगी कीसी

बात की जाणी मती अठे घोड़ा रजपुत के सु राजरे हुकम मे के जी (अस्पष्ट)

तथा कागद राजरो आयो समाचार लीषीया राज गुजरात पे

कुच कीतकीद लिषी सु आपरी ताकीद घणी के सु चैत सुद

13 कुच ठहरायो के पीणा हीमा दुष बरआई के

आणंदसिंह दीषणीयां था वात करने सगाई करी के

ने दीषणीयानु कहे के इण तरफ आवो सो दीषणीउली

तरफ आया तो उणां रे ने मरि पहुँ लाही जकजी पोहसी

ने नबाबमीर बीलदषां जी नो जेहमदाबाद में बेठो के सु

दीषणी उली तरफ आया तो फेर हकीकत लीषवांने अठो दीषणी

न आया हो जहेमदावाद पोहची पातसाहजी रहे जुर कोई कहे

त्या अहमदाबाद पोंहचण री ढील कीवी तो राज आह हकीकत

उली तरफ दीषणी आवे तेर जावतो कीयोईज चाहीजे

संवत 1782 चैत सुद 10

Jodhpur Kharita

D.N.7/22/2

J.S.A.B.

L.N. 2 | 26th December, 1750

स्वस्ति श्री माहाराजाधिराज श्री बषतसिंघजी

माहाराजकंवार श्री बिजैसिंघजी वचनात

गीगावत षेमसिंघजी जोग्य सु परसाद बांचजी

तथा अरजदास्त आई हकीकत मालम हुई

(अस्पष्ट)
ईसरसिंघजी ने लिष्यो सो पहुंच्यो ^ म्हे तो

(अस्पष्ट)
हमेसा श्री परमेश्वरजी कने आग्या मांगि ^ श्री माधोसिंघजी

राजबिराजे सो परमेश्वर जी म्हारी कहियो कीयो हमे

(अस्पष्ट)
ऊ पधारे टीके बिराजे - ^ - और मलारजी

पूरा समाचार लिष्या था थांने म्हे म्हाराजाणी

कीजो तीज माफक थे मौला थो सो (अस्पष्ट)

श्री कृस्न चरना शरणा । महाराजाधिराज ।

श्री बषतसिंघजी कस्य मुद्रिका

Jodhpur Kharita

D.N. 4/533

New No. 35

Old No. 199

B.N. 11/2381

J.S.A.B.

॥ श्री ॥

L.N. 3 28th December 1750

[redacted] [redacted]

सिधि श्री मा. राजाधिराज श्री बखतसींघजी जोग्य लिखित माहाराजाधिराज महाराजा श्री सवाईमाधवसींघजी के नि जुहार वंच्या अठाका स्माचार श्रीजी क्रिपाशुभलाछै राज्य का सदा भला चाहिज्ये अप्रंच कागद राज्यका आया स्माचार बा राज्य दोन्या त्रफ की फौज का स्माचार लिख्या सो जाण्या । और राज्य लिखी जो मलारजी तो आपनै चाहि भींत भति चाहि क बणि कदापि कुछ तफावत करी छे अर विशेष काम की सो म्हानै लिखावज्यो सो मलारजी अर म्हाके धणी राजावंकी छै ओरू अठै सारी ब्योहार राज्यकी छै राज्य अठो की त्रफ बरीत मुस्ताव रहीसा म्हाके राज्य (अस्पष्ट)

मीती पोस सु. ।। सं. 1807

Jodhpur
[redacted] Kharita
New 34
Old 180
D.N. 4/535
B.N. 11/2382
J.S.A.B.

L. N. 4

April 1751 ?

श्री रामजी

स्वस्ति श्री राजराजिन्द्र महाराजाधिराज श्री सवाई माधवसिंह

जी सुं मारो जुहार अवधारजो जी अपंच (अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) कनीराम (अस्पष्ट) लीषी (अस्पष्ट)

राजसीव जीनै मलार कनै मेलीया कै सुं

कनीराम ने (अस्पष्ट) राजसीवजी जेपुर बुला

बठो जी (अस्पष्ट)

Jodhpur Kharita D.N .7/311

J.S.A.B.

December 1751 ?

L.N. 5

श्री रामजी

सीध श्री माहाराजा धिराज श्री माधवसींघजी तुम्हारो

जुहार मालम (अस्पष्ट) अप्रंच (अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) सारा मेला र राव (अस्पष्ट) जो

मलारजी (अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) जतन करावजो (अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) भतीज रामसींघ रा आदमी मलारजी

सुं हजारां (अस्पष्ट)

Contd...../

अग्रेच अठै से श्री कुणवा (अस्पष्ट) वैठै मलारजी माँ रैने

रामसींघ जी घरै मलाररावण (अस्पष्ट) मेलरी (अस्पष्ट)

मलारजीमारी मलारजी (अस्पष्ट) होव नैन बाबरी मदत

(अस्पष्ट) रामसींघ कीणी री मदत रै नही इश्वर (अस्पष्ट)

सींघजी राम (अस्पष्ट) रजपुत माँ नै कोई चावै ठैन

(अस्पष्ट) दीवाणजी खीतमा महरवानगी राखै छै

मलारजी (अस्पष्ट)

Jodhpur Kharita

D.N. 7/34

J.S.A.B.

L. N. 6

June 1751 ?

सीध श्री सवाई जेपुर शुभ सुथानै सरब उपमा भटजी

श्री सदासवजी जोग श्री उदेपुर थी माहाराजाजी श्री वषतसींघजी

लीषाव अप्रंच आपरो कागद आयो सुष हुओ अबै आगली

कागदी माहे म्हे ने समाचार लीषी थी (अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) असवार 300 बंदुक 200 (अस्पष्ट)

(Cont.)

नहीं लावला तो म्हाराज हजुर कै (अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) श्री महाराज की तरफ सु दीषण सु दीषणानै

म्है (अजमेरा) का पईसा प्रदेसी

अर श्री महाराज की हजुर सु... (अस्पष्ट)

Jodhpur Kharita
No. 59
D.N. 6/62
J.S.A.B.

APPENDIX A
KARAULI KHARITAS
OF
L.N. 1 J.S.A.B. 6th March 1743 342

श्रीमदनमोहनोजयति

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई जेसिंघजू जोग्य

लिषायतं श्री राजागोपालसींघजू केन्य मुजरा वंच्या श्री

महाराज के शुभ समाचार दिन प्रतिघरीघरी के सदा

आरोग्य चाहीयै तो परम आनंद होय श्री महाराज की

महरवानगी सो यहां के समाचार भले है श्री महाराज बडे हैं

हम श्री महाराज के दरबार के हमेसा रजपूत है यहां हुकम

ब्यौवहार श्री महाराजाधीराज को है अप्रंच ग्वालियर के

इजारे लैवे की अरज राजा अयामल शिवकृष्णराम व मिश्र

मोजीराम को लिषी है सु हजूर मालूम करेंगे महेरवानगी करि

कागद समाचार हमेंसा कुरमावत रहीयेगो मिती

चैत्र वदि 7 संवत 1800

Karauli Kharita

J. S. A. B.

L.N. 2

[redacted]

श्री मदनमोहनजी

सिधि श्री माहाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई माधवसिंह जी
जोग्य लिषित श्री राजागोपालसिंघजी का मुजरा बंचनी यहांका
समाचार श्री जी कृपा सो भले है श्री महाराज के सुभ समाचार
सदा सर्व भले चाहिये तो हमको परम आनंद होइजी अप्रंची
श्रीमहाराज बडे हैं हम दरबार के हमेसा रजपूत है ओ हम
सो कृपा हो राषीयत है ता सौविशेश राषत रहीयेगे यहाँ तो
एक हुकम श्री महाराज को है जुदाइगी कौन ही बात को जानियेगी
ओर कागद आपुको आयो ब्योरो जान्यो लिषी ही के राजतिलक है ता
के वास्ते तुम यहाँ आइयो सो हम तो या दरबार के आगे सहा (अस्पष्ट)
अब हमेसा चाकरी इही है ओर यहाँ न आवेगें तो ओर कहाँ आवेंगे
राव मलार की मारफति षरची वजीर के सो आही होता सबब हम
यहां आई फंसे हैं ता सो म्हारी गेरहाजरी माफ होइगी यहा सो ओज
जब हुकम आवेंगे तब हाजिर होइगें मरहटानि की छावनी यहाँ भई हम
बिदाहोई देसको आवेंगे ओर हम तो आगे सौं दरबार की चाकरी में है
ओर कोई ने झूठी बात हजूर में करी है सो तहकीकत कर लीजे जी ओर
ब्योरो मिश्र मोधीराम जी अरज करेंगे कागद समाचार कृपा कर ब्योरो सो
लिषावत रहीयेगो मिती असाढ बद 4 संवत 1808 मुकाम कनोज

Karauli Kharita, D.N.2/47, J.S.A.B.

L.N. 3 27th September 1751 344

श्री मदनमोहनजी

सिधी श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई माधवसिंयजी जोग्य लिषि श्री राजागोपाल सिंहजी को मुजरा वाच्यो यहाँ के समाचार श्री जीकी कृपा सौव श्री महाराज की कृपा सौं भले हैं श्री महाराज के सुभ समाचार दिन प्रतिघरीघरी पलपल छिन छिन के सदा सर्वदा आरोग्य चाहिये तो हमको परम आनंद होई जी श्री महाराज बडे है हम वा दरबार के हमेशा रजपूत हैं हमसो कृपा हेत राषिवत हेताई विशेष राखत रहियेगें अप्रंच आप महरवानगी करि हमको हमको कागद बुलाए को लिख्यो उपर खास दसषत लिषि फुरमाए सो हुकम माफिक हम त्यार हैं साथ को राउत बलरामजी बुलाए सो करौली आए इनीय हकीकत वैध लिवोनीकी बात है (अस्पष्ट) माधवार घे दषिनी पांच जगे के मुकासदार निंबा की बहाल के पैसा निकोत गार्दो ज्यादाद वाई केकीनो हैं सेइनेकसलूक की तजवीज करत है जो तो उहा दरबार की जकर मे हमारे आइवे कोहोई तो हमारे काम दषिनी सो कैसे हूँहोवक हमहुकम माफीक आवेंगे ब्यौरो सदासीवजी व मिश्र मोजीरामजी मालमकरेंगे। कागद सु समाचार ब्यौर से फरमावते रहेंगे मिती कातिकद 5 संवत 1808 मुकाम करौली

Karauli Kharita
D. N. 2/32
J. S. A. B.

L.N. 4 4th November 175345

श्री मदनमोहनजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई माधवसिंघजी जोग्य

लिषंत महाराज श्री राजा गोपालसिंघ जी केन्य मुजरा बंच्या श्री

महाराज के सुष समाचार दिन प्रति घरी घरी के सदा आरोग्य चाहीये

तो हमकों परम आनंद होई श्री महाराज की महेरबानगी सो यहां

के समाचार भले हैं अप्रंच श्री महाराज के कागद समाचार आये बहुत

दिन हुए हैं सो महरवानगी करि लिषावत [redacted] रहीयेगें

दिली के व मरहैटान के व मारवारि के समाचार लिषीयेगें

और गौधिक हमेसा सवाई जैपुर सो यहां आवे है सो

अब बिना हुकम है गौधिक तुले नहीं सो अब गौधिक तो लिवे

की व जमातिन सो हुकुम होइगो सु जमातिन सो मुजाहिम

न होई और मिश्र मोजीरामजी के बेटा राधाकिसन कौ

राजरी गुत्तयौ होता सबब मिश्र जी कौ (अस्पष्ट) कागद

समाचार लिखवाते रहेंगे मिती मागर्सीस बदि 5 संवत ।811

और अरज होइगी सु हरजिमलजी केरेंगे

Karauli Kharita
D.N. 2/230/2
J.S.A.B.

L.N. 5 19th November 1754

श्री मदनमोहनजी

सीध श्री महाराजधिराज महाराजा श्री सवाईमाधवसिंघजी

जोग लिषितं महाराज श्री राजागोपालसिंघजी केन्य मुजरावांचबा

श्री महाराज के सुखसमाचार दिन प्रतिदिन घरी घरी के सदां

आरोग्य चाहीये तो हमको परम आनंद होही श्री महाराज की

महरबानगी सोहर्या के समाचार भले है अप्रंच इनदिनानिमे

महाराज के समाचार आये नहीं सो महरबानगीकरि दिली के

व दषिनी के वा मारवारि के समाचार लिषाईयेगें यहां तो

हुकम व्यौवहार श्री महाराजधिराजजी को है और यहां से

प्रोहित ब्रज भूषन जी हजूर को भेजे हैं सु अरज होईगी

सु ए मालुम करोंगें कागद समाचार महेरबानगी करि

लिषावत रहीयेगें मिती मार्गसिर सुद 5 संवत 1811

Karauli Kharita

D.N. 2/58

J.S.A.B.

L.N. 6 11th February 1757

मुद्रा

सं. १८१३

श्री मदनमोहनजी

राज महाराज श्री सवाई मा०

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई माधवसिंहजी

जोग लिषीत श्री राजगोपाल सिंघ जी केन्य मुजरा वेच्या अठारा

समाचार श्री जी की कृपा सो भलेहैं आप के सुष समाचार

सदा भले चाहिये तो हमको प्रम आनंद हो । अप्रंच

महाराज बड़े हैं हम दरबार के हमेसा से रजपूत हैं रो

राजपूत है सो महाराज के काम को है ओर कागद आपको

आयो समाचार जाने अनुरदसिंघजी की मदद करने के वास्ते

लिषी ही से हयाती सवत रहे हुकम श्री महाराजा को ही है वे लिषेंगे

तब जमीयत भेजने में आवेगी ओर हकीकत राय हरसहायजी

की लिषी है सो वे जाहर करेंगे ओर मिश्र मोजीरामजी के कागद

सो मालुम होएगी ओर कागद समाचार लिषावत रहोगे

मिती फागुन वदी 6 संवत 1813

Karauli Kharita
D.N. 2/61
J.S.A.B.

L.N. 1 APPENDIX KHATUT AHALKARAN OF J.S.A.B. January 1731 ?

सिधि श्री भयाजी श्री सेनराजजी जोग्य लिषतं जोरावरसंघ गुलाबराय रा

मुजरो बांचिज्योजी अठा का स्माचार भला है राज्य का सदा भला

चाहिजेजी अप्रंचि कागद राजि का आगे आय छा त्या का जवाव तपसील

वारु आगै लिषी भेज्या छे सो पहुंचा होसी और अठेका स्माचार

या दिना मेद भी लिखे मु. (अस्पष्ट)

धाय भाईनगराज वाड रो प्रगनो बुढ़ा (अस्पष्ट) दौलतसिंह व गुलाबरायजी

ने भेजवा आगो लिषो आयो छो सो मिती पोष सुदि सनीवार

गुलाबरायजी व दौलतसींघ ने सुवार हजार एक व वरकंदाज

साथी भेज्या छे ।

बाबुजी प्रभु किष्ण व मील हजुरी को(अस्पष्ट)कागद एक

म्हाने आयो छो तीको नकल भेजी छे (अस्पष्ट) दिषणी अठीने भी फीसाद करै

अर बाबुजी भी (अस्पष्ट) दौलतसिंध व गुलाबरायजी ने कह दीयो छे

जोय (अस्पष्ट) महारानी (अस्पष्ट) सोजु सलाह हो (अस्पष्ट)

(cont.)

विदा कीयो ो राह में आवतां दिषणी सारंगपुर (अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) असवार हजार-पांच सो के (अस्पष्ट) दिषण

सुआदतषां (अस्पष्ट) अजीतसिंघ (अस्पष्ट) मंदसौर

नवाव स्यादतषां मंदसोर

दिषण्या अर राव हुलकर मलार असवार

हजार पंच से महेदपुर के

[redacted]

Khatut Ahalkaran

No. 155

B. N. 3

D. N. 1/24

J. S. A. B.

L. N. 2 6th March 1732

सिधी श्री भयाजी श्री केसराजजी जोग्य लिषतं जोरावरसीघ
गुलालराय रो मुजरो वंच्या अठा का स्माचार भलै छै
(अस्पष्ट) सदा भला चाहिजे अप्रंचि कागद आगे भेज्या छै
अर गनीम सीव सूवा की त्रफ का स्माचार लिष्या छै सो ते
तफसीलवार वान्च्या होसी और दिषण्या को उकील सेवराजी
भट आयो छो वा मलारराव का वा राणोजी सिंदि
दीषणी षत आया छा जो वजन सी भेज्या छा अर धाय
भाई नगराज (अस्पष्ट) रा लिष्यो आयो छै जो दीषणयां
(अस्पष्ट) न्हान् नागर (अस्पष्ट) डूंगरपूर स्योर कूच करि
राज इ वात को जाब्तो रखावोला (अस्पष्ट) अर गनीम
[redacted]

(Cont.)

रामपुरे (अस्पष्ट) हाड़ोती जावा की वाकी नीति कै

सो रामपुरे (अस्पष्ट) सो राज्य दीभण्या भी (अस्पष्ट) भारी कै

जर हाडोती मैं (अस्पष्ट)

मी. फागण व. ६ सं. १६८८

Khatut Ahalkaran
New 174
Bad 3
B.N. 59/75/9
J. S. A. B

L.N. 3 12th November 1750

।। श्रीरामजी ।।

सिधि श्री सखवौपमा जोग्य भटजी श्री सदासिवजी जोग्य
लिषत पेमसंघजी केन्य निमसकार वंच्या अठै का समाचार
भला छै राजी का सदा भला चाहिजे अप्रचि कागद राजी
को आयो समाचार वाच्या कन्हीरामजी का कागद दीवाण
हजुरी (अस्पष्ट) अर अठै असी अफुवा छै मलारराव
ने नानेजी ओडरो वुलायो अर नान्दाजी की बेषबरी छै
सो उनने लीषी अर करार वाकी समाचार जरूरी
मगावणा छै और गुराड़ आसोध्या का मजकुर
लीष्यो सो या वात तो करणी ही छै पंडीत कना
पुत्र तमहोसस्यो कागद लीषाट (असूपष्ट) कीसनसींघजी
भटजी श्री रविदत्त संकरदत्त जी स्यो निमसकार वंच्या
बालकीसन (असूपष्ट) म्हाको दस हजार को गाव बीगाडनाषो
और किसनसिंह हाडा को मजकूर लीषो सो कागद दीवान अखैरामजी
ने भेजीजो और को जावतो राखनो नगदी को राषवो तो
मालूम ही छै और काती वदी 10 सनीश्रवार परभाती ही दीवाणजी
हजुरी गया छा सो फुरमाई महारावजी की त्रफ ~~हजुरxxxxxxx~~
वहोत सावधानी राषीज्यो अर वे ईसरीसिंघजी सु मील्या छै(अस्पष्ट)
अर दरवार की त्रफ स्यो बुदी टीको गयो जी वास्ते याकेवा
(Cont.)

(अस्पष्ट) रगडुरसती ने दै
मीती कातीक १० स. १८०६

Khatut Ahalkaran
D.C. 41527
New. 139
Basta. 4
B.N. 11/2377

L. N. A 1751 – 52 ?

सिधि श्री सरव उपमा जोग्य श्री दादा श्री सीदासीवजी

लीषत सेवक (अस्पष्ट) देनी पाव (अस्पष्ट)

अठा दा समाचार भला छै आपका सदा भला चाहिजे

अप्रंची मारोठ में तो (अस्पष्ट) रामसींघजी को छै तीका

वास्ते महाराजा वषतसींघजी श्री जी ने लीषी भेजो छै

(अस्पष्ट) सो अब रामसींघजी (अस्पष्ट)

Khatut Ahalkaran

J. S. A. B.

L.N. 5 1752 ?

श्रीरामजी

नमस्कार अप्रंच थे जमीत की वा तोषषांना की

नालसि लिषी सो तावीद तो धणी ही हुई छे पण

समाचार कागद सूं जाणस्यो वा पाछां सू लिषस्यों

अब बषतसींघजी भी आया आवाछे से थे भी

वां सा मिलसि सा बही होज्यो रामसींघजी भी बीच

मे ह सू निकल्या छे हरनारायण आज आयो छे

सो मेरे प्रमारो कोटवा के करायो छे सो ये भी यांकने

पहुंचेला

Khatut Ahalkaran
No. 76
B.N. 15/58
Basta 4

J.S.A.B

L. N. 6 15th August 1751

सिधि श्री सर्ववोपमा विराजमानजी भटजी श्री सदाशीवजी

राज्य श्री पेमसंघजी जोग्य लिषतं गुजरमल(अस्पष्ट)नमसकार

मुजरो वंच्यजोजी अठा का समाचार भला छ आपका सदा

भला चाहीजे जी अप्रंची कागद आग भेज्या छा त्या सौ समाचार

जाण्यां होयलाजी अर आगे कागद भेज्या छा व श्री महाराव

जी श कागद श्री जी कना(अस्पष्ट) त्या फौज जवाव अवतक

आयो नहीं सो श्री महारावजी फुरमाव को(अस्पष्ट) समाचार अर

जवाव आवा की ढील हुई अव सीताव सारा समाचार

मंगावो रामसंघजी कोठे छे बषतसंघजी कोठे छे वां केन

जमीयती कीतिक छ वा रामसंघजी को भलो माणस गनीमा

में गया छा सो काई ठहराई व काई याने जवाब सवाल दीयो

श्री दीवाणजी कने कशी महाराज्य का भला माणस गया छा सो

काई ठहराय आया गनीमां पर श्री महाराज काई सलाह

ठहराई गनीम कोठे छ सो सारा समाचार लिषज्यो जी और

(Cont.)

श्री दीवाणजी कने महारावजी भला माणस भेज्या छा

सो तुरत आवा न छ दीवाणजी तो अब डाबदेबी

जावा की खबरी आई छै अर यानि सीष तो होय

गई छै सो जावला जी और कीसनसंघ गाऊ

वीदराबन का मथुरा से (अस्पष्ट) अब अषेराम

जी लखीरामभाट जवाव वास्ते मथुराजी भेजा

भादवा सुदि 9 (अस्पष्ट) महारावजी (अस्पष्ट) साह

रतनचंद जी ब्राजाज चंद (अस्पष्ट) सेष चाहिजे

कागद समाचार हमेस लीषावो करोला

मीती भादवा सुदी 5 सं. 1808

Khatut Ahalkaran
New 142
old 402
D.N. 4/555
Basta No. 4
J.S.A.B.

L. N. 7

30th September 1751

[redacted]

॥ श्री रामजी ॥

हेत राषी छो जी सु घर की ब्योहार जान लीषाही छे ओर म्हाकि तो एकसायो प्रताप उही घर को छे ओर म्हाकी हकीकत सुतो थे आगे ही वाकीफ छो अठे हाडा जाटु वाकी तो मुलक में फिसाद हमेसा रहे छे ओर दषन्या आय डूी सांरी बडी दिकत म्हाकि मुलक तो थोडो ओर डूारषा पायरामचंद पंडत ने षंडीको जुलम पचास हाजार रुपीया जीं का सा. हजार लागेजी सुषाबाई भी न मीले छे बडा तरद्‌द सुनी काम चाले छे सो थु दुष श्री महाराज को मीटायो मीटसी ओर समाचार भइया सेंइसरामकेहसी

मीती काती वद 5 संबत 1808

Khatut Ahalkaran
New 163
old 408
Pad 4
J.S.A.B.

॥ श्री राम ॥

सिधि श्री सरबोपमा वीराजमान भटजी श्री सदास्योजी राज्य श्री

पेमसंहजी जोग्य लिषतं गुजरमल केन्य नमसकार मुजरो

वंच्या अठा का स्मांचार भला के आप का सदा भला चाहिज्येजी

अप्रंची कागद आपको आयो सो तीसी स्मांचार (अस्पष्ट) महारावजी

सो स्मांचार मालुम (अस्पष्ट) बहोत परसन हुवा और श्री महारावजी

(अस्पष्ट) यनाथ हुवा (अस्पष्ट) ठाहरी सो आसोज सुदी ॥ ने

भोपतीराम चारण श्री हवेली में दाषील हुवा ।5 ने कूच कोला जी

और श्री महारावजी फरमाव छा जो छीत्रसंघजी राजावत

वा (अस्पष्ट) उदैपुर भेज्या छा अर म्हैवात कराई छी जी महाराज्य म्हें

दीवाण (अस्पष्ट) परी परतापसींघजी कही महाराज्याका तो मीलवा की बात

ही करो मती सो वांकी (अस्पष्ट) सुरती क अर भटजी पेमसंघजी को

लिषी आब जो दीवाण का वा महाराज्य को एक चीत क सो म्हाने सो

स्माचार क अर अठे ए समाचार ही आव नही क सो ठीक समाचार

मंगावो महाराज्य (अस्पष्ट) दीवाण और जगु पीरोहत न सीष दीवो

आको काम की फौज न महाराज्यने - अर गनीमा नै मेली

अर महाराज्य व महाराज्य सवाई जैसंघजी तो अभैसंघजी

(Cont.)

माधोसींघ जी या करी जो रामसंघजी न राज उपर

बेठाण्या केती वात महाराज्य घर (अस्पष्ट) जोधपुर

उपरी चाल तदी म्हेतयार कीं जी ओर

बा गनीमां का वाहठाणां का सारा समाचार

लीषाबीलाजी ओर म्हारी तहनाथ आदमी [redacted] सो

त्याने बाची (अस्पष्ट) [redacted]

मीती आसोज सुदी 13 सं.1808

Khatut Ahalkaran
New 140
old 19
D.N. 4/580
J.S.A.B.

L.N. 9

1752 अगस्त 16

सिधि श्री सर्वाउपमा जोग्य भाई जी श्री सदसिवजी जोग्य

लिषत रविदत्त संकरदत्त केन नमस्कार पाबा धीकं

अबधारियो अठा का समाचार भला है आप का सदा

भला चाहिजे अप्रंचि कागद राज्य को आयो लिख्यो जो

उठी तो बषतसंद्याजी की फौज जाएगी अठीने पचिहजार

सुबारा सूं म्हाने जाण्याती सूरामसींघ जी (अस्पष्ट)

सौडे सवाणे दिषण्याने जाबा प्रो आप दिषणिमति जाबो

म्हे मारिवाड़ि में दौड़िस्यां (अस्पष्ट)

एक दिन रामसर (अस्पष्ट) लागिजासी

(अस्पष्ट) रामसंघजी दिषणि काना री जासी सो

समाचार श्री जी हजुरि मालूम कीया अब आपसिताब

बषतसंघ जी सामिल होला ओर फौज भी पाबा थे पहुंचेली

ओर कागद आपको साबण वदि 2 (अस्पष्ट)

मिति श्रावण वदी 3 संबत 1809

Khatut Ahalkaran

J. S. A. B.

L.N. 10

श्रीरामजी

श्री राजामलजी (?)हजूर से (अस्पष्ट) मुजरो मालूम

हीयजी अप्रंच श्री दीवाण एकलिंगजी पोस सुदि १३ नै

पधारेला १४ नै महलां पधारेला निहालचंदरो बेटो

दिल्ली चालीगा निहालचंद अैठे आ (अस्पष्ट)

अर दिषण्या पंडित रामाजी नै मलार नै भेज्यो यानै

पीड़ो सरोपाव दे विदा कीया मलार (अस्पष्ट) आषा भी

छे आषा की व्याह छे सो महीना १ पाछे आए

अर मलार वा आथे पंडित १ रामसंघजी पासी भेज्यो छे

म्हे आछां का आसा स्मांचार छे

जैतसंघजी सीष मिती पोसु सुदि १२ संवत १८०६

Khatut Ahalkaran

D.N. 11/463

No. 70

Basta 4

J.S.A.B.

स्वस्ति श्री सर्वोपमा बिराजमान धरमधर्ममूर्ति राजिश्री आरदसेयजी

जोग्य लिषतं करौली थे मिश्र मोजीराम को कोटि कोटि

आसीर्बाद बचजो यहां के समाचार श्री जी की कृपा से भले हैं आप

के सदा आरोग्य चाहंत है अपरंच कागद महाराजाधिराजजी

कू महारा जिने लिष्यो है एक (अस्पष्ट) सो अंताजीमनकेसर को

मजकूर लिष्यो है सो महाराजि (अस्पष्ट) मामुलेन लिषते परि सो

(अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) महाराजि तो की चाकरी इरादा राषै है / और सब

राजा हैते चाकरी करै सब एक ब्योवहार है और अंताजीमानकेसर

को सरकार को ब्योहार रहे तो बडी बात है या के दरम्यान को

जुबाब सुवाल मे महाराजि हेता (अस्पष्ट) अंताजी ने महाराज ने

लेष्यो है और अंताजी ने चाकरी आछी करी है और कदाचित

महाराज फरमावे अंताजी ने हमारे गांव मोर लूटे ताको

दुष पाइ रहे हो ते पे दषिनी है सो जहो मसुल फेस —

[redacted]

Contd..../

ई लूटि भाइ महाराजि (अस्पष्ट) लिषी है इनसू सलूक ही करनो

हैमह है महाराजि वडे है और आप सीरिके मुसाहिब जा में बाता

भारी दीसि सो करोगे और असी लिषावोगे तो मैं अंताजी राजी

होई और अब ताई मैं हजूर नही मिल्यो महाराजि तो सबरगढ़

विराजे है सो अंताजी ने लिषी है एक बार महाराजि सू मिलनो है

सो करोली की त्यारी करी है सो उनकी ताकीदी विसेस आई (अस्पष्ट)

सो जावेगे कागद हमारी (अस्पष्ट) भेजि दीये सो आपकी हजूर भेजे है

हम आपके घर के हैं आप हमारी गोरि राषोगे तब

हमें (अस्पष्ट) क्रपा करि कागद समाचार हमेसा लिषत रहोगे

मीति कार्तिक सुदि 4 संवत 1813

Khatut Ahalkaran

[redacted]

D.N. 5/853

New No.142

Old No. 21

B.N. 12/2677

J.S.A.B.

L.N. 12 May 1757 ?

।। श्री रामजी ।।

सिधि श्री सरबवोपमा विराजमान पूज्य श्री विद्यागुरजी श्री भट

राजा सदासिव जी योग्य लीषतं राजा श्री हरीसंघ जी केन्यनमस्कार

वंच्या अठाका समाचार भला छैजी आपका सदा आरोग्य

चाहीजि अप्रंची अठे राजा हरसहायजी व दीवान नंदलालजी

अंता मानकेस (अस्पष्ट) माल का काम (अस्पष्ट) नवलसिंह

अठे सेंगही हरचंद (अस्पष्ट) व मिती वैसाष सुदी 13 ने आयो छै

वाका लिष्या व संगही का मुवाफिक काम को सुबुद

अर वाके म्हाके जीन में तलूष छै और श्री हजूर

में भी मालुम छ (अस्पष्ट) अंतोमानकेस आयो जती है जायगा

ने (अस्पष्ट) नदी नवलसंघ ने (अस्पष्ट) अब फोज दरवार की है

ओर जायगा हजार बीस की यानी (अस्पष्ट)

Khatut Ahalkaran
D.N. 6/1121
New 167
B.N. 13/57/18
J.S.A.B.

सिध श्री सरबबोपमा बीराजमान पूज्य श्री बिद्यागुरूजी श्री

भट् राजा सदासिवजी योग्य लिषतं राजाजी श्री हरीसंघजी

केन्य नमसकार बंच्या अठा का समाचार भला है जी आपका

सदा आरोग्य चाहिजे जी अप्रंचि यादीनामे कागद आयोन्ही

सो कागद स्माचार हमेस लीषबो करोला जी ओर प्रवानो

श्री हजुर (अस्पष्ट) वास्ते इनायत हुवो की देवसंघ ने राजा

हरीसहाय व दीवान नंदलाल के सामील कीज्यो सो मे सो पहले

ही या बात कहिवा श्री कदमा राषीछे सो सुमाचार आप सुवा

दीवान कन्हीरामजी सु कहा छा ओर अरज (अस्पष्ट) ओर अब

के श्रीमन देवसंघ को ब्राह हुवो सो बोहरा का रूपया ज्यादा

होय साधा रूपया पचित्र हजार (अस्पष्ट) सो षरची की [redacted] तंगी

अरजी श्री हजूर ने लीषी की ओर अठे जैता मानकेस आया

पाछे से हरनीपर वेरान होय गयो हीग कुंभेरजाय बस्या

सोमीदोडकरी आदमी राषी बन्दोबस्त कीज्ये सारा समाचार श्री

हजुरी मे अरज करोला ओर म्हता गोरधन हाथ कागद दीयो है

मिती बैसाष सुदी 3 संवत 1815

Khatut Ahalkaran
D. N. 6/1123
New 134
B. N. 15/3256
J. S. A. B.

L.N. 14   23rd September 1759 ?

सिधी श्री सरववोपमा जोग्य पुज्य श्री भटजी श्री राजा

सदासिवजी जोग्य लिषंत दिवान नंदलाल के नि पावा

अठा का स्माचार भला छै आपका सदा भला चाहिज्ये

अप्रंचि कागद तो आगे भेज्या छे तीस्यो स्माचार

श्च

सारा जाण्या होसी और मिती आसोजसुदि । सनी [redacted]वार

(अस्पष्ट)

आथण ने राजा नागरमलको कह्यो आयोजी / थे मी आवो

सो नवाव (अस्पष्ट) पाछा सो राजा नागरमल(अस्पष्ट)

सरंजाम अषी ही हजूर स्यो, फरामावितो हुंडी वा चाढिजाउ(अस्पष्ट)

वालां कागद भेज्या छा ज्यांसु सुमाचार मालुम होसी

(अस्पष्ट) फौज आवा(अस्पष्ट) सरंजाम(अस्पष्ट) और राजसंघनी

(अस्पष्ट)

वा मजारजी (अस्पष्ट) पांच हजार का / फौज वा तोप

षाना थांकी लार दे छ

मिती आसोज सुदि 2 संवत 1816

[redacted]

Khatut Ahalkaran

D.N. 7/1460

B.N. 12/23/39

New 149

old 66

J.S.A.B.

सिधि श्री सरबवोपमा जोग्य पुजि भटजी श्री राजा सदासिवजी

जोग्य लिषतं दीवान नंदलाल के नि बाच्यो अठा का समाचार

भला है आपका सदा भला चाहिजे अप्रंचि कागद आगे

भेज्या है त्यांसी समाचार जाहरि हुवा होसी तेठा पाछे

कागद सुरज्यमलजी को म्हांनि आयो सो म्हैं राजानागरमल

जी ने पढ़ायो सो नागरमलजी कही म्हाके भी मोहनसंघ कारभस्त

अठा ने कीया का षत ठाकुर का आपां ब मोहनसंघका

मिथरा जी होय आवा के बास्ते लिष्यो आयो परिषत मे

जो आपां वात लिषाई थी सोभी वा कबुल करबा की रीतिवाण

लिषी है सो अब मोहनसंघ आपां वातां सो वाकिफ होय

वजीर सों (अस्पष्ट) परि भटजीनी सिताब ठाकुर मांसिजाब

मांका कूब दोय ज्यारिकोस का करावा की ज्तन करि म्हाराजा

धीराज कीत्रफ सों भी कहना की होय सोवात का (अस्पष्ट) महाराजाधीराज

ने आठा नो लिषा वज्यो थांका कूब करबा की जानजी भांति होय तो

भांती म्हैं करां अब सुजानदाली ने भी सारा स्हेला मिल होय सिताब

आवा के बास्ते षित लिष्या सो को भी जलालाबाद के घट उतरि

(cont.)

सिताव आवा के वास्ते लिष्यो षत दुदेवां का म्हारै

अवार आया की पढि लग्यो ह वा सूरज्यमल जी पासिजी

एकव मदार सहिलनि कुवकर सिताव आवा के वास्ते

वार्ता कहि भेज्यो छे तीको भी मतलब वां लिष्यो छे

सो षत म्हे पढयो सो अव आकी (अस्पष्ट) पासि सिताव

मधार (अस्पष्ट) सिताव लिषावोला मोहनसंघ का

आपां अठै जी जावावसवाल होय (अस्पष्ट) आपनो लिषोंला

षत ठाकुर को व (अस्पष्ट) भेज्यो छे तीसीं समाचार जणोला

(अस्पष्ट) अर जनक जी व षां की फौज का सुदि 4 तांई का

समाचार आयो सो (अस्पष्ट) दस्तूर तोपषानां की

राडि होय छे अर आप कु किलादारी की सनदि बाबति

भिजवाई नहीं सो भटजी श्री हजुरि कीसन करवाकी

होय तो हुंडी भिज्याज्यो (अस्पष्ट) सो हुंडी आई नहीं

हाथी । (अस्पष्ट) अर हथणी 1

षरीद भेजा आसोज सुदी 6 1816

Khatut Ahalkaran
D.N. 7/1407
B.N. 12/2014
New 51
old 29
J.S.A.B.

L. N. 16 15th November 1759

मिश्र जी साही व सुराजसंघको नमसकार अव धारिज्यै जी

अम्रची आय नै लीषी थानै षास उर का माग्य पहुंच्यान जलदी

नजदीक [redacted] [फौज] विगाडो ने जोग्य कुं लिषणी ही

मीणा हाथ मु. ४२५ भेजी सो पहुंची (अस्पष्ट)

मलार (अस्पष्ट) मी. पोस वदी ११सं. १८१६

Khatut Ahalkaran

D. N. 7/1404

New 48

old 33

J. S. A. B.

APPENDIX N1
KOTA KHARITAS
OF
J.S.A.B.

L.N. 1 25th November 1742

श्री लछमी नाराईन जी

सीध श्री महाराजाजीधीराजी महाराजाजी राजा जी श्री सवाई

जसींघजी जोग लीषतं महारावदुर जनसालजी केनी (अस्पष्ट)

बंचजोजी अठा रा समाचार श्री जी की कृपा तथा महाराजा जी

की महरबानगी सु भला छे जी महाराजजीरा समाचार

सदा आरोगी चाहीजेजी तो प्रम संतोष हाइजी

अप्रंची महाराजी बड़ा को बारताव जो जी महरवानगी हमेशा

राखो छोजी अर महाराजी न अठा (अस्पष्ट) राजामल सु

फुरमव्यो छो सु वे बालाजी (अस्पष्ट) ती उपरी बालाजी नती

जवाब दीय्यो(अस्पष्ट) तालुको मलारजी रानुजी को छै सुवे ही

(अस्पष्ट) अर गाव जुदा मारी

आयन सुदी ६ सं १७९९

Kota Kharita

J.S.A.B.

L.N. 2 7th January 1743

श्री रामजी

श्री लक्मी नारायीन जी

सीधी श्री महाराजीधी राज जी महाराजाजी श्री सवायी

जैसिंहजी जोगीलीखाइतं महाराव दुरजनसालजी के नी (अस्पष्ट)

बंचीजीजी अठा सु समाचार श्री जी की कृपा तथा

महाराजाजी महरवानगी सु भला क जी महाराजाजी

का समाचार सदा आरोगी चाहिजे जी तो प्रम संतोष

होई जी अप्रची महाराजी बड़ा को जीत महरवानगी राखो को

जीसु बरताबजोजी (अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) महाराजाजी रामलजी (अस्पष्ट)

(अस्पष्ट) समाचार लिखावोगाजी

पोष वदी ८ वि. स. १८९९

Kota Kharita

D.N. 5/43

J.S.A.B.

L.N. 3 19th February 1751

भाई रघुनाथसिंह व पंचोली चैनसुख जी

महाराज का हुकम माफक रानाजी सूं

मिलवा की वा दिरवण्यां बाबती एकता करवा

के लिखी सो ए फूल डोल पर रा णाजी

सूं मिलवो होसी ज्यो कोई कहवा

वा सुणवा की सलाह होइ तौ सिताब

लिषावोला । मीती फागण सुदि ५
सं. १८०८

Kota Kharita

D.N. 45/1

J.S.A.B.

L.N. 4 After 5th June 1751 ?

[redacted]

श्री रामजी

श्री लक्ष्मी नारानजी

सीधी श्री महाराजाधीराजी महाराजा श्री सवाई माधोसींघजी

जोगी लीखाईत महाराव श्री दुरजनसालजी केनी बंचजोजी अठा

रा समाचार श्री जी की कृपा तथा महाराजजी की महरबानगी

सुभला छ जी/ में महाराजीका समाचार सदा आरोगी चाहीजे

अपरंच महाराजीजी बड़ की महरबानगी राखीजी जी सु बी मैं

अर महाराणाजी श्री जगतसींघजी देवलोक होया बड़ा अदरय होगी

अर गनीया बाबती राना श्रीजगतसींघजी तो आंपण सु सारी ही

बाता भली छा अर अबी राना प्रतापसींघजी (अस्पष्ट)

Kota Kharita

D.N. 5/59

J.S.A.B.

L.N. 5 6th June 1752

समाचार पेमसिंहजी का कागद सूं जाहिर
हुवा और म्हाराज मिलबा वास्तै
लिषाई सो म्हां के तो सारी तय्यारी
है तीं का समाचार पेमसिंह जी का
कागद सूं मालुम हौसी मीती असाढ
वद ६ सं. १८०८

Kota Kharita
New No. 51/1
Old No. 5/51
J.S.A.B.

L.N. 6 9th June 1751

सीधी श्री महाराजाधीराजी महाराजी सवाई माधोसींघजी जोगी

लीखाइत महाराव जी श्री दुरजनसाल्जी केनी बंचजोजी अठा रा

समाचार श्रीजी की कृपा तथा महाराजाजी की महरवानगी सुमला के जी

महाराजाजी रा समाचार सदा आरोगी चाहीजेजी तो प्रम संतोष

होई जी अप्रंची महाराजाजी बड़ा को हेत महरबानगी हमेशा

राखोको जी सुवी बरतावजोजी आपरो समाचार सुना मीलवा

को समाचार पंचोली-जैनसुख ने जाहिर कीया सो बहुत ही आछी

बात के अवदरि जवाव ईने फरमाया के सो मालुम करसी

अठ बुहार महाराजारो के महरबानगी सु समाचार लीखावोगा

मी. असाढ़ बद 12 सं.1808

Kota Kharita
D.N. 5/52
J.S.A.B.

L.N. /   March 1757 ?

सीधी श्री महाराजाधीराजजी महाराजाश्री सवाई माधोसिंहजी जोगी
लीखाईत माहारावजी अजीतसींघजी केनी वंचीजोजी अठारासमाचार
श्री जी की कृपा तथा महाराजी की महरवानगी सु भला छैजी
महाराजी का समाचार सदा आरोगी चाहिजेजी तो प्रम संतोष
होईजी अप्रंची महाराजाजी बड़ा छो होत महरवानगी हमेशा
राखोछीजी पुब्बावजोजी महाराजाजी को कागद आयो समाचार
सुना अठे बुहार महाराजी को छै अर उदेराम पुरोहित हरनाम(अस्पष्ट)
अरा रामपुरा मुतसदी ले गनीमा छै अर आगरा पठाना रा हंगामो छै
अरा उपरी महाराजाजी लीखावोला अठेबुहार महाराजाजीरो छै

Kota Kharita   No. 01/1
J.S.A.B.

APPENDIX N
KOTA RECORDS
OF
R.S.A.B.

L.N. 1 1709?

चंद. पं. की फौज तारज की गढ़ी की बाबत

बुलाई छी, असवार पाड्या त्याह र बानगी

को रोजाना कर दीनो । ईं माह बदी 9

बृहस्पतवार तादात फागुण सुद । शुक्रबार रोज

37 का दर रोज रु. । का होया रु.700

एकुण रु.25900 तीका पाया कुल रु.2800।

आना 3 पैसा 2 जीमें रोजीना का 25900 अर

खर्चा का सामा मोकल्या रु. 2000 हिन्दुराव

की बेटो अर पं. चन्द. सिबन्दी का चाकर

राखना के वास्ते बुलाया छा यों है मेहमानी

की जन्स मोकली ।0। रु. 3 आ. 2 पैसे की

Kota Records
V.S.1766
Bhandar No.1
Basta No.26
R.S.A.B.
Beni

L.N. 2

1733-34

पीढ़ा वाला पीलूजी सूं करार ठहरायो रु. 150000

को मार्फत भटजी गोविंदरामजी व चारण भीपतरामजी

के त्या में भरन मोबह्यो नन्दगांव सूं मार्फत

चौधरी हरीगोविंदजी के

Kota Archives, V.S. 1790
Bhandar 1
Basta 47
R.S.A.B.
Beni

नाहरगढ़ को किलो लियोत्यां का खर्चा ठहराया

एक लाख रुपया परगना का दिया ५००००)

एकुण रु. १५००००) ती. मध्ये दिया ७६७४६)

निजी का रु. ६७२९७) मोहरां का रु. ६१२७)

आना १४ सोना का रु. ३३५४ आना ६ बाकी

आगे देवैगा.।

Kota Archives
V.S. 1790
Bhandar 1
Basta 47
R.S.A.B.
Beni 39-40

L.N. 4 9th March 1734 ?

माह फागण बदी एक मल्हारजी पीड़ा वाला

का सरदार की नरब भट पीरिखरजी पहुंच्या

सो मेहमानी का मोखल्या रू.2510 निज का

रू.1500 मोहरा का रू.1010 थान 90

Do Varki Papers

V.S. 1790-91

Bhandar No.1

Basta No. 47

Kota Archives

R.S.A.B.

Beni

L.N. 5 21st April 1734 9

वैसाख वदी मावस मल्हारजी अर राणोजी

शिन्दा सूं गरह मेहमानी का बूंदी मोकल्या

मार्फत भट पीरेश्वर अर तवारी माधोरामजी

रु. 1500

V.S.1790-91

Bhandar No.1

Basta No. 47

Kota Archives

R.S.A.B.

Beni

L.No. 6 1737-38 ?

मल्हार जीका बेटा को व्याव होयो सो सराजाम ले तिवारी

माधोराम मोखल्यो सो जगाइत का बिला सुं रु. न्योता

का मोखल्या हस्ते माधोराम के रु. ४५०)

Kota Archives

V.S.1794

Basta No.49

Bhandar No. 1

R.S.A.B.

Beni - 74

L.N. 7 23rd February 1738

बाजिराय मल्हार सूं करार ठहरायो रु दस लाख को तीका

लेखा में भरून दियो कुंवर पृथ्वीराज जी, भट गोविंदरामजी,

चौ. हर गोविंद जी की अगेचे व्यास दौलतराम जी के सराजाम

दियो रु. ४८७४६६। को, नकदी ३८०२१०   मौहरा

का १२५१४ ॥   सोना का ६४३०० ।।। रूपा का

२०३८२ फागुण सुदी पूनम ने भरणो दियो मार्फत

दौलतरामजी के रु. ३६७५४४।

(The calculations are not exact.)

Kota Archieves

V.S. 1794

Basta No.49

Bhandar No.1

R.S.A.B.

Beni 72

L.N. 8 1741-42 ?

महारावजी ने वालाजी फडनीस है ६०० बीघा जमीन का चक
उनके दिया मौजा बीराखेडी षो. उरमाल हा गाँव दिला

पं. लक्ष्माजी है २००) पं. बालकिशनजी है १००) पं. शंभूजी
है १००) पं. अम्बलजी है ६०) पं. बाबूजी है २० महीना का दिया

Kota Archives
V.S.1798
Basta 51
Bhandar 1
R.S.A.B.
Beni 73-74

L.N. 9 1741-42 ?

औरंगाबाद की हुंडी सरकार में दीन्ही रु.६६००) की पोस सुद ३ में बरात एक देणी तीम हुंडी एक करार मोषली रु.६१५०० की देवनसुरजी उदयरामजी को वैसाष बुदि १० का करार में बरात एक देणी लो दी ५२१५ ।।। की, वैसाष में पं. रामचन्द्रजी ने लीष दीन्ही 2550 की ।

वैसाष में पं. बालाजी का लेखा में दिया १८४०

करार में दिया ३२४५ ।।

Kota Archives

V.S.1798

Basta No. 51

Bhandar No.1

R.S.A.B.

Beni - 74

L.N. 10 12th October 1746

सम्वत १८०२ में करार ठहरायो ४ लाख को रु जीम दिया

अगहन बुदी ४ सम्वत १८०३ में ५०८६७ ।-।।।

काती सुदी ६ ने दियावा गनीमा का १६ लाख

का खजाना का करार में रु. ५०००

Kota Archives

V.S.1803

Basta No.51

Bhandar No.1

R.S.A.B.

Beni 282

L.N. 11 12th october 1746

अगहण बुदी ४ गनीमा का करार में दिवाया ₹ ४ लाख

का करार में ती मध्ये दिवाया ४५६७०।- नकदी

देणा ₹ दो लाख सम्वत १८०३ काती सुदी ९ गनीमा

का लेखा में दिवाया ₹ सोला लाख का करारमें

दिवाया टहलुआ की खवज का ५००० उदयपुर की

हुंडी १००० की, औरंगाबाद की हुंडी ४००० की

एकुण होया ५००₹

Kota Archives

V.S.1803

Basta No.51

Bhandar No.1

R.S.A.B.

Beni 86

L.N. 12 September 1756

दुर्जनसालजी देवलोक पधारया सो नजराणा का

ठहराया अखेरामजी पं लालाजी की मार्फत ४००००००

नजराणा का १४ लाख खंडणी का २०६००० ब्याज

अर २५००० सुकेत की गढ़ी का सो [redacted] चार साला

का सम्वत १८१६ में देणा । ५८-६०००० साल दर

साल देणा पांच लाख । २ लाख पाछला देणा

२ लाख ई साल का देणा । मल्हारजी का देणा

१० लाख खर्च का देणा १ लाख

Kota Archives
V.S.1813
Basta No.57
Bhandar No.1
R.S.A.B.
Beni - 108

L.N. 13

September 1756
[redacted]

सम्वत १८१३ का साल में नजराणो ठहरायो ४० लाख को ।

खाणी का रु. १४ लाख ब्याज का २६५००० अर

सुकेत की गढ़ी की बाबती का २५००० जीका

देणा कुल रु. ५६९००००

Kota Archives

R.S.A.B.

Beni 282

APPENDIX O

MISCELLANEOUS DOCUMENTS FROM BUNDI ARCHIVES OF R. S. A. B.

L.N. 1 1748-49 १

[redacted] [redacted]

खंडूजी हैं मजमानी के वास्ते बोहरा से लिया

२८२३४ हुजूरी में खर्च हुआ ३२०६ पंडिता

की नजरी में ४००० सूबेदाराजी की नजरी

में हाथी ऐक मामीजी गोतमा जी की नजरी में

१००० सरोपाव पहरावणी में ६५८४ सरपैंचाका

२५००

Siga Dasturi

V.S.1805

Basta No.26

Bundi Archives

R.S.A.B.

Beni 100

L.N. 2 December 1753 ?

श्री जीवाजी अप्पा आया मजमानी अर नजर

का दिया 1362 संवत 1810 का साल में

V.S. 1805-1877

Siga Dasturi

Basta No.26

Bundi Archives

R.S.A.B.

Beni

L.N. 3 3rd September 1754?

आसोज बदी २ सम्वत १८११ जनकोजी दत्तूजी

आमाजी की नजरी का २५०६ घोड़ा ३ बन्दूक २

मूंगा २ सिरपाव वगैरह दिया साख में

रामाजी भाऊ ने दिया १५४५ ।।।

Siga Fauj

Basta No.11

V.S. 1811

Bundi Archives

R.S.A.B.

Beni 104

L.N. 4 1756 ?

जनकी जी बूंदी आया सम्वत 1812 में त्यांकी

लार का सरदारां ने मिजमानी दी

Siga Dasturi

V.S.1805-1971

Basta No.26

Bundi Records

R.S.A.B.

Beni

APPENDIX P

SHAHPURA RECORDS
AT
RAJASTHANI SHODH SANSTHAN, CHAUPASNI,
JODHPUR

L.N. 1 3rd April 1756

दिखणी रघुनाथरावजी का मलारजी का हलकारा

दोय आया जामान पाग षधाई बनेडा मैं मिती चैत
सुदी ४ सम्वत १८१३

Shahpura Records

No. 2199

Basta No.52

Rajasthani Shodh Sansthan,Jodhpur

APPENDIX — Q

UDAIPUR KHARITAS
OF
J.S.A.B.

L.N. 1 21st July 1722

अप्र. दीखणी मालवा मां हे आय्या जठे लाला

नरायणदास सो बारो आको जाबतो राख्यो

सो श्री महाराज हुणां थी में महरबानगी फुरमावे

मिती सावण॥ बदी सम्वत १७७९

Udaipur Kharita

No. 28

J.S.A.B.

APPENDIX R

CHRONOLOGY

RAJPUT-MARATHA RELATIONS 1707-60 A.D.

In the bracket the page number of the text of the Thesis is given.

1707	February	20	Death of Aurangzeb. (P-1)
1707	March	5	Prince Azam declares himself the emperor of India in Deccan.(P-2)
1707	March	12	Ajitsingh Expelled the Mughal Fauzdar from Jodhpur. (P-2)
1707	March	13	Shahu is presented to Prince Azam. (P-2)
1707	March	20	Ajitsingh enters Jodhpur Fort. (P-2)
1707	April		Balaji Vishvanath led an expedition into Gujrat. (P.3)
1707	April	28	The news of Balaji Vishvanath's expedition to Gujrat reached Ahmedabad. (P.3).
1707	May	8	Shahu is released from the Mughal captivity. (P.3)
1707	July	15	Amber,Dausa and Chatsu Paraganas of Savai Jaisingh declared by the emperor as "Khalsa". (P.3)
1707	January	10	Amber named "Islamabad" during the personal visit of the emperor Bahadurshah. (P.3).
1707	January	12	Raja Shahu celebrated his coronation. (P.4)
1708	February	15	Savai Jaisingh and Ajitsingh met the emperor at Merta.(P.4)
1708	April	15	Ajitsingh and Jaisingh resolved to run away from the camp of the emperor. (P.4)
1708	April	20	Savai Jaisingh and Ajitsingh left the expedition of the emperor.(P.3,4)
1708	April	20	The emperor crowned Bejaisingh, the younger brother of Savai Jaisingh as the ruler of Amber. (P.3)

1708	April	24	Prince Jahandarshah assured the Maharana that Ajitsingh and Jaisingh would be pardoned by the emperor. (P.5)
1708	April	30	Maharana Amarsingh II welcomed Savai Jaisingh and Ajitsingh at Gadva Village near Udaipur.(P.4)
1708	July	3	Jodhpur was occupied by the allied armies of Savai Jsisingh, Ajitsingh and the Maharana.(P.5)
1708	October		Savai Jaisingh wrote to Raja Shahu with a request to help the Rajput Princes against the emperor.(P.9)
1709	begining		Udaji Pawar invaded Malwa and planted the Maratha flag at Mandu. (P.11)
1709	January	13	The emperor Bahadurshah killed Kambux in a battle in Deccan(P.10)
1709	January	21	Savai Jaisingh advised the Maharana in a letter to kill the Mughal Subedar of Ajmer. (P.10)
1709	October		The Rajput Princes seek the support of Raja Chhatrasal Bundela against the emperor.(P.11)
1709			Maharao Bhimsingh of Kota employed a Maratha contingent of Chandu Pandit at Tarej fort.(P.11)
1710	April	10	Jaipur Vakil reported to Savai Jaisingh that the Marathas had crossed the Narmada river into Malwa.(P.12)
1710	May		The emperor called for Savai Jaisingh and Ajitsingh through Raja Chhatrasal Bundela to employ them against the Marathas in Malwa and Gujrat. (P.12)

1710	June 11	The emperor pardoned Ajitsingh and Savai Jaisingh and appointed them in Kabul and Gujrat respectively. The princes did not accept the orders. (P-12)
1710	November-December	Ajitsingh instigated the Kolis to create disturbances in Gujrat through his son Abhaisingh, the Fauzdar of Dholka. (P-12)
1710	December 10	Death of Maharana Amarsingh II. (P-12)
1711	January	10,000 Marathas crossed the Narmada river into Malwa under Ganga Maratha. (P-14)
1711	January 9	Savai Jaisingh wrote to Bihari-das Pancholi, the Diwan of Mewad state to send a capable emissary to the Marathas to invite them into Malwa with a large army. (P-13)
1711	January 14	Ganga etc 10,000 Marathas reached Khargaon. (P-14)
1711	February	The emperor decided to appoint Savai Jaisingh in Malwa and Ajit Singh in Gujrat but the orders were kept pending. (P-13, 14)
1711	February 26	Ganga and the Marathas retired to Deccan after crossing the Narmada river. (P-14)
1711	March 11	Khanderao Dabhade plundered Sultanpur near Nandurbar. (P-14)
1711	March 17	Ganga etc. Marathas joined the service of Daud Khan Panni. (P-14)
1711	March 30	Ganga and Kanhoji Bhosle etc. 30,000 cavalry and 40000 footmen crossed the Narmada and fought a battle with Mian Khan in Malwa. (P-15)

1711	April	The Jaipur Vakil Bhikaridas pleaded to the emperor at Delhi to send Savai Jaisingh and Ajitsingh to Dhamuni in Malwa as to turn out the Marathas from there in concert with Raja Chhatrasal Bundela. (P-15)
1711	April 8 to 23	The emperor sent urgent calls to Daud Khan Panni to go for the rescue of Ujjain which was besieged by the Marathas. (P-15)
1711	April 26	Maharana Sangramsingh II celebrated his coronation at Udaipur. (P-15)
1711	May	Khanderao Dabhade penetrated as far as Broach. (P-15)
1711	May 25	Qutubulmulk sent a Hasbulhukm to Savai Jaisingh to March for the rescue of Ujjain. (P-15)
1711	June 7	Savai Jaisingh records his surprise upon the Maratha penetration as far as Mandsaur. (P-16)
1711	July	Kanhoji Bhosle invaded Malwa. (P-17)
1711	July 11	Maharana of Mewad informs Savai Jaisingh of the measures taken by him against the Marathas. (P-16)
1711	August 1	Kanhoji Bhosle retired from Malwa. (P-17)
1711	October 8	Savai Jaisingh and Ajitsingh reached Sadhora to meet the emperor. (P-20)
1711	November 17	The Marathas helped Sultansingh Sisodia of Badnawar. (P-17)
1712	February 18	Death of Emperor Bahadurshah. (P-20)

1712	October 17	Savai Jaisingh gave a sum of Rs.4/- to one Gobind who had brought the letter feom Raja Shahu. (P-20)
1712	October	The Marathas established themselves well on the banks of Narmada river. (P-21)
1712	November 10	Ajitsingh is given the Subedari of Gujrat along with the Fauzdari of Sorath by the emperor Jahandarshah. His son Abhaisingh was made fauzdar of Patan while his other son Bakhtsingh was given the Fauzdari of Idar. At the same time Savai Jaisingh was made the Subedar of Malwa while his Kunwar was made the Fauzdar of Mandsaur. The above orders could not come in force due to succession of Farukh Siyar, as the emperor of India. (P-21)
1713	January 9	Farukh Siyar Succedds as the emperor of India. (P-21)
1713	February 17	Nijabat Khan was appointed the Subedar of Malwa. (P-22)
1713	April	Savai Jaisingh received the letter Raja Shahu. The messenger Purshottam Pandit was rewarded a sum of Rs.300/-. (P-22)
1713	May 3	Savai Jaisingh wrote to Raja Shahu that he is in union with Ajitsingh, Chatrasal Bundela and the Maharana of Udaipur. (P-22)
1713	May First Week	Kanhoji Bhosle and Ganga with 30,000 horsemen crossed the Narmada river and marched towards Ujjain. (P-22)
1713	May 6	Nijabat Khan reached Ujjain for the defence of the city from the Marathas. (P-22)

1713	May 22	Nijabat Khan is dismissed as the Subedar of Malwa. (P-22)
1713	May 29	Nijabat Khan is reappointed as the Subedar of Malwa. (P-23)
1713	June 15	Nizam reached Ujjain for the defence of the city from the Marathas. (P-22)
1713	July	Tarabai's Vakil Pandit Trimbak met Savai Jaisingh. The expenses of his visit were brone by the Maharaja. (P-23)
1713	September	The emperor resolved to appoint in Malwa Savaijaisingh and Ajitsingh in Burhanpur. (P-23)
1713	October 15	Savai Jaisingh is appointed as the Subedar of Malwa to prevent the Maratha penetration into that province. (P-23)
1713	October Last Week	Savai Jaisingh left Amber to take the charge of Malwa Suba. (P-24)
1713	November 8	Savai Jaisingh reached Bundi on his way to Ujjain. (P-24)
1713	November 27	The news came that Ganga etc. 25000 Maratha horsemen reached on the bank of Narmada river. (P-25)
1713	December 11	Savai Jaisingh and Raja Chatrasal Bundela were ordered by the emperor to march upon the Marathas immediately. (P-25)
1713	December 12	Savai Jaisingh wrote to Baxiulmulk that he will completely suppress the Marathas in Malwa. (P-25)
1714	March	Hussainali assured Ajitsingh to get him the Subedari of Gujrat. (P-30)

1714	June		Ajitsingh received the news of his posting in Gujrat Suba but the farman was yet to be issued by the emperor. (P.30)
1714	July		The Maratha army under Hindu Bharatiya tried to cross the Narmada river for penetration into Malwa. (P.25).
1714	August lawt week.		Savai Jaisingh defeated a Maratha contingent of 2000 cavalry in Malwa which had plundered the goods of Haider Quli Khan on the way to Gujrat. (P.25)
1714	October		The Fauzdars and the princes of Malwa and Bundelkhand were ordered by the emperor to join Savai Jaisingh in Malwa against the Marathas. (P.25)
1714	December	7	Ajitsingh married his daughter Indra Kunwari to the emperor. (P.30)
1715	February		The Maratha force under Ganga and Kanhoji Bhosle collected chauth from Raja of Badwani in Malwa and reached as far as Dharampuri.(P.26)
1715	March		Raja Chhatrasal and Rao Budhsingh of Bundi joined Savai Jaisingh at Sironj to expedite against the Marathas. (P.26)
1715	April First week.		30,000 Maratha cavalry crossed the Narmada river at Akbarpur ferry and marched into various regions of Malwa.(P.27)
1715	April	5	Another Maratha army of 12000 horsemen crossed the Narmada river and forced the Zamindar of Barwaha to flee into Nilgarh fort.(P.27).
1715	April	16	Fauzdari of Sorath given to Kunwar Abhaisingh of Ajitsingh by the emperor.(P.31)
1715	April	20	Ajitsingh is appointed as the Subedar of Gujrat. (P.31)
1715	May	2	Savai Jaisingh leaves Ujjain to pursue the Marathas.(P.28)

1715	May	10	Savai Jaisingh defeated the Marathas at Pilsud. (P.29)
1715	May	12	Rao Budhsingh of Bundi and Raja Chhatrasal Bundela congratulated Savai Jaisingh for his victory over the Marathas at Pilsud.(P.29)
1715	May	17	The emperor ordered to record the vicotry of Savâi Jaisingh at Pilsud over the Marathas in the Waqia Papers of 17th May 1715 in a suitable manner.(P.29)
1715	July		Hussainali passed through Malwa to Deccan but Savai Jaisingh did not meet him.(P.32)
1715	July	28	Vijairaj Bhandari of Ajitsingh reached Ahmedabad as Deputy.(P.31)
1715	September	7	The emperor Summoned Savai Jaisingh and Chhatrasal to Delhi in the absence of Hussainali.(P.32)
1715	October		Nandlal Mandloi gives Rs.25,000/- to the Marathas and receives the reimbursement from the emperor. (P.28)
1715	October		Savai Jaisingh left Malwa for his home.(P.32).
1715	October	27	Baxiulmulk asked Savai Jaisingh to go to Malwa and punish the Marathas.(P.33)
1713	November	11	Baxiulmulk again ordered Savai Jaisingh to go to Malwa and Chastise the Marathas.(P.33)
1716	February	22	Ajitsingh reaches Ahmedabad. (P.33,34).
1716	March		The emperor ordered Savai Jaisingh to send reinforcement to his Deputy in Malwa to drive out the Marathas from the province.(P.34)

1716	April		Savai Jaisingh sent an army to his Deputy in Malwa against the Marathas.(P.34)
1716	June	17	The emperor was reported that Maratha army under Santaji and Manaji crossed the Narmada into Malwa but was defeated by the Suba army. (P.35)
1716	July		The emperor ordered Rao Budhsingh of Bundi, Raja Gajsingh of Marwar, Durgadas Rathor etc. to join the army of Savai Jaisingh in Malwa against the Marathas.(P.36).
1716	July to October	29 6	The emperor sent repeated orders to Maharana Sangramsingh II of Udaipur and Raja Chhatrasal Bundela to assist the Naib of Savai Jaisingh in Malwa against the Marathas.(P.36)
1716	October		A Maratha army of 40,000 cavalry gathered between Berar and Khandesh with intention to attack on Ujjain.(P.36)
1717	January	24	Chhatrapati Shahu granted the Mokasa to Kanhoji Bhosle in Nemad and Handia regions of Malwa. (P.36)
1717	February		Savai Jaisingh is ordered by the imperial court to warn his Naib in Malwa to be careful from the Maratha incursions. (P.37)
1717	March	30	Rupram Dhabhai and Himmat Rai, the Naibs of Savai Jaisingh in Malwa defeated the Marathas in the battle of Fatehabad.(P.38)

1717 April 2	Savai Jaisingh is ordered by the emperial court to ask his Naib in Malwa to expel the Marathas from there. (P-37)
1717 April 9	Baghji Shaktavat took leave at Bhorasa from Santaji Bhosle. (P-38)
1717 April 11	The Marathas besieged Kamardipur near Shahjahanpur in Malwa. (P-39)
1717 April 14	Rupram Dhabhai the Naib of Savai Jaisingh in Malwa complains about the non-cooperation of Maharana's army. (P-39)
1717 May	Santaji Bhosle roams towards Soro in Malwa. (P-40)
1717 May 16	The emepror informs Savai Jaisingh of the dismissal of Ajitsingh from the Subedari of Gujrat. (P-45)
1717 June 11	Rupram Dhabhai reached Rampura as to occupy it for Maharana of Udaipur. (P-40)
1717 June-July	Santaji Bhosle demands Rs.2 lacs from Dost Mohammad Khan and Shyamsingh the Choudhary of Doraha in Malwa. (P-40)
1717 July	Tulsi Mukadam of a village in Paragana Alamgirpur (Bhilsa) paid Rs.500/- as ransom to Santaji Bhosle to get his son released in Malwa. (P-41)
1717 October	Sambhai (Bhosle ?) with 2000 calvary and Kanhoji Bhosle with 6000 horsemen invaded Malwa. (P-42)

1717	November		Mohammad Amin Khan was appointed as the Subedar of Malwa but he returned back to capital after reaching Sironj. (P-42)
1718	February	4	Biharidas Pancholi of Mewad state expedited upon the Marathas to get Rupram Dhabhai and Himmatrai released from the Marathas. (P-43)
1718	February	23	Rupram Dhabhai and Himmatrai reached to Ujjain after being released from the captivity of the Marathas. (P-43)
1718	June	23	Savai Jai Singh sent gifts to Raja Shahu. (P-47)
1718	July	10	Balaji Vishvanath left Satara for Delhi. (P-47)
1718	December	26	Balaji Vishvanath and Hussainali reached Ujjain for on wards March to Delhi. (P-48)
1719	January	6	Balaji Vishvanath and Hussainali reached (P-48) Mandsaur on their way to Delhi.
1719	January	9	Balaji Vishvanath and Hussainali reached near Chittod. (P-48)
1919	February	7	Balaji Vishvanath and Hussainali reached near Delhi. (P-48)
1719	February	10	Savai Jai Singh sent a sword to the Peshva with clothes and a pair of pearl earrings to his son Bajirao through Nanaram Choudhary. (P-48)
1719	February	12(a)	Savai Jai Singh and Rao Budhsingh leaves Delhi for their states as desired by Syed brothers. (P-49)
		(b)	Savai Jai Singh sent Siropaos to Balaji Vishvanath. (P-48)
1719	February	18 (a)	Ajitsingh and Abdullakhan confined the emperor and installed Rafi-uddarajat in his place. (P-49)
		(b)	Savai Jai Singh sent gifts to the Marathas through Diwan Jagram. (P-49)
1719	February	20	Nizam is appointed the Suhedar of Malwa in place of Savai Jai Singh. (P-52)

1719	March		Mehar Quli is appointed the Deputy of Ajitsingh in Gujrat. (P.50)
1719	March	20	The Marathas left Delhi for Deccan.(P.50)
1719	May	28	Rafiaudaulla becomes the emperor(P.51).
1719	September	18	The Syeds crown Mohammad Shah as the emperor. (P.51).
1720	April	[illegible]	Anupsingh Bhandari the Naib of Ajitsingh reached Gujrat. (P.51,64)
1720	April	2	Death of Peshva Balaji Vishvanath.(P.52)
1720			Bajirao appoints Mayaram Vakil at Delhi who also represented Mewad,on a monthly salary and sent gifts in cash to Savai Jaisingh,Vidhyadhar,Pundarik, the Maharana of Mewad etc.(P.60)
1720	April	18	Bajirao succeeds Balaji Vishvanath as the Peshva.(P.59)
1720	June	12	Battle of Pandher near Ratanpur between the Nizam and Dilawarali Khan. (P.62).
1720	July	19	Ajitsingh was ordered to join Hussainali and also to bring Savai Jaisingh. (P.63)
1720	August	10	Nizam defeats Alamalikhan at Shakarkheda. (P.63)

1720 November 5	Syed Abdulla Khan is defeated and arrested by the emperor at Hasanpur. (P-64)
1721 January 4	Bajirao meets Nizam near Chikalda. (P-67)
1721 May	Ajitsingh is dismissed as the Gujrat Subedar. (P-65)
1721 October	Ajitsingh, plunders Ajmer in protest of his dismissal from the Subedari of Gujrat while his son Abhaisingh plundered Narnaul and threatened Delhi. (P-66)
1722 February 8	Nizam becomes the Vazir of the empire. (P-66)
1722 August 22	Savai Jaisingh becomes the Subedar of Agra. (P-66)
1722 August 30	Girdhar Bahadur is appointed the Subedar of Malwa. (P-66)
1722 October 8	Bajirao left Satara for Malwa. (P-66)
1722 October 14	Nizam is appointed the Subedar of Gujrat in place of Haider Quli Khan. (P-69)
1723 October	Pilaji Gaikwad attacked Surat and defeated Momin Khan the Governor of Surat. (P-71)
1723 December 23	Nizam resigned from the Vazirship of the Empire. (P-~~69~~,71)
1724 January 24	Bajirao again left Satara for Malwa. (P-73)

1724	May	18	Bajirao met Nizam at Nalsa for the third time.(P.73)
1724	May 22		Bajirao crossed the Narmada river on his way back to Deccan. (P.73).
1724	May		The Marathas plundered Rampura etc.villages of Mewad.(P.75)
1724	June	23	Death of Maharaja Ajitsingh of Marwad. (P.74)
1724	July	25	The emperor recognized Abhaisingh as the ruler of Marwad after the death of Maharaja Ajitsingh.(P.74)
1724	October	28	Kesrisingh Maruka reached Merta for the help of Abhaisingh against his brothers Anandsingh and Raisingh on behalf of Savai Jaisingh during the Jodhpur Civil War after the death of Maharaja Ajitsingh. (P.74)
1724	December	7	Hamidkhan occupied Ahmedbad with the help of Kanthaji Kadam Bande. (P.71).
1725	February	10	Rustamali Khan is killed while fighting against Hamid Khan in Gujrat.(P.71)
1725	July	13	Maharana Sangramsingh II informed Savai Jaisingh about the emperor's order to Khidmatgar Khan and Khan Dauran to go to Malwa alongwith the Rajas of Hindustan. (P.79).

1725	November	22	Abhaisingh left Jodhpur for Ahmedbad but returned from Jalore after hearing about the probable attack upon Jodhpur by his brothers Anandsingh and Raisingh. (P.81)
1725	December	1	Sarbuland Khan reached Gujrat. (P.81)
1726	February		The Marathas plundered some of the Mewad Villages on the Malwa frontier. (P.87,89).
1726	March		Ambaji Pant Purandare settles the Chauth with Sarbuland Khan in favour of the Peshva.(P.87)
1726	March	14	Maharana Sangram singh II informed Savai Jaisingh of the disturbances created by the Marathas in his territory. (P.89)
1726	April		Pilaji Gaikwad did the Khandani of Gujrat. (P.83).
1726	May		Sarbuland Khan agreed to give Chauth of Gujrat to Kanthaji, North of Mahi river. (P.83).
1726	October	25	Maharao Durjansal of Kota assures of his military support to Savai Jaisingh and the Maharana for the defence of Mewad against the Marathas. (P.92)

1726	November	4	Savai Jaisingh wrote to the Maharana that if the Marathas invaded, he could call Raja Shivdas Khatri,his official, Raja Abhai of Jodhpur and Rao Durjansal of Kota. (P.93)
1726	November		Nizam wrote to the Maharana that this year he will prevent the Marathas in going to Hindustan. (P.93)
1726	November		Kanthaji Kadam Bande plundered the out skirts of Balasinor.(P.84)
1727	February	20	Chimnaji Appa concludes an agreement with Sarbuland Khan about chauth.(P.98)
1727	February		Nizam declares chhatrapati of Kolhapur as the Chhatrapati of the entire Maratha clan and informs Savai Jaisingh of his plans.(P.98)
1727	May		Bajirao wrote to the officials of Bundi, Kota,Marwad,Dungarpur, Banswara,Deolia Pratapgarh etc. to remit the dues to Udaji Pawar.(P.95)
1727	August		Malharrao Holkar is assigned Sarnjam in Malwa and Gujrat for the military expenses. (P.96)
1727	October		Pilaji Jadhav creates disturbances in Gujrat.(P.99)
1728	February	25	The Peshva defeats Nizam at Palkhed.(P.99)
1728	March		Kanhoji Bhosle settled Rs.20,500/- as the annual tribute of Indore paragana with Nandlal Mandloi. (P.101)

1728	May		Maro Prabhu created disturbances around Jawar and Ramnagar in Gujrat.(P.102)
1728	May	26	The Peshva calls upon the rulers and the officials of Malwa, Gujrat,Marwad and Bundelkhand etc. to pay chauth to the Maratha collectors appointed for the purpose in their regions.(P.101)
1728	July	20	Raja Shahu removed ½ Mokasa of Chimnaji Appa in Gujrat and assigned it to Khanderao Dabhade.(P.102)
1728	August		Abhaisingh recognized the surrender of Idar Paragana to Anand singh and Raisingh through the Maharana of Mewad.(P.96)
1728	August	7	The Peshva won the side of refractory Santaji Bhosle against Daya Bahadur to fight a battle with the Subedar of Malwa.(P.104)
1728	August	17	Dado Bhimsen wrote to the Peshva that Savai Jaisingh wanted the Marathas to create disturbances in Malwa.(P.103)
1728	November	19	Raghuji Kadamrao and Savai Katsingh Kadamrao fought a battle with Banswara State at Talwara.(P.109)
1728	November	25	Chimnaji Appa crosses the Narmade river for Malwa.(P.104).

1728	November	29	Dayabahadur moved from Amjhera towards Dhar after hearing that the Marathas had crossed the Narmada river into Malwa. The same day a battle at Tirellah was fought between him and the Marathas in which both Dayabahadur and Girdhar Bahadur were killed.(P.105)
1728	December	9	Bajirao receives the news of the death of Girdhar Bahadur. (P.105).
1728	December	9	Maharana Sangramsingh of Mewad writes to Savai Jaisingh to take steps against the Marathas who had killed the Subedar of Malwa. (P.111)
1728	December	13	Chimnaji Appa reached Ujjain where he halted for four days. (P.105)
1728	December		The emperor sent orders to the Maharana of Mewad,Savai Jaisingh, Rao Durjansal of Kota etc.to assist Bhawaniram in Malwa.(P.106)
1729	January	2	Nandlal Mandloi met Chimnaji Appa and paid the Maratha dues.(P.107).
1729	January	13	The Marathas lifted the siege of Ujjain.(P.107).
1729	January	18	The Marathas plundered Sarangpur. (P.112)

1729	February		Mohammad Khan Bangash drove away Raja Chhatrasal Bundela from his possessions.(P.117)
1729	February		Siyaji Gujar crossed the Narmada river and plundered the lowlands, south of Mandu and the districts of Maheshwar and Dharmpuri.(P.113)
1729	February		Bajirao wrote to Chimnaji Appa to unite the armies of the Rajput princes with all the forces of the Marathas.(P.112)
1729	February	5	The Marathas entered into Hadoti region where they wandered for 12 days.(P.112).
1729	February	10	The Marathas crossed the Chambal river.(P.112).
1729	February	11	The Raja of Rajgarh in Hadoti province paid Khandni to the Marathas.(P.112).
1729	February	19	The Marathas encamped at Bhanpura near Rampura in Malwa.(P.112)
1729	February	28	The Marathas reached in Kanod province of Mewad. (P.112)
1729	March	2	The Marathas reached Javad province of Mewad. (P.112)
1729	March	12	Bajirao met the son of Raja Chhatrasal at Mahoba.(P.117)
1729	March	12	Chimnaji Appa reached on the bank of Mahi river in Gujrat after leaving Javad of Mewad State. (P.113).

1729	March	13	Bajirao met Raja Chhatrasal at Mahoba.(P.117)
1729	March	19	Bajirao marched from Mahoba with 70000 troops to defeat Mohammad Khan Bangash and help Raja Chhatrasal.(P.117)
1729	April		T-he Maharana exacts a penalty of Rs.4 Lacs from Dungarpur and Banswara for their alliance with the Marathas.(P.110)
1729	April		Bajirao sent Malharrao Holkar,Ranoji Shinde,Anandrao Pawar,Kanthaji Kadam Bande to Marwad.(P.114)
1729	April	28	Bajirao plundered 30000 troops of Kayam Khan, the son of Mohammad Khan Bangash who was coming to rein force his father against Raja Chhatrasal. (P.118)
1729	April	29	Bajirao assigns the Mokase of Deolia Prapgarh in Rajputana to Udaji Pawar. (P.114)
1729	May	4	Chimnaji Appa returned to Pune.(P.113)
1729	May	27	The emperor confiscated the Jagir of Bhawaniram.(P.107).
1729	June		A son is born to Chundawati Rani of Budhsingh which the latter refused to handover to Savai Jaisingh.(P.193)
1729	July		Udaji Pawar purchased half the Chaudharyship and Deshmukhi Vatan of Mandavgarh for Rs.5000/- from a Mughal Vatandar.(P.128)
1729	September	9	Budhsingh evacuates Bundi for ever(P.194).
1729	September	15	Bajirao sent letters to the rulers of Sitamau,Rampura,Dungarpur,Banswara, Marwad,Bundi,Kota etc.to pay the tribute to Udaji Pawar as before.(P.115).
1729	September	27	Death of Senapati Khanderao Dabhade. (P.143).
1729	October		Bhawaniram is dismissed as Malwa Subedar in favour of Savai Jaisingh.(P.117).
1729	October	31	Bajirao warns Nandlal Mandloi to collect the money else his country would be devastated.(P.115).

1729	October	31	Malharrao Holkar and Ranoji Shinde defeated Kanthaji Kadam Bande.(P.142)
1729	December	11	Chimnaji Appa entered Gujrat for the collection of Chauth.(P.141)
1730	January	8	Trimbakrao Dabhade succeeded his father Khanderao as Senapati.(P.143)
1730	January	18	The Marathas occupy Nolai fort in Malwa.(P.128)
1730	January		Savai Jaisingh took a declaration from the officials of Bundi State that Budhsingh had not adopted any other son. (P.194)
1730	February		The Marathas occupied Baghod fort in Malwa.(P.129)
1730	February	10	Zorawarsingh,a Jaipur official wrote to Hemraj Baxi of Jaipur about Nanunagar.(P.136).
1730	February	26	Dado Rao Bhimsen signs the deed of compromise on behalf of Raja Shahu with Savai Jaisingh about Malwa.(P.131)
1730	February		Ambaji Purandare conciliated Udaji Pawar (P.141).
1730	March	9	Chimnaji Appa plundered Dholka.(P.142).
1730	March 9 to	17	Chimnaji Appa at Viramgam.(P.142).
1730	March	18	Abhaisingh left Jodhpur for Gujrat.(P.145)
1730	March	18	Raja Shahu wrote to the Maratha chiefs in Malwa to treat and respect Savai Jaisingh well as the hereditary relations were there between the two houses.(P.129)
1730	March	23	Anandrao Pawar concluded the agreement of Chauth and Sardeshmukhi of Gujrat on behalf of the Peshva with Sarbuland Khan.(P.142)
1730	March	24	Savai Jaisingh sent Rs.94000. to Raja Shahu through Raja Ayamal Khatri.(P.132)
1730	April	6	Battle of Kushthal-Panchola between Budhsingh and Savai Jaisingh.(P.194).
1730	April	6	Deepsingh was given a pearl necklace worth Rs.2500/- for Raja Shahu and a jewel worth Rs.970/-for the Peshva on her daughter's marriage by Savai Jaisingh.(P.132).

1730	April	17	Savai Jaisingh sent Rs.6000 to Raja Shahu as gift.(P.132).
1730	April	26	Savai Jaisingh sent a hundi of Rs.15000 to Raja Shahu through Dado Bhimsen.(P.132).
1730	May	19	Savai Jaisingh crowns Dalelsingh at Bundi.(P.195)
1730	May	22	Deepsingh reached Pune.(P.132)
1730	June	16	Deepsingh met Raja Shahu and settled Rs.11 lacs for Malwa and Rs.15 lacs for Gujrat as the Chauth.(P.132)
1730	September	19	Savai Jaisingh is dismissed from the Subedari of Malwa.(P.134).
1730	September	27	This time Dado Bhemsen signed an agreement on behalf of Peshva with Savai Jaisingh about Malwa.(P.131)
1730	September		Umabai Dabhade enters into political alliance with Nizam.(P.150)
1730	October	3	Malharrao Holkar is given supreme command in Malwa.(P.139)
1730	October	8	Bajirao left Pune to subdue Dabhade in Gujrat.(P.151)
1730	October	17	Sarbuland Khan surrendered Ahmedabad to Abhaisingh.(P.146)
1730	October	28	Deepsingh arrived at Aurangabad to meet the Nizam.(P.133)
1730	November	5	Mohammad Khan Bangash reaches Agra to join his Subedari of Malwa.(P.138)
1730	November	5,6	Deepsingh met Nizam at Aurangabad. (P.133).
1730	November	10	Abhai Singh wrote to his Vakil Amarsingh Bhandari at Delhi to secure immediate help from the emperor of men and money to prevent the Maratha disturbances in Gujrat.(P.147).
1730	November	11	Mohammad Khan Bangash reached Gwalior on his way to Malwa.(P.138)
1730	November	14	Raja Shahu permits Bajirao Peshva to subdue Trimbakrao Dabhade.(P.151).
1730	November	18	Malharrao Holkar wrote to Chimnaji Appa that he was collecting army and would join him soon.(P.139)
1730	November	28	Kanthaji Kadam Bande and Udaji Pawar met Nizam at Sakhar Khera.(P.150)

1730	December	17	Malharrao Holkar reached Badwai in Malwa.(P.140)
1730	December	27	Deepsingh returned to Jaipur from Satara and was honoured by Savai Jaisingh.(P.134).
1731	January	7	Bajirao arrived at Baroda.(P.153)
1731	January	20	Bajirao arrived at Nadiad in Gujrat (P.153).
1731	January	20	Mohammad Khan Bangash arrived at Ujjain as the Subedar of Malwa.(P.168).
1731	February		Bajirao meets Abhaisingh at Ahmedabad. (P.153).
1731	February	8	Mohammad Khan Bangash marches from Ujjain towards Dhar to subdue the Marathas.(P.168).
1731	February	19 to 26	The battle near Dhar between Mohammad Khan Bangash and Marathas.(P.169)
1731	March	17	Mohammad Khan Bangash met the Nizam on the bank of Narmada river and they concerted plans against the Marathas for 12 days.(P.169)
1731	April	1	The battle of Dabhoi.(P.154)
1731	April	26	Bajirao crossed the Narmada river for Deccan.(P.156)
1731	May	9	Mohammad Khan Bangash returned to Ujjain after re-capturing Kakali and Chikalda forts in the absence of Udaji Pawar.(P.169)
1731	May	15	Mohammad Khan Bangash again marched to subdue the Marathas.(P.169)
1731	June	4	Mohammad Khan Bangash fights a battle with the Marathas at Sarangpur.(P.169)
1731	July	14	Savai Jaisingh signs a treaty of friendship and co-operation with Bajirao Peshva. (P.171)
1731	October	20	Malharrao Holkar and Ranoji Shinde get the supreme command in Malwa.(P.172)
1731	November	2	The Peshva gave the seal of Malwa Suba to Malharrao Holkar and Ranoji Shinde. (P.173)

1731	December	31	Savai Jaisingh came to know of the marriage ceremony of Chimnaji Appa. (P.175).
1732	February	15	Savai Jaisingh sent clothes worth Rs.5000 to Chimnaji Appa on the occasion of latter's marriage.(P.175)
1732	March	1	Savai Jaisingh sent 16000 betel leaves to Raja Shahu as goodwill.(P.175)
1732	March	23	Pilaji Gaikwad is killed by Ida Lakhdir on the orders of Abhaisingh. (P.158).
1732	April	21	Abhaisingh occupied Baroda.(P.159)
1732	April	27	Abhaisingh thought to cross the Narmada river after recapturing 24 forts from the Marathas but dropped the idea.(P.159)
1732	June		The Marathas devastated Kanhargarh and Datia etc.(P.175)
1732	July	22	The Peshva confirms the right of Malharrao Holkar for collecting the dues from the parganas of Indore, Budha,Jaora,Dungarpur,Piplod, Maheshwar,Bakani,Patan etc.(P.173)
1732	July		The Peshva insists his captains to stay in Malwa permanently instead of depending on the annual expeditions. (P.174)
1732	September	4	Dadurai requests Jaisingh to accept the Subedari of Malwa.(P.182)
1732	September	23	Savai Jaisingh is appointed as the Subedar of Malwa for the third time. (P.175)
1732	October	5	Raja Ayamal Khatri, the Diwan of Savai Jaisingh writes to the Maharana of Mewad to send 9000 cavalry and equal number of infantry to Malwa for the help of Savai Jaisingh against the Marathas.(P.183)
1732	October	20	Savai Jaisingh left Jaipur for Ujjain to take charge of the Suba of Malwa. (P.182)
1732	November	1	Savai Jaisingh took an undertaking from Salim Singh that the son born to the Jaipur Queen of Dalel Singh will be the heir apparent of Bundi even if he is younger and that Dalel Singh will not marry any other princess.(P.195)

1732	November	21	Maharana's army reached Ujjain to assist Savai Jaisingh against the Marathas.(P.184)
1732	November	28	Chimnaji Appa reached Khandwa in Malwa.(P.184)
1732	December		Savai Jaisingh reached Ujjain.(P.182)
1732	December	11	Holkar and Shinde demanded dues of Rampura.(P.185)
1733	February	23	The news spread that the emperor had marched from Delhi to assist Savai Jaisingh against the Marathas. (P.186)
1733	February	27	At Mandsaur, Savai Jaisingh agreed to give to the Marathas Rs.6 lacs in cash and Chauth of 28 Paraganas of Malwa. (P.186)
1733	February	28	Savai Jaisingh gave a Siropao to Babu Prabhu Khatri, a Vakil of Malharrao Holkar.(P.186).
1733	March	4	Savai Jaisingh gave a horse and clothes to Babu Prabhu Khatri.(P.186)
1733	March	17	Rs.3 lacs paid out of a sum of Rs.6 lacs by Savai Jaisingh to the Marathas, settled at Mandsaur.(P.186).
1733	March	28	Savai Jaisingh gave 2 horses and a gold bangle to Mahuji Wagh of Malharrao Holkar at Khijurcha of Mandsaur Sarkar. (P.186).
1733	April		Abhai Singh retired to Jodhpur from Gujrat after leaving Ratan Singh Bhandari as his Deputy there.(P.162).
1733	May	4	Another sum of Rs.2 lacs paid by Savai Jaisingh to the Marathas out of a sum of Rs.6 lacs which was settled at Mandsaur.(P.186)
1733	May	9	Chimnaji Appa crossed the Narmada river on his way to Deccan.(P.187).
1733	May	15	Savai Jaisingh declares Kunwar Ishwari Singh as his heir.(P.343)
1733	May	29	Savai Jaisingh gave leave to Dadorao after presenting him a horse.(P.186)

1733	October		Savai Jaisingh asked the Maharana of Mewad to withdraw the Mewad army from Malwa.(P.187)
1733	End		Pratap Singh Hada met Kusaji Ganesh to secure the help from Malharrao Holkar and Ranoji Shinde to get Budh Singh restored at Bundi.(P.196)
1734	January	11	Death of Maharana Sangram Singh II of Mewad.(P.190)
1734	February	2	Maharana Jagat Singh II succeeds after the death of his father Maharana Sangramsingh II of Mewad.(P.190)
1734	March	9	Bhat Pireshwar gives a cash present to Malharrao Holkar on behalf of Kota.(P.196).
1734	April	8	Pilaji Jadhav left Malwa after subduing Nahar Khan, a refractory Zamindar of Kota State.(P.189)
1734	April	12	Malharrao Holkar arrived and encamped 6 Kos away from Bundi City. (P.197).
1734	April	18	The Marathas besieged Taragarh fort of Bundi.(P.197).
1734	April	22	The Marathas captured Taragarh fort of Bundi.(P.197)
1734	June	11	Mujaffar Khan returned to Delhi without any encounter with the Marathas and received the reward from the emperor on false claim that he had expelled the Marathas.(P.199)
1734	June	14	Maharao Durjansal of Kota married Brij Kunwar Bai, the daughter of Maharana Jagat Singh II of Udaipur. (P.201).
1734	July	6	The emperor recognized Dalelsingh as the ruler of Bundi.(P.198)
1734	July	17	Hurda conference of the Rajput Princes in Mewad State.(P.200)
1734	July	28	Savai Jaisingh performs 'Vajpeya Yagya'. (P.205)

1734	August		Purohit Brijnath wrote to the Peshva that though Malharrao Holkar and Ranoji Shinde were creating disturbanc Savai Jaisingh still sought compromise with the Marathas.(P.206)
1734	October		Another conference of the Rajput princes at Agonch near Hurda under Savai Jaisingh to decide the action to be taken against the Marathas.(P.20
1734	October	5	Savai Jaisingh performed "Ashvamedh Yajna". (P.337).
1734	November	10	Vazir Qamruddin and Khandauran left Delhi with 25000 and 50000 troops respectively to march against Marathas.(P.207).
1734	December	3	The Peshva ordered Pilaji Jadhav to go to North.(P.207)
1734	December	13	Raja Shahu issued 200 letters to the Maratha chiefs in North India includin Krishnaji Pawar and Udaji Pawar not to remain in Gujrat for a month, from the fear of the imperial campaign of the Mughals and the Rajputs.(P.207)
1734	December	16	Pilaji Jadhav left Deccan for north. (P.208)
1735	February	3-12	Vazir Qamruddin forces Pilaji Jadhav to retreat.(P.208)
1735	February	14	Radhabai left Pune for the North Indian pilgrimage along with Babuji Naik Joshi and Jaisingh Shaktavat, the Mewad envoy at Satara.(P.214)
1735	February	28	The Marathas plundered the rich town of Sambhar on Jaipur and Jodhpur border.(P.210)
1735	March	8	Radhabai reached Burhanpur where she received the news of the battle near Rampura between the Marathas on one side and Mughals and the Rajputs on the other side. (P.214)
1735	March	17,20	Savai Jaisingh visited the camp of Khandauran at Avaval village in Bundi State to discuss about the compromise with the Marathas.(P.211).

1735	March	17	Raja Shahu wrote to the Peshva to end the disturbances in Mewad and Jaipur. (P.215).
1735	March	20	Ramchandra Baba met Savai Jaisingh and Khandauran about the issue of compromise with Marathas.(P.211)
1735	March	31	Malharrao Holkar,Ranoji Shinde and the other Maratha chiefs met Savai Jaisingh who took them to Khandauran at Kota. (P.211).
1735	April	6	Savai Jaisingh rewarded Sarjerao,an employee of the Peshva.(P.212).
1735	April	12	Khandauran and Savai Jaisingh left Kota on their return march after concluding an agreement with the Marathas according to which the Marathas were to get Rs.22 lacs yearly as the Chauth of Malwa.(P.212)
1735	May	6	Radhabai reached Udaipur.(P.215).
1735	May	9	Vazir Qamruddin returned to Delhi after being defeated by Pilaji Jadhav at Marwar.(P.208)
1735	May	18	Babuji Naik Joshi wrote from Nathdwara to the Peshva to secure the patta of annual tribute from the Maharana by force as Maharana was trying to side track the issue.(P.215)
1735	June	1	Radhabai arrived near Jaipur and was brought to the city by Savai Jaisingh. (P.216)
1735	June	4	Savai Jaisingh presented 1000 gold coins to Radhabai.(P.216).
1735	June	30	Savai Jaisingh gave 10 thans of clothes and a pearl necklace to Radhabai.(P.217)
1735	July	21	Baxiulmulk ordered Savai Jaisingh to give an escort to Radhabai upto Benaras.(P.217)
1735	August	8	Radhabai left Jaipur for further pilgremage to Kashi,Gaya etc.(P.217)
1735	August		Savai Jaisingh told the Maratha agent, Biharidas Pancholi and Diwan Srichand of Mewad in privacy at Jaipur that he does not trust the Mughals but has confidence in the friendship of Bajirao.(P.222).

1735	September		Raja Shahu wrote to Savai Jaisingh and Abhaisingh to expel Baburao Dabhad from Gujrat and if Damaji Gackwad and Umabai joined him, to subdue them also.(P.224)
1735	September	26	Ratan Singh Bhandari besieged Rangoji the deputy of Damaji Gackwad in Viramgam fort.(P.166).
1735	September		Fateh Singh Bhosle enquired if Bajirao had decided to go to North.(P.224)
1735	September		The Peshva resolved to visit North India.Raja Shahu was surprised at the news as he had no knowledge of the recent developments at the imperial court.(P.224)
1735	September	22	Maharana Jagat Singh II wrote to his Minister Biharidas Pancholi to arrange his meeting with Bajirao beyond Deolia as to ensure security to Mewad State.(P.229).
1735	October	1	Sadashiv Ballal left Jaipur with Biharidas Pancholi to secure the Patta of annual tribute from the Maharana.(P.230).
1735	October 1st week.		Anandrao Pawar and Pilaji Jadhav joined the campaign of Bajirao Peshva to north India.(P.226).
1735	October	9	Bajirao left Pune for Rajputana. (P.226).
1735	October	13	Maharana Jagat Singh II ordered his vassals including Rawat Sarangdeo II of Kanod Thikana to join Baba Takht Singh and Biharidas Pancholi at Nahar Magra on the Mewad frontier. (P.230).
1735	November	2	Baba Takht Singh and Biharidas Pancholi marched from Udaipur against Dungarpur and Banswara with grand army.Sadashiv Ballal who had earlier agreed, refused to join them unless the patta of annual tribute was granted to the Marathas.(P.231).
1735	November		Sadashiv Ballal met Maharana Jagat Singh II at Udaipur and demanded clear reply from him about the patta of tribute.(P.230).

1735	November	28	Bajirao reached on the bank of Narmada river.(P.226)
1735	November	Last week.	Saadat Khan thought to march against Savai Jaisingh with 40000 troops, being jealous from the latter's alliance with the Marathas.(P.226)
1735	December	10	Bajirao reached near Depalpur on his way to Rajputana.(P.227).
1735	December	21	i) Sadashiv Ballal wrote to the Peshva that Rs.50000/- were collected from the Maharana out of the dues of Rs.60000/- .(P.231). ii) Ramchandra Malhar wrote from Lunavada to Mahadeo Bhatt Hingne at Jaipur to despatch Raja Ayamal Khatri to meet Bajirao after he crossed Deolia Ghat.(P.228).
1736	January	14	Mohammad Khan Bangash reached Dholpur to investigate the real intention of Savai Jaisingh and Bajirao.(P.232).
1736	January	15 about.	Bajirao reached Dungarpur on his way to Udaipur and took a promise of Rs.3 lacs yearly from Maharawal Shiv Singh.(P.232).
1736	January	29	The Peshva wrote a letter in Sanskrit to Mewad minister Biharidas Pancholi, asking him to deliver the patta of tribute to Sadashiv Ballal.(P.234)
1736	February	3	Bajirao arrived at Udaipur and encamped in Champabagh near Ahar which is 2 miles East of Udaipur.(P.235).
1736	February	4	Bajirao visited Pichola Lake at Udaipur.(P.235).
1736	February	5	Bajirao sent 2 horses, a silver embroidered cloth and silver article to the Maharana of Mewad through Rao Gopal Singh of Deolia Pratapgarh.(P.236)
1736	February	7	Bajirao left Udaipur for Jaipur.(P.237)
1736	February	12	Bajirao received some money from Bihari-Das Pancholi as 'Mejbani'.(P.237)
1736	February		Bajirao despatched Malharrao Holkar and Ranoji Shinde to Marwad.(P.241)
1736	February	25	Savai Jaisingh advanced about a mile from his camp at Jhadli in Paragana Malpura of Jaipur State to receive Bajirao.(P.237).

1736	February	26	Bajirao with Raja Ayamal Khatri and Ramchandra Baba visited Savai Jaisingh's camp.(P.237).
1736	March	1	The Peshva ordered Baji Bhivrao to stop disturbances in Bundelkhand as the talks for the compromise with the Mughals were expected to be resumed. (P.232).
1736	March	2	Savai Jaisingh greeted Bajirao in an open Durbar and gave him crests, pearls,pearl necklace and costly clothes.(P.238)
1736	March	3	Savai Jaisingh sent wine cups of gold, a golden tray and Rs.4993/- to Bajirao.(P.238).
1736	March	4	Savai Jaisingh visited Bajirao's camp and returned at night. (P.238).
1736	March	11	Savai Jaisingh sent 181 thans of clothe to Bajirao.(P.238)
1736	March	14	Savai Jaisingh met Bajirao again at Morla village which is 35 miles south east of Ajmer.(P.238)
1736	March	16	Bajirao again paid a visit to Savai Jaisingh.(P.239)
1736	March	17	Bajirao received from Rao Gopalsingh of Karauli,2 guns as "Nazar".(P.239)
1736	March	26	Savai Jaisingh gave Rs.50000/- to Bajirao.(P.239).
1736	March	Rao	Kriparam,Yadgar Khan Kashmiri and Nijabat Khan arrived from Delhi and returned with the Memorandum of demands from Bajirao. (P.239)
1736	April	Begining.	Bhandari Bejairaj agreed to pay ransom amount to the Marathas at Merta,hence the Marathas advanced to Nagor and collected some money from Raja Bakht Singh.(P.242)
1736	April	27	Bajirao's forces occupied Badnawar and Nolai paraganas of Banera.(P.236)
1736	April	30	a)Raja Bakht Singh of Nagor sent 3 guns to Bajirao.(P.239). b)Savai Jaisingh visited the camp of Bajirao.(P.239)

1736	May	1	The Peshva paid the last visit to Savai Jaisingh at Gehalpur.(P.239)
1736	May	2	a) Radhabai returns to Pune after the pilgrimage to Mewad,Jaipur,Kashi, Gaya etc.(P.219) b) Bajirao received 9 horses from Savai Jaisingh.(P.239).
1736	May	31	Bajirao wrote to Khandauran from Fatehabad before the departure to Deccan that Ranoji Shinde,Malharrao Holkar,Tukoji Pawar,Jivaji Pawar and Baji Bhivrao were kept in Malwa till the farman was received from Delhi. (P.243).
1736	June	22	The news reached Delhi that Ranoji Shinde had occupied Ujjain.Later Ranoji Shinde refuted the charge. (P.244).
1736	June	25	Ranoji Shinde wrote to Mahadeo Bhatt Hingne to get money,artillery, the farman etc.alongwith Siropaos for the Maratha chiefs from the emperor.(P.244)
1736	June		Ranoji Shinde wrote to Mahadeo Bhatt Hingne at Delhi to get at least Rs.5 lacs and the Sanad of Malwa Suba or come back.(P.244)
1736	July	6	Mahadeo Bhatt Hingne informs the Peshva that the elephants,horses, Jewels,Siropaos etc.were ready at Delhi for despatch to Raja Shahu and the Peshva alongwith a Sanad and cash expenses.(P.245)
1736	July	11	The Peshva conveys his displeasure to Hingne as the Mughals had agreed to give only Rs.1 lac after promising Rs.5 lacs for the expenses.(P.245).
1736	July		Ramchandra Baba sent a reminder to Biharidas Pancholi of Mewad to send the remaining amount of Rs.1 lac which was agreed as the Mejbani expenses during Bajirao's visit to Udaipur. (P.236)
1736	August	26	Jaisingh sent a tent house made of 702 thans of clothes to Bajirao.(P.239)

1736	August	27	Momin Khan and Rangoji encamped at Kankariya tank to expel Ratan Singh Bhandari from Ahmedabad.(P.263).
1736	August		Maharao Durjansal of Kota gives a rent free village to Balaji Gulgule, the Maratha official at Kota.(P.247).
1736	September		Yeshwantrao Pawar resolved to March into Hadoti region.(P.248).
1736	September	29	The emperor creates Bajirao and Chimnaji Appa a Mansabdar of 7000 and 5000 Hazari.(P.247)
1736	October	19	Momin Khan received the order of the Emperor through Ratan Singh Bhandari stating that the Suba was retained with Maharaja Abhai Singh.(P.267)
1736	November	12	Bajirao left Pune to invade Delhi. (P.251)
1736	December	13	After hearing that Damaji Gackwad was coming, Ratan Singh Bhandari sent Qazi Khawaja Mustafid Khan to Momin Khan to ask the former to obey the imperial order.(P.268)
1736	December	20	a) The Nizam reached Burhanpur on his way to Delhi.(P.251,274) b) Momin Khan went to meet Damaji Gaikwad who had come to expel Ratansingh Bhandari from Gujrat. (P.268) c) Yar Mohammad Khan of Bhopal surrendered to Bajirao. (P.251).
1737	January	11	The Peshva collects the tribute from Bhilsa.(P.252)
1737	January	13	Ranoji Shinde joined Bajirao in Bundelkhand.(P.252)
1737	February	3	Bajirao wrote to Devichand, a Mewad official to send Rs.1 lac of 'Mejbani' and Rs.45000 as the dues of Banera for the year 1735-36.(P.236)
1737	March		Saadat Khan appeared in the rear of the Marathas near Agra who had crossed the Jamuna river into Doab.(P.253).

1737	March	18	The emperor received the letter of Saadat Khan in which the latter had written that he had defeated the Marathas throughly who had now fled into Savai Jaisingh's country. The same day Bajirao marched from near Agra to Delhi to show the presence of the Marathas to the emperor. (P.254-55).
1737	March	27	Bajirao plundered Tughalkpur near Delhi.(P.256)
1737	March	28	Bajirao encamped at Kishbandi a suburb of Delhi.(P.256)
1737	April	7	The Nizam left Burhanpur for Delhi. (P.277)
1737	May	10	The Nizam reached Sironj.(P.277)
1737	May	11	Savai Jaisingh sent 50 camel load of ammunition to Sanganer to garrison the fort for defence as Bajirao and the Marathas were on their return march from Delhi.(P.260)
1737	May	18	Ratan Singh Bhandari consulted his officials and resolved to evacuate Gujrat as no help had come from Maharaja Abhai Singh and the emperor. (P.272).
1737	May	25	Ratansingh Bhandari left Ahmedabad for Jodhpur.Thus ended the Governorship of Maharaja Abhaisingh in Gujrat.(P.273).
1737	May	28	Pilaji Jadhav met Nizam at Sironj. (P.277)
1737	May	29	Bajirao reached Dhamuni in Malwa on his return march from Delhi after passing through Jaipur and Kota States.(P.260)
1737	July	2	The Nizam reached near Delhi.(P.278)
1737	July	3	The emperor met Nizam at Delhi.(P.278)
1737	July	24	The Peshva returned to Pune from Delhi. XX.XXXX (P.260)
1737	August	3	Savai Jaisingh is dismissed from the Malwa Subedari.(P.279).
1737	September		The Nizam marched against Bajirao.(P.280)

1737	November	12	The Nizam reached Dhamuni while marching against Bajirao.(P.280)
1737	December	13	The Nizam reached Bhopal.(P.281)
1737	December	15	The Marathas plundered the Mughal army near Bhopal hence Kunwar Ishwari Singh of Jaipur marched against the Marathas. (P.281)
1737	December	18	Raghuji Bhosle defeated Nasirjang who was coming to rein force the Nizam [redacted] at Bhopal.(P.283)
1737	December	19	Bajirao wrote from Bhopal to Chimnaji Appa to collect some army and be strong in Deccan alongwith Yeshwantrao Dabhade and Kanthaji Kadam Bande.(P.282)
1737	December	26	The Nizam sent Anandrao Sumant etc.to Bajirao for peace talk at Bhopal.(P.283)
1737	December	27	Bajirao advanced to meet Nizam but suddenly the Nizam did not come for the meeting.(P.283)
1738	Januray	6	The Mughals and the Pathans swallowed the oxen at Bhopal due to scarcity while the Rajputs fasted.(P.284).
1738	January	7	The Nizam concluded treaty with Bajirao at Duraha Sarai near Bhopal.(P.284)
1738	January	23	Kunwar Ishari Singh, the son of Savai Jaisingh met Bajirao and gave the presents to him and also to Malharrao Holkar,Ranoji Shinde,Jaswantrao Pawar and Ramchandra Baba.(P.285)
1738	February	6	Maharao Durjansal of Kota agreed to pay a war indemnity of Rs.10 lacs to the Marathas.(P.285)
1738	February	24	a) The Maharao of Kota granted village Bira Khedi in paragana Urmal of Dusariya taluqa to Balaji Gulgule. (P.286). b) Ranoji Shinde promoted Balaji Gulgule to the rank of Vakil from Kamavisdar at Kota.(P.391)
1738	December	26	Nadirshah left Peshawar for India. (P.286)
1739	January		Kandauran summoned the Rajput princes after hearing the approach of Nadir Shah towards Karnal. Abhai Singh and Savai Jaisingh sent forth their conditions for helping the emperor.(P.287)

1739	February	3	Bajirao left Pune to march against Nadir Shah.(P.289)
1739	February	11	Raja Shahu ordered Bajirao to march against Nadirshah who had invaded India.(P.288)
1739	March	4	Dhondopant advised Peshva to fight with Nadirshah if all the Rajput Princes joined him at one place.(P.292)
1739	March	9	Nadirshah occupied Delhi and Savai Jaisingh sent him congratulations. (P.292).
1739	March	23	Bajirao wrote to Dhabhai Nagraj of Mewad that all the Hindus must unite against Nadirshah.(P.295).
1739	March	29	Bajirao received the letter of Savai Jaisingh stating that Nadirshah had occupied Delhi and had confined the emperor and the imperial nobles.(P.296)
1739	March		The Rajputs and the Marathas decided to instal the Maharana of Mewad as the Emperor of India.(P.296)
1739	April	22	The Peshva sent clothes to Maharaja Abhai Singh,Kunwar Ram Singh,Bakht Singh and Raja Umedsingh of Shahpura. (P.296)
1739	April	24	The Peshva wrote to Chimnaji Appa to win over the support of Raghuji Bhosle for an expedition against Nadirshah. (P.296)
1739	April	25	Nadirshah sent Farmans to Raja Shahu, Bajirao and the Rajput princes asking them to obey Mahammadshah in future. (P.297)
1739	April	26	Death of Budh Singh, the dispossessed ruler of Bundi.(P.347).
1739	~~April~~ May	21	A battle was fought in Gujrat between Momin Khan and the Rajputs of Abhai Singh.(P.298).
1739	May	31	Raja Shahu expressed satisfaction at the survival of the emperor and the restoration of the emperor Mohammadshah. The same day Bajirao wrote to Chimnaji Appa that henceforth the Maratha policy would be to help the emperor according to the wishes of Raja Shahu.(P.297)

1739	June	3	Radhabai wrote to Achal Vaishnav and Umanath Pathak, her family priests at Kashi that if the latter showed the letters of the Maharana, Ajit Singh (Abhai Singh) and Raja Durjansal of Kota to her descendents, it would be a proof of their being the priests of the House of the Peshva.(P.299)
1739	June	14	Raja Shahu expressed his opinion in the public Darbar that Nadirshah had returned due to the fear of resistance from the Marathas.(P.218)
1739	June	29	Raja Shambhaji of Kolhapur acknowledged the invitation from Maharana Jagat Singh II of Udaipur on the occasion of the wedding of Kunwar Pratap Singh. (P.299)
1739	August	29	The emperor summoned Savai Jaisingh to the court to settle the imperial affairs concerning the Rajputs.(P.300)
1740	April	28	The death of Bajirao Peshva.(P.301)
1740	May		The Jaipur force under the command of Dalel singh Rajawat defeated a Maratha contingent near Rampura.(P.321)
1740	June	2	Chimnaji Appa wrote to Mahadeo Bhatt Hingne the Maratha Vakil at Delhi that late Bajirao's policy would be continued about the imperial affairs in co-operation with Savai Jaisingh. (P.318)
1740	June	16	Hingne wrote to Chimnaji Appa that the emperor would give Rs.5 lacs in advance through Savai Jaisingh within 8 days for the Peshva's visit. (P.319)
1740	June	23	Savai Jaisingh sent Tika to Balaji Bajirao through Kesoram Khatri.(P.317)
1740	June	25	Balaji Bajirao gets the robes of Peshvaship from Raja Shahu.(P.317)
1740	July	20	Kota State promised to send a hundi of Rs.71500/- to the Marathas for the payment of the dues.(P.321)
1740	July	25	Savai Jaisingh took an undertaking from Maharaja Abhai Singh that the latter would not correspond with the Marathas against the emperor.(P.321)

1740	October	21	The Peshva left Deccan for Hindustan. (P.320)
1740	December	13	Savai Jaisingh honoured Raja Umedsingh of Shahpura for the help against Malharrao Holkar.(P.323)
1740	December	17	Death of Chimnaji Appa.(P.32)
1740	December		The Peshva ordered Ranoji Shinde, Malharrao Holkar,Vithal Sheodeo, Naroshankar,Antaji Mankeshwar etc. Maratha generals to devastate the Mughal country.(P.32).
1741	January		Savai Jaisingh restored Himmatsingh on half of the Ater state in Bhadawar province and gave the other half to the Marathas to be divided between Holkar, Shinde and Pawars. (P.322).
1741	January	27	The Maratha chiefs wrote to Mahadeo Bhatt Hingne to recover the dues of Bundi and Rampura from Savai Jaisingh. (P.322)
1741	January		Venkaji Ram informs Mahadeo Bhatt Hingne that Savai Jaisingh had sent Rs.1 lac as the expenses of the Marathas, Rs.25000 on account of Bundi, Rs.33700 about Rampura and Rs.2000 in the form of 152 Mohars as the Imperial Nazrana.(P.325).
1741	February		The Peshva was reported that the emperor was double minded about the Malwa affair but Savai Jaisingh should only be relied upon.(P.326)
1741	February	26	The Peshva wrote to Malharrao Holkar not to create the disturbances in Rampura,the issue of which was to be decided during a meeting with him. (P.323,326).
1741	March	17	Balaji Bajirao crossed the Narmada river on his way to Dholpur.(P.326)
1741	May	11	Savai Jaisingh reached Dholpur to meet Balaji Bajirao.(P.327).
1741	May	12	Savai Jaisingh met the Peshva.(P.327)
1741	May	13	Savai Jaisingh went to the Peshva's camp at Dholpur.(P.328)
1741	May	14	Savai Jaisingh gave cash gift to Holkar, Shinde and Jaswantrao Pawar.(P.328)

1741	May	16	Savai Jaisingh visited the Peshva's camp for the second time at Dholpur.(P.328)
1741	May	17	Savai Jaisingh sent gifts for the Peshva's wife.(P.328)
1741	May	18	Balaji Bajirao visited the camp of Savai Jaisingh and took leave for Deccan.(P.328)
1741	July	4	The emperor granted the Naib Subedari of Malwa to the Peshva under prince Ahmedshah.(P.329.
1741	July	7	Balaji Bajirao returned to Pune after meeting Savai Jaisingh at Dholpur. (P.329).
1741	July	18	Savai Jaisingh called contingent of Jaswantrao Pawar and met him at Pushkar. (P.329).
1741	August	1	Savai Jaisingh gave Mejmani of Rs.1000 to Jaswantrao Pawar.(P.329)
1741	September	17	The Vazir confirms the Naib Subedari of Malwa in favour of the Peshva.(P.329)
1741	November	27	Maharana of Mewad and Maharao Durjansal of Kota etc.Rajput princes met at Nathdwara to discuss the issue of Madhosingh and Umedsingh Hada.(P.330).
1741			Savai Jaisingh takes an undertaking from Rawat Kuber Singh of Salumber, Baba Takht Singh, Nathji etc.of Mewad that they would not seek the imperial or the Maratha help for Madhosingh.
1742	January	3	Savai Jaisingh took an undertaking from Thakur Ajit Singh of Anta etc.of Kota that they would act according to the wishes of Beniram Bhatt and Khawas Udairam.(P.347).
1742	February	23	Rawat Kuber Singh of Salumber wrote to the Maharana to take early measures to free the Malwa from the Marathas.(P.331)
1742	April		Malharrao Holkar and Ranoji Shinde invaded Marwad.(P.331).
1742	April	12	Malharrao Holkar and Ranoji Shinde wrote to the Peshva to take strong measures against Abhai Singh.(P.332)

1742	April		T-he rumour spread that Malharrao Holkar had devastated Rampura so Raja Ayamal Khatri and Mahadeo Bhatt Hingne decided to go to the Peshva at Sironj. (P.333)
1742	May	10	Savai Jaisingh took an undertaking from Rawat Kuber Singh of Salumber etc. Mewad officials that they would not keep any relation with Umedsingh.(P.34
1742	June	28	Abhai Singh reminded Savai Jaisingh about the pledge of unity,agreed upon earlier through the Maharana. (P.332)
1742	July		The emperor sent an elephant,horses, robes and jewels for the Peshva which Bapuji Mahadeo sent to Sironj.(P.333)
1742	November		Ranoji Shinde purchased 180 horses and 25 ponies on credit from one Nathuram of Kota.(P.334).
1742	November		Ranoji Shinde demanded Khandani dues of Rs.240000 from Maharao Durjansal of Kota who requested the Peshva and Savai Jaisingh to interven.(P.334)
1742	December		Malharrao Holkar and Ranoji Shinde devastated Kota province for non-payment of the dues.(P.335)
1742	December	7	Raja Chatter Singh of Marwar sought the help of Savai Jaisingh against the Marathas.(P.334)
1742	December	9	Ranoji Shinde sent 2 pairs of clothes for Udairam Khawas and Madhoram Triwadi,the Kota officials.(P.335)
1742	December		Madhoram Triwadi of Kota carried 20 camels to Aurangabad for the Peshva. (P334)
1742	December	24	Savai Jaisingh sent valuable clothes and jewels to the Peshva who had got a son.
1743	January		Savai Jaisingh fell sick.(P.335)
1743	March	31	Savai Jaisingh gave Rs.100 to Mahimatrao who had come to Jaipur on behalf of Damaji Gackwad.(P.335).

1743	May	31	Pandit Ramrao and Nanu Mokasdar of Rampura met Savai Jaisingh at Jaipur.(P.336)
1743	June	18	The Peshva was reported that Kunwar Ishwari Singh of Savai Jaisingh had met Maharaja Abhai Singh.(P.336)
1743	June	24	The emperor confirmed the Malwa subedari of the Peshva.(P.336)
1743	June		Ranoji Shinde sent Trimbak Rajdeo to collect 2 overdue instalments from Kota.(P.392)
1743	August	27	The Vazir sent the Sanad of Malwa Subedari to the Peshva.(P.336)
~~1743~~	~~September~~	~~21~~	
1743	August	31	After securing the Sanad of Malwa the Peshva demanded the Subedari of Ajmer, Agra and Prayag Subas in addition to the Subedaris of Bihar and Oudh for Raghuji Bhosle.(P.336)
1743	September	21	Death of Savai Jaisingh.(P.336)
1743	October		a) Maharana Jagat Singh II and Maharao Durjansal of Kota again met at Nathdwara to discuss the issue of Madhosingh and Umed Singh.(P.348) b) Balaji Gulgule sent a hundi of some amount to Ranoji Shinde as the dues of Kota.(P.392)
1743	November	10	'Tika' ceremony of Maharaja Ishwari Singh of Jaipur is performed.(P.342)
1743	December		Balaji Gulgule sent the account of the first overdue instalment of Kota. At the same time Ranoji Shinde occupied Piplod and Kirwad Mahals of Sarkar Ranthambhor. (P.392)
1743	December	27	Ranoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to co-operate with Shankarji Raghunath who was assigned the Kamavis of Piplod, Kirwad,Khatoli and Indragarh in Sarkar Ranthambhor.(P.392)
1743	End		Maharana Jagat Singh II and Maharao Durjansal of Kota reached Jamoli to attack Jaipur.Ishwari Singh agreed to give Tonk to Madhosingh.(P.349)
1744	January	6	Ishwari Singh gave presents to Govindrao, the Peshva's agent and the Maratha Kamavisdar at Udaipur.(P.350)

1744	January		a) Govindrao the Maratha agent at Jaipur seeks the help of the Maratha army from Bapuji Mahadeo for the cause of Ishwari Singh. (P.35)
			b) Ishwarisingh and Raja Ayamal Khatri wrote to the Peshva for the help (P.350)
1744	January	20	The Peshva wrote to Bapuji Mahadeo that a Maratha army was sent for the help of Ishwari Singh. (P.350)
1744	January	21	Rao Gōpal Singh of Karauli informed Ishwari Singh of the arrival of the Maratha armies at Ranod under Pilaji Jadhav and asked him to take some action. (P.351)
1744	January		Kota State dues of the Marathas were Rs.88000/- (P.393).
1744	March	10	Maharao of Kota ordered his official Bhopatram to pay a sum of Rs.1 lac to Jayappa Shinde from the revenue of paragana Barsana. (P.393)
1744	May		a) Raja Durjansal secured for Umedsingh Hada the help of Fakhrudaulla, a Mughal official who was going to Gujrat. (P.351)
			b) Kota State dues of the Marathas were about Rs.27000/- (P.393)
1744	July		The emperor accepted the advise of Ishwari Singh that Rs.20 lacs be paid to the Peshva if the latter turned out Bhaskar etc. officials of Raghuji Bhosle from Bengal. (P.351)
1744	July	10	Umedsingh occupied Bundi for some time with the help of Raja Durjansal of Kota and Raja Umedsingh of Shahpura. (P.351)
1744	July		a) The Maharana, Maharao Durjansal of Kota and Madhosingh attacked Toda Paragana of Ishwarisingh. (P.352)
			b) Ishwarisingh gave a siropao to Deorao the son of Mahadeo Hingne at Delhi. (P.352).
1744	September	6	The envoy of Raja Umedsingh of Shahpura wrote that the Marathas will get Rs.16000/- daily from Ishwari Singh for the battle with Kota and Bundi States and then they were to devastate Mewad and march upon Jodhpur Via Shahpura. (P.353)

1744	September	9	Maharao of Kota granted village Birakhedi of Paragana Urmal to Balaji Gulgule. (P.394)
1744	October	19	Raja Umedsingh of Shahpura paid annual tribute of Rs.5000/- to the Marathas on account of Phulia paragana.(P.399)
1744	November	12	a) The chiefs of Jaipur wrote a note addressed to Ishwari Singh that Madho Singh should be given ⅓ of the Jaipur state and that if the Marathas invaded they would help the ruler.(P.353) b) The chiefs of Jaipur gave an undertaking to the Maharana of Mewad that Tonk,Toda and Malpura paraganas worth Rs.230000/- be given to Madhosingh and that if Ishwarisingh did not give leave to the Marathas they will join the Maharana.(P.353)
1744	December	4	Ranoji Shinde and Malharrao Holkar met Ishwarisingh at Banasthali and presented him Nazars.(P.354)
1744	December	19	Ishwari Singh agrees to give Toda paragana to Madhosingh in addition to the earlier grant of Tonk on the conditio of service to Jaipur State.(P.354)
1745	January	Second Week.	The Marathas demanded a sum of Rs.22 lacs from the Maharana through Rawat Kuber Singh for securing a Jagir for Madho-Singh.(P.356)
1745	January	30	Kota Maharao agreed to pay a war indemnity of Rs.16 lacs to the Marathas. Annual tribute of Rs.4½ lacs was fixed. (P.355,397)
1745	February	11	Ishwari Singh sent gifts to Malharrao Holkar,Ranoji Shinde and Ramchandra Baba.(P.355)
1745	February	18	Jaswantrao Pawar met Ishwari Singh at Kota and gave him 'Tika'.(P.355)
1745	February	25	Ishwari Singh visited the camps of Malharrao Holkar and Jayappa Shinde. (P.355)
1745	March	1	Ishwarisingh gave leave to Malharrao Holkar,Ranoji Shinde,Ramchandra Baba and Jaswantrao Pawar etc.at Kota. (P.355).

1745	April	3	Ishwari Singh sent Rs.10,00,300/- to the Peshva including the interest of Rs.300 out of a promised sum of Rs. 19 lacs as the military expenses. (P.355)
1745	May		Bhopatram Charan went with an army to Kirwad Piplonde and exacted Rs.51000 from Taluqa Sirsi and village Padon of Devisingh of Dhandoria.(P.395)
1745	May	25	Jaipur state sent Rs.25000/- to Radhabai for the last time.(P.356)
1745	May	30	Ishwari Singh sent the gifts to the Peshva as a son was born to the latter. (P.356).
1745	May	31	Death of Ranoji Shinde.(P.357).
1745	June	5	Ishwari Singh sent 3 horses and 66 thans of the clothes to the Peshva.(P.359)
1745	June		Umed Singh Hada and Maharao Durjansal of Kota plundered Patan paragana of the Marathas.(P.357)
1745	July	3	Jayappa Shinde wrote to Balaji Gulgule at Kota to prevent the disturbances in Patan Paragana and warn the Maharao of Kota.(P.358)
1745	July	9	Kota state paid a sum of Rs.22275/- as last year's dues to Visaji Pundlik, a Maratha agent.(P.395)
1745	September		Jayappa Shinde wrote to Balaji Gulgule to rehabilitate and console the people of Patan Paragana who had suffered from the disturbances created by Umedsingh Hada and Maharao Durjansal of Kota. (P.358)
1745	September	27	Rawat Jaswant Singh of Deogarh reported that the Marathas had agreed to help Madhosingh on a promise of Rs.10 lacs. (P.360).
1745	October	5	Ishwari Singh sent Rs.3 lacs to Malharrao Holkar and Ranoji Shinde as the army expenses.(P.360)
1745	November	8	Karnidan reported to Madhosingh that Ishwarisingh had secured the support of Rao Shiv Singh of Sikar.(P.361)

1745	December	5	Ishwari Singh sent a Siropao to Naroji the Maratha Mokasdar at Indragarh. (P.361)
1745	December		Umedsingh Hada again created disturbances in Bundi villages of the Marathas (P.396)
1746	January	10	Ishwari Singh sent Siropao to Bhojraj, the brother-in-law of Malharrao Holkar. (P.361).
1746	February		Malharrao Holkar collects some money from the Maharawal of Dungarpur.(P.359)
1746	April		Maharao Durjansal of Kota exacted Khandani from Indragarh,Khatoli, Kirwad and Piplod paraganas of the Marathas and created disturbances there.(P.396)
1746	April	25	Ishwari Singh gave gifts to Damodar Hingne etc.at Jaipur.(P.361)
1746	May		Malharrao Holkar went to Bundelkhand to help Jayappa Shinde.(P.359)
1746	June		Balaji Gulgule stayed at Shergarh for 2 months with Kota official Bhopatram Charan and visited many villages for the collection but no collection could be done.(P.396)
1746	June	20	Ishwari Singh gave village Brij Bhanpur of paragana Savai Jaipur of annual revenue of Rs.20,000 to Ramchandra Baba.(P.361)
1746	August		Maharana Jagat Singh II sent Kaniram to Malharrao Holkar with a promise of Rs.15 lacs for securing a Jagir of Rs.24 lacs worth annual revenue for Madhosingh.(P.361)
1746	September	26	Rawal Prithvi Singh succeeded at Banswara.(P.377).
1746	October	4	Maharao Durjansal of Kota,Maharana Jagat Singh II,Madho Singh and Umed-Singh Hada met at Nathdwara to discuss the plans against Ishwari Singh. (P.363)
1746	October	6	Ishwari Singh sent presents to Dattaji Shinde,Tukoji Shinde,Naro Shankar and Kusaji Ganesh through Baxiram Khatri. (P.363)

1746	October	30	Jayappa Shinde wrote to Balaji Gulgule that Bhopatram Charan should bring a Nazar of 2 fine horses for him.(P.363)
1746	November	8	Ishwarisingh sent the gifts for the ladies of Raja Shahu and Ambaji Purandare.(P.363)
1746	November	21	Maharao Durjansal of Kota paid a sum of Rs.50897/- to the Marathas out of the tribute of Rs.4 lacs and Rs.5000/- out of the war indemnity of Rs.16 lacs. (P.363).
1746	November	28	Naroji came to Jaipur on behalf of Naro Shankar to warn Ishwari Singh about the payment of the Maratha dues of Bhadawar. (P.364)
1746	December	12	Maharao Durjansal paid a sum of Rs.5000/- out of the war indemnity of Rs.16 lacs. (P.397)
1747	January	7	The Peshva ordered Malharrao Holkar to settle the Jaipur civil war to the satisfaction of the Maharana in such a way that both the brothers could be compromised.(P.364)
1747	January	30	Maharao Durjansal of Kota gave an undertaking to Ishwari Singh through Balaji Gulgule according to which he gave 7 more villages to Jayappa Shinde, village Davlana to Ramchandra Baba, village Gago to Gangadhar Tatya Chandrachud and 2 villages to Bapuji Mahadeo and Damodar Mahadeo.(P.365).
1747	February	3	a) Malharrao Holkar assigned the Mamlat of paragana Raipur of Thakur [redacted] Abhai Singh(Hadoti) to Gopal Trimbak on an annual salary of Rs.400/- to be paid from the revenue of the above paragana.(P.397) b) Kota State paid Rs.61308 and 8 Annas, 5 elephants worth Rs.50000 against the account of War indemnity.(P.397) c) Holkar and Shinde agreed to follow the advice of the Peshva about Jaipur civil war.(P.366).
1747	February	4	Balaji Gulgule was assigned by Malharrao Holkar and Jayappa Shinde the maintenance expenses of a Palki from the revenue of Kota.(P.397)

1747	February	7	Jayappa Shinde threatened to devastate Kota state if Maharao did not pay the Maratha dues within a period of 2 months.(P.398)
1747	February	9	Death of Raja Ayamal Khatri.(P.368)
1747	March	1,2	The battle of Rajmahal between Ishwari Singh on one side and the Maharana, Madhosingh,Maharao of Kota and Khanderao Holkar on the other side. (P.370)
1747	March	8	Ishwari Singh gave Rs.300/- to Nimbaji Khatke,Ramrao Munshi and Keroji Pawar as the expenses.(P.371)
1747	March	28	Ishwari Singh gave another sum of Rs.400/- to Nimbaji Khatke,Ramrao Munshi and Keroji Pawar as the expenses.(P.371)
1747	April		The Peshva advised Jayappa Shinde to follow Malharrao Holkar regarding Jaipur civil War.(P.373)
1747	May	4	Ishwari Singh sent the Siropaos to Dattaji and Tukoji Shinde,Jivaji Pawar and Ranoji Bhoite.(P.379)
1747	May	6	Ishari Singh gave 3 horses to Nimbaji Khatke including for Keroji Pawar at the time of their departure.(P.374)
1747	June	4	Ishwarisingh gave Rs.400 to Naruji the Maratha Mokasdar of Bhadawar who had come about the dues of Bhadawar. (P.374)
1747	July	[redacted]	Jayappa Shinde received false hundis from Maharao of Kota.(P.398)
1747	July	9,11	Ishwari Singh again sent Siropaos for Dattaji and Tukoji Shinde through Baxiram Khatri.(P.374)
1747	August	17	Ishwari Singh reached Bundi to punish Maharao Durjansal of Kota.(P.376)
1747	September		Durjansal and Umedsingh Hada again began plundering the villages of Bundi.(P.376)
1747	October	14	Malharrao Holkar sought the reply from the Peshva about Madhosingh's case. (P.375)

1747	November		Ahmedshah Abdali threatened to invade India.The emperor issued Farmans to the Rajput princes and the Marathas. (P.378)
1747	December	6	a) Kishor Pancholi,Jaisingh Shaktavat and Kaniram met Malharrao Holkar about the case of Madhosingh.(P.375) b) Holkar wrote to the Peshva to give clear advice about Madhosingh's case or come personally to settle issue.(P.375)
1747	December	10	The Peshva left Pune for North India. (P.382)
1747	December	21	Pancholi Lalu ordered Pandit Maharam to give Rs.2½ lacs to Balaji Gulgule as the Maratha dues on Tankah over the Khalsa land.(P.398)
1747	December		a) Ishwari singh left Bundi for Delhi with Raja Dalelsingh of Bundi. (P.378) b) Raja Delel Singh of Bundi died at Mathura.(P.378)
1747	December	24	Ishwari Singh reached Delhi to march against Ahmedshah Abdali.(P.378)
1748	January	24	Ishwari Singh left Delhi for Punjab. (P.379)
1748	February	20	Ishwari Singh reached Panipat where he was made to lead the vanguard of the Mughal army.(P.379)
1748	February	23	Bapuji Mahadeo wrote to Naroshankar to send the troops for the help of the emperor.(P.379)
1747	February	25	The emperor assured help to Ishwari Singh against the enemies of the latter.(P.379)
1748	March	2	Ahmedshah Abdali occupied Sarhind. (P.379).
1748	March	4	Jaipur State sent gifts worth Rs. 5207/- for the Marathas.(P.381).
1748	March	11	Ishwari Singh fled away from the battle field of Manipur while the same day the Peshva reached Bundi on his way to Delhi for helping the emperor against Ahmedshah Abdali.(P.380-81)

1748	April	2	Balaji Gulgule reported to Jayappa Shinde that Maharao of Kota was arranging to pay the dues of the Marathas.(P.398)
1748	April	3	The Peshva and Jayappa Shinde reached Indraprastha (Near Delhi). (P.381)
1748	April	28	Jayappa Shinde threatened to come from Newai to Kota if Maharao did not pay the Marathas dues in kind or Saranjam.(P.398)
1748	April	29	Bakht Singh is appointed the Subedar of Gujrat for managing the Suba jointly with the Marathas.Bakht Singh did not accept the appointment. (P.390)
1748	April	30	Ishwari Singh sent Rs.3 lacs to the Peshva near Newai.(P.382)
1748	May	First Week.	The Peshva left Jaipur territory for Kota.(P.382)
1748	May		Haripant tried to collect the dues of Banswara on behalf of Jaswantrao Pawar, but he failed to collect anything.(P.399)
1748	June		Akhairam Pancholi, a Kota official met Jayappa Shinde and assured him that Maharao would pay the Maratha dues.(P.398)
1748	June	5	Madhosingh promised Maharana Jagat Singh II that he would give Toda and Barwada paraganas to him after the succession at Jaipur.(P.383)
1748	July	1	Malharrao Holkar sent Gangadhar Tatya Chandrachud from Phagi to devastate the Jaipur territory.(P.384)
1748	July	5	Ishwari Singh's army against Gangadhar Tatya Chandrachud was defeated. (P.384)
1748	July	9	Peshva reached Pune after the Newai expedition.(P.382)
1748	July	20	Ishwari Singh himself came out of Jaipur to face Malharrao Holkar. (P.384)
1748	July	31	Ishwari Singh comes to Bagru following Gangadhar Tatya Chandrachud.(P.385)

1748	August	1	Battle of Bagru begins between Ishwari singh and Malharrao Holkar.(P.385)
1748	August	2	The chief of Nagda is killed in the battle of Bagru while Rao Shiv Singh of Sikar was wounded.(P.386)
1748	August	3	Gangadhar Tatya Chandrchud spiked the mouths of the canons of Ishwari Singh's artillery.(P.387)
1748	August	4	Keshvdas Khatri requests Gangadhar Tatya Chandrchud to induce Holkar for the compromise.(P.387)
1748	August	7	Ishwari Singh again sent Rai Keshavdas Khatri to Malharrao Holkar for the compromise, promising that Bundi would be restored to Umedsingh Hada and Madhosingh would get four paraganas. (P.388)
1748	August	9	Malharrao Holkar,Santaji Wable and Setiaji Kharade visited the camp of Ishwari Singh. The treaty of Bagru was concluded.(P.399)
1748	August	10	Umedsingh Hada went to the camp of Ishwari Singh.(P.388).
1748	August	11	Ishwarisingh visited the camp of Umedsingh Hada.(P.388)
1748	August	12	Ishwari Singh and Malharrao Holkar left the battle field of Bagru for Jaipur and Toda Malpura respectively. (P.388)
1748	August	18	It was said that Ishwari Singh would not follow the treaty of Bagru.(P.388)
1748	September	7	Holkar decided to march for Bundi which was not yet evacuated by the Jaipur officials.(P.389)
1748	September	First Week.	Ishwarisingh evacuated most of the thanas of Bundi State.(P.389).
1748	September		The month by which Ishwarisingh should have sent Rs.1 lacs "Mejbani" to the Peshva.(P.382).
1748	September	14	Ishwari Singh sent a Siropao to Naro Shankar.(P.389)

1748	October	18	Setiaji Kharade planted the flag of Umed Singh at Bundi.(P.389)
1748	October	23	Malharrao Holkar coronated Umed Singh Hada at Bundi.(P.389)
1748	November	First Week.	Abhai Singh summoned Raja Umedsingh of Shahpura for battle with Bakhtsingh. (P.391)
1748	November	17	Malharrao Holkar wrote to Raja Umedsingh of Shahpura to settle the military expenses of the Marathas with Abhai Singh.(P.391).
1748	December	26	Bapuji Mahadeo wrote to Malharrao Holkar to arrange a compromise between Abhai Singh and Bakht Singh.(P.391)
1749	February	5	Ishwari Singh sent 173 thans of clothes to the Marathas through Keshavdas Khatri.(P.400)
1749	March		Nasirjang marched to north with 70000 troops.(P.400)
1749	April	5	Ishwari Singh gave a Siropao to Janardan Pandit, The Maratha Mokasdar of Indragarh.(P.400)
1749	April	8	Ishwari Singh sent 85 thans of clothes to Malharrao Holkar through Keshavdas Khatri.(P.400)
1749	April	9	Ishwari Singh sent goods worth Rs.482/- to Gangadhar Tatya Chandrachud, the Diwan of Holkar.(P.400)
1749	April	Middle	Nasirjang reached Burhanpur to cross the Narmada river.Ishwari Singh and Maharao Durjansal were to join him.Jayappa Shinde stayed at Kota for 15 days to help Safdarjang against him.(P.400)
1749	June	6	Malharrao Holkar wrote from Phagi to Maharana of Mewad and Raja Umed Singh of Shahpura to come with their armies as he and Madho Singh intended to attack Jaipur.(P.400)
1749	June	19	Maharaja Abhai Singh of Jodhpur died at Pushkar.(P.401)
1749	July	13	Ramsingh succeeds his father Abhai Singh at Jodhpur.(P.402)
1749	August		The news of the sickness of Raja Shahu spread.(P.411).
1749	August.		Umed Singh Hada left for Satara.(P.409).

1749	September		Krishn Singh bombarded Taragarh fort in the absence of Umed Singh who had gone to Deccan.(P.410)
1749	September	9	Ishwari Singh wrote to Maharaja Gaj Singh of Bikaner to come to Ajmer and jointly capture the same in concert with him.He further proposed him to come to Merta and join either Bakht Singh or Ram Singh.(P.403)
1749	October		Ishwari Singh wrote to Raja Gaj Singh of Bikaner that settlement would be done with Bakht Singh if negotiations failed with ~~[illegible]~~ Ram Singh.(P.403)
1749	October	18	Ishwari Singh sent gifts to Raghuji Bhosle.(P.401)
1749	October		Maharao of Kota promised to pay Rs.1 lac out of the Maratha dues.(P.449)
1749	November	8	Battle of Kherli near Merta between Ram Singh and Bakht Singh.(P.405)
1749	November	9	Madho Singh assured Bakht Singh, the help of the Maharana and Malharrao Holkar in addition to his own against Ram Singh.(P.404)
1749	December	15	The death of Raja Shahu.(P.411)
1749	December	26	Ram Raja arrived at Satara from Pangaon. (P.411)
1750	January	4	Coronation of Ramraja at Satara.(P.411)
1750	January	11	Ishwari Singh sent Keshavdas Khatri with tika for Ram Raja.(P.411)
1750	March		Tarabai unsuccessfully tried to win over Malharrao Holkar and Jayappa Shinde against the Peshva.(P.412)
1750	March	19	Ishwari Singh gave a Siropao to Venkatrao the Maratha Mokasdar of Bundi for killing the Fauzdar of Shergarh.(P.412)
1750	April	2	Ishwari Singh gave a Siropao to Krisnaji, the Maratha Mokasdar of Indragarh for killing the Fauzdar of Shergarh.(P.412)
1750	April	4	Bakht Singh and Ram Singh came to Pipar near Merta with their allies for the battle.(P.407)

1750	April	14	The battle near Ravanda around Pipar between Ram Singh and Bakht Singh.(P.408)
1750	April	15	Ishwari Singh resolved to arrange compromise between Ram Singh and Bakht Singh.(P.408)
1750	April	16	The compromise concluded between Ram Singh and Bakht Singh.(P.408)
1750	June		a) Balaji Gulgule sent books and pictures to Ramchandra Malhar at Pune through Bhagwant Rao.(P.428) b) Madho Singh promised to give a yearly Nazar of Rs.50000/- including Rs.10000/- for Mahadji Ambaji Purandare to the Marathas.(P.412)
1750	June	28	The Peshva ordered Malharrao Holar and Jayappa Shinde to collect Rs. 50000/- yearly from Bundi and Nenva out of which Rs.15000/- yearly to be sent to Mahadji Ambaji Purandare. The Fadnisi of the above province was assigned to Mahadji Purandare on an annual salary of Rs.3000/-. (P.428)
1750	July	3	a) Jayappa Shinde wrote to Balaji Gulgule to collect the dues of Kota else the country of Maharao would be davastated.(P.428). b) Ishwari Singh sent costly clothes Sarees and jewels to the Peshva who had become the father of a son.(P.413)
1750	July		The Peshva visited Chambhargonda and patched up the differences between Malharrao Holkar and Jayappa Shinde. (P.413)
1750	August	18	Ishwari Singh presented Rs.50 to Jado Pandit who had come from Pushkar on behalf of Sadashiv.(P.413).
1750	August		Ishwari Singh poisoned Keshavdas Khatri to death.(P.413)
1750	September	26	Malharrao Holkar wrote to the Peshva to punish Ishwari Singh who had killed Keshavdas Khatri.(P.413)
1750	September		Pandit Damodar(Hingne?) was given Rs.150 cash and 1 mound and 10 seers sweets during his visit to Kota.(P.449)

1750	October	2	Malharrao Holkar wrote to the Peshva to send Jayappa Shinde immediately for the Jaipur expedition.(P.414).
1750	October	17	Khanderao Holkar wrote to Madho Singh to arrange the promised money and send Kaniram and Ram Singh Gogawat.(P.414).
1750	October		Ishwari Singh sought the help of Raja Gaj Singh of Bikaner against the Marathas.(P.414).
1750	November	12	Pem Singh Gogawat, the official of Madho Singh wrote to Bhatt Sadashiv to write a letter to Akhairam Pancholi, an official of Kota to prevent Krishna Singh from creating the disturbances in Bundi.(P.428)
1750	November	27	Bakht Singh defeated Ram Singh near Luniawas and forced him to retire to Jodhpur.(P.409).
1750	November	28	Malharrao Holkar reached Nenva in Bundi State and occupied it. The army of Govindpant Bundele under Baburao Vishnu joined him here. (P.414)
1750	December	12	Malharrao Holkar reached within 20 miles of Jaipur.(P.415)
1750	December	14	Ishwari Singh committed sucide and Khanderao Holkar arranged the cremation. (P.415)
1750	December	26	Bakht Singh congratulated Madho Singh for succeeding Ishwari Singh and he further sought the help of Malharrao Holkar through him.(P427)
[redacted]			
1750	December	29	Madho Singh entered Jaipur on an elephant, being shared with Malharrao Holkar.(P.416)
1751	January	2	Madho Singh is coronated at Jaipur by Malharrao Holkar.(P.416)
1751	January	6	Jayappa Shinde arrived at Jaipur with Tukoji Pawar.(P.417)
1751	January	10	1500 Marathas are massacred at Jaipur. (P.417)

1751	January	12	The Marathas retreated 8 miles away from Jaipur.(P.418)
1751	January	19	Madho Singh sent Govind Tamaji and Kaniram etc.for compromise with the Marathas.(P.418)
1751	January	22	Jayappa Shinde sent his wounded soldiers to Kota with Balaji Gulgule who had sustained injuries during the massacre at Jaipur.(P.419)
1751	January	27	Madho Singh sent Mejmani of Rs.200 to Santaji Wable through Setiaji Kharade. (P.419)
1751	January	30	Madhosingh gave Siropao to Santaji Wable,Ranoji Wable, the brother of Santaji Wable and Baji Pandit.(P.419)
1751	January	31	Antaji Mankeshwar left Gwalior for Jaipur.(P.418)
1751	February	3	Madho Singh sent hundis of Rs.1 lacs and Rs.1½ lacs to Malharrao Holkar. (P.419)
1751	February	7	Malharrao Holkar sent 'Tika' to Madho Singh with an elephant and 2 horses. (P.420)
1751	February	9	Madhosingh presented a horse to Santaji Wable.(P.429)
1751	February	13	Madho Singh went to meet Damodar Mahadeo at Rajamal-Ki-Haveli who had brought the Saranjam of coronation with an elephant on behalf of the Peshva.(P.429)
1751	February	14	Damodar and Purshattam Mahadeo brothers were given leave at Jaipur by Madho Singh.The same day one Balaji Prabhu was given a Siropao and Rs.50/- by Madho Singh.(P.429).
1751	February	18	Madho Singh sent Rs.200/- to Gangadhar Tatya Chandrachud and Rs.50/- to one Baji Pandit.(P.429)
1751	February	19	Maharao Durjansal of Kota wrote to Madho Singh to meet the Maharana at Nathdwara and decide the line of action against the Marathas.(P.429)
1751	February		Jayappa Shinde sent Manaji Nikam to Confiscate Jainabad etc.Mahals of Kota State.(P.449).

1751	March	First Week	Mahadji Kisan arrived at Jaipur on behalf of Jayappa Shinde whom Madho Singh treated well.(P.430).
1751	March	7	Khanderao Holkar sent one Bhaiya Tulsiram for employment in Jaipur State. (P.430)
1751	March	10	Malharrao Holkar wrote to Madho Singh to write to his officers and the Qilledars to handover the paraganas of Rampura and Higlazgarh.(P.430)
1751	March	11	Malharrao Holkar sent Pandit Shankaraji to collect the Maratha dues from Madho Singh.(P.43)
1751	March	[illegible]	Madhosingh sent a hundi of Rs.500/- through Malji Patel and another of Rs.7000/- to Malharrao Holkar. The same day Madho Singh gave a Siropao to one Ranchhod Pandit who stayed at Piplu on behalf of the Marathas.(P.430)
1751	March	25	Ranchhod Pandit of Piplu was given Rs.20/- by Madho Singh.(P.430).
1751	April		Ram Singh left Jodhpur for Merta.(P.436
1751	April	7	Madho Singh gave a Siropao to one Bhavaji Pandit who came to Jaipur from Deccan Via Delhi.(P.431)
1751	April	11	Malharrao Holkar wrote to Madho Singh to get the statue of Saligram established at Salemabad.(P.431)
1751	April	16	Madho Singh gave a Siropao to Balaji Pandit the Maratha Mokasdar of Malpura. (P.431)
1751	May	18	Madho Singh sent a Siropao to Bapuji Pandit, the Maratha Mokasdar of Toda through Ganesh Pandit.(P.431)
1751	June	5	Death of Maharana Jagat Singh II of Udaipur.(P.431)
1751	June	9	Jayappa Shinde asked Balaji Gulgule to secure the support of Raja Durjansal, Umed Singh of Bundi and the chief of Sopar for Ram Singh against Bakht Singh.(P.435)

1751	June	21	Bakht Singh entered Jodhpur.(P.436)
1751	June	29	Bakht Singh is coronated in Jodhpur Fort.(P.437)
1751	June		a) Jaswantrao Pawar demanded his share from the war indemnity of Rs.16 lacs of Kota.(P.449) b) Jayappa Shinde wrote to Balaji Gulgule to warn the Maharao of Kota for the payment of the Maratha dues.(P.449)
1751	July	1	Malharrao Holkar wrote to Balaji Gulgule to warn the Maharao of Kota for the payment of the Maratha dues by October 1751.(P.45)
1751	July	8	Bapuji Mahadeo wrote to the Peshva that the Maratha Chiefs should not feel offended from the grant of Agra Suba to Madho Singh.(P.433).
1751	July	18	The Maratha envoy suggested Ram Singh to go to Delhi to secure the support of the Maratha chiefs.(P.438)
1751	August	3	It was told that Agra Subedari was assigned to the emperor's son while Madho Singh was made the latter's Naib.(P.434).
1751	September	27	Rao Gopal Singh of Karauli agreed to negotiate with Malharrao Holkar on behalf of Madho Singh.(P.435)
1751	September	29	Rangdeo Odhekar the Maratha Kamavisdar wrote to Balaji Gulgule to give his salary to Bhagwant Shamraj.(P.45)
1751	October	23	Madho Singh gave Shawls to Ganesh Pandit,Bisnaji Pandit and Mahadeo Pandit,the Maratha Mokasdars of Toda. (P.434)
1751	October		Surajmal Jat sent Rupram Katara and Madho Singh sent Kaniram to Malharrao Holkar for negotiations.(P.434)
1751	November	3	Madho Singh gave the Siropao of departure and Rs,200/- to Baburai Pandit who had brought the Farman of Agra Subedari for him.(P.434).
1751	November	6	Madho Singh presented gifts to Ramchandra Ganesh.(P.435)

1751	December	18	Madho Singh sent 134 thans of clothes and jewels to Malharrao Holkar with Kaniram.(P.435)
1752	January	1	Jayappa Shinde threatened to attack Kota.(P.450).
1752	January	19	Madho Singh gave Rs.4000 to Ramchandra Ganesh as the expenses.(P.443)
1752	January		The emperor called Diwan Hargovind Natani of Jaipur for negotiations about the grant of Agra Suba.(P.442)
1752	February	7	Bapuji Mahadeo wrote to [redacted] Govind Tamaji to send the compromise draft prepared by Madho Singh to settle the differences between the emperor and the Vazir.(P.442)
1752	February		The emperor summoned Madho Singh to Delhi. (P.442)
1752	March	4	Madho Singh gave Rs.1000/- to Nagoji Pandit who had come to Jaipur to warn him about the dues of Rs.5 lacs.(P.443)
1752	March	10	Jayappa Shinde asked Balaji Gulgule to leave the court of the Maharao of Kota in protest for the non-payment of the Maratha dues.(P.450).
1752	March	14	Madho Singh gave gifts to Syangherao at Jaipur who had come from Udaipur on behalf of Govindrao, the Maratha agent. (P.443)
1752	April	5	Some of the Maratha chiefs advised Jayappa Shinde and Malharrao Holkar to conciliate Ram Singh and Bakht Singh. (P.439)
1752	April	9	Jayappa Shinde wrote to Balaji Gulgule to get restored Rs.425/- and goods worth Rs.1800 to Hatu Naik Kahar, a trader from the Maharao of Kota.(P.450)
1752	April	12	The emperor signed a treaty of defence with the Marathas against his internal and external foes viz the Rohillas, the Rajputs and Ahmedshah Abdali.(P.442)
1752	May	23	Jayappa Shinde again threatened Maharao of Kota through Balaji Gulgule.(P.450)
1752	May		Malharrao Holkar and Jayappa Shinde warned Madho Singh for creating disturbances in Bundi and Nenva and for sheltering Kishan Singh Hada.(P.443).

1752	May	30	Madhosingh gave Siropao of departure to one Malji Pandit who had come to Jaipur on behalf of the Marathas.(P.443)
1752	May		Jayappa Shinde while going from Delhi to Deccan despatched 5000 troops under Sabaji Patil and Ranoji Bhoite for the help of Ramsingh.(P.439).
1752	June		Sabaji Patil reached Ajmer and Ramsingh joined him.(P.459).
1752	June	27	Balaji Gulgule and a Vakil of Kota met Jayappa Shinde at Lateri in Pargana Sironj.(P.450).
1752	July	6	Jayappa Shinde received Rs.15000 from his agent Trimbak Sambhaji out of the Kota dues.(P.450)
1752	July	8	Pancholi Ramkishan,the Vakil of Kota signed an agreement with Malharrao Holkar and Jayappa Shinde for the payment of the Maratha dues.(P.451).
1752	July	11	Trimbak Sambhaji sent Rs.1000/- to Jayappa Shinde out of the Kota dues. (P.451)
1752	July	12	Jayappa Shinde wrote to Govindrao Sakhaji to give 2 years salary of Fadnisi of Patan Pargana to Lallji Ballal.(P.451).
1752	July	17	Madhosingh gave Siropao to Chintaman Joshi of the Marathas.(P.443).
1752	July		Bakht Singh and Raja Gajsingh of Bikaner came to Nagore on their way to Sambhar for forming a confederacy of the Rajput princes.(P.440).
1752	August	3	Holkar and Shinde sought the help of Madhosingh for Pheroz Jang.(P.443).
1752	August	10	Madhosingh gave the Siropao of departure to Balaji Pandit,the Maratha Mokasdar of Malpura.(P.443).
1752	August	13	Malharrao Holkar acknowledged the receipt of Rs.500/- as the 'Nyo Chawal' amount for Malji Rao,his grandson,sent by Madhosingh.(P.443).

1752	August	14	Bakhtsingh left Kekri to join Madhosingh. (P.441).
1752	August	16	Ravidutt Shankardutt of Jaipur Wrote to Sadashiv of Udaipur to join Bakhtsingh with the Mewad Army.(P.441)
1752	August	16	Pratapsingh Shekhawat, an official of Madhosingh reported to Madhosingh that the Marathas plundered one Mansingh of village Chainpur in paragana Amarsar Khatu of Jaipur State. (P.444)
1752	August	29	Madhosingh sent 10 horses and 145 Thans of clothes to Malharrao Holkar.(P.444).
1752	September	18	Bakhtsingh and Madhosingh etc. Rajput princes met at Sonali. (P.441)
1752	September	21	Bakhtsingh died at Sonali. (P.441)
1752	October	9	Holkar sent condolence letter to Bejaisingh. (P.441)
1752	December	1	Jaswantrao Pawar again claimed his share in Kota dues of the Marathas. (P.451)

1753	January	22	T-he Peshva met Malharrao Holkar and Jayappa Shinde at Pune and patched up their differences.(P.453)
1753	January	26	Madhosingh sent 58 thans of clothes to the Marathas with Nanigram through Kaniram.(P.445).
1753	January	31	Bejaisingh celebrated his coronation in Jodhpur fort.(P.467)
1753	February		Balaji Shamraj collected the Kamavis of Tonk and Rampura.(P.461)
1753	February	20	The Maratha Vakil wrote to the Peshva to send Raghunathrao only to collect the expenses for expelling Abdali. (P.455).
1753	February	22	Madhosingh sent 8 thans of precious cbothes to Bapuji Mahadeo at Delhi. (P.445)
1753	February		Madhosingh sent a Siropao to Ramchandra Ganesh and 165 thans of clothes and Jewels to the Marathas with Kaniram. (P.445).
1753	March	2	Madhosingh sent a Siropao of 'Matami' to Pandurang, the son of Shankaraji Vakil of Marathas.(P.445)
1753	March	5	Jayappa Shinde wrote to the Peshva that he intended to visit Mewad for exacting a patta of Rs.5 lacs from the [illegible] Maharana.(P.448)
1753	March	17	Bejaisingh wrote to Raja Gajsingh of Bikaner that he had to stay in his territory as the news had come that Malharrao Holkar was coming to Hindustan.(P.467).
1753	March	26	The emperor ordered Vazir Safdarjang to go back to his Suba.(P.456).

1753	March	28	The emperor recalled Vazir Safdarjang but the Vazir did not go back to the capital from the fear of being cheated.(P.456)
1753	March	30	Madhosingh again sent 48 thans of clothes and Sarees etc.to Malharrao Holkar to win his goodwill. (P.446).
1753	March		The Peshva ordered Raghunathrao to go to Hindustan and recover the dues from Mewad etc.Rajput princes. (P.455)
1753	May	1	Surajmal Jat met the Vazir at Khizrabad. (P.45).
1753	May	4	Malharrao Holkar wrote to Diwan Hargobind that the Nazar promised by Madhosingh was not yet received. (P.461)
[redacted]			[redacted]
1753	June	6	Jayappa Shinde wrote to Balaji Gulgule to get Rs.350/- of Bhawani Shankar Bhatt Telang from Chintaman Bohra of Kota.(P.451).
1753	June	13	Setaaji Kharade wrote to Madhosingh to restore the place of one Bishambhardas.(P.462)
1753	June	21	Ramaji Anant Dabholkar wrote to Narogopal to collect the dues from Kota. (P.451).
1753	June		Maharao of Kota sent a hundi of Rs.88000 to Jayappa Shinde. (P.451).

1753	July	14	Bapuji and Purshottam Mahade[redacted] wrote to Madho Singh to come for the help of the emperor. (P-459)
1753	July	15	Madho Singh sent Rs.100/- to Ramchandra Ganesh as expenses. (P-462
1753	August	25	Malhar Rao Holkar wrote to Madho Singh to join him with his army at Delhi for settling the affairs of the emperero (P-459)
1753	September	2	Khanderao Holkar wrote to Madho Singh to get Maha Singh's Thana evacuated at Bawadi castle which was given to the Marathas. (P-462)
1753	September	10	Raghunath Rao left Thalner for his first North Indian expedition. (P-463)
1753	September	11	Govind Tamaji wrote from the camp of Madho Singh at Narnaut that Rs. 1 crore could be collected if the Marathas would have been present in North India. (P-460)
1753	September		Ramaji Anant Dabholkar sent 5000 troops to Kota with Sada Shiv Gopal and wrote to Narogopal to collect the dues. (P-452)
1753	September	22	The peace negotiations broke down between the emperor and the Vazir. (P-460).
1753	September	29	Dattaji Shinde also wrote to Narogopal to collect the Maratha dues of Kota. (P-452)
1753	September		Madho Singh settled some Mamlat affairs with Govind Tamaji at Narnaul. (P-460)
1753	October	3	Madho Singh rewarded Rs.200/- to one Malhar Pandit. (P-462)

1753	October	8	Antaji Naro Krast Mazumdar, an official of Antaji Mankeshwar was killed by Surajmal Jat during the battle between the emperor and the Vazir. (P.461)
1753	October		Holkar asked Dattaji Shinde through Ranoji Bhoite not to take up the cause of Ramsingh but join the expedition of Raghunathrao.(P.468).
1753	October	15	Madhosingh met the emperor.(P.461)
1753	October	18	Madhosingh met the emperor in privacy and received valuable presents from him.(P.461)
1753	October	22	Raghunathrao reached Kadasale in paragana Barod of Kota State. (P.264)
1753	October	30	Raghunathrao crossed the Mukandara pass at Ahun in paragana Kota.(P.464)
1753	October	[illegible]	Bejaisingh asked Raja Gajsingh of Bikaner to come immediately for his help as the Marathas were expected to march on Marwad during the expedition of Raghunathrao to Delhi.(P.468)
1753	November		Bejaisingh again wrote to Raja Gajsingh of Bikaner to join him as Ramsingh had gone to meet Raghunathrao.(P.468)
1753	November	1	Balaji Gulgule gave Rs.3750/- of Kamavis to Raghunathrao at Sultanpur in Kota.(P.464)
1753	November	3	Raghunathrao entered Bundi territory at Bathane of paragana Ganori on the bank of Chambal river. Raja Umedsingh of Bundi met him. (P.464).

1753	November	7	The peace was concluded between the emperor and the Vazir.(P.461)
1753	November	9	Raghunathrao entered Jaipur territory at Chodke of paragana Rampura of Jaipur region.(P.464).
1753	November	13	The Marathas plundered Jaikup of Jaipur State.(P.465)
1753	November	16	a) Jaswantrao Pawar wrote to Balaji Gulgule to give his Kota share to Balajiram and pay off his debts out of it. (P.452) b) Raghunathrao reached Deoli on the bank of Banas river where Raogopal Singh of Karauli met him.(P.465)
1753	November	30	Madhosingh wrote to Holkar not to devastate his state. (P.465)
1753	December	8	Raghunathrao sent Ganesh Vinaik to Madhosingh. (P.465)
1753	December	17	Ramsingh met Raghunathrao at Jaipur. (P.466)
1753	December	26	Madhosingh agreed to give Rs.16½ lacs to the Marathas.(P.466).
1753	December	27	Madhosingh met Raghunathrao in Amber garden.(P.466).
1753	December	31	Nathji met Raghunathrao in Jaipur territory.(P.466).
1754	January	7	Tukoji Pawar received a horse from Madhosingh and Raghunathrao left Jaipur.(P.467)
1754	January	9	Madhosingh sent gifts for Gautamabai , Ahilyabai and the wife of Gangadhar Tatya.(P.467).
1754	January	15	Raghunathrao left Jaipur territory for Kumbher to punish Raja Surajmal Jat. (P.469)

1754	January	17,18	Raghunathrao stayed at Jalukhar in Surajmal's state but no one opposed him.(P469)
1754	January	20	Raghunathrao besieged Kumbher fort of Surajmal Jat. (P.469)
1754	February	7	Madhosingh gave a pearl bangle worth Rs.1000/- to Sadashiv Narsingh who had come on behalf of Malharrao Holkar.(P.473).
1754	February	18	Rupram Katara requested the Marathas for compromise.(P.470).
1754	February	28	Raghunathrao shifted close to Kumbher fort for making the siege more aggresive. (P.470)
1754	March	6	Gangadhar Tatya wrote to Diwan Hargobind of Jaipur to send field pieces for the siege of Kumbher. The guns were called from Ujjain and Indore also.(P.470)
1754	March	8	Madhosingh gave Rs.150/- to Ganpat Pandit, an employee of Bapuji Mahadeo who had come to Jaipur from Deccan. (P.474).
1754	March	12	Madhosingh gave valuable clothes to Sadashiv Pandit, the Maratha Mokasdar of Malpura.(P.474).
1754	March	17	Khanderao Holkar is killed at Kumbher.(P.470)
1754	April	6	Surajmal killed Rangrao, a Maratha agent of Kota who was going from Kumbher to Kota.(P.471)
1754	April	17	Surajmal began talks for compromise with the Marathas through his wife Rani Kishori.(P.471)
1754	April	28	Madhosingh sent Siropao of 'Matmi' to Ramchandra Ganesh as the latter's father had died.(P.474).

1754	April		Ramaji Anant Dabholkar warned Maharao Durjansal of Kota through Balaji Gulgule for the payment of the Maratha dues. (P.521)
1754	May	2nd week.	Jayappa Shinde called Rupram Katara to effect the compromise. (P.471).
1754	May	22	Raghunathrao left Kumbher for Mathura on his way to Delhi. (P.471)
1754	May	23,24	Jayappa Shinde and Raghunathrao stayed at Mathura on their way to Delhi. (P.472)
1754	May	26	Surajmal gave the patta of tribute to the Marathas. The same day Diwan Hargobind left Kumbher for Jaipur with his contingent. (P.471)
1754	May		a) Madhosingh sent one Ojha Shivdutt to Raja Gajsingh of Bikaner for securing his support. (P.474) b) Jayappa Shinde personally wrote to Maharao Durjansal of Kota for the payment of the Maratha dues. (P.521)
1754	June	1	The Marathas reached Patpatganj near Delhi, removed emperor Ahmedshah and crowned Alamgir II on the throne. (P.472)
1754	June 17 to July 1		Rawat Jaitsingh of Salumber and Khumansingh, the Mewad officials met Raghunathrao at Shalimar garden, Delhi. (P.472)
1754	June	22	Raghunathrao asked Ramaji Anant the details of the Rajputs who were expected to join Ramsingh after deserting Bejaisingh. (P.476)
1754	June	23	Jayappa Shinde was detached from the main army at Delhi for Marwad Campaign. (P.474).
1754	July	2	Jayappa Shinde left Delhi for Marwad. (P.474)

1754	July	4	Madhosingh sent 2 horses and 48 thans of clothes to Malharrao Holkar, 1 horse to Malharrao Holkar and 1 horse and 24 thans of clothes to Ramaji Anant Dabholkar.(P.474)
1754	July	6	Jayappa Shinde encamped at Rewari. Ramaji Anant Dabholkar asked the Malharrao of Kota through Balaji Gulgule to junction the Kota army with the Marathas at Sambhar. (P.477)
1754	July	9	Achutrao Ganesh wrote to Raghunathrao about his desire to visit Udaipur for the collection of the Maratha dues. (P.542)
1754	July	12	Jayappa Shinde reached Narnaul and wrote to Balaji Gulgule to bring the Kota army soon.(P.477)
1754	July	18	Jayappa Shinde arrived at Sambhar and waited a few days for the armies from Madhosingh and Durjansal which never came.(P.477)
1754	July	20	Malharrao Holkar wrote to Madhosingh to warn his official of Malpura who was obstructing the Maratha collection of revenue.(P.474)
1754	July	24	Madhosingh sent Rs.10000 to Ramaji Anant Dabholkar for the latter's expenses.(P.474).
1754	July	26	Jayappa Shinde left Sambhar for Marwad.(P.477)
1754	July	Last week.	Bahadursingh of Kishangarh joined Bejaisingh at Merta with 4000 troops.(P.477)
1754	August	6	The Marathas captured Kishangarh and handed it over to Sardarsingh.(P.478)

[redacted]

1754	August	9	Malharrao Holkar received the news of the fall of Kishangarh.(P.478)
1754	August	19	Jayappa Shinde arrived near Merta. (P.479)
1754	August	20	Raghunathrao enquires from Ramaji Anant Dabholkar about the plans of Bejaisingh.(P.479)
1754	August	24	Raghunathrao wrote to Ramaji Anant Dabholkar in Marwad to write to the Maharana and Vishnu Mahadeo Gadre to collect the dues from Mewad. (P.542)
1754	August	28	Jayappa Shinde having no canons again wrote to Balaji Gulgule to bring Canons and army of Maharao Durjansal of Kota.(P.479)
1754	August	Last Week.	Balaji Gulgule reached Junia near Ajmer with the Kota army.(P.474)
1754	August	30	The Marathas shifted their camp to Badgaon 6 Kos ~~the Kotx~~ away from Merta.(P.479)
1754	August		Madhosingh sent with Kaniram a horse worth Rs.800/- and 26 thans of [redacted] clothes for Malharrao Holkar when the latter was engaged in Doab. (P.531)
1754	September	3	T-he Peshva wrote to Jayappa Shinde to act diplomatically, watch possible and impossible and [redacted] divide the Marwad State between Bejaisingh and Ramsingh without a battle.(P.480)
1754	September	4	The Marathas shifted to village Kakhadki close to Merta.(P.480)
1754	September	14	The battle of Merta between Bejaisingh and the Marathas. (P.480)

1754	September	17	Jayappa Shinde and Ramsingh entered Merta City and plundered it for 3 hours.(P.482)
1754	September	25	Malharrao Holkar wrote to Madhosingh to continue the grant of one Mishtra Kashinath at Jaisinghpura which the latter had enjoyed since the time of Savai Jaisingh.(P.532)
1754	September	26	Due date for the payment of Rs.7 lacs by the Maharana to the Marathas (P.541)
1754	September	27	Raghunathrao asked Ramaji Anant Dabholkar to restore Ramsingh on the Marwad Gaddi and not to stay further for defeating Bejaisingh. (P.482)
1754	September	29	Bapuji Mahadeo arrived at Jaipur from Delhi and was received by Raja Sadashiv Bhatt and Diwan Hargobind. He was given leave the next day.(P.532)
1754	September		Trimbak Sambhaji sent Mamlat amount of Rs.13500 to Jayappa Shinde in Marwad from Kota.(P.522)
1754	October	27	Madhosingh rewarded the messengers of Tarabai.(P.532)
1754	October		Jayappa Shinde sent Tukoji Shinde, Santaji Wable and Jivaji Pawar etc. 5000 Marathas to capture Jodhpur, Jalore and Phalodi.(P.483)
1754	October	31	Jayappa Shinde besieged Nagore fort.(P.483)
1754	October		Malharrao Holkar wrote to Madho Singh to give 2 years dues of one Timya Gosavi and instructed him not to slack in religious works. (P.532)

1754	November	First week.	Jayappa Shinde sent a contingent to Rupnagar. (P.484)
1754	November	7	Jayappa Shinde assured Madhosingh the good conduct of the Maratha contingent which was sent to Rupnagar.(P.484)
1754	November	15	The Peshva wrote to Ramaji Anant Dabholkar to give shares of Abhaisingh and Bakhtsingh to Ramsingh and Bejaisingh respectively and collect the money from both. (P.484).
1754	November	16	Death of Tukoji Pawar in Marwad. (P.481)
1754	November	22	Malharrao Holkar wrote to Madhosingh to restore one Pandit Krishnacharya Kadim at Jaipur.(P.532)
1754	November	25	Raghunathrao offered to join Jayappa Shinde in Marwad.(P.484)
1754	December	16	Madhosingh sent a Shawl and other clothes to Ramchandra Ganesh as good will. (P.532)
1754	December	19	T-he emperor issued Farman for the grant of Ranthambhor fort to Madhosingh.(P.533)
1754	December	Last week.	Malharrao Holkar and Sakharam Bapu resolved to visit Jaipur for collecting the Maratha dues from Madhosingh.(P.533)
1755	January	(a)	Rao Gopalsingh of Karauli wrote to Madhosingh to grant a village in Hindon paragana to one Santoshram who had predicted that Madhosingh would succeed at Jaipur.(P.532)
		(b)	Jayappa Shinde sent the details of the dues from Mewad.(P.543)

1755	January	First week	Diwan Hargobind, Vithal Shevdeo etc. met Madhosingh. (P.533)
1755	January	20	Sakharam Bapu wrote to Ramaji Anant Dabholkar to induce Jayappa Shinde to leave Marwad without delay. (P.485)
1755	January		Jayappa Shinde dismissed the Kamavis of Keshoraipatan from Govind Sakhaji and gave it on Izara to Balaji Gulgule. (P.522)
1755	January	28	Due date for the payment of Rs.5 lacs by the Maharana to the Marathas. (P.541)
1755	February		The death of Govindrao Sakhaji, the dismissed Maratha Kamavisdar of Keshoraipatan. (P.523)
1755	February	1	The Peshva once again advised Jayappa Shinde to leave Marwad. (P.485)
1755	February	3	Balaji Gulgule visited Keshoraipatan, met Kamavisdar of Holkar and appointed his own collectors there. (P.523)
1755	February	6	Damodar Mahadeo at Delhi was asked to send 'Tika' to Ramsingh, Hasbulhukms to Surajmal and Madhosingh and Khilat to Jayappa Shinde on behalf of the emperor. (P.485)
1755	February	8	Raghunathrao left Kalendrapur of Paragana Faridabad for Jaipur State. (P.534)
1755	February	17	Raghunathrao reached Kosli in paragana Jhajjhar of Shekhawati. (P.534).
	February	19	Raghunathrao reached Nibada in paragana Kanwad of Jaipur State. (P.534)

1755	February	20	Raghunathrao reached Gahila of Paragana Narnaul.(P.534).
1755	February	21	Ajmer fort captured by the Marathas. (P.486)
1755	February	24	Raghunathrao reached Goverdhanpura in Paragana Khandela of Jaipur State. (P.534)
1755	February	Third week	It was expected that Bejaisingh would surrender soon.(P.485)
1755	February	25	Raghunathrao reached Febat Bhadora of paragana Savai Jaipur.(P.534)
1755	February	26	Raghunathrao reached Deole in Paragana Sambhar where he stayed for 5 days.(P.534)
1755	February	27	Gangadhar Tatya wrote to Ramaji Anant Dabholkar to think about joint action and meet him at Pushkar.(P.487)
1755	March	1	Raghunathrao left Sambhar for Pushkar.(P.488)
1755	March	First week	Malharrao Holkar arrived at Malpura and besieged 2 to 4 castles of Jaipur State. Kaniram, the Jaipur official went to Pacify him.(P.534)
1755	March	3-5	Raghunathrao stayed at Pushkar. (P.488-535)
1755	March	5	Madhosingh sent a Siropao to Pandurang, the son of Shankaraji Malhar. (P.535)
1755	March	7	Raghunathrao arrived at Karkedi of Rupnagar state. (P.535)
1755	March	12,13	Raghunathrao stayed at Salemabad in Kishangarh State. (P.535)

1755	March	13	Raghunathrao sent Baburao Keshav to capture Rupnagar while Gangadhar Tatya went to bring back Malharrao Holkar.(P.488)
1755	March	15	Raghunathrao honoured Bejai Bharti,the Vakil of Bejaisingh. (P.488)
1755	March	25	Raghunathrao encamped at Himthare in Sarwar paragana of Rupnagar State.(P.535)
1755	March	(a)	Balaji Gulgule and Akhairam Pancholi,the Kota official met Malharrao Holkar and Raghunathrao at Khatoli in Hadoti province. (P.523)
		(b)	The Marathas warned the Maharana of Mewad for the payment of the Maratha dues and for not giving a Jagir to Nathji.(P.543)
1755	March	Last week	Malharrao Holkar and Raghunathrao besieged Lambia fort near Shahpura. (P.543)
1755	March	30,31	Raghunathrao and Malharrao Holkar entered Bundi State.(P.535)
1755	April	5	Raghunathrao reached Nanti in paragana Indragarh near Bundi. (P.536)
1755	April	11,12	Raghunathrao stayed at Renavad of Kota state. (P.536)
1755	April	17	Raghunathrao at Marwar on his way to Deccan.(P.536)
1755	April	25	Jayappa Shinde being hard pressed for want of money in Marwad wrote to Balaji Gulgule to send a Hundi of Rs.150000 immediately.(P.488)
[redacted]			
1755	April		Jayappa Shinde wrote to Balaji Gulgule to send him Patan and Kota' dues of Rs.150000 and Rs.175000 respectively.(P.523)

1755	May		Jayappa Shinde fought daily skirmishes with the Rathors of Bejaisingh. (P.489)
1755	May	27	Madhosingh signs an agreement of mutual help with Navab Shujaudaullah of Oudh.(P.536)
1755	May-June		Madhosingh seeks help of Achutrao Ganesh against the Sikhs.(P.536)
1755	June	7	Malharrao Holkar wrote to Madhosingh that the issue of Krishnsingh Hada for Bundi would be taken up later as he was going to Deccan then. (P.536)
1755	June	10	The Peshva again wrote to Ramaji Anant Dabholkar to terminate the Marwad expedition.(P.489)
1755	June	14	Jayappa Shinde wrote to Madhosingh to provide an escort of 500 horsemen upto Merta for bringing a hundi from Jaipur.(P.489)
1755	June	17	Ramaji Anant Dabholkar expected a compromise with Bejaisingh within 8 to 10 days.
1755	June	20	The Peshva wrote to Jayappa Shinde to come to his court within 2 months as 2 more Subas were expected to fall in the hand of the Marathas which were proposed to be given to him.(P.490)
1755	June	Third week	Bejaisingh sent Kishansingh Bhati to Jayappa Shinde for peace talks. (P.489)
1755	June	23	Due date for the payment of Rs.3 lacs by the Maharana to the Marathas. (P.541)
1755	June	(a)	Balaji Gulgule sent hundis of Rs.189000 to Jayappa Shinde in Marwad.(P.524)
		(b)	Jayappa Shinde wrote to Balaji Gulgule to give the Izaras to good people only.(P.523)

1755	July		Balaji Gulgule is asked to collect the Maratha dues harshly from Kota. (P.524)
1755	July	3	Jayappa Shinde began preparations for returning to Deccan.(P.490)
1755	July	Second week	Maharana Rajsingh II of Udaipur sent Rawat Jaitsingh of Salumber to mediate peace talks between Jayappa Shinde and Bejaisingh. (P.490)
1755	July	19	Jayappa Shinde wrote to Balaji Gulgule to warn Maharao Durjansal of Kota and help Ragho Shankar, a Maratha collector.(P.524)
1755	July	25	The murder of Jayappa Shinde at Nagore.(P.491)
1755	August	First week	Madhosingh sent 'Tika' and horse to Jankoji Shinde in Marwad after the murder of Jayappa Shinde.
1755	August	8	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to send atleast Rs.5 lacs immediately as money was badly needed in Marwad.(P.492)
1755	August	10	Raghunathrao returned to Pune after his first North Indian expedition. (P.536)
1755	August	16	The Peshva ordered Bapuji Mahadeo to send Rs.3 lacs immediately to [redacted] Shinde in Marwad who was badly in need of money.(P.494)
1755	August	26	Maharao Durjansal of Kota collected a sum of Rs. 1 lac for payment to the Marathas.(P.525)
1755	August	28	Jankoji Shinde wrote to Bapuji Mahadeo at Delhi to see that Bejaisingh's Vakil does not secure the help of the emperor.(P.495)

1755	August	30	The Peshva wrote to Ramaji Anant Dabholkar to defeat Bejaisingh under the command of Dattaji Shinde and settle peace only on the conditions desired by Jayappa Shinde.(P.492)
1755	September	5	Chinto Krishna wrote to Balaji Gulgule to send the hundis of Patan's money to Ujjain.(P.525)
1755	September	First week	Balaji Gulgule informed Jankoji Shinde of the despatch and arrival of Anrudh Singh by Madhosingh at Narayana.(P.495)
1755	September	12	Ramaji Anant Dabholkar censured Balaji Gulgule for not collecting the Maratha dues strictly from Maharao of Kota.(P.526)
1755	September	18	The Peshva wrote to Dattaji Shinde that Bejaisingh's Vakil was expelled from Pune.(P.495)
1755	September		Antaji Mankeshwar set out for Marwad from Kalpi to reinforce Jankoji Shinde.(P.493)
1755	September	25	Madhosingh ordered Nawalsingh Shekhawat etc.his vassals to join Bejaisingh with army.(P.493)
1755	September	(a)	The Peshva wrote to Ramaji Anant Dabholkar to maintain cordial relations with Surajmal Jat as the terms were already spoled with the Rajputs.(P.496)
		(b)	The Peshva wrote to Bapuji Mahadeo at Delhi to ask the Vazir to help Dattaji Shinde instead of Bejaisingh He further asked Bapuji to induce ~~the~~ the Vazir to prevent the anti Maratha activities of Madhosingh etc.Rajput princes.(P.496)

1755	September		Govind Tamaji consumes poison and committed sucide as Madhosingh had put him under house arrest at Jaipur.(P.497)
1755	October	1	Jankoji Shinde received Rs.27000 from Patan and Kota out of the Maratha dues.(P.525)
1755	October	3	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to bring the 'Tika'from Maharao Durjansal of Kota.(P.525)
1755	October	10	The Marathas and Anrudhsingh saw one another with their respective armies.(P.498)
1755	October	15	Anrudhsingh left Ramgarh to junction with Diwan Bakhtawar of Bikaner for helping Bejaisingh. (P.498)
1755	October	16	The Marathas killed 800 to 900 men of Anrudhsingh and plundered his 1000 to 1200 horses, 40 to 50 camels,4 cartloads of ammunition. (P.498)
1755	October	20	a) Anrudhsingh reached near Didwana and the Marathas filled all the tanks and wells of the region with stones and dust.(P.498)
			b) Govind Ballal wrote to Sadashivrao Bhau to send the army for breaking the coalition of Madhosingh, Surajmal Jat and the Vazir.(P.537)
1753	October	21	The battle of Didwana between Anrudhsingh and the Marathas. (P.499)
1955	October	23	a) Ahmedshah Abdali wrote to Madhosingh to confine the Marathas in Marwad ~~xx~~ and Jaipur territories as he was about to March for India.(P.502)
			b) Jankoji Shinde wrote to Balaji to get 'Tika'from Kota.(P.525)

1755	October	31	Anrudhsingh went to the Maratha Camp with a request for compromise. (P.499)
1755	November	4	Antaji Mankeshwar reached Didwana. (P.50D)
1755	November	5	Antaji Mankeshwar plundered Anrudh Singh and killed his 400 men. (P.501)
1755	November	12	Bejaisingh fled away from Nagore to Bikaner.(P.503)
1755	November	Third week.	a) Abdali informed Bejaisingh that his garrison of Sind would help him in expelling the Marathas from Marwad.(P.502)
			b) Madhosingh sent army near Delhi for Junctioning with the Vazir and Surajmal for ousting the Marathas from Rajputana.(P.537)
1755	November	21	Bejaisingh asked for the help of Madhosingh.
1755	November	30	a) Jankoji Shinde again wrote to Balaji Gulgule to bring the elephant and horse of the 'Tika' from Maharao of Kota.(P.525)
			b) Jankoji Shinde censured Balaji Gulgule for obstructing Gangaram Govind who had come to Patan to purchase the camels for the Peshva.(P.526)
1755	November		Jankoji Shinde acknowledged the receipt of Rs.25002/-from Balaji Gulgule out of the dues of Patan and Kota.(P.526)
1755	December	31	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to get restored 26 camels and 2 horses of Harnathsingh, Sangramsingh and Sarbarsingh of Marwad who were plundered at Patan.(P.527)

1756	January	7	a) Jankoji Shinde and Ramaji Anant Dabholkar again reminded Balaji Gulgule about the 'Tika' from Maharao of Kota.(P.525)
			b) Ramaji Anant Dabholkar wrote to Balaji Gulgule to collect atleast 4 to 5 lacs of Rupees from Maharao of Kota and send supplies to Nagore. (P.506,527).
1756	February	1	Due date for the payment of Rs.5 lacs by the Maharana to the Marathas.(P.541)
1756	February	12	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to ask the Maharao of Kota and his official Akhairam Pancholi to hand over 2 Bohras to the Marathas who owed Rs.10000 to the Marathas.(P.527)
1756	February		The peace is settled between Bejaisingh and the Marathas. The Marathas got Ajmer.(P.507)
1756	February-March		Madhosingh gets the Fauzdari of Narnaul from the emperor.(P.538)
1756	March	First week	The Marathas left Marwad.(P.507)
1756	March	7	Diwan Achutrao of Indore wrote to Madhosingh to handover 12 villages of Ajmer to the Maratha Subedar Govindrao.(P.538)
1756	March		a) Jankoji Shinde received a hundi of Rs.10000 from Balaji Gulgule. (P.527)
			b) Dattaji Shinde plundered some villages of Jaipur state while returning from Marwad.(P.539)
1756	April	3	Raghunathrao's messenger reached Banera where he was rewarded. (P.543)
1756	April	23	Dattaji Shinde arrived at Rupnagar and besieged it for about a month. (P.508)

1756	April	26	a) Bhagwantrai, the son of Antaji Mankeshwar met Madhosingh at Jaipur.(P.539) b) Bejaisingh informed Raja Gajsingh of Bikaner that Jaggu Purohit would go to Jaipur for the cause of Ramsingh.
1756	May	5	Shamsher Bahadur joined Jankoji Shinde at Rupnagar.(P.508)
1756	May		The Marathas lifted the siege of Rupnagar after dividing the state between Bahadursingh and Sardarsingh. (P.508)
1756	May	15	Madhosingh sent Shawls and valuable clothes to Ranoji Bhoite,Ramrai and Narsinghrao Marathas.(P.539)
1756	May	18	Jankoji Shinde wrote to Madhosingh that no Kachwaha would be employed by him without his consent.He also released Anrudhsingh at Rupnagar. (P.539)
1756	May	20	Madhosingh sent horses and clothes to Malharrao, the son of Khanderao Holkar,Madu Patel Dhamdhere and Ragho Appa.
1756	May	27	a) Jankoji Shinde wrote to Madhosingh to help Ramsingh in recovering his share from Bejaisingh.(P.539) b) Bhagwantrai, the son of Antaji Mankeshwar was given leave by Madhosingh.(P.539)
1756	May		a) Ramaji Anant Dabholkar wrote to Balaji Gulgule that Maharao of Kota had spoiled brotherly relations with the Marathas by not sending 'Tika' to Jankoji Shinde though Madhosingh and the Maharana had sent it.(P.526) b) Ramaji Anant Dabholkar wrote to Balaji Gulgule that he was coming within a month to besiege Kota and recover the dues.(P.528) c) Ramsingh sent Jaggu Purohit to Madhosingh for help.(P.539)

1756	May-June		Raja Umedsingh of Bundi killed Thakur Devisingh of Indragarh treacherously.The widow of the latter approached the Marathas for help.(P.528)
1756	June	3	Maharana Rajsingh II celebrated his formal coronation at Udaipur.(P.543).
1756	June	9	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule that dues from Bohras would be recovered after their capture and ransoming their men.(P.529)
1756	June		Raja Umedsingh of Bundi hosted Jankoji and Dattaji Shinde at Bundi.(P.529)
1756	June	14	Malharrao Holkar wrote to Maratha Kamavisdar Chimnaji Govind to restore Devidan at village Gundla who had fled away from the fear of the payment of the Maratha dues.(P.529)
1756	June	25	Due date for the payment of Rs.5 lacs by the Maharana to the Marathas.(P.541)
1756	July	3	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to restore 20 bighas of land to one Nathuram of Patan for holy purpose. (P.529)
1756	July	4	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to give Jaswantrao Pawar's 16% share to Balajiram.(P.53)
1756	July	5	Madhosingh sent valuable clothes to Ranoji Bhoite and Narsinghrao with Bisambhardas Khatri.(P.540)
1756	July	13	Malharrao Holkar wrote to Abaji Raghunath, his agent at Kota, not to give Pawar's share to anyone excepting Ghanseth as the Pawar owed money to Ghanseth.(P.530)
1756	August	15	Maharao Durjansal of Kota died.(P.530)
1756	August	17	Thakur Ajitsingh of Anta wrote to Balaji Gulgule to support his succession at Kota.(P.530)

1756	August	18	Madhosingh sent a horse and valuable clothes to Santaji Wable through Diwan Kaniram.(P.554)
1756	August	19	The emperor granted to Madhosingh a Mansab of 7000 Zat and 4000 Cavalry Rs. 1½ crores in Inam and the title of 'Mahi Martab' etc.(P.554)
1756	August	27	Madhosingh sent a Siropao to Vinaik Ganesh,the Maratha Mokasdar of Toda, a Siropao of 'Matami' to the nephew of Santaji Wable and a Siropao to Ramji Naik.(P.554)
1756	September		Raja Gajsingh of Bikaner instigated Bejaisingh to occupy Ramsingh's share. (P.582)
1756	October	26	Madhosingh gave Rs.500 as expenses to Dinkar Pandit and Hullasrai of Ramraja.(P.554)
1756	October	27	Mishra Maujiram of Karauli reported to Jaipur officials that Antaji Mankeshwar desired to accept the service under Madhosingh.(P.554)
1756	November	4	Ramrao, the official of Jankoji Shinde sent a warning letter to Madhosingh for the payment of money about the release of Anrudhsingh.(P.554)
1756	November	15	Ahmedshah Abdali marched from Peshawar to Lahore for Hindustan.(P.544)
1756	November	19	Bejaisingh reported to Madhosingh about the march of the Marathas to the North.(P.582)
1756	November	28	Madhosingh sent a valuable Shawl to Ramchandra Ganesh.(P.555)
1756	November	29	Raghunathrao left Pune for his second North Indian expedition.(P.555)
1756	November		The Vazir summoned Antaji Mankeshwar from Etawah to Delhi.(P.544)

1756	December	31	Satvaji Rajola wrote to Madhosingh to send the formal Parwana about the surrender of Rampura-Bhanpura. (P.555)
1757	January		Prince Taimur Shah sent Rahman Khan to promote the cause of Madhosingh against the Marathas. (P.544)
1757	January	10	Ahmedshah Abdali crossed Sutlaj river and despatched Jahan Khan and Shahwali Khan in advance towards Delhi. (P.544)
1757	January	16	a) Madhosingh sent a horse and 18 thans of clothes to one Bhawani Pandit of the Marathas through Diwan Kaniram. (P.557)
			b) Jahan Khan reached Delhi in the afternoon with 75000 troops. (P.545)
			c) Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to secure fresh orders from Maharao Ajitsingh of Kota for the grant of Village Panwar in favour of Sadashiv Ballal, a Maratha official. (P.564)
1757	January	17	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to pay the dues of 3 years of paragana Patan to Chinto Narain. (P.564)
1757	January	21	Antaji Mankeshwar defeated Sarwarkhan who was sent by Shah Walikhan with 4000 troops. Antaji wrote to the Peshva to ally with Surajmal Jat. (P.545-46)
1757	January	29	Abdali conducted a Darbar at Delhi and sent Hasbulhukm to Surajmal Jat. The leave was given to Mir Aftab, the Vakil of Madhosingh. (P.548)
1757	January	30	a) Antaji Mankeshwar asked the Peshva to come personally to Hindustan to defeat Ahmedshah Abdali. (P.546)
			b) Malharrao Holkar wrote to Madhosingh that the disturbances in his territory were created by Satvaji Rajola as he had not paid the Maratha dues. (P.555)

1757	February	6	Antaji Mankeshwar met Surajmal at Mathura after he was forced to flee by the troops of Abdali. He wrote to the Peshva to join Surajmal soon. (P.547)
1757	February	14	Raghunathrao and Malharrao Holkar reached Indore for North India. (P.556)
1757	February	16	Sakharam Bapu wrote to Antaji Mankeshwar on behalf of Raghunathrao that Holkar's army can not join before March 1757 hence till such time they would collect the dues from Jaipur, Mewad and Kota. (P.550)
1757	February	17	Madhosingh gave the Siropao of departure to Ramaji Pandit Maratha who had come from Ajmer on behalf of Ramsingh. (P.582)
1757	February	19	Madhosingh sent 22 and 29 Thans of valuable clothes to Malharrao Holkar and Raghunathrao respectively who were on march towards Rajputana. (P.557)
1757	February	22	Abdali left Delhi to subdue Surajmal Jat. (P.551)
1757	February	24	Ghaziuddin Khan joined Abdali against Surajmal Jat. (P.551)
1757	February	27	Abdali despatched Jahankhan from Faridabad to plunder the territory of Surajmal Jat. (P.551)
1757	February	28	The battle of Ballabhgarh between ~~Faridabad to plunder the territory of Surajmal Jat. (P.551)~~ Jahankhan and Jawaharsingh Jat, the son of Surajmal Jat. (P.551)
1757	March		Jankoji Shinde began preparation for march towards Bundi and Kota. (P.564)
1757	March	1	Jahan Khan began massacre at Mathura. (P.551)

1757	March	6	Jahan Khan did Massacre at Vrindavan. (P.551)
1757	March	9	The Peshva enquired from the Hingne brothers about the movements of Bejaisingh and Madhosingh.(P.552)
1757	March	15	Abdali arrived at Mathura.(P.551)
1757	March	18	Madhosingh proposed to Malharrao Holkar to preserve jointly the religion of Hindus which was in danger due to Ahmedshah Abdali. (P.552)
1757	March	23	Madhosingh again wrote to Malharrao Holkar that all the Hindus must unite against Ahmedshah Abdali.(P.552)
1757	March	24	Jahan Khan left Agra to join Abdali at Mathura(P.552)
1757	March	27	a) Jankoji Shinde wrote to Chimnaji Govind, the Holkar's agent in Bundi to collect Rs.5000 as 'Nazrana' from Devidan of village Gundle.(P.564) b) Jankoji Shinde wrote to Chimnaji Govind and Ramaji Jagannath not to harass the subjects of Patan Paragana.(P.565)
1757	March		a) Balaji Gulgule sent a hundi of Rs.8000 to Ramrao Nilkanth to Ujjain after collecting the same from the Bohra of Patan.(P.565) b) Malharrao Holkar and Raghunathrao entered Mewad and collected Rs.1 lac from the Maharana after sacking Javad and Ranikheda. (P.556)
1757	March	28	Raghunathrao wrote to Bapuji Hingne about his march to North and the proposed coalition with Surajmal Jat and the Rajput princes.(P.553)

1757	April	2	Raghunathrao entered Jaipur territory during his second North Indian visit. (P.558)
1757	April	First week	Raghunathrao besieged Barwada fort of Madhosingh.(P.558)
1757	April	5	Antaji Mankeshwar wrote to Raghunathrao not to besiege the castles of Jaipur State but should pursue Abdali atleast upto Karnal.(P.558)
1757	April	7	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to collect the dues from Chimnaji Govind and Ramaji Jagannath before they leave for Antarved.(P.565)
1757	April		Jankoji Shinde sent Govind Manaji to Balaji Gulgule to collect the dues of Kota and Patan.(P.565)
[redacted]			[redacted]
1757	April	17	Jankoji Shinde directed Madhosingh to take up the cause of Ramsingh against Bejaisingh.(P.582)
1757	April	26	Maharao Ajitsingh of Kota concluded a financial agreement with the Marathas according to which he agreed to pay a sum of Rs.12 lacs to them.(P.565).
1757	April	30	Madhosingh complimented the efforts of Thakur Badansingh Nathawat,Dalel Singh Rajawat of Dhula etc.for displaying valour during the siege of Barwada by the Marathas.(P.559)
1757	April [redacted]	[redacted]	Thakur Nawalsingh Shekhawat faced the Marathas in Shekhawati who had attacked that region under Antaji Mankeshwar. (P.559)
1757	May	6	Madhosingh complimented the efforts of Ajitsingh,Bhaironsingh and Vikramjit Singh of Rajawat clan against the Marathas.(P.560)

1757	May	10	Madhosingh sent 6 cart loads of ammunition to Sanganer for defence against the Marathas. (P.560)
1757	May	12	The Shekhawat guards who were guarding the Jaipur city against the Marathas retreated inside the city walls. (P.560)
1757	May	15	a) Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to pay his personal dues of Rs.38000/- and warn the Maharao of Kota for the payment of the Maratha dues. (P.566) b) Madhosingh wrote to Diwan Kaniram to get the horse of Thakur Lal Singh restored from the Marathas. (P.560)
1757	May		The widow of Thakur Devisingh of Indragarh met Balaji Gulgule to secure the Maratha help against Rao Umed Singh of Bundi. (P.567)
1757	June		Nahar Singh Naruka is killed against the Marathas during the battle of Tonk. (P.561)
1757	June	2	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule that the issue of the widow of Thakur Devisingh of Indragarh would be considered when he meets Ragho Janardan in person. (P.567)
1757	June	5	Ramsingh wrote to Madhosingh that he was going to Jankoji Shinde to bring the Maratha help against Bejaisingh. (P.583)
1757	June	6	Jankoji Shinde asked Chimnaji Govind, the agent of Holkar not to collect the dues from Patan Paragana because only Shinde officials were allowed to do it. (P.566)
1757	June	Second week	Bejaisingh's envoys met Raghunathrao to counter effect the efforts of Ramsingh. (P.583)

1757	June	9	Naro Shankar,Anandrao Wable and Appa,the nephew of Gangadhar Tatya met Madhosingh.(P.561)
1757	June	11	Madhosingh again met Naro Shankar etc.at Jaipur.(P.561)
1757	June	14	Madhosingh sent Mejmani and Maunds of sweets to Naroshankar etc. Marathas.(P.561)
1757	June	17	Madhosingh sent 60 Thans and 2 horses to Malharrao Holkar.(P.562)
1757	June	22	Madhosingh sent Rs.4000 as expenses to Naroshnkar.(P.562)
1757	June	28	Madhosingh commended the efforts of Savatram Kiratram Syobrahmpota against the Marathas.(P.561)
1757	June	30	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to pay the salaries of Ganesh Dadaji and Visaji Ram in Paragana Patan of Bundi.(P.567)
1757	July	1	a)Due date for the payment of Rs.5 lacs to the Marathas by Maharao Ajitsingh of Kota.(P.565) b)Madhosingh went to the camp of Naro Shankar and received an elephant, horses and Valuable clothes as 'Nazar'.Madhosingh presented similar items to Naro Shankar.(P.562)
1757	July	2	Madhosingh sent a horse and 40 Thans of clothes to Vithal Sheodev.(P.562)
1757	July	5	Madhosingh agreed to give Rs.11 lacs to the Marathas including Rs.5 lacs for releasing Anrudhsingh. He agreed to pay Rs.6 lacs in cash and gave the bonds for the remaining sum. (P.562)

1757	July	First week	Raghunathrao sent Sakharam Bapu, Vithal Sheodeo, Antaji Mankeshwar etc. 23000 troops towards Doab. (P.562)
1757	July	12	Madhosingh sent Rs.34000 to Naro Shankar for his expenses. (P.562)
1757	July		Jankoji Shinde sent Naroji to collect the dues from Balaji Gulgule, Bohra etc. (P.567)
1757	July	29	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to console the inhabitants who suffered due to the disturbances created by Chimnaji Govind and Ramaji Jagannath. (P.567)
1757	August	3	Madhosingh gave Rs.6 lacs to Naro Shankar as per the agreement of 5th July 1757. (P.562)
1757	August	28	Madhosingh gave Rs.1000 as expenses to one Dinkar Pandit who had come on behalf of Chhatrapati Ram Raja. (P.562)
1757	August	30	Raghunathrao ordered Dattaji Shinde to come to North India as Abdali was expected to return. (P.568)
1757	October	4	Ramrao Nilkanth wrote to Balaji Gulgule to give the Maratha dues of Hadoti to Raghunathrao if he comes there. (P.567)
1757	October	7	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to send a sum of Rs.185000 with Ragho Keshv, an employee of the Peshva from the share of Jaswantrao Pawar who was in the debts of the Peshva. (P.567)
1757	November	3	Malharrao Holkar wrote to Madhosingh to give Nandera village to Rupram Katara, an official of Surajmal Jat who was also the Purohit of Madhosingh. (P.563)

1757	November	5	Bejaisingh wrote to Raja Gajsingh of Bikaner to send some horsemen for his help.(P.583)
1757	November	18	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to send the dues of Kota to Ramrao Nilkanth at Ujjain.(P.583)
1757	November	20	Raghunathrao censured Madhosingh for non-payment of the instalment which had fallen due.(P.563)
1757	December	24	Madhosingh sent hundis of Rs.250000 to Raghunathrao through M/s.Mansaram and M/s.Ghanesur Seth of Rs.125000 each.(P.564)
1757	December	31	Madhosingh ordered his official Suratram at Hinglazgarh to handover the paragana to the officials of Malharrao Holkar and return with all the Tahkurs and the officials. (P.564)
1758	January	19	Malharrao Holkar wrote to Madhosingh to induce Nathji to accept the Patta from the Maharana.(P.571)
1758	January	29	Madhosingh sent 5 thans of clothes including Siropao and Shawl to Ramchandra Ganesh.(P.576)
1758	February	26	Madhosingh sent money gifts to Gautamabai,Ahalyabai and the mother-in-law of Malharrao Holkar.(P.576)
1758	March		Jankoji Shinde set out towards Ahmedabad for North India.(P.568).
1758	March	11	Ramaji Anant Dabholkar wrote to Balaji Gulgule to collect the dues prior to his arrival in Hadoti. (P.568)
1758	March	22	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to meet him on the way and bring the due money from the Maharao of Kota. (P.569)

1758	March	31	The emperor appointed Madhosingh the Naib Subedar of Agra under the prince. (P.576)
1758	April	4	Ramaji Anant Dabholkar wrote to Balaji Gulgule to keep the money ready as Jankoji Shinde was about to reach the Mukandra pass.(P.569)
1758	April	5	Dhondo Krishna wrote to Balaji Gulgule to bring the Maharao and the due money else Kota state would be devastated by the Marathas.(P.569)
1758	April	6	Jankoji Shinde left Ujjain for Hadoti province.(P.569)
1758	April	11	Raghunathrao and Malharrao Holkar occupied Lahore and Multan.(P.576)
1758	April	15	Raghunathrao was advised not to hurry for Deccan as Madhosingh was expected to create disturbances in Malwa in league with Surajmal Jat.(P.577)
1758	April	28	Madhosingh assured help to Raja Indra Singh,his vassal against the Marathas. (P.577)
1758	May	5	Jankoji Shinde reached in village Urmal near the Mukandara pass. (P.569)
1758	May		a) Dattaji Shinde enters Marwad for the second time.(P.584) b) Antaji Mankeshwar advised the Peshva to ask the Vazir and Madhosingh to send troops to Raghunathrao.(P.577)
1758	May	6	Death of Raja Sardarsingh of Banera. (P.571)
1758	May	10	Raghunathrao and Malharrao Holkar left Lahore for Rajputana on their way to Deccan.(P.577)

1758	May	13	Madhosingh congratulated Malharrao Holkar for the Maratha Victory of Lahore and Multan.(P.577)
1758	May	23	Jankoji Shinde gave an elephant to Balaji Gulgule for rendering service during the Marwad campaign.(P.569)
1758	June	4	Jankoji Shinde at Kota. (P.569)
1758	June	5	Raghunathrao and Malharrao Holkar arrived at Kurkeshetra from Lahore on their way to Jaipur.(P.577)
1758	June	20	Madhosingh sent a hundi of Rs.2 lacs to Holkar.(P.578)
1758	July	3	Madhosingh wrote to his official Pandit Kesosingh to come soon as Rs.5 lacs were to be sent to Malharrao Holkar.(P.578)
1758	July	8	a) Jankoji Shinde crossed the Mukandara pass and came near to Shahpura. (P.572) b) Ramaji Anant Dabholkar censured Balaji Gulgule for not conveying the news of the death of Peshva's collector in Hadoti.(P.569)
1758	July	9	Madhosingh sent Rs.200 as expenses to Purshottam Mahadeo, Dudhaji Naik and Udairam Naik who had come on behalf of Raghunathrao.(P.578)
1758	July	12	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to approve of the Inam land to Krishnaji Joshi Triwadi of Mewad in Patan paragana which was granted by Raghunathrao,Malharrao Holkar and Jayappa Shinde.(P.574)
1758	July	15	Madhosingh wrote to Malharrao Holkar not to devastate his territory as money was already sent to him. (P.578)

1758	July	16	Madhosingh gave 4 Thans of valuable clothes to Purshottam Mahadeo at the time of departure.(P.578)
1758	July	25	Madhosingh gave Rs.2000 as the expenses to Udairam Naik who had come from Raghunathrao and Malharrao Holkar for collecting the Maratha dues.(P.518)
1758	July	Last week	Jankoji Shinde concluded compromise between Raja Umed Singh of Shahpura and Maharana Rajsingh II of Udaipur. (P.573)
[redacted]			
1758	August	1	a)Madhosingh gave Rs.2000 to one Puranic who had come on behalf of Raghunathrao. (P.579) b)Jankoji Shinde met Raghunathrao near Shahpura.(P.574)
1758	August	2	Jankoji Shinde is found encamped on the bank of river Basan on his way to Kota.(P.574)
1758	August	10	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to keep the accounts ready as he was expected to meet Malharrao Holkar soon. (P.574)
1758	August	18	Madhosingh sent a hundi of Rs.3 lacs to Raghunathrao through Diwan Kaniram addressed to Seth Ghanesur.(P.579)
1758	August	30	Jankoji Shinde met Malharrao Holkar in Kota province.(P.575,579)
1758	August	Last week.	Sahiba Patel besieged Nenva fort of Bundi and plundered the villages of Uniara.(P.579)

1758	September	First Week.	Death of Maharao Ajitsingh of Kota. (P.575)
1758	September		Malharrao Holkar sent Satvaji Rajola to occupy Ranthambhor fort.(P.586)
1758	September	3	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to continue the grant of Charity to Gosavi Deogir and Shamgir of Patan. (P.606)
1758	September	7	Madhosingh sent valuable presents to Malojirao the grand-son of Malharrao Holkar.(P.579)
1758	September	8	Madhosingh sent the proposal of uniting the Rajput princes to Maharao Shatrusal of Kota.(P.579)
1758	September	11	Malharrao Holkar and Jankoji Shinde assigned the Kamavis of one village to Anandrai Rana Palsikar in each of the paraganas of Bundi and Nenva. (P.607)
1758	September	13	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to come with Akhairam Pancholi the Kota official and meet him.(P.575)
1758	October		Ramaji Anant Dabholkar,the Diwan of Jankoji Shinde ordered Balaji Gulgule to give a cow to Vyankatchari, a saint and get his dues recovered from the one Mohanram Tiwari of Kota.(P.607)
1758	October	5	Malharrao Holkar wrote to Madhosingh to look after the welfare of his vassal Raja Fatehsingh for the latter's services in arranging compromise with the Marathas.(P.580)
1758	October	7	Raghunathrao wrote to Madhosingh to send the Maratha dues soon.(P.580)

1758	October	10	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to help one Narsingh Shastri in recovering his dues from the people of Kota. (P.608)
1758	October	13	a) Malharrao Holkar transferred Gopal Trimbak, the Maratha Kamavisdar of Kota to Patan for not collecting the Maratha dues properly.(P.608) b) Madhosingh assured Jankoji Shinde that the hundis would be sent soon.(P.581)
1758	October	17	Jankoji Shinde asked Madhosingh to send Rs.12 lacs soon as per the agreement. (P.581)
1758	October	20	Malharrao Holkar ordered Chimnaji Govind his agent to restore Devidan as Patel of village Gundle and take the tribute from him.(P.608)
1758	October	23	Kesari Singh Rathod and Kisansingh Bhati wrote to one Amarpuriji that Ramsingh should be given a paragana and the Marathas should be allowed to collect the Chauth but no written agreement should be given to them. (P.584)
1758	October	25	Malharrao Holkar increased the Palki allowance of his Kota agent Abaji Raghunath.(P.608)
1758	October	26	Dattaji Shinde wrote to Balaji Gulgule to send the dues of Jiwaji and Krishnaji Pawar.(P.608)
1758	October	31	Madhosingh wrote to Surajmal Jat that his help was not needed as the compromise was settled with the Marathas.(P.581)
1758	October		a) Dattaji Shinde received a hundi of Rs.16000 from Balaji Gulgule.(P.608) b) Bejaisingh desires compromise with the Marathas.(P.584) c) Antaji Mankeshwar left Jaipur State for Delhi.(P.581)

1758 November 8		Dattaji Shinde wrote to Balaji Gulgule to warn the Maharao of Kota for not paying the Maratha dues.(P.608)
1758 November 9	a)	Jankoji Shinde granted Rs.90/- annually in charity to one Vasudeo Bhatt Jotisi of paragana Rajgarh in Kota State. (P.609)
	b)	Jaipur forces occupied Ranthambhor fort after granting a Jagir to the Mughal Qiliedar.(P.587).
1758 November 12		Bejaisingh wrote to Anandrao Wable about the compromise with the Marathas. (P.584)
1758 November 13		Madhosingh sent a horse and 17 Thans of clothes to Ranoji Bhoite.(P.581)
1758 November 15		Jankoji Shinde restored 198 Bigas of land to Ram Kishna Shrotri,Bhagirath Shrotri and Jivanram Shrotri of Bundi. (P.609)
1758 November 26		Jankoji Shinde restored the grant of 4 paisas daily to Udaram and Jai Kishan Sevak of Patan Paragana.(P.609)
1758 November 27		Jankoji Shinde granted a sum of Rs.75/- annually in lieu of 75 Bigas of land to one Tapanidhi Sujania of Ladpur village in Paragana Patan.(P.609)
1758 November 30		Jankoji Shinde received Rs.33960/- in cash and Rs.65600/- by hundi out of Rs.2 lacs succession fee of Kota. (P.575)
1758 November End		Dattaji Shinde received articles worth Rs.9110/- from Balaji Gulgule which consisted of Jankoji's Utensils of worshipping and 46 camels.(P.610)
1758 November		Dattaji Shinde is found collecting the Maratha dues at Rupnagar.(P.584)

1758	December	1	Madhosingh sent a horse and 16 Thans of clothes to Naro Shankar with Fatehram.(P.585)
1758	December	7	Madhosingh sent a blue horse and 26 Thans of valuable clothes for Dattaji Shinde.(P.585)
1758	December	9	Jankoji Shinde restored 11 Bigas of land to one Jagannath Vozhe of village Ladpur in Paragana Patan.(P.610)
1758	December	11	Madhosingh sent 6 Thans of clothes to Vithal Sheodeo.(P.581).
1758	December	15	Jankoji Shinde came to near Narnaul. (P.582)
1758	December	26	Jankoji and Dattaji Shinde arrived at Najafgarh near Delhi.(P.582)
1758	December	31	Madhosingh sent a horse and 16 Thans of clothes to Naro Shankar.(P.582)
1759	January	9	Jankoji Shinde wrote to Madhosingh to send the Maratha dues.(P.585)
1759	January	13	Madhosingh again sent 7 Thans of valuable clothes to Dattaji Shinde. (P.585)
1759	January	15	Madhosingh wrote to Jankoji Shinde that the Maratha dues would be paid soon.(P.585)
1759	January		Jankoji Shinde sent Potdar Bapuji Naik to collect Rs.3 lacs from Madhosingh. (P.585)
1759	January	23	a)Jankoji Shinde again wrote to Madhosingh to send the Maratha dues.(P.585)
			b)Jankoji Shinde sent a protest note to Madhosingh after the Jaipur forces occupided Ranthambhor fort and defeated Satvaji Rajola.(P.587)

1759	January	29	a)Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to get the dues recovered of one Pemraj Sahukar of Mathura from Meghsingh and Sobhagsingh Hadas of Kota.(P.610) b)The Peshva ordered Madhosingh to surrender Ranthambhor fort to the Marathas.(P.588)
1759	February	6	a)Jankoji Shinde wrote to Madhosingh to hand over the hundis of money to Naro Kasi,his agent.(P.588-89) b)Madhosingh acknowledged the congratulations received from Bejaisingh for the victory of Ranthambhor fort and proposed to him further to form the unity of the Rajput princes against the Marathas. (P.588)
1759	February	9	Ramaji Anant Dabholkar again wrote to Balaji Gulgule for collecting the Maratha dues from Maharao of Kota. (P.611)
1759	February	10	a)Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule to send the hundi of Rs.77000 immediately after collecting from Maharao of Kota. (P.611) b)The Peshva advised Bhausaheb to occupy Agra fort else Surajmal might occupy it. (P.589)
1759	February	24	The Peshva enquired from Ramaji Anant Dabholkar about the dues promised by Bejaisingh in February 1756.(P.613)
1759	February	26	Madhosingh ordered Mishra Srikishan to keep Umedsingh Kumbhani in Ranthambhor fort with 100 horsemen and also warn the other Thakurs to be careful.(P.588)
1759	March	5	Jankoji Shinde censured Madhosingh for creating disturbances in Chapan,Nenva etc.Thanas of the Marathas.(P.589)
1759	March	9	Malharrao Holkar is encamped at Phagi, 13 Kos south of Jaipur.(P.589)

1759	April	8	a) Jankoji Shinde again wrote to Madhosingh to pay the Maratha dues. (P.590)
			b) Madhosingh wrote to Jankoji Shinde that the delay in payment was caused due to the disturbances created by Satvaji Rajola. (P.590)
1759	April	21	Madhosingh wrote to Raja Shivsingh(?) that special arrangements for defence are not necessary as the Marathas had gone across the river Yamuna. (P.590)
1759	April		The Peshva asked Jankoji Shinde to recover the Maratha dues from Marwad, Kota and Mewad. (P.614)
1759	May	20	a) Madhosingh took a declaration from his vassals to adopt the policy of non-intervention during the struggle between the Marathas and the Pathans. (P.591)
			b) Madhosingh gave Rs.200 to one Anandram Pandit who had come on behalf of the Peshva. (P.591)
1759	May	22	Madhosingh assured all help to Govindrao the Maratha Subedar of Ajmer and the Peshva. (P.592)
1759	May	23	Jankoji Shinde sent the account of Marwad dues to Raghunathrao. (P.613)
1759	June		Madhosingh sent Diwan Kaniram to Malharrao Holkar professing friendship. (P.592)
1759	June	7	The Peshva wrote to the Maharana of Mewad to pay the Maratha dues. (P.614)
1759	June	17	Jankoji Shinde wrote to Balaji Gulgule with surprise that the Maharao of Kota had money to fight with his neighbours but had no money to pay the Maratha dues. (P.611)
1759	July		The Peshva ordered Malharrao Holkar to go to North India with atleast 20000 troops. (P.594)

1759	August	19	Jankoji Shinde wrote to Madhosingh not to create disturbances in the villages of Nenva etc.(P.592)
1759	August	Last Week.	Ahmedshah Abdali despatched Jahan Khan for Punjab while he himself crossed Indus river .(P.592)
1759	September	10	Ahmedshah Abdali wrote to Madhosingh and Bejaisingh to make common cause with him against the Marathas.(P.592)
1759	September	[illegible]	Madhosingh wrote to Jankoji Shinde that his army had not gone to create disturbances in Nenva etc.Thanas of the Marathas.(P.593)
1959	October	3	Madhosingh sent 3 thans of clothes to one Babuji Naik.(P.593)
1759	October	First week	The Messengers of Ahmedshah Abdali reached Delhi.(P.593)
1759	November		a) Holkar desired to visit Hadoti province for the collection of the Maratha dues.(P.611) b) Malharrao Holkar entered Jaipur territory and subdued a part of it. (P.594)
1759	November	10	One Narayandas sent letters to the Maratha Kamavisdars of Ujjain and Govind Krishna at Udaipur to escort one Goverdhandas from Deccan to Nathdwara and back.(P.[illegible] 593)
1759	November	14	Madhosingh despatched Tiwadi Shyamram from Jaipur to face Gangadhar Tatya and Satvaji Rajola.(P.594)
1759	November	17	Jankoji Shinde wrote to Diwan Gangadhar Tatya to give up Jaipur expedition but come to Lahore province where Dattaji Shinde and Tukoji Holkar were defeated by Abdali.(P.594)

1759	November	18	The battle of Kakod between Madhosingh and Malharrao Holkar.(P.595)
1759	November	20	The Vazir killed Emperor Alamgir II. (P.599)
1759	November	22	Govindballal informed Sadashivrao Bhau that Bejaisingh had decided to join Ahmedshah Abdali against the Marathas. (P.599)
1759	November	30	Shahjahan II is made the emperor of India.(P.599)
1759	December	7	Madhosingh conducted "Matami Darbar" to mourn the death of his vassals who were killed in the battle of Kakod against the Marathas.(P.596)
1759	December	10	a) Ahmedshah Abdali wrote to Bejaisingh to join him with army for Chastising the Marathas.(P.600) b) Najibkhan wrote to Madhosingh to join Ahmedshah Abdali in Chastisingh the Marathas.(P.599)
1759	December	23	Abdali's army defeated Jankoji Shinde in a battle.(P.600)
1759	December	27	Malharrao Holkar while at Barwada received message for help from Dattaji Shinde.(P.598)
1759	December	29	Abdali informed Madhosingh of his victory over Jankoji Shinde.(P.600)
1760	January	2	Malharrao Holkar sent his artillery from Barwada to Junia since he was going for the help of Dattaji Shinde.(P.598)
1760	January	3	Malharrao Holkar is encamped on the bank of Banas river in Jaipur State. (P.590)
1760	January	10	a) Ahmedshah Abdali crossed the Yamuna river at Buradi village,7 m.n.of Delhi. (P.601)

[illegible]

1760	January	10 b)	Dattaji Shinde was killed in the battle of Bararighat while Jankoji Shinde fled to Kotpulti in Jaipur State. Jankoji wrote to Bhausaheb to come for the help. (P.601,615)
1760	January	12	Madhosingh gave 3 thans of clothes to Suratram Mehta Sahukar who had come on behalf of Malharrao Holkar.(P.601)
1760	January	15	Jankoji Shinde reached Panialas 5 m.n. of Kotputli in Jaipur State where he met Malharrao Holkar.(P.601)
1760	January	16	Jankoji Shinde and Malharrao Holkar set out from Kotputli towards Delhi for defeating Ahmedshah Abdali.(P.602)
1760	January	27	Ahmedshah Abdali set out from Delhi to subdue Surajmal Jat.(P.603)
1760	January	(?)	Balaji Gulgule died.(P.612)
1760	February	3	Govind Ballal crossed Chambal river with ladies and goods sent back by Jankoji Shinde and Malharrao Holkar.(P.602)
1760	February	Second week.	Madhosingh ordered Rao SardarSingh of Uniara and Jagatsingh Khangarot to come with their armies as Abdali menace was near by. (P.603)
1760	February	18 a)	Ahmedshah Abdali reached Rewadi on return from Jaipur territory.(P.604)
		b)	Ahmedshah Abdali wrote to Madhosingh to Chastise the Marathas from his State. (P.603)
1760	February	20	Malharrao Holkar crossed the Yamuna river south of Delhi.(P.604)
1760	February	22	Ahmedshah Abdali set out from Rewadi to Delhi.(P.604)

1760	February	26	Madhosingh wrote to one Raja Savant Singh that the policy of neutrality should be observed during Abdali - Maratha War.(P.603)
1760	February	26or 27	Malharrao Holkar crossed the Yamuna river for Khizrabad.(P.605)
1760	February	29	Malharrao Holkar arrived at Khizrabad. (P.605)
1760	March	1	Malharrao Holkar plundered Sikanderabad, 20 Kos away from Delhi.(P.605)
1760	March	4	Abdali troops reached Sikanderabad and made Holkar to flee. Abdali conveyed this news to Madhosingh. (P.605)
1760	March	14 a)	Bhausaheb left Deccan for Hindustan with 30000 Marathas.(P.615)
		b)	Jankoji Shinde and Malharrao Holkar wrote to Lalaji Ballal, the son of Balaji Gulgule to give 51 acres of land to one Jeeturam Purohit.(P.612)
1760	March	15	Bhausaheb wrote to Govind Ballal to bring the Rajputs of trans Chambal region to reinforce the Maratha army.(P.616)
1760	March	16	Madhosingh rewarded pearls worth Rs.330 to Suratram Mehta Sahukar who was sent by Malharrao Holkar. (P.616)
[redacted]			
1760	April	16	Bhausaheb crossed the Narmada river for Hindustan.(P.616)
1760	May	3	Madhosingh sent presents for Santaji Wable,Naruji the clerk of Naroshankar and Suratram Mehta, a man of Malharrao Holkar.(P.616)

1760	May		Bhausaheb reached Sironj Via Sindkhed and Burhanpur and wrote to the Rajput princes to join him.(P.616)
1760	May	6	Bhausaheb wrote to Gowind Ballal that the promise of Madhosingh for help to the Marathas can not be believed.(P.617)
1760	May	7	The Peshva was reported that no Rajput prince had joined Bhausaheb.(P.617)
1760	May	14	Bhausaheb wrote to one Balkrishna to induce the Maharao of Kota to join the Maratha army else his country would be devastated.(P.617)
1760	May	30	Bhausaheb reached Gwalior Via Narwar hunting for the Rajput allies on the way.(P.617)
1760	June	8	Bhausaheb crossed the Chambal river and reached Dholpur.(P.621)
1760	June	11	Madhosingh gave Rs.100/- to one Madhoram Pandit as expenses. (P.621)
1760	June	13	Bhausaheb took holy bath at Mukandara Tirth near his camp.(P.621)
1760	June	15	a) One Sadashankar Mehta met Madhosingh on behalf of Bhausaheb.(P.621)
			b) Malharrao Holkar and Jankoji Shinde met Bhausaheb between Chambal and Gambhiri rivers near Karauli.(P.621)
1760	June	26	Bhausaheb wrote to the Peshva to send 30000 more troops.(P.622)
1760	June	30	Surajmal Jat met Bhausaheb.(P.621)
1760	July	12	Bhausaheb reached Agra.(P.622)

1760	July	21	Balwantrao Mehendale,Jankoji Shinde and Malharrao Holkar reached Delhi. (P.622)
1760	July	23	Trimbak Dattaji wrote to Lalaji Ballal to send the money straight to Jankoji Shinde and induce the Maharao of Kota to pay the Maratha dues.(P.612)
1760	August	1	Delhi fort is occupied by the Marathas after expelling the Qilledar of Ahmedshah Abdali.(P.622)
1760	August	5	Jankoji Shinde wrote to Lalaji Ballal to pay the arrears of salary to Chinto Narain Kastikar who was on Abdali expedition.(P.612)
1760	August	11	Jankoji Shinde wrote to Madhosingh to protect Ramsingh from Bejaisingh. (P.613)
1760	September	15	a) Madhosingh sent Rs.100/- to Pandit Balarao(Ingle) a Maratha official in North on the occasion of the 'Janeu' ceremony of his brother.(P.623)
			b) Surajmal Jat deserted the Marathas and left Delhi for his state.(P.623)
1760	September	17	Jankoji Shinde wrote to Lalaji Ballal to send Rs.50000 to Ramchandra Krishna at Delhi as Jankoji had taken a loan from him.(P.612)
1760	September	25	Madhosingh rewarded the messengers of Malharrao Holkar.(P.623)
1760	September		Maharao of Kota captured fort Phul Barod of Khichiwada against the wishes of the Marathas.(P.612)
1760	October	9	Sadashiv Chimnaji wrote to Lalaji Ballal to ask the Maharao of Kota to surrender fort Phul Barod of Khichiwada.(P.612)
1760	October	10	Bhausaheb removed Shahjahan II and crowned prince Ali Gohar as the emperor of India.(P.624)

1760	October	11	Ahmedshah Abdali asked Raja Bejaisingh of Marwad to come with his army to help him against the Marathas. (P.624).
1760	October	17	The Marathas attacked Kunzpura and plundered it. (P.625)
1760	November	9	The Marathas are found encamped at Panipat. (P.626)
1760	November		Akhairam Pancholi, the Kota official met the Maratha chiefs at Panipat. (P.612)
1760	November	15	The Peshva is encamped at Dhond on his march to Hindustan. (P.626)
1760	November	17	The Peshva left Dhond for Hindustan. (P.626)
1760	November		Maharao of Kota borrowed Rs.4201/- from Lalaji Ballal Gulgule.(P.613)
1760	December	5	Jankoji Shinde wrote to Lalaji Ballal to honour the old Sanad for the salary of Baburao Gunaji. (P.613)
1760	December	18	The Peshva married on the way during his march to Hindustan. (P.626)
1760	December	Last week	Madhosingh sent an army under Raja Harsahai Khatri to join Abdali which never joined practically. (P.628)

APPENDIX S

GENEALOGIES

- Aurangzeb (D. 20-2-1707)
  - Bahadurshah (D.17-2-1712) (Muazzam)
    - Jahandarshah (Moizudin) (D. 1-2-1713)
      - Ajijudin (Alamgir II) (3-6-1754 to 29-11-1759)
        - Shahalam II (Ali Gohar) (25-12-1759 to 18-11-1806)
    - Azimushan
      - Farukh Siyar (D.19-4-1719)
        - Malika Zemani (D. 1788)
    - Rafiushan
      - Ibrahim
      - Rafidaulla
      - Rafidarjat
    - Khujista Akhtar (Jahanshah)
      - Mohammadshah m.Malika Zemani m.Udhambai (19-9-1719 to 15-4-1748)
        - Ahmedshah (18-4-1748 to 2-6-1754) D.1775
  - Azamshah (D.8-6-1707)
    - Bidar Bakht
  - Kambux (D.1709)
  - Akbar (D.1704)
    - Mohammad Ashgar
    - Neku Siyar

Barwe Malhar Baburao

- Jogdeo Bhatt
  - Dado
    - Malharpant
      - Antajialias Baburao (D.1749)
    - Radhabai m.Balaji Vishvanath Peshva

Bhatt Ratnakar Pondrik (Noble of Savai Jai Singh)

- Shrideo Bhatt
  - Dinkar
    - Vidhyadhar
  - Prabhakar
    - Brijnath
  - Ratnakar
    - Padmakar
    - Kamlakar
    - Sudhakar
    - Divakar

Bikaner

- Anup Singh (1669-98)
  - Swarup Singh (1698-1700)
  - Sujan Singh (1700-1735)
    - Zorawar Singh (1735-46)
  - Anand Singh
    - Gaj Singh (1746-87)

Bundela

- Chatrasal
  - Hirdesa (Panna)
  - Jagatraj (Jaitpur)
  - Bharat Singh

Bundi

- Budh Singh (D.26-4-1739)
  - Umedsingh (1746-7)(D.1803)
  - Deep Singh

Dabhade

- Khanderao (M.Umabai) (D.27-9-1729)
  - Trimbakrao (D.1-4-1731)
  - Yeshwantrao (D. 18-4-1754)
    - Trimbakrao (18-6-1754 to 1766)
  - Baburao

Girdhar Bahadur

- Girdhar Bahadur
  - Dayaram D.1713
    - Raja Girdhar Bahadur
      - Bhawaniram alias Chimna Bahadur
  - Chabilaram (D.Nov.1719)
    - Dayabahadur
      - Beni Bahadur

Hingne

Mahadeo Bhatt (D.about 6-2-1744)

- Bapuji
- Damodar (D.1757)
- Purshottam (D.1782)
- Deorao (D.1807)

Holkar

Malharrao Holkar = m. Gautamabai

Khanderao = m. Ahalyabai

Malrao (D.27-3-1767)

Jadhav Pilaji

Changoji

- Pilaji (D. 3-7-1751)
  - Satvaji alias Apaji
- Sambhaji Apa

Jaipur

- Man Singh (1589-1614)
  - Jagat Singh
    - Maha Singh
      - Mirza Raja Jai Singh
        - Ram Singh(1668-88)
          - Kishan Singh(D.1682)
            - Vishnu Singh (1688-99)
              - (1) Sawai Jaisingh (1699 to 21-9-1743) —— (2) Vijai Singh
                - Shiv Singh (D.about 1724)
                - Ishwari Singh (D.14-12-1750)
                - Madho Singh (D.1727 D.1767)
        - Kirat Singh
    - Bhav Singh
  - Bahadur Singh

Jodhpur

- Jaswant Singh (1630-78)
  - Ajit Singh
    - Abhai Singh (D.19-6-1749)
      - Ram Singh (D.3-9-1772)
    - Bakht Singh (D.21-9-1752)
      - Bejai Singh
    - Anand Singh (Idar)
      - Shiv Singh (Idar)
    - Rai Singh (Idar)
    - Kishor Singh

Kishangarh (Rupnagar)

Raj Singh (1706-48)

- Savant Singh (Nagri das)
  - Sardar Singh
- Bahadur Singh

Kota

Kishor Singh (1684-96)

- Bishan Singh
  - Prithvi Singh
    - Ajit Singh (1756-58)
      - Satrusal (1758-66)
- Ram Singh (1696-1707)
  - Bhim Singh (1707-20)
    - Arjun Singh (1720-23)
    - Durjan Singh (1723-56)

Mandloi

Chudaman (D.1693)

- Nandlal (D.1731)
  - Tejkarn
    - Nihalkarn (D.1770)

Nagpur

- Mudhoji
  - Parsoji (D.6-10-1710)
    - Kanhoji (D.1737)
      - Rayaji
  - Bapuji
    - Santaji (D.1719)
    - Ranoji (Savai Santaji)
      - Santaji
      - Jiyaji
      - Sakhoji
      - Kusaji
    - Bimbaje
      - Raghoji I (D.14-2-1756)
        - Janoji (D. 16-5-1772)
  - Sabaji

Nizam

- Alam Shaikh Mirza
  - Mir Bahadur
    - Mohammad Amin Khan (D. 16-1-7121)
      - Qamrudin (D.11-3-1748)
        - Mir Nizamudin Khan Khana (D. 26-11-1759)
        - Mir Manu (D. 3-11-1753)
  - Khwaja Abid
    - Ghaziudin Pherozjang (D. 8-12-1710)
      - Chinkiliz Khan Nizam Asafjah (D.22-5-1748)
        - Ghaziudin
          - Imadulmulk
        - Nasirjang (D. 5-12-1750)
        - Salabat Jang
        - Nizamali (D.1803)

Pawars

- Buwaji (Supe)
  - Kaloji
    - Krishnaji (Supe)
    - Tukoji (1732-54) (Dewas Senior)
      - Krishnaji (1754-89)
    - Jiwaji (1732-75) (Dewas Junior)
  - Sambhaji
    - Udaji
    - Anandrao (Dhar) (1732-36)
      - Jaswantrao (1736-61)

Peshvas

- Balaji Vishvanath (1713-20) = m. Radhabai
  - Bajirao (1720-40) =m. Kashibai
    - Balaji Bajirao alias Nana Saheb = m. Gopikabai (1740-61)
      - Vishvasrao (D.1761)
      - Madhavrao
      - Narainrao
    - Raghunathrao (Raghoba Dada)
    - Janardan
    - Shamsher Bahadur (D.1761) (Bornfrom Mastani)
  - Chimnaji Appa
    - Sadashivrao Bhau D.1761
  - Bhiubai = m. Baramati

Purandare

Ambaji Pant (D.1734-35)

Mahadaji Pant (D.1760-61)

Shahu

Shivaji (D.1680)
- Shambhaji (D.1689)
  - Shahu
    - Ramraja (adopted)
- Rajaram = m. Tarabai (D.1700), m. Rajasbai
  - Shivaji
    - Ramraja
  - Shambhaji (Kolhapur)

Shinde

Jankoji Shinde
- Ranoji (D.1745)
  - Jayappa (D.1755)
    - Jankoji
  - Dattaji (D.1760)
    - Kedarji
  - Jotyaji
  - Tukoji (D.1761)
  - Mahadji

APPENDIX-T

GLOSSARY

Amil:-	An Officer of the government in the financial department especially a collector of revenue on the part of the government.
Umir-Ul-Umra:-	The title of one of the chief nobles of the Mughal Empire.
Antarved:-	The region of Doab i.e.the land between the Ganges and the Yamuna rivers.
Arzdasht or Arzi:-	A written petition or a respectful letter written by an official to the rulers.
Asvamedh Yajna:-	A ceremony observed by a ruler to declare himself the most powerful.
Attock:-	The point of boundary of Hindustan on the bank of river Indus.
Bammargi:-	The follower of a sect which believed in the excessive use of wine and woman.
Barat:-	Retinue. The pay bills for the retinue.
Barkandaz:-	A matchlockman who is armed with a sword and shield and ordinarily acts as a guard.
Baxi:-	The one who had full military and civil command of the army.
Baxiulmulk:-	The Pay Master General of the Mughal Empire.
Bohra:-	A trading sect of Shia Muslims in Western India.
Charan:-	The name of a caste,following the profession of bards and genealogists. They were held in high esteem.
Chauth:-	A tribute approximately ¼ of the estimated revenue exacted by the Marathas from the territories partially subdued by them.
Chitnis:-	The Secretary of a Maratha State who dealt public and official correspondence.

Choudhary:-	The headman of a village or the holder of a landed property.
Crore:-	Ten million.
Dam:-	A copper coin. It used to be 40 to 48 in a Rupee.
Darbar Kharch:-	Political and diplomatic expenditure, charge for presents and the gratuities, ~~Superintendents~~ made to the princes.
Daroga:-	The chief officer of a department, Superintendent.
Desai:-	A hereditary revenue officer of a district.
Deshmukhi:-	A hereditary officer exercising chief police and revenue authority over a district,containing a certain number of villages,holding for compensation lands rent free and being entitled to the various fees and allowances.
Deshpande:-	The hereditary accountant of a village or villages.
Dhabhai:-	Foster brother.
Diwan:-	The Superintendent of finance or the minister of a State.
Du-Aspa:-	He who received the pay of 2 horses.
Fadnis:-	The Minister of Finance of the Marathas who maintained the revenue accounts.
Farman:-	A mandate, an order or a patent from a Muslim King.
Fauzdar:-	An officer of the Mughal government of a Sarkar or a group of districts who was invested with the charge of the police and the Jurisdiction in all criminal matters.
Fauzdari:-	The office of the chief of a Sarkar or a group of districts with criminal jurisdiction.
Fauz Kharch:-	The military expenses.
Ghat:-	Ford of a river.

Ganimikava:-	A method of fighting. By observing this method a small force can attack large armies.
Ghadi or Ghatika:-	2½ Ghadis = 1 hour. A day is divided into 60 Ghatikas. Each Ghatika = 4 minutes i.e.2/5th of an hour. 1 Pal is 60th part of Ghatika. Each Pal = 24 English Seconds. It is counted from Sunrise to Sunset.
Ghasdana:-	A tax levied to pay the Marathas for the maintenance of their Cavalry.
Hasbulhukm:-	An order issued by a Minister or high officer of the Mughal government.
Hundi:-	Bill of Exchange.
Inam:-	A gift. Among the Marathas the term was applied to the grants of land held rent free and in hereditary.
Iqrarnama:-	A deed of assent.
Izara:-	Land given on contract. The contractor has to give a certain revenue to the owner.
Jagir:-	The grant of large rent free land.
Kamavis:-	Revenue collection done by the Marathas.
Kamavisdar:-	Revenue official of the Marathas. He was also called "Billehdar" in Kota State.
Khandani:-	The tribute levied by the Marathas.
Khalsa:-	The land owned or occupied by the ruler.
Khas Ruqqa:-	A special letter addressed by the ruler.
Kharif:-	The crop which is sown before the commencement of the rains and reaped after the rains. The autumn harvest.
Khawas:-	A domestic servant.

Khilat:-	A dress of honour, presented by the ruling authority to an inferior as a mark of distinction.
Khutba:-	The royal titles as proclaimed from the pulpit before prayers.
Kos:-	Unit of distance approximately a mile and half.
Kothari:-	Keeper of Public granaries in the Rajput States.
Kotris:-	Senior families of Jaipur House.
Kotwal:-	The police head of the town.
Lac:-	100000 .
Lala:-	A title used by Hindu bankers or Munshis.
Mahal:	A seraglio or the division of a district.
Mahi Muratib:-	Conferred formerly as a mark of distinction by the Mughal Emperors on the individuals of the highest order only.
Mamlat:-	The amount of Revenue.
Mansab:-	A military rank conferred by the Mughal government, regulated by the supposed number of horses the holder of the title could,[redacted] if required to bring into the field, Varying from 10 to 10000 . The Jagirs were assigned for the maintenance of the supposed troops.
Mansabdar:-	The holder of a Mughal mansab.
Matami:-	A kind of gift paid to the successors of the deceased.
Maund:-	Unit of weight. A Maund had 40 Seers in North India.
Mejmani or Mejbani:-	Hospitality.
Mohar:-	A gold Rupee. The Mughal coin weighted 170 grams and contained 168 grams of gold.There were ½ and ¼ Mohars of gold too.

Mokasa:-	A temporary Inam or Jagir.
Mokasadar:-	The holder of a land on condition of service who paid a certain revenue to the Maratha King.
Moksha:-	Final liberation of the soul and exemption from future transmigration.
Mulkgiri:-	Periodical incursion of a military force for the collection of tribute or revenue.
Naib:-	A deputy.
Nallah:-	A gulley cut in the soil by rain, down which, in the rainy season, rushes a considerable body of water.
Nazar:-	Presents to the superiors or such as are interchanged amongst persons of rank.
Nazim:-	An administrator the governor of a province.
Nazrana:-	Succession fee or the present to the superior.
Nishan:-	A sign, A letter written by a Mughal Prince.
Nyochawal:-	A custom according to which money is offered to a person after weaving over his head.
Nyota:-	An invitation, also the presents sent with the invitation.
Pagdi:-	Turban of cloth.
Palki:-	A covered cart used by the Ladies and the nobles,carried by four porters.
Pandit:-	An envoy.
Paragana:-	A division of land having 50 to 300 villages.
Parwana:-	An order, a letter from a ruler to his subordinate.
Patta:-	A deed issued to a person by the ruler.

Peshkash:- A tribute, a fine or a present to the ruler on receiving an appointment or assignment of land.

Prahar:- 1 Prahar = 3 hours. Night prahar from 6 p.m.to 6 a.m.

Pratinidhi:- A minister of the Maratha State at Satara Court.

Pucca Kot:- Permanent structure of the city or fort walls.

Qanungo:- Registrar of a district who supplies information about the government rules.

Qaulnama:- A written assurance.

Qazi:- A Muslim Judge.

Qiledar:- Commandant of a fort.

Qutubulmulk:- A high Mughal noble.

Rahadari Tax:- Transit duty and toll at inland stations, a fee to escape plunder.

Raj Suya Yajna:- A ceremony of sacrifice.

Rakhi:- A piece of thread or silk,bound round the wrist on particular occasions as taken for security. It is also used as a symbol of dependence.

Rozinadars:- One receiving a daily allowance or pension.

Rupee:- Currency of India.Each Rupee was equal to 40 dams and there were $\frac{1}{2}$ and $\frac{1}{4}$ rupee of silver.

Sahukar:- A banker.

Samsamdaulla:- A high Mughal Official.

Sanad:- A document conveying to an individual titles,privileges or the right to revenue from land etc.under the seal of the ruling authority.

Sardar:- The chief.

Sardeshmukhi:- A tax approximately 10% to be paid over and above the Chauth.

Sardeshpande:-	The head of the Maratha officers termed Deshmukhs and standing between them and the government.
Sarnjam:-	Temporary assignment of revenue from land for the support of troops or for personal military service.
Sarpech:-	Ornament of gold, silver or jewels usually worn in front of the turban.
Sawar or Suar:-	A horsemen.
Sati:-	A woman who burns herself on the funeral pyre of her husband.
Seh-Aspa:-	He who received the pay of 3 horses.
Shilledar:-	The man who provides his own horses and receives an average pay in lieu of all charges for their support.
Siropao:-	Dress from head to foot.
Suba:-	A province.
Subedar:-	The governor of a province with complete military and financial control .
Subedari:-	The office of a governor.
Taluqa:-	An estate aggregating many villages.
Tankah:-	Payment in cash or on assignment of the land revenue.
Thakur:-	Feudal noble. Ordinarily a Rajput of North India.
Than:-	9 length piece cloth.
Thana:-	A military post.
Thanedar:-	Incharge of a thana.
Thikana:-	A definite land belonging to a given individual.
Tika:-	Items sent to a ruler on succession.
Tilak:-	A sign applied on the forehead.
Vakil:-	The one who safeguarded the interests of his ruler at a foreign court.
Vatan:-	A hereditary land.
Yadasht:-	A Memorandum.
Zat:-	The personal rank of a Mughal Mansabdar.
Zenana:-	The female apartment.

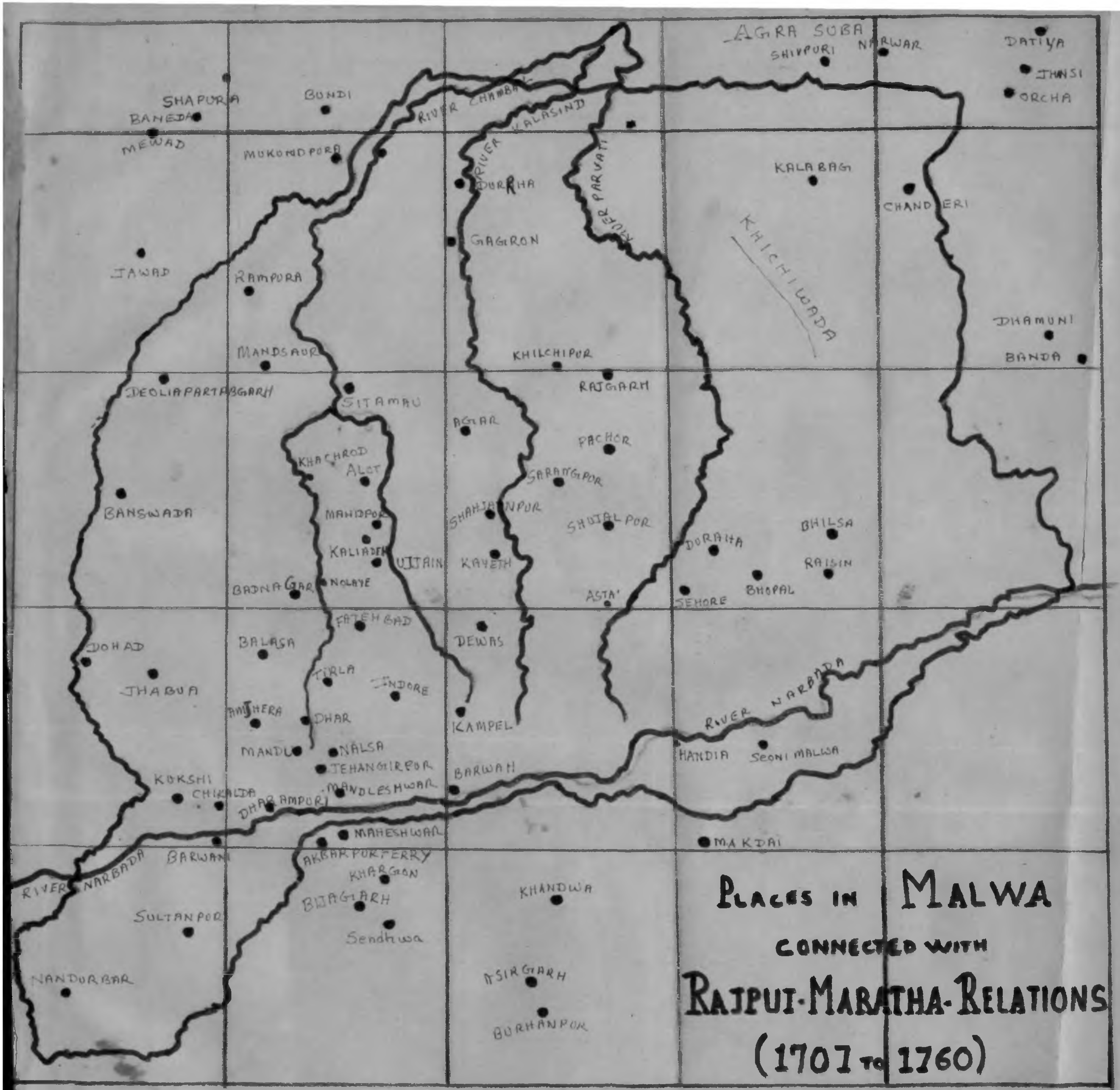

Outline from Dr. Raghubir Sinh's 'Malwa in Transition'

KISHENGHAD

JODHPUR
RUPAN RIVER
KARKEDI
SALEMABAD
RALAUTA
BANDHAR
SENDRI
LAMBA
BADA LAMBA
AJMER MARWAD
AJMER JAIPUR
FATEGARH
SARWAD
DAHI RIVER
KEKDI
0 5 10 15 20
0
20

PLACES IN RAJPUTANA CONNECTED WITH RAJPUT-MARATHA RELATIONS (1707-1760)